अनुभूत योग

१

श्यामसुन्दर रसायनशाला
गायघाट • वाराणसी

श्यामसुन्दर रसायनशाला प्रकाशन, गायघाट, वाराणसी
द्वारा प्रकाशित चिकित्सा एवं स्वास्थ्योपयोगी पुस्तकों का सूचीपत्र

पुस्तक	मूल्य
रसायनसार	१२.००
अनुपान विधि	.७५
अनुभूतयोग (पांच भाग)	५.२५
सिद्ध मृत्युञ्जय योग	१.००
प्रयोग रत्नावली	२.००
भोजन विधि (पथ्यापथ्य)	३.५०
प्रारम्भिक स्वास्थ्य	.४०
आहार सूत्रावली	.५०
[illegible] चिकित्सा	.७५
टोटका विज्ञान भाग १-२	[illegible].००
देहातियों की तन्दुरुस्ती	.७५
मोटापा कम करने के उपाय	[illegible].००
आरोग्य लेखाञ्जलि	१.२५
व्यायाम और शारीरिक विकास	२.००
स्वास्थ्य और सद्वृत्त	२.५०
नीम के उपयोग	१.५०
मधु के उपयोग	१.५०
मट्ठा या छाछ के उपयोग	१.५०
आम के उपयोग	१.५०
तुलसी के उपयोग	.७५
हल्दी के उपयोग	.३५
लहसुन के उपयोग	.३५
अजवाइन के उपयोग	.३५
सौंफ के उपयोग	.३५
[illegible] के उपयोग	.३५
तेजपात के उपयोग	.३५
मेथी के उपयोग	.३५
जीरा के उपयोग	.३५
धनिया के उपयोग	.३५
राई के उपयोग	.३५
मगरैला के उपयोग	.३५
आँवला के उपयोग	.३५
प्याज के उपयोग	.३५
नीबू के उपयोग	.३५
गूलर के उपयोग	.३५
कालीमिर्च के उपयोग	.३५
लालमिर्च के उपयोग	.३५
लौंग के उपयोग	.३५
मौसमी [illegible] बीमारियाँ	.३५
ऋतुएं और स्वास्थ्य	.७५
स्वच्छता और स्वास्थ्य	.३५
व्यायाम और स्वास्थ्य	.३५
भोजन और स्वास्थ्य	.३५
मनोवेग और स्वास्थ्य	.३५
मादक वस्तुएँ और स्वास्थ्य	.३५
आचार विचार और स्वास्थ्य	.३५
प्रसूता और शिशु-परिचर्या	.६०

सजिल्द पुस्तकों के सेट

पुस्तक	मूल्य
अनुभूतयोग पांच भाग	५.५०
मसालों के उपयोग	५.५०
स्वास्थ्य निर्माण के साधन	७.५०
हमारा स्वास्थ्य और आहार	४.००
स्वास्थ्य साधन	२.००

श्री श्यामसुन्दर आयुर्वेद ग्रन्थमाला पुष्प : २
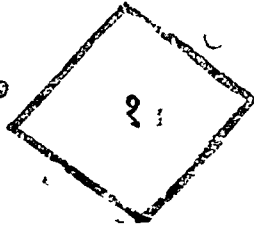
'रसायनशास्त्री'

पं० श्यामसुन्दराचार्य वैश्य

श्यामसुन्दर रसायनशाला

(आयुर्वेदिक औषध-निर्माता व पुस्तक-प्रकाशक)

गायघाट, वाराणसी—१ (उत्तर प्रदेश)

प्रकाशक
वैद्यराज उमेदीलाल वैश्य
श्यामसुन्दर रसायनशाला
गायघाट, वाराणसी–१

नवाँ संस्करण : जनवरी, १९७७

मूल्य : १.२५ पैसा

वितरक
सभी प्रमुख पुस्तक-विक्रेता

मुद्रक
न्यू दीपक प्रेस
ए० १३/४३, भगतपुरी, राजघाट
वाराणसी–२२१००१

प्रकाशकीय

गोलोकवासी पूज्यचरण पं० श्यामसुन्दराचार्यजी अपने समय के पीयूषपाणि वैद्य थे। 'रसायनसार' उनकी अमर कृति है। चिकित्साकार्य करते हुए योगो के निर्माण मे उन्हे जो नये-नये अनुभव हुए, उन्ही का संग्रह यह 'अनुभूत योग' (प्रथम भाग) है। नीरक्षीर न्याय से उन्होने यह सग्रह प्रस्तुत किया है जिसका हर योग अनुभूतिसिद्ध है। इसके नुस्खे उपयोगी और सरल हैं। कोई भी व्यक्ति इनका सहज निर्माण कर सकता है।

अनुभूत योगमाला के अन्तर्गत अबतक पाच भाग प्रकाशित हो चुके हैं। पहले भाग का यह आठवाँ संस्करण है। वैद्य-समाज ही नही, सर्व साधारण लोगो ने इसकी प्रशसा की है। उनके प्रोत्साहन के फल-स्वरूप यह नवाँ सस्करण प्रस्तुत है।

—प्रकाशक

विषय-सूची

अनुभूत योग

प्रथम भाग

क्षुधा बटी सं० १

योग—बिना पत्ते की मूली एक सेर-सवा सेर की और नवसादर अढाई तोले।

बनाने की विधि—पत्ते निकाल देने के बाद जिस मूली का वजन सेर-सवा सेर हो, उसके बीच मे चाकू से काटकर गोल गड्ढा कर दें। उसमे आधी छटांक नवसादर भरकर ऊपर से मूली का कटा हुआ हिस्सा भर दें और सुतली से मूली को बांध दें। लोहे की सलाई से मूली में तीन-चार जगह आर-पार छेद कर खूंटी मे टांग दें। खूंटी में लटकी हुई मूली के नीचे एक मिट्टी, पत्थर या तामचीन का पात्र रखकर आठ पहर छोड दें। आठ पहर मे जब मूली का साररूप जल नवसादर के योग से टपक-टपक कर पात्र में इकट्ठा हो जाय, तब लोहे की कडाही मे मूली के जल को रखकर आग पर पकायें। जब रस गाढा हो जाय, कडाही को नीचे उतार कर मूंग के प्रमाण की गोलियां बनाकर और उनको धूप में सुखाकर रख लें।

मात्रा—एक से चार गोली तक।

अनुपान—ताजा जल के साथ।

समय—भोजन के बाद सुबह-शाम।

गुण—यह क्षुधा वटी अन्न को हजम करती है। यदि कुछ दिनो तक लगातार इसका सेवन किया जाय तो पुराना अजीर्ण और संग्रहणी रोग दूर होता है।

विशेष—उपर्युक्त प्रक्रिया द्वारा अधिक परिश्रम करने पर भी बहुत कम औषधि तैयार होती है, इसलिए बहुत बड़ी सस्थावाले वैद्यों का जहाँ सैकडो रोगी नित्य आते हैं, काम नही चल सकता। अतः वे लोग एक दूसरी स० २ की क्षुधा वटी बनाकर व्यवहार करें।

क्षुधा बटी सं० २

योग—छोटी हरड़ एक सेर, मंदार का दूध दो सेर, बिना पत्ते की मूली एक मन और नवसादर एक सेर।

बनाने की विधि—चिकने मिट्टी के पात्र में एक सेर छोटी हरड़ डालकर ऊपर से दो सेर मंदार का दूध भर दें जिसमे हरड़ें डूब जायँ। हरड़ो को दूध मे डुबाकर छोड दें। एक महीने के बाद उन हरडो को छाया में सुखाकर और हिमामदस्ते में कूटकर कपडछन कर लें।

पतली अथवा मोटी जिस तरह की मिले एक मन मूली लेकर उन्हे लोहे के हिमामदस्ते में कूटकर मिट्टी की बडी नाँद मे रखें और ऊपर से एक सेर नवसादर कूटकर डाल दें। चौबीस घण्टो के बाद कपड़े मे छानकर मूलियो का रस, एक दूसरी नाँद मे रखे और शेष बची मूलियो की सीठो को भी हिमामदस्ते में कूटकर और खूब निचोड़-निचोडकर रस निकाल लें। पहले वाले और पीछे कूटकर निकाले हुए दोनो रस को लोहे की कडाही मे डालकर आग पर पकायें। जब विलेपी (पतले दलिये) के समान गाढ़ा हो जाय, उसमे उपर्युक्त कपड़छन किया हुआ हरड़ो का चूर्ण मिला दें और जब गाढा हो जाय तब आग पर से उतारकर मूँग के समान गोलियाँ बनाकर सुखा लें। करीब डेढ़ सेर गोलियाँ तैयार होगी।

विशेष—यदि वैद्यों को पूर्वोक्त हरड़ बनाने और सुखाने का समय और सुविधा न हो तो बिना हरड डाले ही उक्त रस को गाढा करके गोलियां तैयार कर लें किन्तु ये गोलिया कुछ कम गुणकारक होगी।

मात्रा—तीन से छः गोली तक।

अनुपान—ताजा जल के साथ।

समय—भोजन के साथ—आदि, मध्य और अन्त में।

गुण—यह गोली गरिष्ट भोजन करने वाले धनी लोगो के लिए बहुत ही उत्तम है। इसके सेवन करने से मंदाग्नि, संग्रहणी और पुराना अजीर्ण आदि उदर-रोग नष्ट होते हैं। इस औषधि से सौ में नब्बे आदमियो को फायदा होता है।

विशेष—"अजीर्ण प्रभवा रोगा." न्याय से जठराग्नि के मन्द होने से ही संग्रहणी तथा कुष्ठ आदि अनेक व्याधियाँ हुआ करती हैं। इसलिए इन गोलियों के द्वारा जठराग्नि को सर्वदा तीव्र रखना चाहिये।

क्षुधा वटी की कल्पनाएँ—औषधियों के द्रव्यगुण के बल पर तरह-तरह की क्षुधा वटी हम बना सकते हैं। जैसे—क्रव्याद प्रभृति रसो मे तथा सुलेमानी नमक वगैरह मे नवसादर का योग रहने के कारण ही उनमें भूख लगाने की शक्ति है और मूली भी पाचनगुण सम्पन्न होने के कारण भोजन के बाद पचाने के लिए लोग खाया करते हैं। मदार के दूध से भिगोई हुई हरीतकी भी सैकडो रोगो को नष्ट करती है। बस, इन्ही कल्पनाओ से क्षुधा बटी का जन्म हुआ है। हाँ, उपर्युक्त मूली मे पाचन-गुण तो हैं, किन्तु उसमे दुर्जरत्व भी है। कहावत है कि 'मूली अन्न को पचावे, आप नहीं पचे।' इससे हमने ठीक समझ लिया है कि मूली के दुर्जर अश (सीठी) को निकालकर केवल पाचक अश (रस) को ही ग्रहण करना चाहिये। यदि बुद्धिमान् व्यक्ति चाहे तो ऐसी कल्पनाओ से हजारो प्रकार की क्षुधा बटी बना सकता है।

जितने भी दस्तावर, क्षार तथा अम्ल पदार्थ हैं, उनमे क्षुधाकारी गुण विद्यमान रहा करता है, किन्तु जितनी दस्तावर चीजें हैं उनमे "कदाचित् कुप्यते माता नोदरस्थाहरीतकी" इस वाक्य से उदर के लिए अमृत-तुल्य होने के कारण सभी दस्तावरो मे हरीतकी का गुण अधिक है। सभी तरह के क्षारो में यद्यपि भूख लगाने की शक्ति है, तथापि पंचकोल (सोठ, मिर्च, पीपल, पीपलामूल और चित्रक) प्रभृति के क्षारों में पाचक तथा भूख लगाने की शक्ति अधिक है। सभी प्रकार के अम्ल पदार्थ क्षुधावर्द्धक हैं, परन्तु 'लोहु सूचीद्रवत्वकृत्' इस न्याय से भोजन की तो बात क्या, जब सूई तक को भी गलाकर जो अम्लवेत पानी कर देती

है तो उसी अम्लवेत के काढे को गाढा करके हरीतकी तथा पंचकोल प्रभृति के क्षारो के योग से बनाई हुई क्षुधा बटी क्या कम गुणकारी होगी ?

यदि वैद्य महानुभावो को चिकित्सा करते समय ऐसे रोगी मिलें जो तोला-छः माशे औषधि न खा सकें और चन्द्रोदयादि रस उस समय पर दुष्प्राप्य हो तो ऐसी अवस्था मे तत्तत्‌रोगनाशक तत्तत् औषधियों मे किसी न-किसी कल्पना से उनका क्षार-भाग निकालकर रोगी के सतोषार्थ अल्प मात्रा मे दें और तत्तत् औषधियो का क्षुधा बटी, ज्वर बटी, सग्रहणी और कास बटी आदि नाम रख दें। जब हमारे महर्षियो ने योगबल से संपूर्ण औषधियो का गुण बतलाकर चिकित्सामहार्णव का सेतु बांध दिया है तब हमें किसी जहाज के आश्रय ग्रहण करने की क्या आवश्यकता है ?

शूल बटी

योग—मृगाङ्क का क्षार एक तोला, अम्लवेत या आदी का रस अढाई तोला और मृगाक रस एक माशा।

बनाने की विधि—मृगांक के क्षार को अम्लवेत या आदी के रस मे घोटकर उडद के प्रमाण की गोलियाँ बना ले और एक मिट्टी की थाली मे रखकर धूप मे अधसूखी कर ले। फिर इन गोलियो के ऊपर थोडा मृगांक रस का चूर्ण डालकर हिलायें और शीशी मे भरकर रख लें।[1]

गुण—इसके सेवन करने से पेट, हृदय, नाभी, पेडू तथा पासुओ का शूल अवश्य नष्ट हो जाता है। साथ ही यह भूख लगाती तथा अन्न मे रुचि उत्पन्न करती है।

मात्रा—एक से तीन तक सम्पूर्ण गोली।

अनुपान—कुछ गरम अथवा ताजा जल के साथ।

समय—शूल बन्द होने तक एक-एक घण्टे पर लेते रहे।

---

१. मृगाङ्क का चूर्ण गोलियों पर चढ जाने से गोलिया स्वर्ण के समान सुन्दर चमकने लगेंगी और निगलते समय कण्ठ में क्षार का भी असर नही होगा। इसके अतिरिक्त मृगाङ्क का चूर्ण गोलियों मे लगा होने के कारण गोलियाँ भी अधिक गुणदायक हो जायेंगी।

विशेष—पारद, गन्धक, बंग और नवसादर—इन चारों के योग से कज्जली तैयार करके जो मृगाङ्क रस तैयार किया जाता है वह तो शीशी के तलभाग में मिलता है और शीशी के गले मे गन्धक, पारद और नवसादर के अंश आपस मे मिलकर एक विलक्षण क्षार के रूप में बने हुए तैयार मिलते है। इसे होशियारी से शीशी के गले से निकालकर रख लें और मौके पर शूल बटी अथवा अन्यान्य औषधियो के बनाने के काम मे लायें।

विशूचिकान्त बटी

योग—लाल मिर्चा के छिलकों का कपडछन चूर्ण दो तोले, हीग तालाब अढाई तोले, [1]कपूर दो माशे, शुद्ध अफीम एक माशे, [2]चन्द्रोदय तीन माशे और प्याज का रस दस तोले।

बनाने की विधि—सब चीजो को प्याज के रस मे सोलह पहर तक घोटकर मूंग के प्रमाण की गोलियाँ बना लें और छाया मे सुखाकर रख ले।

मात्रा—एकाएक गोली पाँच-पाँच मिनट पर।

अनुपान—एक-एक तोले पुदीनादि क्वाथ के साथ।

गुण—इसकी चार-पाँच गोलियाँ (खुराक) सेवन करते ही कै, दस्त, शरीर का ऐंठना, प्यास तथा घबराहट आदि हैजे की सभी शिकायतें दूर हो जाती हैं। इसके सेवन करने से सौ मे नब्बे रोगी तो अवश्य ही बच जायँगे।

विशेष—रोगी को जब-जब प्यास लगे, निम्नोक्त पुदीनादि क्वाथ मे से थोडा-थोड़ा पीने को दें।

पुदीनादि क्वाथ

योग—सूखा पुदीना पाँच तोले, खस पाच तोले, बडी इलायची पाँच तोले और ताजा जल पाँच सेर।

बनाने की विधि—इनको मिट्टी के पात्र में डालकर काढ़ा बना ले। जब सवा सेर पानी शेष रहे उतार ले और कपडे से छानकर मिट्टी के बर्तन मे रखकर कपडे से ढक दें।

---

१. भीमसेनी कपूर हो तो और भी उत्तम। २. यदि चन्द्रोदय न हो तो कोई हर्ज नही।

क्वाथ छान लेने के बाद जो सीठी बचे, उसे मिट्टी के बर्तन में रखकर ऊपर से पाँच सेर पानी डालकर आग पर चढा दें और पूर्वोक्त विधि से इसका भी क्वाथ बनाकर रख लें। पहला क्वाथ समाप्त होने के बाद इसे देना शुरू करें। इस क्वाथ मे उपयुंक्त क्वाथ से कुछ कम गुण होता है।

तृषान्त बटी

योग—नीम के सीकों की जड का मोठा अंश पाँच नग, कालीमिर्च दो नग और जल एक माशा।

बनाने की विधि—इन्हे पीसकर पाँच गोलियाँ बना ले।

मात्रा—एक एक गोली पाँच-पाँच मिनट पर।

अनुपान—एक-दो तोला जल के साथ।

गुण—विशूचिका या ज्वर आदि किसी भी कारण से प्यास क्यो न हो, इससे उसका वेग अवश्य रुक जाता है।

अतिसारान्त बटी

योग—चन्द्रोदय अथवा सिन्दूर रस तीन माशे, अफीम तीन माशे और आदी का रस दो तोले।

बनाने की विधि—पहले चन्द्रोदय अथवा सिन्दूर रस को घोटकर महीन कर लें। खूब अच्छी तरह घुट जाय, उसमे अफीम और आदी का रस डालकर बारह घण्टे तक घोटें। उसके बाद ज्वार के प्रमाण की गोलियाँ बना लें।

मात्रा—एक से तीन गोली तक घोट कर दें।

अनुपान—मधु के साथ चार-चार घण्टे पर।

गुण—डेढ-डेढ सौ तक दस्त होते हो ऐसा अतिसार भी दो-तीन मात्रा मे ही मिट जाता है।

विशेष—पीपल की छाल जलायें। कोयले जलकर जब निर्धूम हो जायें, उन्हे पानी मे डालकर बुझा दें। उस पानी को छानकर रख दें और अतिसार वाले रोगी को प्यास लगने पर पिलायें। इसके पीने से प्यास अधिक नही सताती।

नीम का मलहम

योग—नीम का तेल एक सेर, राल एक पाव और गन्धाबिरोजा एक छटांक।

बनाने की विधि—एक सेर नीम का तेल कड़ाही में आग पर पकायें। तेल जब खूब गरम हो जाय, उसमे एक पाव पिसी हुई राल और एक छटांक गन्धा-बिरोजा डाल दें। तीनो चीजें जब एक दिल हो जायं, कडाही को संडसी से पकड़कर उसमें का तेल, एक मन पानी से भरी हुई मिट्टी की नांद (पहले से तैयार रखें) मे डाल दें। यदि कडाही मे कुछ लगा रह जाय तो दूसरा आदमी खुरच कर उसी नांद में डाल दे। चार-पांच घण्टे उसी पानी मे मलहम को छोड़ दें। फिर पानी से मलहम को निकालकर एक मोटे कपडे मे निचोड़कर छान लें और एक पीतल की बड़ी परात मे उसे रखकर ऊपर से एक-एक सेर पानी डालकर सौ-पचास बार खूब फेंटें। मलहम पानी से धुल जाय तब उसे मिट्टी के बर्तन मे रख छोड़ें। यह सफेद रंग का बहुत ही ठंडा और चिकना मलहम तैयार होगा। इस विधि से एक सेर नीम के तेल से चार-पांच सेर मलहम बन-कर तैयार होगा।

विशेष—अन्यान्य तेलो की तरह पानी मे डालने से यह तेल ऊपर की ओर छटकता नही इसलिए इसके बनाने मे किसी तरह का खतरा नहीं है।

गुण—यह मलहम सभी तरह के साध्य अथवा असाध्य जले हुए रोगी के कष्ट को दूर करने वाला है। लगाते ही दाह और वेदना शान्त हो जाती है। यह गर्मी के घाव तथा दाह के लिए उपकारो तथा महान् शीतल है। इसके मुकाबले मे शतधौत घृत भी कुछ नही है।

व्यवहार-विधि—इसे लेकर जले हुए घाव तथा दाह आदि पर अच्छी तरह लगा दें और ऊपर से एक साफ पतला कपडा साट दे।

अनुभव—हमारे पोस्टमैन का भाई सिर से पैर तक जल गया था। उसके जीने की बिलकुल आशा नही थी। उसके जले हुए अगो पर मदिरा वगैरह बहुत-सी चीजें लगायी गयी, परन्तु कुछ भी लाभ नही हुआ। उसे यह नीम का मल-

हम लगाने को दिया गया। वह पन्द्रह दिनो में ही इस मलहम से चंगा हो गया। इस मलहम से हमारी रसायनशाला मे बहुत-से रोगी अच्छे हो चुके हैं।

पामा तैल

किसी वैद्य—कवि ने खाज की चिकित्सा मे कहा है—

नखगिल-लालन-सुखदा पामा रामा-नितम्ब-विस्तारा।
स्नेह-कनक-रसगन्धैः पूर्वा गच्छति परा वश याति ॥

इस श्लोक में तेल, धतूरा, पारद और गन्धक—ये चार चीजें लिखी हैं, परन्तु इसका परिमाण, जाति, अग और विधि का कुछ निर्णय नही किया गया है, तथापि इसी आधार पर हमने निम्नलिखित योग तैयार किया है—

योग—अशुद्ध पारद एक छटाक, अशुद्ध लूणियां गन्धक दो छटांक, कडवा तेल एक सेर और धतूरे के पत्तो का रस दो सेर।

बनाने की विधि—अशुद्ध पारद और अशुद्ध लूणियां गन्धक—इन्हे घोटकर कज्जली कर ले। फिर कडवा तेल लेकर उसे लोहे की कडाही में आग पर पकायें। तेल जब खूब गरम हो जाय और उसमे धुआँ उठने लगे तब उसे नीचे उतार लें। जब वह ठण्डा हो जाय तब उसमे उपर्युक्त कज्जली और धतूरे के पत्तो का रस डालकर फिर आग पर चढा दे और कलछो से चलाते रहे। जब धतूरे के पत्तों का रस जल जाय, केवल उसकी तरी बाकी रहे, नीचे उतार ले और ठण्डा होने पर कपडे से छानकर बोतल मे भरकर रख लें।※

गुण—इसके व्यवहार से भयङ्कर-से-भयङ्कर और असाध्य-से-असाध्य खुजली भी अच्छी हो जाती है। चर्म-रोग की यह अच्छी दवा है। थोड़े अथवा सर्वाङ्ग में हाथी के चमडे की तरह खुजली क्यों न हो गयो हो, इस तेल के व्यवहार से अवश्य अच्छी हो जाती है। वायु के कारण जिनके हाथ-पैर जकड गये हो और

※ तेल छान लेने के बाद जो कीचड-सा बचे उसे भी पत्थर के खरल में घोटे और कपडे मे खूब निचोडकर उसमे का सब तेल जहाँ तक निकल सके, निकाल लें और उसी तेल में मिला ले।

इस कारण संकोचन और प्रसारण मे भी अधिक पीड़ा मालूम पड़ती हो तो उसे दूर करने के लिये यह औषध अव्यर्थ है। इसका व्यवहार करने से पांच-सात दिनो मे ही शरीर कंचन के समान शुद्ध हो जाता है।

इस तेल का सौ रोगियों पर प्रयोग किया जाय तो सभी अच्छे हो जायँगे एक मनुष्य भी असन्तुष्ट नहीं रहेगा।

व्यवहार-विधि—शरीर के जिस हिस्से मे खुजली हो, वहाँ पर इस तेल की धीरे-धीरे मालिश करनी चाहिये और मालिश के आधे घण्टे बाद उस जगह निम्नोक्त त्रिफला के क्वाथ का बफारा (स्वेद) देना चाहिये।

त्रिफले का क्वाथ

योग—त्रिफला (गुठली निकाला हुआ) का जवकुट एक सेर और पानी छः सेर।

बनाने की विधि—लोहे अथवा पीतल के बर्तन में छः सेर पानी और त्रिफला को डालकर आग पर पकायें। जब करीब एक सेर पानी जल जाय तब उसे उतार लें।

बफारा देने की विधि—जिस समय त्रिफले का काढ़ा आग पर पकता रहे, उसी समय चूल्हे मे दो बडी ईंट के टुकडे गरम होने को डाल दें और पामा तेल की मालिश शुरू कर दे। जब काढा तैयार हो जाय तब उसे चूल्हे से उतार ले और आग मे पकते हुए ईंट के गरम टुकडो को उसी काढे मे डाल दें और उस काढे को बहुत जल्दी एक खाट के नीचे जिधर रखा जाता है रख दे और खाट के ऊपर रोगी को बैठाकर उसके ऊपर से एक कम्बल ढँक दें जिससे सारा शरीर ढँक जाय। केवल श्वास लेने के लिए जरा-सी नाक बाहर रखनी चाहिये। ध्यान रहे, जिस अंग मे अधिक खाज हो, उसी अंग मे अधिक भाप (स्वेद) लगे और व्यर्थ इधर-उधर बेकार न जाय। पन्द्रह-बीस मिनट तक बफारा ले लेने के बाद रोगी के शरीर से कम्बल हटाकर उसका पसीना पोछ दें और एक हलका कपड़ा पहनाकर उसे निर्वात (जहाँ अधिक हवा न हो) स्थान मे विश्राम

करने दें। प्रातःकाल शौच-क्रिया के बाद रोगी को नीम, कार्बोलिक अथवा आगे लिखा हुआ कपूर का साबुन लगाकर स्नान करा दें।[१]

विशेष—यदि रोग प्रबल हो और इस कारण कुछ अधिक समय तक बफारा देने की आवश्यकता हो, तो उस काढे के पात्र को कोयले से दहकते हुए दमचूल्हे पर रखकर तब खाट के नीचे रखें। इस रीति से बहुत देर तक उपर्युक्त काढ़ा गरम रहेगा और उससे अधिक समय तक स्वेदन होता रहेगा।

शरीर में तेल लगाकर बफारा देने से रोम-कूपो के छिद्र खुल जाते हैं, उनके द्वारा भीतर के दोष निकल जाते हैं और उन छिद्रो के द्वारा तेल शरीर के अन्दर प्रवेश करके अधिक गुण करता है। मैने यह युक्ति "स्नेह-स्वेदोपपादनै. पञ्च-कर्माणि कुर्वीत" इस चरक-वचन से ली है।

अनुभव—पहले मै बिना बफारा दिये ही तेल का प्रयोग किया करता था। ऐसी दशा मे साधारण खुजली भी पखवारो मे अच्छी हुआ करती थी परन्तु जब से बफारा देना आरम्भ किया है, खुजली की तो बात क्या, प्रारम्भिक गलित कुष्ठ तक के रोगी भी अच्छे हुए है।

कपूर का साबुन

योग—कास्टिक सोडा ९० डिग्री का[२] आधा पाव, गरी का तेल तीन पाव, कपूर का महीन चूर्ण एक तोला और पानी एक पाव।

बनाने की विधि—कास्टिक सोडे को किसी चम्मच से उठाकर पत्थर, तामचीन अथवा मिट्टी के पात्र में रखें और ऊपर से पानी डालकर एक घण्टे तक छोड दे। जब कास्टिक पानी मे गल जाय और उसकी गरमाहट कम हो जाय तब कपूर और गरी के तेल को मिला लें और धार बांधकर कास्टिक सोडे के उपर्युक्त पानी में धीरे-धीरे डालते जायें और एक लकड़ी के डण्डे से चलाते

---

१. यदि गरमी के दिन हो तो ताजा और शीत ऋतु हो तो गरम जल से साबुन लगाकर स्नान करना चाहिये।

२. कास्टिक सोडा अंग्रेजी दवाखानो मे मिलता है। उसमे भूलकर भी हाथ नही लगाना चाहिये क्योकि हाथ से छूने पर वह जहा लगेगा वहीं के चमडे को तुरत जलाकर घाव कर देगा।

जायें। जब तेल और सोडे का पानी एकदिल हो जाय और जमना शुरू हो जाय तब उसे छ: घण्टे तक छोड़ दें। छः घण्टे के बाद चाकू से बर्फी की तरह काट लें और व्यवहार मे लायें।

दाद नाशक

योग—मिश्री, कत्था, फिटकिरी, कच्चा सुहागा, अमलासार गन्धक प्रत्येक एक तोला और नीबू का रस पांच तोले।

बनाने की विधि—सब दवाओं का महीन चूर्ण कर लें और उस चूर्ण को नीबू के रस में आठ घण्टे तक खूब घोटकर गोलियां बना लें अथवा मलहम ही रखें।

व्यवहार-विधि—रात्रि मे सोते समय इसको पानी मे घिसकर या वैसे ही दाद पर लगायें।

गुण—नयी अथवा पुरानी सभी तरेह की दाद जल्दी अच्छी हो जाती है।

विशेष—यदि दाद मे पूर्वकथित त्रिफला के क्वाथ का बफारा देकर बाद मे इसका व्यवहार किया जाय तो बारह वर्ष की पुरानी दाद भी क्यो न हो, अवश्य अच्छी हो जाती है।

खुजली-नाशक योग

योग—कपूर का साबुन और कलमी सोरा (तवे पर भुना हुआ) एक-एक तोला।

बनाने की विधि—कपूर का साबुन और भुने हुए कलमी सोरे को पानी के साथ पत्थर के खरल मे घोटकर पतला कर ले।

व्यवहार विधि—इस औषधि को लेकर शरीर मे मालिश करें और जब दो घण्टे तक औषधि का असर शरीर मे हो जाय तब खूब मलकर स्नान कर लें।

गुण—दो तीन दिन के अन्दर ही दाद और खुजली आराम हो जाती है। गरमी के दिनो मे पसीने के कारण होने वाली साधारण फुन्सिया और अम्हौरिया यह दो दिनो मे अच्छा कर देता है। यदि दाद पर उपर्युक्त दवा लगाकर 'त्रिफला

के क्वाथ' का बफारा दे दिया जाय तो तीन दिनों में ही दाद जड़ से आराम हो जाती है।※

जहरबाद का मलहम

योग—कपूर, सफेद राल, मुर्दाशख, मोम एक-एक तोला और गाय का घी एक छटाक।

बनाने की विधि—कपूर, सफेद राल और मुर्दासंख, इन्हे पीसकर और कपडछन करके रख ले। फिर घी को आग पर गरम करें। जब घी खूब गरम हो जाय तब उसमे मोम डाल दें। मोम और घी के एकदिल हो जाने पर उपर्युक्त चूर्ण डाल दें और लकडी से मिलाकर नीचे उतार ले। इस मलहम को एक कांसे की थाली मे रखकर एक सौ आठ बार बासी पानी मे रगड़-रगड़ कर धो डाले और गोल शीशी मे भर कर रख छोड़ें।

व्यवहार-विधि—इस मलहम को एक कपड़े मे लगाकर जहरबाद पर लगा देना चाहिये।

गुण—इसके व्यवहार से जहरबाद का शोधन, रोपण और पूरण सभी हो जाते हैं।

विशेष—जो घाव सड़ते-सड़ते हड्डी तक पहुँच गया हो, उस पर मनुष्य की जली हुई हड्डी, श्मशान-भूमि से लाकर उसके चूर्ण को घावो में भरकर ऊपर से 'जहरबाद का मलहम' लगा दे। बहुत-से घाव ऊपर से तो अच्छे हो जाते हैं, पर भीतर हड्डी का दोष नही मिटता, अत फिर अन्दर से सड़ने लगता है। उपर्युक्त विधि से हड्डी का चूर्ण व्यवहार करने से हड्डी के सभी दोष दूर हो जाते हैं। इसी प्रकार गाय, घोड़ा तथा ऊँट प्रभृति जानवरो को यदि हड्डी-सम्बन्धी घाव हो, तो उनमे भी उनके सजातीय जानवरो की हड्डी के चूर्ण का व्यवहार करने से घाव अच्छे हो जाते हैं।

अनुभव—हमारे एक पूज्य पुरुष का कहना है कि सड़ा-से-सड़ा जहरबाद का घाव, जिसका अच्छा होना बहुत मुश्किल है, इस मलहम के प्रयोग से अच्छा

※ केवल सुहागे को पानी मे पीसकर लगाने से भी दाद अच्छी हो जाती है।

हो जाता है। इसी मलहम से बीसों व्यक्ति अच्छे हो गये और मैं भी अच्छा हो गया।

बिरोजे का मलहम

योग—गन्धाबिरोजा बीस तोले, जंगाल छः माशे, भुना हुआ तूतिया चार रत्ती, कासगरी सफेदा एक तोला, सेन्धानमक दो माशे और भुनी हुई हल्दी का चूर्ण चार माशे।

बनाने की विधि—गन्धाबिरोजा को गरम करके कपडे से छान लें। फिर उसमें जगाल और तूतिया आदि बारीक छोटी हुई सभी चीजें डालकर और अग्नि पर पाँच मिनट तक रखकर लकड़ी से खूब मिला दे।

गुण—इसके लगाने से फोडे-फुन्सी मे मवाद नही आया होगा तो वह बैठ जायगी और यदि मवाद आ गया होगा तो फूटकर बह जायगा। इसके अतिरिक्त, बवासीर मे 'ग्रन्थि-भेदन क्षार' का प्रयोग करते समय भी इसका व्यवहार किया जाता है।

लगाने की विधि—किसी साफ कपडे पर मलहम लगाकर पट्टी चिपकानी चाहिये।

विशेष—प्रायः देखा गया है कि बालतोड आदि कारणो से पहले पीले मुख वाली फुन्सी निकलती है और उसी कारण फुन्सी के चारो ओर चार-पाँच अगुल तक चमडा लाल हो जाता है। उठने-बैठने मे बडी तकलीफ होती है। फुन्सी के पकने पर कभी-कभी चिरानी पडती है तथा उसके कारण महीनो कष्ट सहना पडता है। ऐसी फुन्सियो के उठते ही 'बिरोजे के मलहम' की पट्टी लगा देनी चाहिये और ऊपर से निम्नलिखित 'कायफलादि लेप' रखकर बाँध देनी चाहिये।

कायफलादि लेप

योग—कायफल का चूर्ण एक तोला और गोमूत्र अढाई तोला।

बनाने की विधि—कायफल के चूर्ण और गोमूत्र को एक कटोरी मे रखकर आग पर पकायें। जब पककर कुछ गाढ़ा हो जाय, उतार लें।

व्यवहार-विधि—एक पतले कपडे पर गरम-गरम इस औषध को फैलाकर जहाँ तक दर्द हो सुबह-शाम बांधें ।

गुण—इसके व्यवहार से बालतोड़ आदि के कारण उठी हुई फुन्सियो के चारो ओर का दर्द और लाली दूर होती है । यदि फुन्सी मे मवाद नही आया होगा तो वह बैठ जायगी और यदि मवाद आ गया होगा तो फूटकर बह जायगी ।

विशेष—घाव बहुत बढ गया हो और उसमे चौड़ा गड्ढा हो गया हो तथा उसमे से खून और मवाद निकलता हो या मास दीख पडता हो तो उसको निम्नलिखित 'निम्बादि' या 'कटफलादि' क्वाथ से धोकर आगे लिखे हुए 'वृण-पूरक चूर्ण' को भर देना चाहिये । इस चूर्ण से घाव बहुत जल्दी सूख जाता है। यदि इस चूर्ण के व्यवहार से घाव चरचराने लगे तो उस पर 'नीम का मलहम' अथवा कडवा तेल लगाकर उपर्युक्त 'कायफलादि-लेप' चढा दें या निम्न-लिखित 'सेन्धवादि मलहम' मे से किसी एक को ऊपर से लगा दें ।

वृण-पूरक चूर्ण

योग—कायफल एक छटांक और मुर्दाशंख दो छटांक ।

बनाने की विधि—दोनो को कूट और कपडछन करके रख लें ।

गुण—इसे घाव पर लगाने से वह शीघ्र सूख जाता है ।

विशेष—घाव सूखने पर यदि कुछ चर्राने लगे तो उस पर तेल अथवा घी लगा देने से शान्ति मिल जायगी ।

सेन्धवादि मलहम

योग—सेन्धानमक (महीन पिसा हुआ) चार रत्ती, मोम एक माशा और गाय का घी दो तोले ।

बनाने की विधि—तीनो चीजो को मिलाकर आग पर गरम करके रख ले ।

गुण—सूखे चमडे को जल्द मुलायम करता है और घावो तथा जाडे के दिनो मे होंठो और बिवाई का फटना बन्द कर देता है ।

नम्बादि क्वाथ

योग—नीम की पत्तियाँ एक छटाँक, फिटकिरी एक तोला और पानी एक सेर।

बनाने की विधि—तीनो चीजों को मिट्टी की हाँडी में रखकर आग पर पकायें। आधा सेर पानी रहे उतारकर छान ले और काम मे लायें।

गुण—यह सभी तरह के घावो को धोने के लिए सुप्रसिद्ध है।

कटफलादि क्वाथ

योग—कायफल आठ आने भर, मुर्दाशख चार-चार आने भर, फिटकिरी आठ आने भर, नीम की पकी पत्तियाँ एक छटाँक और पानी एक सेर।

बनाने की विधि—नीम की पत्तियो को छोडकर उपर्युक्त तीनो सूखी हुई औषधियो को कूट लें और एक मिट्टी के पात्र मे एक सेर जल डालकर उसमें उपर्युक्त कूटी हुई औषधियों और नीम की पत्तियो को डालकर आग पर चढ़ा दे। जब आधा सेर बचे, उतारकर कपडे से छान लें और काम में लायें।

गुण—भयंकर-से-भयंकर सडे हुए घावो को धोने के लिए उत्तम है।

ज्वर बटी

योग—हल्दी, दारुहल्दी, कालीमिर्च, आँवला, सोठ, बडी हरड़, चित्रक कूट, छोटी पीपल, सेन्धानमक, नीम की पत्तियाँ, नीम पर की गुरुच प्रत्येक एक-एक तोला, नागरमोथा चार तोला और नीम पर की गुरुच का जल दस तोले।

बनाने की विधि—सेन्धानमक और गुरुच को छोड़कर सभी औषधियो को हिमामदस्ते में कूटें। सब औषधियाँ जब अधकचरी हो जायँ, तब उनमे कच्ची गुरुच को मिलाकर कूटे और अधकचरी अवस्था मे ही सभी औषधियो को धूप में सूखने के लिए रख दें। जब सूख जायँ तब कूटकर कपड़छन कर लें। फिर सेन्धानमक मिला लें और पत्थर के खरल में डालकर ऊपर से गुरुच के जल के साथ घोंटें। घुट जाने के बाद मटर के समान गोलियाँ बना सुखाकर रख ले।

गुरुच का जल बनाने की विधि—रात को मिट्टी या पत्थर के बर्तन मे आध पाव जल डालकर उसमें आधा पाव गुरुच कूटकर डाल दें और रात भर भीगने दें। प्रातःकाल उसको पानी से निकालकर सिल पर भांग की तरह घोंट ले और

उसके बचे हुए जल में ही छानकर रख लें। यही गुरुच का जल ज्वर वटी के बनाने मे काम ले।

मात्रा—एक से तीन गोली तक।

अनुपान—आगे लिखे हुए 'दार्वादि क्वाथ' के साथ।

गुण—इससे पारो से आने वाला ज्वर तथा सभी तरह के ज्वर नष्ट होते हैं। यह बालक, वृद्ध सभी के लिए समान उपकारी है।

दार्वादि क्वाथ

योग—दारुहल्दी, इन्द्रयव, मजीठ, ब्राह्मी, देवदारू, नीम की गुरुच, आँवला, पित्तपापडा, निशोथ, तगर, गजपीपल, नीम की छाल, छोटी कटोरी, नागरमोथा, अमलतास, सोठ, पद्‌माख, कचूर, शुद्ध हीग, सरलकाष्ठ, बनफ्शा, कॉंगनी, चिरायता, भिलावा, पाढल, कुटकी, पीपल, डाभ की जड, धनिया, जावित्री, जायफल और नर लौंग प्रत्येक एक-एक तोला।

बनाने की विधि—सब औषधियो का जवकुट करके रख छोडें। इसमें से छः माशे चूर्ण लेकर एक पाव जल के साथ मिट्टी की हाँडी मे डालकर पकाये। जब एक छटाँक जल शेष रहे उतार लें और कपडे से छानकर उसमे तीन माशे शहद डालकर व्यवहार करें।

काढे को छानने के बाद जो सीठी बचे, उसे एक पाव पानी डालकर दिन भर रख छोडे। शाम को उबालकर पूर्वोक्त विधि से फिर काम में लाये।

गुण—यह दार्वादि क्वाथ सभी तरह के ज्वरो को नष्ट करता है। बालक, बूढे सभी के लिए समान लाभदायक है।

उपर्युक्त ज्वर वटी तथा इसी तरह की किसी और दूसरी औषधि के अनुपान मे इस क्वाथ का व्यवहार करे। केवल इसी काढे को पिलाने से भी कई तरह के ज्वर अच्छे हो जाते हैं।

मोतीझरान्तक

राई की तरह महीन एक-एक सच्चा मोती [1] सुबह और शाम निगलवाकर उसके एक घण्टे बाद उपर्युक्त विधि से दार्वादि क्वाथ बनाकर एक छटाँक पिलाना चाहिए।

---

१. ऐसे छोटे मोती सस्ते मिलते हैं।

विशेष—यदि रोगी को प्यास लगे तो औटाकर ठंडा किया हुआ जल देना चाहिये।

पथ्य—भूख लगने पर रोगी की इच्छानुसार दस, पन्द्रह या बीस सिका हुआ[२] काला मुनक्का दें। दूसरी बार यदि भूख लगे तो गाय का दूध दें और तीसरी बार भूख लगने पर मूँग की दाल और पतली रोटी दें।

वरा क्षार

योग—त्रिफला, मंदार के पत्तों का रस और सेंधानमक प्रत्येक एक-एक सेर।

बनाने की विधि—त्रिफले को पत्थर, मिट्टी अथवा चीनी के पात्र मे रखकर ऊपर से मंदार के पत्तों का रस डालकर मिला दें और धूप मे सूखने दें। जब मंदार का रस सूख जाय तब कपडमिट्टी किये हुए एक मिट्टी के घडे मे कुछ मदार के पत्ते बिछा दें और ऊपर से थोडा-सा सेंधानमक पत्तो पर फैला दें। फिर उस पर त्रिफला रखकर नमक और नमक के ऊपर मदार के पत्ते रखें। इसी प्रकार मंदार के पत्ते त्रिफला और नमक क्रमशः तह-पर तह रखते चले जायँ जब उपर्युक्त मिट्टी के घडे मे सब चीजे रख चुके, तब घडे का मुँह ढक्कन से बन्द कर मुद्रा करके सुखा ले और गजपुट मे फूँक दें। ठडा हो जाने पर घडे का मुँह खोलकर क्षार निकाल लें और उसे कूटकर महीन छानकर रख लें।

मात्रा—एक से चार माशे तक।

अनेक रोगों पर अलग-अलग अनुपान—मदाग्नि मे—चित्रक के काढे अथवा गरम जल के साथ। खाँसी में—शहद अथवा अनार के छिलके और बहेडे के साथ। बवासीर मे—हरड और गुड़ के काढे के साथ। मूत्रावरोध में—मिश्री, जवाखार तथा सफेद कोहडे के स्वरस के साथ। श्वास मे—कटेरी के काढे के साथ। अरुचि मे—ठण्डे पानी के साथ। अतिसार मे—बेल के गूदे के काढे के साथ। दाह में—

---

२. पन्द्रह-बीस काले मुनक्के लेकर उसके बीज निकाल डाले। उन्हे लोहे की सीक मे पिरोकर ऊपर से सात काली मिर्च और एक माशा सेंधानमक पीसकर मुनक्कों पर चढ़ा दें और आग मे सेककर काम में लायें।

मिश्री के शरबत के साथ । वमन मे—ताजा जल के साथ । विष्टम्भ में—कुटकी और अमलतास के काढे के साथ । शीत मे—भुनी हीग के साथ । ज्वर में—पीपल और चिरायते के काढे अथवा सुदर्शन चूर्ण के काढे के साथ । बच्चो की कुकुरखांसी में—मुलेठी के काढे के साथ । कमजोरी मे—सोठ, गोखरू, गिलोय, धनिया तथा मिश्री के काढे के साथ ।

वरा मोदक

योग—बड़ी हरड़, बहेडे और आंवले का छिलका एक-एक पाव, गाय का घी आधा पाव और मिश्री का चूर्ण डेढ सेर ।

बनाने की विधि—गुठली निकाले हुए हरड़, बहेडे और आंवलो को कूटकर कपड़छन कर लें । फिर उसे गाय के घी मे मंदी-मंदी आंच से भूनें । सुगन्ध जब उठने लगे, मिश्री के चूर्ण को मिलाकर कडाही को नीचे उतार ले और पानी के छींटे दे-देकर एक-एक तोले का मोदक बना ले ।

गुण—यह मोदक कब्ज, मंदाग्नि, रक्त विकार, ज्वर, कास तथा बवासीर का नाशक है । इसके सेवन करने से वीर्य की वृद्धि होती है, भूख खुलकर लगती है, तथा शरीर मे बल की वृद्धि होती है । यह भ्रमणकर्त्ताओ के लिए विशेष हितकर है । इसे बराबर व्यवहार करते रहने से परदेश का पानी असर नही करता ।

व्यवहार-विधि—रात को सोते समय एक मोदक खाकर ऊपर से पाव भर या आधा सेर गरम दूध पीना चाहिये । दूध न मिल सके तो ताजे जल के साथ ही सेवन करना चाहिये ।

अर्शो बटी

योग—चित्रक (चीते) की जड़, शुद्ध सुहागा, हल्दी और गुड़ प्रत्येक एक-एक तोला ।

बनाने की विधि—चित्रक (चीता) की जड़ का चूर्ण, शुद्ध सुहागा और हल्दी का चूर्ण, इन्हे पहले गुड के साथ मिलाकर घोटें । जब सब एकदिल हो जाय, तब जरा-जरा पानी का छीटा दे-देकर बहेडे के बराबर गोली बना ले ।

गुण—इस औषधि के लगाने से बवासीर के मस्से सूख जाते है ।

व्यवहार-विधि—जो मनुष्य प्रतिसारणीय क्षार आदि तीक्ष्ण औषधि के प्रयोग से घबराते हो, उन्हें यह औषधि व्यवहार करनी चाहिए। इस औषधि से कष्ट नही होता। जिन्हे बवासीर के मस्से हो, वे इस औषधि को पानी मे घिसकर रात्रि को सोते समय मस्से पर लेप करें और जिन्हे बडे-बडे मस्से हो और शौच के समय बाहर निकलते हो, वे शौच जाते समय इस औषधि को पानी मे घिसकर एक पत्ते पर ले जाया करें और आबदस्त ले लेने के बाद मस्सो पर इस औषधि को लगाकर उन्हे भीतर घुसा दिया करें।

हरीतकी बटी

योग—बड़ी हरड़ का चूर्ण एक पाव और पुराना गुड़ दो सेर।

बनाने की विधि—पुराने गुड में बडी हुरड के कपडछन चूर्ण को मिलाकर कुछ देर खरल मे घोटें और जब दोनो मिल जायें शीशे के पात्र में रखकर ढक्कन देकर रख छोड़ें।

मात्रा—छः माशे से एक तोला तक।

गुण—इसके खाने से दस्त साफ होता है तथा कुछ दिनो मे बवासीर नष्ट हो जाती है।

व्यवहार-विधि—रात को सोते समय इसे छः माशे से एक तोले तक खाकर ऊपर से थोडा गरम या ताजा जल पीना चाहिये।

अड़ूसादि क्षार

योग—अडूसे के पत्ते, नीम के पत्ते, कटेरी और पाँचो नमक प्रत्येक एक-एक सेर।

बनाने की विधि—इन सब को कूटकर और तीन बार कपडमिट्टी किये हुए मिट्टी के पात्र मे भरकर गजपुट मे फूंक दें। पात्र जब ठडा हो जाय औषधि को पात्र से निकालकर और कपड़छन करके रख लें।

मात्रा—डेढ़ से छ. माशे तक।

अनुपान—शहद।

गुण—विशेषकर खासी के लिए बहुत उपयोगी है।

विशेष—अडूसादि क्षार के विशेष गुण और अनुपान की कल्पना 'वराक्षार' की तरह अपनी बुद्धि से करें।

कुसुम वटी

योग—मदार के फूल और सेंधानमक एक-एक पाव और आदी का रस डेढ़ पाव।

बनाने की विधि—मदार के फूल और सेंधानमक को आदी के रस में घोटकर मटर के बराबर गोली बना ले और धूप में सुखा लें।

गुण—यह मंदाग्नि, फसली खाँसी और साधारण बुखार के लिए उपयोगी है।

व्यवहार-विधि—मंदाग्नि, खाँसी अथवा खाँसी के कारण होने वाले बुखार मे तीन-तीन घण्टे पर एक-एक गोली गरम जल से देनी चाहिये।

कंठदाह पर ठंढई

योग—कासनी, गुलाब के फूल, कालीमिर्च, काला मुनक्का, छोटी इलायची के बीज, बादाम की गरी, खीरा के बीज, ककड़ी के बीज, पोस्ता के दाने प्रत्येक एक-एक तोला और धुली हुई भाँग चार रत्ती।

बनाने की विधि—सब को मिलाकर रख लें। इसमे से दो तोले ठंढई और दस तोले गुलकन्द को अलग-अलग पीसकर नीचे लिखे 'शीतल जल' के साथ छान-कर शरबत बना लें और व्यवहार मे लायें।

गुण—इस ठंढई के दस-पन्द्रह दिनों तक लगातार सेवन कर लेने से भूख खूब लगती है, दस्त साफ होते हैं और मस्तक मे तरावट बनी रहती है। यदि ग्रीष्म ऋतु में स्वस्थ मनुष्य इस ठंढई का सेवन करे तो उसे इतनी तरी मालूम पड़ेगी कि फिर इसके सामने खस की टट्टियों की तरी व्यर्थ सिद्ध होगी। ठंढई छानने के बाद बची हुई सीठी मे थोड़ा गुलकन्द मिलाकर शाम को भी व्यवहार कर सकते है।

विशेष—इच्छाभेदी या गोपीजल का जुलाब लेने के बाद यदि पेट मे दर्द होने लगे तो ऐसी अवस्था मे 'शूल वटी' की दो-तीन गोलियाँ गरम दूध के साथ सेवन करनी चाहिये, अथवा मिश्री डाला हुआ गरम दूध पीना चाहिये। यदि वमन द्वारा दूध निकल जाय तो फिर दस मिनट के बाद दूध ही पीना चाहिये। जब दस-

बारह दस्त होने से कोष्ठ का अजीर्ण दूर हो जाय, चित्त स्वस्थ मालूम पडे और क्षुधा भी लग जाय, तब मूंग की दाल-चावल की खिचडी मे घी डालकर गरम-गरम खायें। इसके अतिरिक्त जब से दस्त लगने शुरू हो तब से गरम पानी से ही शौचादि-कर्म तथा हाथ-पैर धोने चाहिये।

यदि मनुष्य उपर्युक्त पथ्य का पालन न करके मनमाना आहार-विहार प्रारम्भ कर देता है तो उसे कष्टों का सामना करना पड़ता है। उदाहरणार्थ—जुलाब लेने के बाद यदि किसी कारणवश उदर शूल तथा घबडाहट प्रारम्भ हो जाय तो उस अवस्था मे दूध पीने का विधान है, किन्तु ऐसा न करके रोगी अपनी इच्छा के अनुसार दाल-रोटी तथा भात आदि पदार्थ या बहुत देर का ठण्डा अन्न और दही वगैरह का सेवन करता है तो उसे भयंकर कठ-दाह शुरू हो जाता है। इसके कारण श्वास लेने मे भी भयकर कष्ट का अनुभव होने लगता है। इस अपथ्य के कारण उत्पन्न हुआ दाह, सितोपलादि चूर्ण या मक्खन-मिश्री आदि से भी जल्दी शान्त नही होता, बल्कि और रोगान्तर पैदा हो जाते है। ऐसे ही मौके पर दुर्घटना से बचने के लिए उपर्युक्त ठढई पीना बहुत ही उत्तम है।

शीतल जल विधि

एक छायादार मकान मे दो-चार मन बालू या पीली मिट्टी डालकर उसे पानी से तर कर दें। बालू या मिट्टी के बीच में गड्ढा बनाकर, उस गड्ढे मे दो-चार सेर कलमीसोडा भर दें। उस कलमीसोडे में भी एक गड्ढा करके उसके बीच में शीत-ऋतु के बने हुए कंकड़ीली मिट्टी के घडे मे पानी भरकर जमा दें। उस घडे के ऊपर पानी से भीगा हुआ कपडा लपेट दे। घडे के जल मे खस, कपूर और धनिया चार-चार आने भर लेकर एक साफ कपड़े मे पोटली बांधकर डाल दे।

गुण—इस पानी के सामने बरफ की आवश्यकता नही होती क्योकि उसकी अपेक्षा इसमे तरी अधिक रहती है और यह गुणदायक भी है।

विशेष—उपर्युक्त विधि से अपनी आवश्यकता के अनुसार पांच-सात घडे भी रक्खे जा सकते हैं। कलमीसोडा तो एक बार का रक्खा हुआ महीनो चलेगा पर खस आदि की पोटली तीसरे दिन बदल देनी चाहिये।

गुडूची—सत्त्व विधि

योग—मोटी गिलोय पाँच सेर और पानी बीस सेर।

बनाने की विधि—गिलोय के टुकडे-टुकडे करके हिमामदस्ते मे कूट लें और एक मिट्टी की नांद मे बीस सेर पानी डालकर उसी मे कुटी हुई गिलोय को डालकर और हाथो से खूब मलकर कपडे से छान लें। उस छने हुए गिलोय के पानी को एक दूसरी नांद मे आठ-दस घण्टे तक पडा रहने दें। जब पानी स्थिर हो जाय, धीरे-धीरे ऊपर से पानी निकालकर अलग रख ले और नांद के नीचे जमे हुए उजले हिस्से को मिट्टी की थालियो मे रखकर धूप मे सुखा ले।

विशेष—इस बात का ध्यान रहे कि थाली में निकाला हुआ गाढा सत्त्व एक ही दिन मे सूख जाय। कई दिनो तक गीला रहने से सत्व सड जायगा और उसमे से बदबू आने लगेगी। पूस, माघ के महीनो मे सत्व निकालना चाहिये, क्योकि उन दिनो मे औषधियाँ परिपक्व-वीर्य रहती हैं तथा धूप भी आवश्यकता के अनुसार मिल जाती है।

हिमकषाय और उसकी कल्पना—गुरुच से सत्त्व निकालते समय जो निथरा हुआ पानी निकलता है, वही गुरुच का हिमकषाय है। गुरुच का संपूर्ण गुण उसी मे है, सत्त्व तो उसका एक अश, श्लेतसार (स्टार्च) है, परन्तु वैद्यगण उस महान् गुणकारी गुरुच के हिमकषाय-भाग को व्यर्थ समझकर फेक देते हैं यह ठीक नही। इस हिमकषाय का सत्त्व बनाकर, गुरुच के उजले सत्त्व से मिलाकर देखे तो इसका सहज ही निर्णय हो जायगा। हमने उक्त हिमकषाय से सत्त्व बनाकर कई बार परीक्षा की है। दोनो सत्त्वो की तुलना करने पर हिमकषाय वाला सत्त्व ही श्रेष्ठ मालूम हुआ, क्योकि हिमकषाय वाले सत्त्व की गन्ध, स्वाद और गुण उपर्युक्त श्वेत रग के गुरुच के सत्त्व से कही अधिक है। इससे सिद्ध होता है कि गुरुच का असल सत्त्व तो यही है। लिखने का तात्पर्य यह है कि वैद्य लोग हिमकषाय को न फेंका करें; प्रत्युत उससे अत्यन्त गुणकारी सत्त्व बनाकर व्यवहार करें और लाभ उठायें।

गिलोय से सत्त्व निकालते समय मैंने सोचा कि जब वैद्य लोग एक-एक, दो-दो तोले औषधि के हिम का रोगियो पर प्रयोग करके उसे प्राणदान देते है, तब मनो

गुरुच का हिम फेंक देना बुद्धिमानी नहीः इससे न मालूम कितने रोगी अच्छे हो सकते हैं। बस, इसी बिचार से गुरुच के हिमकषाय से सत्त्व बनाने की कल्पना हुई।

गुडूची हिमकषाय सत्त्व विधि

मिट्टी की नांद पर तीन-चार बार कपडमिट्टी करके सुखा ले। उसमे गुरुच के पूर्वकथित हिमकषाय को भरकर 'सर्वार्थंकरी भट्ठी' (इसका सचित्र विशेष विवरण 'रसायनसार' मे देखिए) के मुख पर एक लोहे का चूल्हा रख दें और उसी पर उक्त नाद को बैठा दे। जब हिमकषाय गाढ़ा हो जाय, तब नांद को उतार ले और उसमे से गाढा सत्त्व निकालकर मिट्टी को थाली मे रखकर धूप मे सुखा ले।

विशेष—सर्वार्थंकरी भट्ठी पर सत्त्व बनाते समय यदि चाहे तो आप एक साथ ही कई औषधियाँ बना सकते हैं। भट्ठी के दोनो दरवाजो मे लकडी जला दें और भस्मो के दो-चार सम्पुट भी पकने को रख दे। भट्ठी के अन्दर लोहे की जाली पर पत्थर कि कोयले जला दें और उस पर बंग आदि धातुओं के शोधने के लिये बडा-सा कलछा भी तपने को रख दें। ऊपर के चूल्हे के कारण कलछे में बँधी हुई आँच लगेगी। इस प्रकार सभी औषधियो के साथ साथ गुरुच के हिमकषाय का सत्त्व बेदाम-कौड़ी के ही बन जायगा।

बलवर्द्धक योग सं० १

योग—गिलोय का सत्त्व या हिमकषाय का सत्त्व और सितोपलादि चूर्ण एक-एक तोला।

बनाने की विधि—इन्हे खरल में खूब घोटकर रख ले।

मात्रा—तीन माशे से छ. माशे तक।

अनुपान—मक्खन-मिश्री अथवा मलाई।

व्यवहार-विधि—इसे सुबह और शाम नियमपूर्वक कुछ दिनो तक सेवन करना चाहिये।

गुण—इसके सेवन से राजयक्ष्मा, सूखी खाँसी तथा दाह आदि अनेक रोग नष्ट होते हैं। यह बल की वृद्धि भी करता है।

बलवर्द्धक योग सं० २

योग—गोदन्ती हरताल भस्म, गुरुच या हिमकषाय का सत्व और शिलाजीत की मलाई एक-एक माशे और चन्द्रोदय एक रत्ती।

बनाने की विधि—पहले खरल में पन्द्रह-बीस मिनट तक चन्द्रोदय को खूब घोंट लें, फिर उसमे बाकी चीजें घोटकर शीशी मे रख लें।

मात्रा—एक से डेढ़ माशे तक।

अनुपान—छः माशे शहद।

व्यवहार-विधि—नियमपूर्वक एकतीस दिन प्रातःकाल चाटना चाहिये।

गुण—इसे महीने दो-महीने सेवन करने से मनुष्य शरीर और धातुओं से मजबूत हो जाता है।

प्रमेहान्तक सं० १

योग—कायफल और गुरुच या हिमकषाय का सत्व दो-दो तोले और शुद्ध शिलाजीत की मलाई चार तोले।

बनाने की विधि—कायफल को कूटकर कपड़छन कर लें और तीनों चीजों को मिलाकर रख लें।

अनुपान—पावभर गाय का ताजा दूध।

व्यवहार-विधि—प्रातःकाल एक माशा औषधि खाकर ऊपर से ताजा दूध पीना चाहिए।

गुण—इसके सेवन से सर्व प्रमेह दूर हो जाते है।

प्रमेहान्तक सं० २

योग—कायफल का चूर्ण, गुरुच का सत्व, गोदन्ती हरताल भस्म और ईसबगोल का चूर्ण दो-दो तोले और शुद्ध शिलाजीत की मलाई चार तोले।

बनाने की विधि—शिलाजीत की मलाई में सब औषधियों के कपड़छन चूर्ण को भलीभाँति मिलाकर रख ले।

मात्रा—डेढ़ माशे से तीन माशे तक।

अनुपान—पाव भर गाय का धारोष्ण दूध।

गुण—नियमपूर्वक लगातार सुबह सेवन करने से बीसों प्रकार के प्रमेह नष्ट होते हैं।

प्रमेहान्तक सं० ३

योग—गोदन्ती हरताल भस्म और गुरुच का सत्त्व एक-एक तोला।

बनाने की विधि—इन्हे खरल में घोटकर रख लें।

मात्रा—चार रत्ती से एक माशा तक।

अनुपान—छः माशे शहद।

व्यवहार-विधि—प्रतिदिन प्रातःकाल एकवीस दिनो तक इसका सेवन करना चाहिए।

गुण—इससे प्रमेह रोग नष्ट होता है।

ज्वरनाशक योग

योग—गुरुच का सत्त्व और पीपल एक एक तोला।

बनाने की विधि—पीपल को खूब महीन घोट लें, बाद मे गुरुच सत्व के साथ घोंटकर रख लें।

मात्रा—एक से तीन माशे तक।

समय—प्रातः और सायंकाल इसे चाटना चाहिए।

अनुपान—छः माशे शहद।

गुण—इसके सेवन से जीर्ण ज्वर तथा साधारण ज्वर नष्ट होते हैं।

विशेष—यदि ज्वर मे अधिक प्यास लगे तो पीपल की छाल को आग में जलाकर उसके निर्धूम कोयले को पानी में बुझाये और वही पानी छानकर रोगी को पिलाये।

बधिरतानाशक तैल

योग—विषगर्भ तैल[1] दस तोले और अफीम एक तोला।

---

१. हम यह विषगर्भ तैल 'योगचिन्तामणि' के पाठ के अनुसार बनाकर उसमें सोलहवाँ हिस्सा 'बालुकागर्भ-पातालयन्त्र' के द्वारा निकाला हुआ वत्सनाभ विष का तेल मिलाते हैं। जो वैद्य इस तेल को न बना सकें वे हमारी रसायनशाला से मँगा लें।

बनाने की विधि---विषगर्भ तैल और अफीम दोनो को लोहे की कड़ाही में रखकर आग पर पकाये। जब अफीम जल जाय कड़ाही को नीचे उतार लें और कपडे से छानकर बोतल मे रख छोडें।

व्यवहार-विधि—इस तेल को गरम कर, रात्रि को सोते समय दो-तीन बूंद कान मे टपकाकर रूई के फाहे से कान के छेद को बंद कर दें। प्रातःकाल 'निम्बादिक्वाथ' से छोटी पिचकारी के द्वारा कान को धोकर साफ कर लें और कपडे की बत्ती या रूई के फाहे से कान के पानी को सुखा ले। फिर एक हाथ लम्बी पीतल की पिचकारी लेकर पिचकारी के नुकीले अग्रभाग को वधिर के कान मे प्रवेश करायें।[1] कान मे पिचकारी को ले जाने के बाद, कान के बाहर के बाकी खुले हुए हिस्से को कपडे से ऐसा बद करें कि जिससे पिचकारी से भीतरी हवा खीचते समय, बाहर की हवा भीतर कान मे तनिक भी प्रवेश न करने पावे। यदि कपडा कही से भी ढीला रहेगा तो बाहरी हवा को पिचकारी खीचना शुरू करेगी और इस प्रकार शब्द-वाहिनी नाडियो के मुख न खुलने के कारण फिर सभी क्रियाएं व्यर्थ हो जायेंगी।

पिचकारी और उसके चारो ओर कान के छिद्र के नजदीक लपेटे हुए कपडे को पकडे रहे और पिचकारी को इधर-उधर हिलने न दें। फिर एक दूसरे होशियार आदमी से कहे कि वह पिचकारी के गज को ऊपर की ओर खूब जोर से खीचे, जिससे कान की शब्द-वाहिनी नाडियो का मुख हवा के खिचाव के साथ ही खुल जाय। जब पिचकारी का समूचा गज बाहर खिच जाय, तब पिचकारी के अग्रभाग को कान से हटाकर बाहर निकाल ले और पिचकारी के भीतर भरी हुई दूषित हवा को बाहर कर दें। इसी प्रकार तीन बार भीतरी हवा को पिचकारी से खीचकर बाहर निकाले। पिचकारी का प्रयोग करते समय, रोगी को ऐसा अनुभव होने लगता है कि कान से वायु खिच रही है। तीन बार की हवा निकाल

१. ध्यान रहे कि पिचकारी का नुकीला अग्रभाग, अधिक रूप मे कान के अदर प्रवेश न करने पावे। यदि उसे कान के भीतर बहुत अधिक प्रवेश करावेगे तो कान की झिल्ली के फटने की सम्भावना है।

देने के बाद नीचे लिखे हुए 'वधिरत्तानाशक विन्दु' की तीन-चार बूँदें कान मे डालकर रूई के फाहे से कान के छेद को वद कर दें।

गुण—एकतीस दिनों तक इसी प्रकार कान की चिकित्सा करने पर दो-तीन वर्षों का बधिर भी सुनने लगता है।

विशेष—निम्बादिक्वाथ से रोज कान धोने की जरूरत नही, तीन-चार दिनो के बाद, एक दिन धो देना चाहिए। कान धोते समय निम्बादिक्वाथ को कुछ गरम रखना आवश्यक है।

वधिरत्तानाशक विन्दु

योग—असली ब्रान्डी आधा सेर और अफीम चार तोले।

बनाने की विधि—एक बोतल मे आधा सेर असली ब्रान्डी रखकर ऊपर से चार तोले अफीम टुकडे-टुकडे करके डाल दें और बोतल का कार्क खूब अच्छी तरह वद करके उसे ऐसे स्थान पर टाँग दें जहाँ पर प्रातःकाल से सायकाल तक तो सूर्य की धूप लगती रहे और रात भर चन्द्रमा और ताराओं की चाँदनी पड़ती रहे। पन्द्रह दिनो के बाद बोतल की दवा को कपडे से छानकर, दूसरी बोतल मे रख छोडे।

मात्रा—दो-तीन बूँद कान मे डालें।

व्यवहार विधि—जिस कान से सुनाई न पड़ता हो, उसमे इस औषधि की दो-तीन बूँदे टपकाकर, रूई से कान के छिद्र को बन्द कर दें।

गुण—इसके व्यवहार से दो-तीन वर्ष का वहिरा व्यक्ति सुनने लगता है और फिर कभी उसे बहरापन नही होने पाता।

योनिसंकोचन सं० १

योग—बबूल के पत्तो का चूर्ण एक छटाँक, माजूफल का चूर्ण दो छटाँक, बंगभस्म एक तोला और मोती भस्म तीन माशे।

बनाने की विधि—बबल के पत्तों और माजूफल को अलग-अलग कूटकर कपडछन कर ले, फिर बग और मोती भस्म मिलाकर कुछ देर तक खरल मे घोटकर शीशी मे रख लें।

गुण—इस चूर्ण के प्रयोग से, ढीली योनि फिर नवीना की तरह हो जाती है

तथा स्त्रियों के सभी तरह के प्रदर और योनि-रोग अर्थात् पानी आना, अँवर निकलना, दुर्गन्ध आना आदि ठीक हो जाते हैं।

मात्रा—योनि मे रखने के लिए चार रत्ती और खाने के लिए दो माशे।

अनुपान—शहद मे मिलाकर चाटे।

व्यवहार-विधि—ढीली योनि मे यह चूर्ण चार रत्ती रखकर सहवास करना चाहिए।

विशेष—यदि वाह्य उपचार के साथ-साथ इस चूर्ण की दो माशे की मात्रा शहद के साथ खाई भी जाय तो उपर्युक्त सभी गुणो का अनुभव अति शीघ्र होने लगता है।

योनिसंकोचन सं० २

(केवल वाह्य उपचार के लिए)

योग—छोटीमाई, माजूफल, समुद्रशोष, फिटकिरी, धतूरे के बीज, अजवाइन, एगुये के बीज की गिरी और कनेर की फली प्रत्येक एक-एक छटाँक और सेमल की जड का रस या क्वाथ एक पाव।

बनाने की विधि—इन आठो औषधियो को कूट और कपड़छन करके पत्थर के खरल मे रखकर सेमल की जड़ की छाल के रस अथवा उसके काढे मे भावना देकर दोपहर तक घोटे। जब चूर्ण सूख जाय, फिर रस अथवा काढे को तीन भावनाएँ देकर सुखा लें।

गुण—योनिसंकोचन।

मात्रा—दो रत्ती।

व्यवहार-विधि—सहवास के समय इस चूर्ण को योनि मे रखकर प्रसंग करना चाहिये।

नपुंसकतानाशक तिला

योग—जमालगोटे की मीगी, सफेद कनेर की जड़, लौंग, दालचीनी और बड़ी इलायची आधा-आधा तोला, जायफल, बीरबहूटी, केंचुआ और मालकांगनी एक-एक तोला और गाय का दूध अढ़ाई सेर और महुए की शराब दस तोले।

बनाने की विधि—सभी औषधियो को कूटकर कपडे मे रखकर पोटली बना

लें। फिर लोहे की कड़ाही में अढ़ाई सेर गाय का दूध और आधा पाव महुए की शराब रखकर आग पर चढ़ा दें और इसी मे उक्त पोटली को भी डाल दें और मंद-मंद आँच पर इन्हें पकने दें। जब आधा दूध रह जाय, तब उसमे से पोटली को निकालकर फेंक दें। उस दूध का दही जमा लें। दूसरे दिन दही को मथकर मक्खन निकाल ले और मक्खन का घी बनाकर शीशी मे भरकर रख छोड़ें।

गुण—इस घृत के उपयोग से ध्वजशैथिल्य नष्ट होता है।

व्यवहार-विधि—रात मे सोते समय लिंग पर इस घी की मालिश करके ऊपर से बंगला पान रखकर कच्चे सूत से बाँध दें। इसको पन्द्रह दिनो तक व्यवहार करना चाहिए। जब तक औषधि का व्यवहार होता रहे, तब तक ब्रह्मचर्य से रहना अत्यावश्यक है।

स्तम्भन बटी

योग—छाया मे सुखाये हुए भटकटैया के बीज, नकछिकनी के पञ्चाग का चूर्ण, बहेडे की मीगी, केसर, अफीम, रूमीमस्तगी, जावित्री, जायफल, अकरकरा, सफेद राल और उटंगन के बीज प्रत्येक एक-एक तोला, कस्तूरी एक माशा और शहद अन्दाज से।

बनाने की विधि—इन सब औषधियो को कूट-पीस और शहद के साथ घोंटकर झरवेरी के समान गोली बना लो।

गुण—यह वीर्य-स्तम्भक है।

व्यवहार-विधि—एक गोली खाकर ऊपर से एक पाव गाय का दूध पीकर घण्टे भर बाद स्त्री-प्रसग करना चाहिये।

लिंग-स्थूलीकरण

योग—समुद्रफल, दारुहल्दी, बिनौले की मीगी और कूठ प्रत्येक एक-एक तोला और भेड़ का दूध बीस तोला।

बनाने की विधि—सब औषधियो को कूटकर एक पाव भेड के दूध में डालकर रख दें। जब दूध फट जाय, फटे हुए दूध के पानी को फेंक दें और शेष छेने को खरल मे घोंटकर शीशी में रख छोड़ें।

गुण—कुछ दिन इसके प्रयोग करने से पुरुष का लिंग स्थूल हो जाता है।

व्यवहार-विधि—इस औषधि की सुबह और शाम, लिंग पर मालिश करनी चाहिये।

विशेष—आजकल प्राय. देखा जाता है कि युवक लोग अपनी बदचलनी के कारण नपुंसक हो जाते हैं। इस कारण उनकी धर्म-पत्नियों को भी मानसिक दुःख उठाने पड़ते हैं। स्त्रियों का भी छोटी अवस्था में ही दो-चार बच्चों की माँ हो जाने के कारण, यौवन तथा सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। ऐसी अवस्था में पतियों को अपनी पत्नियों में तृप्ति न होने के कारण कुमार्ग में प्रवृत्त होना पड़ता है। अतः ऐसे ही दम्पतियों के लाभार्थ उपर्युक्त योग लिख दिये हैं। ये पाँचों योग मुझे श्रीमान् वैद्यराज राधाकृष्णजी, क्वाटर मनपुरा, जयपुर ने दिये हैं।

अर्कलोकेश्वर रस

योग—शुद्ध पारद दस तोले, शुद्ध गन्धक बीस तोले, शंखभस्म तीस तोले, मदार का दूध या रस सवा सेर और थूहर का दूध आधा सेर।

बनाने की विधि—पहले पारद-गन्धक की कज्जली कर लें फिर कज्जली में शंखभस्म डालकर छः घंटे तक घोटें। जब कज्जली और शंखभस्म एक हो जायँ तब पहले मंदार के दूध या रस की तीन तथा थूहर के दूध की एक भावना देकर उसका एक गोला बना लें। उस गोले को कपड़मिट्टी की हुई हाँडी में रख दें और ऊपर ढक्कन लगाकर दराज बन्द कर दें। इस हाँडी को चूल्हे पर चढ़ाकर दो घड़ी तक पतली-पतली दो लकड़ियों की आँच दें। बाद में स्वांगशीतल होने पर रस को निकालकर कूट-कपड़छन करके रख लें।

गुण—ज्वर, श्वास, कास, मंदाग्नि, संग्रहणी, विष्टम्भ और शूल आदि रोगों में रामबाण है। इस रस की एक खास विशेषता है कि यह कम गर्म वाली औषधि होने पर भी बल की वृद्धि करती है। इसे दो महीने के बालक से लेकर अस्सी वर्ष के बूढ़े तक को नि.सन्देह दे सकते हैं।

मात्रा—एक रत्ती से चार रत्ती तक।

अनुपान—शहद, मलाई, मक्खन-मिश्री आदि। बच्चों को माता के दूध में।

सुगन्धित तेल

योग—इलायची का रूह तेल, सन्तरे का रूह तेल अढ़ाई-अढ़ाई तोले, कपूर दो तोले और सफेद तिल का तेल चालीस तोले।

बनाने की विधि—इलायची और सन्तरे का रुह तेल तथा कपूर इन्हे एक बोतल में बन्द कर दें। लगभग एक घंटे मे यह तेल-रूप हो जायगा, फिर इसी में तिल का तेल मिला दें। एक घण्टे बाद व्यवहार मे लाये।

गुण—इसके व्यवहार से सिर की पीड़ा, चक्कर, दाह तथा दिल की घबराहट दूर होती है। इसकी सुगन्ध से तबियत खुश हो जाती है।

विशेष—मस्तक-शूल वाले रोगी को सीधे लेटाकर उसकी गर्दन के नीचे एक तकिया रख दें, और सिर को तकिये से इस तरह नीचे की ओर झुकावें, जिससे रोगी की नाक के छिद्र आसमान की ओर हो जायँ। इसके बाद रोगी की नाक के छेदो मे दो-दो बूँदें डालकर रोगी से कहे कि वह अपनी श्वास को ऊपर की ओर खीचे जिससे तेल मस्तक मे चढ़ जाय। इस विधि से शीघ्र ही मस्तक-शूल आराम हो जाता है। यदि मस्तक-शूल बहुत अधिक हो तो थोडी देर के बाद फिर एक बार इसी विधि से नाक द्वारा मस्तक मे तेल खीचना चाहिये। यदि वर्षो का पुराना रोग हो तो पन्द्रह-बीस दिनो तक रोज इसी विधि से तेल का प्रयोग करने से अवश्य लाभ होता है। नाक मे तेल देने के अतिरिक्त सिर मे भी इसकी मालिश करनी चाहिये।

महासुगन्धित तेल

योग—कपूर कचरी, वालछड, सुगन्धबाला, कचूर, धनिया, नागरमोथा और खस प्रत्येक एक-एक छटांक, तिल का तेल दो सेर, पानी एक सेर 'हिक्कोपानड़ी एक तोला, हिक्को खस व गुलाब का रुह छः-छः माशे और कस्तूरी का रुह तीन माशे।

बनाने की विधि—लोहे की कड़ाही मे दो सेर तिल का तेल डालकर आग पर पकाये। जब तेल से धुआँ उठने लगे तब कड़ाही को नीचे उतार ले। जब तेल ठण्डा हो जाय तब उसमे एक सेर पानी डाल दें। फिर सख्या एक से सात तक की औषधियों को कूट और कपडछन करके एक पोटली में बांध ले और दोला-यन्त्र-विधि से उस पोटली को कड़ाही मे लटकाकर कडाही को आग पर चढा दें और मद-मद आंच लगने दें। जब पानी जल जाय तब कड़ाही को नीचे उतार-कर ठण्डी होने दे। ठण्डी होने पर तेल को पतले ब्लाटिंग पेपर (सोख्ते) और

बाद में फलालेन के कपडे से छानकर बोतल मे रखे। फिर उसमें सख्या दस से तेरह तक की चारो सुगन्धित चीजो को मिला दें और कार्क बन्द करके रख छोडे। इस तेल की बोतल को पाँच-सात दिनो तक रोज हिला दिया करे। उसके बाद काम मे लायें।

तेल छानने की विधि—चौडे तामचीन अथवा कांच के पात्र मे लोहे की तार वाली चलनी रखकर उस पर ब्लाटिंग पेपर बिछा दें और ऊपर से तेल भरकर छोड दे। जब ब्लाटिंग पेपर से छनकर सब तेल नीचे के पात्र में आ जाय, तब उसे एक बार फिर फलालेन के कपडे से छान ले। जब तेल खूब साफ हो जाय तब उसे बोतल मे रख लें।

तेल बनाते समय ध्यान देने योग्य बातें—जब किसी प्रकार का तेल पकाना हो, तो पहले तेल को कडाही मे रखकर आग पर पकाये। जब तेल में से धुआँ उठने लगे तब उसे उतारकर जमीन पर रखे। जब तेल ठण्डा हो जाय तब उसमें औषधि, जल अथवा और कोई वस्तु जो भी डालनी हो, डालकर तब फिर आग पर पाक करें। यदि कच्चे ही तेल को आग पर चढाकर उसमे औषधि और जल वगैरह डालकर पकाना शुरू करेंगे, तो सब तेल उफनकर कडाही से नीचे गिर जायगा और कडाही में आग लग जायगी। इसी प्रकार खूब गरम तेल में पानी या इसी तरह की कोई कच्ची चीज छोडेंगे तो तेल मे भयकर कड-कड़ शब्द होना शुरू हो जायगा और तेल एक-ब-एक उफनकर नीचे गिरने लगेगा उपर्युक्त दोनो दशाएँ खतरनाक हैं। इसलिए उपर्युक्त विधि से ही तेल का पाक करना उचित है।

छिक्कानस्य सं० १

योग—छोटी पीपल, सेन्धानमक एक-एक छटाँक और मंदार का दूध अन्दाज से ले।

बनाने की विधि—दोनो चीजो को कूट और कपडछन करके मंदार के दूध की तीन भावना देकर और सुखाकर रख लें।

गुण—इससे आलस्य, सिर-दर्द, अर्धकपारी आदि मस्तक के रोग तथा र्छा दूर हो जाती है और दस-बीस छीके आती हैं।

व्यवहार-विधि—इस नस्य को चुटकी मे लेकर जोर से ऊपर की ओर नाक में खींचना चाहिये। कागज की नली मे इस नस्य को भरकर, जो रोगी बेहोश हो उसकी नाक मे फूँक-द्वारा चढा देना चाहिये।

विशेष—यह प्रयोग मैंने "बङ्गसेन" से लिया है, केवल मंदार के दूध की भावना अपनी तरफ से बढ़ायी है।

छिक्कानस्य सं० २

योग—कायफल का चूर्ण एक छटांक और मदार का दूध अन्दाज से।

बनाने की विधि—कायफल के चूर्ण मे मदार के दूध की तीन भावना देकर सुखा ले।

गुण—उपर्युक्त नस्य स० एक की तरह इसका भी गुण है। इस नस्य से केवल छीकें बहुत आती हैं।

व्यवहार-विधि—इसका भी उपर्युक्त नस्य की तरह व्यवहार करें।

क्षयान्तक चूर्ण

योग—छोटी पीपल का चूर्ण एक छटांक और नागरपान का रस अन्दाज से।

बनाने की विधि—छोटी पीपल के कपड़छन चूर्ण मे नागरपान के रस की सात या इक्कीस भावना देकर सुखा लें।

मात्रा—एक माशा।

गुण—इसके सेवन करने से एकसठ दिनों मे क्षयरोग नष्ट हो जाता है।

व्यवहार-विधि—प्रातः और सायकाल पाँच अडूसे के पत्तों का रस और तीन माशे शहद के साथ व्यवहार करना चाहिये।

विशेष—इसी औषधि मे एक एक रत्ती चन्द्रोदय अथवा मोती भस्म मिलाकर सेवन करने से कठिन रोग भी अच्छा हो जाता है। इसके अतिरिक्त प्रातः और सायं उपर्युक्त चूर्ण को खाकर रात्रि मे सोते समय छः माशे सितोपलादि चूर्ण और दो रत्ती स्वर्ण भस्म शहद के साथ व्यवहार करना भी उत्तम है।

ग्रहणीकपाट रस

योग—अफीम चार तोले, शुद्ध गन्धक दस तोले, शुद्ध पारद दो तोले, कौडी भस्म सात तोले, शुद्ध सींगिया विष एक तोला, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल तीन-तीन

तोले, कूडे की छाल दो तोले, शुद्ध सुहागा दो तोले, शंख भस्म पाँच तोले, धतूरे के बीजो की मीगी[1] बयालीस तोले और आदी का रस अन्दाज से ।

बनाने की विधि—पहले पारद और गन्धक को घोटकर कज्जली बना लें, फिर शेष सब दवाइयो को कूट और कपड़छन करके उक्त कज्जली के साथ आदी का रस डालकर एक पत्थर की खरल मे चौबीस घण्टे तक भिगो रखें, फिर चौबीस घण्टे खरल करके मटर के समान गोलियाँ बना लें।

विशेष—यदि इसमें तीन तोले चन्द्रोदय अथवा पाँच तोले षडगुणगन्धक जारित स्वर्णसिन्दूर भी घोटकर मिला दें तो यह औषधि बहुत ही उत्तम और विशेष गुणदायक बन जायगी ।

मात्रा—संग्रहणी में एक से तीन गोली तक । अतिसारादि मे एक-एक गोली सुबह-शाम ।

अनुपान—गाय का ताजा मट्ठा, अतिसारादि मे पानी के साथ ।

व्यवहार-विधि—सुबह, शाम और रात को सोते समय तीन-तीन गोली गाय के ताजे मट्ठे के साथ सेवन करनी चाहिये । इसे लगातार तीन महीने तक सेवन करें । पहले महीने मे एकतीस दिनो तक तीन-तीन गोली, दूसरे महीने मे एकतीस दिनो तक दो-दो गोली और तीसरे महीने मे एकतीस दिनो तक एक-एक गोली

---

१. धतूरे के बीजों को कड़ी धूप में खूब सुखा ले । जब बीज खूब सूख जायँ, तब उन्हे पत्थर या पक्की जमीन पर रखकर चार-पांच सेर वजन वाली सिल से दल ले और सूप से फटककर छिलको को अलग कर लें । इस विधि से सहज ही मीगी और छिलके अलग-अलग हो जाते हैं ।

जहाँ भी धतूरे के बीजो की मीगी का प्रयोग हो, वहाँ पर इसी विधि से छिलके अलग करके मीगी निकाल लें और काम में लाये ।

कितने ही वैद्य धतूरे के बीजों को घी मे भूनकर हिमामदस्ते मे धीरे-धीरे कूटकर मीगी निकालते हैं । यह पद्धति ठीक नही, क्योकि घी मे भूनने से बीजों का गुण—दग्धसत्व होने के कारण—कम हो जाता है ।

विशेष----धतूरे के बीजो से मीगी निकालने के बाद जो छिलके निकलें उन्हें रख छोड़ें और अन्यान्य औषधियो के योगो मे प्रयोग करें ।

खानी चाहिये। इस प्रकार तीन महीने और तीन दिन में पांच सौ अट्ठावन गोली खानी चाहिये।

पथ्य—भूख और प्यास के समय रोगी को पहले महीने मे एकतीस दिनों तक केवल मट्ठा ही देना चाहिए। यदि रोगी एकतीस दिनों तक केवल मट्ठा लेना पसन्द न करे तो सोलह दिनों तक मट्ठा और पन्द्रह दिनो तक दूध दें। दूसरे महीने मे एकतीस दिनों तक थोड़ा-थोड़ा भात, दाल और साग, पर मट्ठा और दूध ही अधिक मात्रा में दे। तीसरे महीने में एकतीस दिनो तक पथ्य-परहेज की कोई खास आवश्यकता नही।

गुण—इसके सेवन करने से भयंकर-से-भयकर सग्रहणी एकतीस दिनो मे अवश्य नष्ट हो जाती है। इसके अतिरिक्त आमातिसार, उदरशूल और अतिसारादि भी शीघ्र ही मिट जाते हैं।

विशेष—सुबह-शाम एक-एक गोली गरम-जल के साथ लेने से चार-पाच दिनो मे आमातिसार तथा अतिसार अच्छा हो जाता है।

वातव्याधिनाशक तैल

योग—धतूरे के बीजो के छिलको का चूर्ण, कुचले का चूर्ण[1] और कायफल का चूर्ण एक एक चटांक मदार के पत्तो का स्वरस और कडवा तेल एक-एक पाव, गोमूत्र तीन सेर और पानी छः सेर।

बनाने की विधि—पहले लिखी हुई तीनो औषधियो के चूर्ण को एक पत्थर या मिट्टी के पात्र में रखकर ऊपर से मंदार के पत्तो का रस डालकर चौबीस घण्टो तक भिगा दें। चौबीस घण्टे के बाद इसमे कडवा तेल, गोमूत्र और पानी डालकर लोहे की कडाही मे आग पर चढ़ा दे। जब गोमूत्र और पानी जल जाय और केवल तेल नजर आवे तब कड़ाही को आग पर से उतारकर कपडे से तेल को छान ले और शीशी मे रख ले। कपडे मे बची हुई किट्ट का भी एक डिब्बे में रख छोड़ें।

गुण—यह तैल वातव्याधि को दूर करता है।

---

१. कुचले को कूटकर चूर्ण बनाने मे बड़ी मुश्किल होती है। उसे रात भर गोमूत्र मे भिगोकर हिमामदस्ते मे कूटने से चूर्ण हो जाता है।

व्यवहार-विधि—जहाँ पर दर्द हो, वहाँ इस तेल की मालिश करके ऊपर से रेंडी के पत्ते से दर्द वाले स्थान को ढँककर उपर्युक्त तेल में सनी हुई मिट्टी की पोटली बनाकर उसी से सेंक करें।

विशेष—उपर्युक्त विधि से औषधि-प्रयोग करने पर यदि उचित लाभ न होता दीखे, तो सेकने के बाद त्रिफला के क्वाथ का बफारा दें। बफारे की विधि और त्रिफले के क्वाथ के विषय में 'पामा तैल' का प्रकरण देखें।

कामलानाशक योग

योग—अनन्तमूल की जड़ की छाल दो माशे, कालीमिर्च ग्यारह नग और पानी अढाई तोले।

बनाने की विधि—दोनों चीजों को पानी के साथ सिल पर पीसकर अढ़ाई तोले पानी में मिलाकर शरबत की तरह बना ले।

व्यवहार विधि—सात दिनों तक प्रातःकाल पिलाना चाहिये।

गुण—इसके सेवन करने से आँखों तथा शरीर का पीलापन दूर होता है। कामला रोग के कारण होनेवाली अरुचि तथा बुखार भी इससे नष्ट हो जाता है।

प्रमेहारि चूर्ण

योग—कौंच के बीजों की गिरी, सफेद मूसली, तालमखाने के बीज, मोच-रस, उटँगन के बीज, उटकटेरे की जड़ की छाल, बीजबन्द, शतावर, समुद्रशोष, कमरकस, सूखा सिंघाड़ा और आँवले दो दो तोले, तथा मिसरी चौबीस तोला।

बनाने की विधि—पहले सभी औषधि को कूट और कपड़छन कर ले। फिर उसमें मिसरी मिलाकर रख ले।

मात्रा—छ: माशे से एक तोला तक।

अनुपान—दो छटाँक गाय का ताजा दूध अथवा ताजा जल।

व्यवहार विधि—प्रातःकाल चूर्ण खाकर ऊपर से दूध अथवा जल पीना चाहिये।

गुण—सभी प्रकार के प्रमेह को दूर कर शरीर को ताकतवर और पुष्ट बनाता है।

रसायनबिन्दु तैल

योग—लौंग, बड़ी इलायची के बीज, जायफल, जावित्री, पिस्ता, बादाम,

सफेद चन्दन का बुरादा, काला तिल, अकरकरा, लोहबान, बहेड़े की मींगी, मालकांगनी, करंज की मींगी, चिरौंजी और नीम की निमौलियों की मींगी प्रत्येक एक-एक तोला।

बनाने की विधि—इन सब चीजों को अधकचरी करके रसायनसारोक्त 'बालुकागर्भ पातालयन्त्र' से तेल निकाल ले।

मात्रा—एक से तीन बूँद तक।

अनुपान—पान का बीड़ा।

व्यवहार-विधि—पान के बीड़े में इस औषधि को आवश्यकतानुसार डालकर खानी चाहिये।

गुण—इसके सेवन से कमजोरी, सिर का रोग, पेट का दर्द, हड्फूटनी, खांसी तथा श्वास आदि अनेक रोग दूर होते है। विशेषतः यह औषधि कफ की बीमारी में बहुत ही गुणदायक हैं। जिसे काला और रक्त-मिश्रित ढेर-का-ढेर कफ गिरता हो उसके कफ को निकालकर यह आरोग्यता लाभ कराने वाली औषधि है। इसकी अनेक बार प्रत्यक्ष परीक्षा की गयी है।

अनुभव—मेरे पिताजी की आयु सत्तर वर्ष की थी। कफ के बिगड़ने से उनके बचने की बिलकुल आशा नहीं थी। मैं नित्य एक पुरवा काले रंग का कफ फेंकता था। उपर्युक्त रसायनबिन्दु तैल का दो-तीन महीने तक सेवन करने से गयी हुई धातु फिर लौट आयी और वे आरोग्य हो गये। दस वर्ष तक परिपुष्ट रहकर उन्होंने प्राण-त्याग किया।

नवरस बटी

योग—शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, प्राणेश्वर रस, केसर, ब्राह्मी, रोहू मछली का पित्ता और कस्तूरी प्रत्येक एक-एक तोला, नागकेसर चार तोला।

बनाने की विधि—पहले पारद और गन्धक की कज्जली कर लें। नागकेसर, ब्राह्मी और केसर को कूटकर कपड़छन कर ले फिर सभी चीजों को मिलाकर ब्राह्मी के स्वरस में दो पहर तक घोटकर, बाजरे के प्रमाण की गोलियाँ बना लें और सुखाकर शीशी में रख लें।

मात्रा—एक से तीन गोली।

अनुपान—तुलसी के पत्ते तीन, कालीमिर्च दो और सफेद जीरा चार-पाँच

दाना—इन्हे पीसकर दो तोले पानी मे मिलाकर छान लें और जरा आग पर गरम करके व्यवहार करे।

गुण—सर्वज्वर नाशक।

व्यवहार-विधि—सन्निपात के ज्वर में आधे-आधे घण्टे के अन्तर से एक-एक गोली खिलाकर ऊपर से उपर्युक्त अनुपान वाला जल पिला दें। अन्य ज्वरो में भी इसी अनुपात से तीन-तीन घण्टे पर दें।

विशेष—जिसके शरीर मे गरमी रहती हो हाथ, पैर, उदर तथा मस्तक तपते हो, उसे सुबह और शाम एक-एक गोली निम्नलिखित काढे के साथ दें।

काढ़ा—दो माशे सफेद जीरे को जरा अधकचरा कर लें और एक पाव पानी डालकर उसे आग पर पकायें। जब आधा पानी जल जाय उतार लें और छान-कर काम मे लायें।

विशेष—इस विधि से औषधि-सेवन करने से तीन-चार दिनों में ही ज्वर की रुकी हुई गरमी दूर हो जाती है।

श्वासान्तक

योग—अजवायन, लौंग, सेन्धानमक और मुलहठी प्रत्येक दो-दो तोले, मीठा अनार एक नग।

बनाने की विधि—चारों औषधियो को कूटकर कपडछन कर लें, फिर एक मीठे अनार को बीच से काटकर उसके आधे हिस्से मे से दाने निकाल ले और उन दोनो के साथ उपर्युक्त चूर्ण को सिल पर पीसकर फिर उसी खाली अनार मे भर दें और दाने वाले अनार के दूसरे हिस्से को ढंककर उस पर कपडमिट्टी कर दें। कपडमिट्टी करने के बाद धूप मे सुखाकर पांच कण्डो की आंच मे फूक दे। जब शीतल हो जाय कपडमिट्टी हटाकर औषधि को खूब महीन पीसकर शीशी मे रख ले।

मात्रा—एक रत्ती से तीन रत्ती तक।

गुण—श्वास और खांसी के लिए बहुत ही लाभदायक है। यह औषधि कफ को निकालने वाली है।

व्यवहार-विधि—इस औषधि को पान मे रखकर प्रातः और सायंकाल सेवन करना चाहिये।

सोमहर चूर्ण

योग—भिंडी की जड़, सूखा पिंडारू, सूखा आँवला और विदारीकन्द प्रत्येक चार-चार तोले और उडद की धोई दाल का मैदा दो तोला।

बनाने की विधि—इन सब औषधियों को कूट और कपडछन करके शीशी में रख लें।

व्यवहार-विधि—प्रातः और सायं छः-छः माशे औषधि खाकर ऊपर से मिसरी मिला हुआ दूध पीना चाहिये।

गुण—इससे स्त्रियों का सोम-रोग आराम होता है।

सुरसादि बटी

(सभी तरह के ज्वर के लिये कुनैन से बढ़कर)

योग—तुलसीपत्र पाँच तोले, कालीमिर्च एक तोला, छोटी पीपल एक तोला, सिंगरफ शुद्ध छः माशे, शुद्ध सुहागा छः माशे और शुद्ध वत्सनाभ विष एक तोला।

बनाने की विधि—इन सब औषधियों को कूट और कपडछन कर तुलसी के पत्तों के स्वरस में घोटे और मूंग के प्रमाण की गोलियाँ बनाकर सुखा लें और शीशी में रख लें।

गुण—सभी तरह के बुखार को दूर करती है।

व्यवहार-विधि—बलाबल विचारकर एक या दो गोली तीन-तीन घण्टे पर ताजा जल से सेवन करनी चाहिये।

शीतभंजी रस

योग—सिन्दूर रस एक तोला, गाय के दूध में औटाया हुआ संखिया एक तोला और तुलसी का स्वरस अन्दाज से।

बनाने की विधि—सिन्दूर रस और संखिया को तुलसी के स्वरस में घोटकर बाजरे के प्रमाण की महीन-महीन गोलियाँ बनाकर सुखा लें और शीशी में रख लें।

गुण—यह गोली शीतज्वर और शीताङ्गसन्निपात को नष्ट करती है।

व्यवहार-विधि—एक गोली बंगला पान के साथ आवश्यकतानुसार देना चाहिये।

ज्वराङ्कुश रस

योग—शुद्ध गोदन्ती हरताल चार तोले, शुद्ध संखिया एक तोला और घृत-कुमारी का रस अन्दाज से।

बनाने की विधि—शुद्ध गोदन्ती हरताल और शुद्ध संखिया को घृतकुमारी के रस मे घोटकर और संपुट मे रखकर ऊपर से भलीभाँति कपड़मिट्टी करके सुखा लें। जब सूख जाय गजपुट मे फूँक दें।

गुण—शीतज्वर, एकाहिक, द्वाहिक आदि पारी से आनेवाले तथा अन्य ज्वर भी नष्ट होते हैं।

व्यवहार-विधि—ज्वर आने से एक घण्टा पहले एक से दो रत्ती तक बताशे में रखकर दें। अन्य ज्वरो मे तदनुकूल रोग-नाशक द्रव्यो के साथ देना चाहिये। औषधि-सेवन करके तुरत जल नही पीना चाहिये।

सन्नीरगजकेशरी

योग—शुद्ध कुचला कालीमिर्च, जायफल और शुद्ध अफीम प्रत्येक एक-एक तोला, और आदी का रस अन्दाज से।

बनाने की विधि—शुद्ध कुचला कालीमिर्च और जायफल-उन्हे कूट और कपडछन करके एक पत्थर के खरल मे अफीम के साथ कुछ देर घोटे। बाद में आदी का रस डाल-डालकर घोटे और मूँग के प्रमाण की गोलियाँ बना लें।

मात्रा—एक गोली।

अनुपान—एक सेर पानी औटाने पर जब एक पाव रहे उतार लें और इसी पानी के साथ औषधि दें।

व्यवहार-विधि—यदि ज्वर मे प्रलाप हो तो इस औषधि को उपयुक्त जल के साथ सेवन करायें। प्रलाप बन्द हो जाय तब औषधि न दें। विशेषकर इसे सायंकाल देना चाहिये।

गुण—ज्वर, प्रलाप के अतिरिक्त यह औषधि वातव्याधि को भी आराम करती है।

संथरज्वर नाशक बटी

योग—तुलसीपत्र दो तोले, नीम की गुरुच का सत्व एक तोला, लौंग, वंश-

लोचन, धनिया, कासनी के बीज और छोटी इलायची के बीज प्रत्येक छ:-छः माशे।

बनाने की विधि—इन सब औषधियो को कूट और कपडछन करके तुलसी पत्रों के स्वरस मे घोटकर उड़द के प्रमाण गोलिया बना लें।

मात्रा—एक गोली।

अनुपान—जल या पूर्वोक्त 'दार्वादि क्वाथ'।

गुण—यह औषधि मन्थरज्वर-नाशक है।

व्यवहार-विधि—बलाबल देखकर दिन मे तीन बार इस औषधि का सेवन करना चाहिए।

वातव्याधि हर तैल

योग—तिल का तेल एक सेर, जल आधा सेर, सज्जी का साबुन आधा पाव और संखिया[1] दो तोले।

बनाने की विधि—तिल का तेल और पानी इन्हे एक लोहे की कड़ाही में रखकर आग पर पकायें। पानी जल जाय तब सज्जी का साबुन तेल मे डालकर पकने दे। जब तेल और साबुन मिलकर गाढा हो जाय, पिसा हुआ संखिया डालकर कलछी से कुछ देर चलाकर उतार लें और शीशी मे भरकर रख ले।

व्यवहार-विधि—वातव्याधि के रोगियों को दर्द के स्थान पर इस तैल की मालिश करानी चाहिये।

विशेष—तैल मर्दन-काल मे स्नान बन्द रहना चाहिये।

दद्रु हर बटी

योग—आमलासार गन्धक और कलमी शोरा तीन-तीन तोले, भेड़ का दूध और नीबू का रस अन्दाज से।

बनाने की विधि—उपर्युक्त दोनो औषधियों मे तीन दिन भेड के दूध की और एक दिन नीबू के रस की भावना देकर गोलियाँ बनाकर रख ले।

व्यवहार-विधि—पानी में घिसकर दाद पर लेप करे।

गुण—इसके व्यवहार से दाद अवश्य नष्ट हो जाती है।

---

१. संखिया को पहले गाय के दूध मे, दोलायन्त्र की विधि से पकाकर तीन दिनों तक नीबू के रस में घोटकर सुखा लें, तब योगो मे व्यवहार करें।

उदर-मतक-शूल नाशक चूर्ण

योग—तुम्बरू दो तोले, लौंग, सेन्धानमक और भुना हुआ जीरा एक-एक तोला, कालानमक छः माशे और भुनी हुई हींग डेढ माशे।

बनाने की विधि—उपर्युक्त चीजों को अलग-अलग कूट पीस और कपड़छन करके एक में मिलाकर रख छोड़ें।

गुण—यह उदर तथा मस्तक के शूल को दूर करने वाली है।

व्यवहार-विधि—तीन माशे औषधि गरम जल के साथ, तीन-तीन घण्टे के अन्तर से सेवन करावें, जब तक दर्द न बन्द हो।

रजोदर्शन योग

योग—इन्द्रायण के बीज तीन माशे और कालीमिर्च पांच नग।

बनाने की विधि—दोनों को कूटकर एक पाव पानी मे क्वाथ करें। जब एक छटांक क्वाथ शेष रहे उतार लें।

व्यवहार विधि—प्रातःकाल काढा बनाकर तीन-चार दिनो तक सेवन करना चाहिये। इसके सेवन करने से रजोदर्शन होता है।

विशेष—रजोदर्शन के बाद औषधि सेवन करना बन्द करा दे।

दन्त मंजन

योग—मौलसरी की छाल अथवा बीज और सहोडे की छाल दो-दो तोले, सेन्धानमक एक तोला और दीमक की मिट्टी एक छटांक।

बनाने की विधि—सब औषधियो को अलग-अलग कूट और कपड़छन करके मिला ले।

व्यवहार-विधि—कड़ुए तेल मे मिलाकर या यो ही मंजन करना चाहिये। यह हिलते हुए दांतो के लिये बहुत ही उत्तम है।

खुजली हर

योग—पारा, गन्धक, मुर्दाशख और कपूर एक-एक तोला, कमीला चार तोला और एक सौ एक बार का धोया हुआ गाय का घी तीन छटांक।

बनाने की विधि—पहले पारद और गन्धक को घोटकर कज्जली कर लें, फिर उसमे कमीला, मुर्दाशख और कपूर मिलाकर घोंटे। जब सभी चीजें एक-दिल हो जाये, एक सौ एक बार का धोया हुआ घी डालकर खूब खरल करें और शीशी में रख छोड़ें।

गुण— इससे तीन दिनो में ही खाज नष्ट होती है।

व्यवहार-विधि—इस औषधि को खुजली वाले रोगी के शरीर पर मालिश करायें। जब औषधि सूख जाय शरीर पर भैंस का गोबर मलवायें और जब गोबर सूख जाय खूब मलकर स्नान करायें।

सुजाक नाशक

योग—कलमीशोरा और राल एक-एक तोला। अनार की पत्तियो का रस अन्दाज से।

बनाने की विधि—पहले दोनो औषधियो को खरलकर अनार की पत्तियों के रस मे घोटकर चार-चार माशे की गोलियाँ बना ले।

व्यवहार-विधि—सुजाक के रोगी को सुबह और शाम एक-एक गोली मुलतानी मिट्टी के निथरे हुए एक छटाक जल के साथ देने से एक ही दिन मे सुजाक आराम हो जाता है।

विशेष—मुलतानी मिट्टी एक पाव लेकर मिट्टी के एक बरतन मे रखें और ऊपर से अढाई सेर जल डालकर खूब मिला दें। चौबीस घंटों तक उसे पडा रहने दें। दूसरे दिन धीरे धीरे ऊपर से साफ पानी निथार कर बोतल मे रख ले।

उपदंश श्वास नाशक

योग—शुद्ध सफेद सखिया, हिंगुल, रसकपूर और दालचीनी प्रत्येक एक-एक तोला और सुर्ख और पुष्ट दाने की कालीमिर्च बाइस नग।

बनाने की विधि—पहले दालचीनी और कालीमिर्च को कूट और कपडछन कर ले, फिर सखिया वगैरह बची हुई चीजो के साथ खरल मे डालकर घृतकुमारी के रस मे चार पहर तक घोटकर रसायनसारोक्त डमरूयन्त्र से रखकर जौहर निकाल लें।

गुण—इसका आठ दिनो तक सेवन करने से उपदंश अच्छा होता है। यह औषध श्वास-रोग के लिए भी उत्तम है।

व्यवहार-विधि—इस औषध की चौथाई रत्ती की मात्रा मलाई, मक्खन या हलुवा मे रखकर निगल जायँ और ऊपर से थोडी मलाई, मक्खन या हलुवा और खा लें।

पथ्य—दूध, घी, मक्खन, मिश्री, हलुवा, चने की रोटी और भात आदि।

अपथ्य—नमक तथा नमकीन और चरपरे पदार्थ।

नपुंसकता-नाशक लेप

योग—बडी इलायची, देवदारू, पुनर्नवा, चम्पा की पत्ती, गजपीपल, जायफल, जावित्री, घोडबच हरमल और अपामार्ग साढे बारह-बारह तोले कूठ सवा सात तोले, सोठ, गिडोय (सूखे हुए), जोक और मालकागनी सवा छः-छः तोले, लहसुन बीस तोले, मैनशिल पाच तोले तथा मुर्गी के अडे की जर्दी पचास नग।

बनाने की विधि—अण्डे और लहसुन को छोडकर बाकी सभी सूखी हुई चीजो को अलग-अलग हिमामदस्ते मे कूटे और कपड़छन करके पत्थर के खरल मे रखते जायँ, फिर अंडो की जर्दी और लहसुन का रस अलग-अलग निकालकर खरल मे रखे हुए चूर्ण के साथ खूब कडे हाथो से ताकत के साथ घोटें। जब सब चीजें एकदिल हो जाय और गाढे लेप की तरह बन जाय तब एक चौड़े मुँह की शीशी में रख ले।

गुण—यह तिला नपुंसकतानाशक है।

व्यवहार-विधि—उँगली से औषधि को लेकर लिंग की जड़ मे धीरे-धीरे मालिश करे। पाच मिनट मालिश कर चुकने के बाद बँगला पान सेककर ऊपर से बांध दें।

विशेष—यह औषध लिंग के अग्र-भाग पर न लगने पाये। यदि दवा लगाने से छाले पड़ जायँ तो दो तीन दिनो तक दवा लगानी बन्द कर दें और उस पर गाय के दही का ताजा मक्खन लगाये। मक्खन के व्यवहार से जब छाले मिट जायँ तिला की मालिश प्रारम्भ करें। इस प्रकार जब तक खराब नसे शुद्ध न हों, औषधि का व्यवहार करते रहे।

पथ्य—दूध, मलाई, मक्खन और हलुवा आदि।

अपथ्य—गुड़, तेल, लालमिर्च, खटाई और स्नान।

श्वेत कुष्टनाशक वटी

योग—शुद्ध भिलावा चार तोले, रसकपूर का फूल, शुद्ध भुना हुआ तूतिया और कत्था चार-चार माशे।

बनाने की विधि—शुद्ध भिलावे को कूट और कपडछन करके रख लें, फिर रसकपूर के फूल और शुद्ध तूतिया को पत्थर के खरल मे खूब महीन पीस लें। जब ये दोनो चीजे खूब महीन पिस जायँ, भिलावे को भी इसी में मिला लें और ऊपर से पानी मे भिगोया हुआ गाढा कत्था डालकर कुछ देर तक घोटे। घुट जाने के बाद अढाई माशे के प्रमाण की गोलियाँ बनाकर रख लें।

विशेष—चार माशे कत्थे को कूटकर एक गिलास मे डाल दें और ऊपर से सवा तोले के अन्दाज पानी डाल कर तीन घण्टे तक पड़ा रहने दें। जब कत्था और पानी मिलकर गाढ़ा लेप की तरह हो जाय तब उसे उपयोग मे लायें।

गुण—दो महीने मे श्वेतकुष्ट को अच्छा करता है।

व्यवहार-विधि—मुख के भीतर घी चुपड़कर, एक गोली मक्खन के बीच मे रखकर लगातार दो मास तक प्रातःकाल सेवन करें।

पथ्य—एक पाव घी नित्य खाना चाहिये।

अपथ्य—तेल, लालमिर्च, गुड़ और खटाई।

दन्त पीड़ा हर

योग—तुम्बरू अढ़ाई तोले।

बनाने की विधि—अढ़ाई तोले तुम्बरू को लेकर धूप में खूब सुखा लें, फिर उसे कूटकर लोहे के तार वाली चलनी मे छानकर शीशी मे रख लें।

गुण—यह औषधि दांतो के दर्द को दूर करती है।

व्यवहार-विधि—इस चूर्ण का मञ्जन करें और मुँह से लार टपकाते रहे। थोडे से तुम्बरु के चूर्ण अथवा दानो को दांतो के नीचे दबाये रहे।

सर्प विष-नाशक

योग—रीठे का छिलका तीन माशे और पानी अन्दाज से।

बनाने की विधि—रीठे के छिलके को पानी के साथ सिल पर खूब महीन पीस लें और पानी मे ही घोलकर शरबत की तरह छान लें।

व्यवहार-विधि—रोगी को यह औषधि बराबर पिलायी जाय पूछने पर जब रोगी कहे कि औषधि कडवी लगती है, तब पिलाना बन्द कर दें। जब तक कडवी न मालूम हो, तब तक औषधि पिलाते जायँ।

विशेष—रीठे के छिलके की उपर्युक्त एक मात्रा है। इतना ही छिलका प्रति बार घोटकर पिलाना चाहिये।

उपचार—तीन घण्टे बाद एक पाव गाय के घी मे तीन तोले कालीमिर्च का चूर्ण डालकर रोगी को पिलायें।

गुण—मृत्युशय्या पर पड़ा हुआ निराश रोगी भी दो दिनो मे निःसन्देह आरोग्य लाभ करेगा।

कर्पूरादि मलहम

योग—मुर्दाशंख, रस कपूर (बाजारू) और कपूर एक-एक तोला और गाय का घी आठ तोला।

बनाने की विधि—तीनों चीजो को घोंटकर घी में मिला लें।

गुण—यह मलहम घावो की जलन शान्त कर ठण्डक पहुँचाता है और घाव को शीघ्र सुखा देता है। संखिया के तैल की मालिश अथवा किसी और तीव्र औषधि के प्रयोग के कारण होनेवाले घाव पर इसे लगाने से भी तत्काल लाभ होता है।

गृध्रदृष्टि अंजन

योग—सुरमा एक पाव, भीमसेनी कपूर अढाई तोले, त्रिफले का क्वाथ और गुलाबजल अन्दाज से।

बनाने की विधि—सुरमे को सात बार त्रिफले के काढ़े में बुझावे, फिर गुलाबजल मे घोटकर टिकिया बना ले और उसे एक कपडे मे बाँधकर नीम की जड़ मे गाड़ दें। एक वर्ष के बाद जड मे से सुरमे को निकालकर छः महीने तक केले की जड़ मे गाड़ दें। छः महीने के बाद केले की जड़ से निकालकर भीमसेनी कपूर के साथ खूब खरल कर ले और शीशी मे रख छोडें।

गुण—स्वस्थ आँख वाले यदि नित्य अञ्जन का व्यवहार करें तो उन्हे कभी नेत्र-सम्बन्धी कोई रोग नही होगा। इसके अतिरिक्त यह धुन्ध, जाला, माड़ा, पानी गिरना, पढ़ते समय तकलीफ होना आदि आँखो के सब उपद्रव शान्त करता है। आँखो के लिए यह परम हितकर व शीतल है।

व्यवहार-विधि—इस अञ्जन को प्रातः और सायकाल नेत्रो मे लगाना चाहिये।

मल्लभैरव रस

योग—शुद्ध संखिया पाँच तोले और तुत्थोत्थ शुद्ध ताम्र पाँच तोले।

बनाने की विधि—एक मिट्टी के कसोरे मे अढाई तोले शुद्ध सखिया फैलाकर ऊपर से पाँच तोले तुत्थोत्थ शुद्ध ताम्रपत्र बिछा दें, फिर बचा हुआ अढाई तोला शुद्ध संखिया फैलाकर ढक्कन से बन्द कर दे। बाद मे बालू, चिकनी मिट्टी और नमक से बनी हुई कीच से, कसोरे की सन्धियो को बन्द कर दे। सम्पूर्ण सम्पुट पर सात कपरौटी भी कर दें। खूब सूख जाने पर तीन पहर तक मंदाग्नि से चूल्हे पर पका दें और बाराह पुट मे फूँक लें। स्वांगशीतल होने पर कपड़छन करके रख लें।

गुण—इस रस की प्रकृति उष्ण है अतः शीत-प्रधान देशों तथा-कफ-वायु-जन्य रोगों में यह विशेष उपकारक है। हाथ-पैर ठण्डे पड़ गये हो, सर्वांग में शीत व्याप्त हो तो इससे शरीर में गरमी आ जायगी और शीतज्वरादि नष्ट हो जायेंगे।

मात्रा—एक रत्ती का चतुर्थांश अर्थात् दो चावल है।

अनुपान योग—मक्खन-मिश्री या बताशे में रखकर दें।

रिक्तशिरोर्ति मोदक (पुष्टिकर)

योग—पोस्ते के बीज आधा सेर, गोला गरी (बड़ा) दो नग, चीनी डेढ़ सेर, बादाम की गीरी, किसमिश, चिरौजी, पठानी लोध, छोटी पीपल और पिस्ता एक-एक पाव।

बनाने की विधि—गरी के दो बड़े-बडे गोले लेकर उन्हे चाकू से काटकर बीचो-बीच से दो टुकडे कर ले। उनमे डेढ सेर चीनी भरकर सूत से लपेटकर बन्द कर दें और पुटपाक की विधि से, चीनी भरे हुए बन्द गोलो को पका ले। फिर उपर्युक्त औषधियो मे से पठानी लोध और छोटी पीपल को कूट-कपड़छन कर ले। इसके बाद पुटपाक किये हुए चीनी वाले गोलों, लोध और पीपल के कपड़छन चूर्ण उपर्युक्त सभी बाकी चीजो को मिलाकर और हिमामदस्ते मे कूटकर आवश्यकतानुसार घी डालकर तीन-तीन छटाक के लड्डू बना लें।

व्यवहार-विधि—प्रातः और सायकाल एक-एक लड्डू खाकर ऊपर से गाय का एक पाव गरम दूध पीना चाहिए।

गुण—कुछ दिनों तक इसका सेवन करने से दिल और दिमाग मे ताकत पैदा होती है। यह शून्य मस्तिष्क को बहुत जल्द पुष्ट करने वाला मोदक है।

विशेष—केवल शीतकाल मे ही इसका सेवन करना चाहिये।

वस्ति—कर्म विधि

चरकादि शास्त्रों मे वस्तिकर्म का जो विधान लिखा है, उसे आजकल के वैद्यों ने प्रायः छोड रक्खा है। डाक्टर लोग घाव आदि धोने मे जिस वस्ति यन्त्र का उपयोग करते हैं, उसी के द्वारा निम्नलिखित प्रकार से वस्ति-कर्म का अनुभव मैंने भी किया है।

वस्ति की आवश्यकता—बहुत से रोगी ऐसे होते हैं, जो वमन, विरेचन आदि क्रियाएँ सहन नही कर सकते। किन्तु बिना कोष्ठ की सफाई किये उन्हें

औषधि गुण भी नही करती। अतः उनके लिए यह वस्ति-कर्म बहुत ही उपयोगी है।

वस्ति के गुण—इस वस्ति के प्रयोग से मल की गांठे निकल जाती हैं और कोष्ठ घुलकर साफ हो जाता है। आयुर्वेद-शास्त्र में वर्णित जितने रोग है और उन रोगो को दूर करने के लिये जितनी औषधियो का प्रयोग होता है, प्रायः उन रोगो पर उन्ही औषधियो से बने हुए क्वाथ, फाण्ट और हिम आदि द्वारा वस्ति-क्रिया करने से रोग शीघ्र आराम होता है।

वस्ति-उपयोग विधि—वस्ति-यन्त्र मे सवा दो सेर पानी भरकर उसे दीवार मे करीब चार हाथ ऊँची कील के सहारे टांग दें और वस्ति यन्त्र की नली के अग्रभाग को रोगी की गुदा मे करीब ढेढ इन्च तक प्रवेश कराकर, उसकी टोंटी को खोल दें। इस विधि से करीब दो-तीन मिनट मे सारा पानी रोगी के पेट मे पहुंच जाता है। उस समय शान्त-चित्त से रोगी को लेट अथवा बैठकर अपनी सुविधा के अनुसार जैसे बने कम-से-कम पाँच मिनट और अधिक-से-अधिक बीस मिनट तक पानी को रोककर पाखाने जाना चाहिये। पित्तज्वर मे—गुरुच, बड़ी हरड और पित्तपापडे के क्वाथ से वस्ति-कर्म करें। श्वास कास मे भटकटैया और बहेडे के काढे की वस्ति दे। वातव्याधि मे अश्वगन्ध तथा इसी तरह की अन्य वायुनाशक औषधियो के क्वाथ की, दूसरे-तीसरे दिन वस्ति अवश्य देनी चाहिये। नेत्र-जलन और मस्तक-ताप मे—गुलाब के फूल, धनिया, मुलेठी तथा चिरायता आदि ठंडी चीजो के फाण्ट की वस्ति दे। वात-पित्त और कफादि दोषों का ठीक अनुभव न होने पर—त्रिफला और नमक के काढे की वस्ति देनी चाहिये। इस काढे की वस्ति से कटि, नितम्ब, उरू, जानु आदि नाभी से नीचे के अवयवों की पीडा अवश्य शान्त होती है और नाभी के ऊपर के अवयवों में भी औषधि का कुछ-न-कुछ प्रभाव अवश्य होता है। स्वस्थ मनुष्य को ठीक समय पर शौच न होने पर—ताजे पानी की वस्ति दें। कब्ज में—अमलतास और कुटकी के काढे की वस्ति दें। भयंकर कोष्ठ-बद्ध मे—साबुन, कलमीशोरा और गरम पानी की वस्ति दें।

विशेष—कब्ज के रोगियो को गुलकन्द और मुनक्का आदि अधिक खाना चाहिये तथा भोजन के आदि, मध्य और अन्त मे एक-एक क्षुधा वटी भी लेनी चाहिये।

❀ समाप्त ❀

श्री श्यामसुन्दर आयुर्वेद ग्रन्थमाला पुष्प–१४

लेखक

पं० केदारनाथ पाठक रासायनिक

प्रकाशक

श्यामसुन्दर रसायनशाला प्रकाशन

गायघाट, वाराणसी–१

मुख्य वितरक

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी–१

चतुर्थ संस्करण फरवरी १९७३ } सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन { मूल्य १ रुपया

रस-शास्त्र का क्रियात्मक सच्चा ज्ञान कराने वाला सर्वोत्तम ग्रन्थ

ग्रन्थकर्ता

यह अनुभूत पारद-वुभुक्षा-विधि, चन्द्रोदयादि हजारों रसो के निर्माण, सव धातु-उपधातुओ के शोधन-मारण की सुगम विधि, बड़े-वडे वैद्यो का पारद-वुभुक्षादि विषयो पर शास्त्रार्थ, गन्धक-हरितालादि तैल तथा परीक्षित चिकित्सा-काण्ड आदि अनेक विषयों से विभूपित, स्पष्ट तथा सविस्तर हिन्दी-भापा टीका से समलंकृत एवं रसायनोपयोगी अनेक चित्रो से सज्जित है।

यह वही सुप्रसिद्ध सच्चा मार्ग-दर्शक ग्रन्थ है जिससे आयुर्वेद-संसार विकसित होकर वर्षों से पूर्ण लाभ उठा रहा है।

सस्करण ५ : पृष्ठ ६६४ : सजिल्द : मू० ८ ००

श्यामसुन्दर रसायनशाला प्रकाशन

गायघाट, वाराणसी--१

विषय-सूची

अनुभूत योग

द्वितीय भाग

कनक भस्म

धतूरे का परिपक्व फल २० तोले

बनाने की विधि—मिट्टी की हँडी मे धतूरे के पके ताजे फल डाल कर ढक्कन से उसका मुँह बन्द कर दें और संधि पर कपड़मिट्टी कर गजपुट मे फूँक दे। एक ही पुट में अंतर्धूम दग्ध काली भस्म बन जायेगी। उसे हिमामदस्ते में कूट और कपड़छान कर रख लें।

गुण—इसके व्यवहार से दमा मिटता है।

उपयोग विधि—एक से दो रत्ती तक भस्म मधु मे मिला कर सेवन करना चाहिए। साधारण दशा मे प्रातः और सायंकाल एक-एक मात्रा और रोग के विशेष आक्रान्त दशा मे चार-चार घण्टे पर इसकी एक-एक मात्रा लेनी चाहिए। दो रत्ती इसकी पूर्ण मात्रा है। बच्चो और दुर्बलो की मात्रा, उम्र और बल के अनुसार कल्पना कर लेनी चाहिए।

अनुभव—श्री पं० महेन्द्र मिश्र आयुर्वेदाचार्य (अध्यक्ष, समस्तीपुर म्युनिसिपलबोर्ड आयुर्वेदिक औषधालय, जि० दरभङ्गा) ने कई रोगियों पर इसका उपयोग कर लाभ उठाया है, अनुभूत है।

दरदार बटी

शुद्ध अफीम	१ तोला
शुद्ध सिंगरिफ	१ ,,
सोठ का कपड़छन चूर्ण	१ ,,
इन्द्रयव ,,	१ ,,
नागरमोथा ,,	१ ,,
शुद्ध कपूर ,,	१ ,,

बनाने की विधि—सभी औषधियो को खरल में एक दिल कर ले और थोड़ा जल डालकर घोटें। गोली बनाने लायक होने पर मूँग के बराबर गोलियाँ बना कर रख लें।

गुण—इसके व्यवहार से अतिसार, आमातिसार पेट का मरोड़ आदि दूर होते है।

व्यवहार विधि—इसकी मात्रा एक गोली है। इस औषधि की एक मात्रा तीन माशे गूलर के दूध या खाँड़ में मिला कर देनी चाहिए। रोग की साधारण दशा मे सुबह-शाम और यदि रोग का आक्रमण हो रहा हो तो ऐसी दशा मे चार-चार घण्टे पर देनी चाहिए।

अनुभव—श्री प० शीबू मिश्र (कैमाशिकोह, पटना सिटी) से यह प्राप्त हुआ है। उन्होने अपने रोगियों पर व्यवहार कर इससे विशेष लाभ उठाया है। अनुभूत है।

चतु:सम बटी

शुद्ध हीग	१ तोला
शुद्ध अफीम	१ ,,
जायफल	१ ,,
माजूफल	१ ,,

बनाने की विधि—जायफल और माजूफल को कूट और कपड़छन कर खरल मे रखे और ऊपर से हीग तथा अफीम डाल कर कुछ देर घोटे, जब एकदिल हो जाय तब थोडा जल डाल कर तबतक खरल करे जबतक मसाला गोली बनाने लायक न हो जाय। फिर मूँग के बराबर गोलियाँ बना ले।

गुण—यह अतिसार, उदरशूल तथा वातनाशक है।

उपयोग विधि—सुबह-शाम एक-एक बटी पके केले या शीतल जल से लेनी चाहिए।

योग की प्राप्ति—श्री पं० शीबू मिश्र (कैमाशिकोह, पटना सिटी) से यह प्राप्त हुआ है। अनुभूत है।

दाद का गरीबी मलहम

कली चूना	५ भर
पीली सरसो का तेल	१५ ,,

बनाने की विधि—तेल को खरल में रख कर ऊपर से चूना डाल दें और तीन-चार घण्टे तक खरल करे। एकदिल होने पर डिब्बे मे रख ले।

गुण—इसके उपयोग से दाद शीघ्र मिट जाती है।

व्यवहार विधि—दाद वाली जगह पर इसे दिन-रात में एक-दो वार नित्य लगाना चाहिए।

अनुभव—श्री पं० शीवू मिश्र (कैमाशिकोह, पटना सिटी) से यह प्राप्त हुआ। उन्होने इसे अनुभूत वताया है।

दस्त-बंद की गोली

अनार की कली	१ नग
शुद्ध अफीम	चौथाई रत्ती
जायफल	१ नग

बनाने की विधि—अनार की कली को वीच मे चाकू से चीर कर अफीम भर दे और थोड़ी चिकनी मिट्टी कली के चारो ओर पोत कर उसे कंडे की आग मे पका ले। जव दस-पन्द्रह मिनट में समझे कि कली पक गयी होगी, तव उसे आग मे से निकाल कर उसके ऊपर की मिट्टी साफ कर लें और एक जायफल के साथ खरल मे पीसे। जव गोली वनाने लायक हो जाय, मसूर के वरावर गोलियाँ वना ले।

गुण—इससे वच्चो का अतिसार, आमातिसार तथा पेट की ऐंठन मिटती है।

व्यवहार विधि—दूध पीते वच्चो को माँ के दूध या

मधु के साथ और कुछ वडे वच्चों को मधु या गरम कर शीतल जल के साथ देनी चाहिये। यदि दस्त ज्यादा लगते हों तो चार-चार वण्टे पर और मामूली दस्तों में सुवह-शाम देनी चाहिए।

अनुभव—श्री कामेश्वर मिश्र वैद्य (पुनास वेदौलिया, रानीटोल, दरभंगा) से यह योग प्राप्त हुआ है। यह उनके दादाजी का वहुत वार का अनुभूत है।

शुक्र-मेहनाशक चूर्ण

गिलोय का सत्व	२॥ तोला
स्याह मुसली का कपड़छन चूर्ण	२॥ तोला
मिसरी	१० तोला

बनाने की विधि—तीनो चीजों को खरल में कुछ देर घोट कर रख ले।

गुण—इसके सेवन से शुक्रमेह, स्वप्नदोष, पाखाने के वक्त धातु निकल जाना तथा शीघ्रपतन आदि मिट जाता है।

व्यवहार विधि—सुवह-शाम धारोष्ण गाय के दूध के साथ छः मासे चूर्ण चालीस दिनो तक सेवन करना चाहिये।

अनुभव—श्री पं० चतुर्भुज पाण्डेय (पुनास वेदौलिया, रानीटोल, दरभगा) का यह अनुभूत है।

आमलकी-स्वरस प्रयोग

ताजे आँवलों का कपडे से छना रस	२॥ तोले
मधु	२॥ तोले

बनाने की विधि—दोनो को एक शीशी मे रखकर हिलावें और रख ले। यह पूरी एक मात्रा है।

गुण—इससे अम्लपित्त, रक्तपित्त, दाह, हृदय की बढी हुई धड़कन, वातगुल्म आदि शान्त होते है।

व्यवहार विधि—सुवह-शाम पीना चाहिए। धातु के वरतन के स्पर्श से औषधि विकृत हो जाती है, अतः शीशे, मिट्टी या पत्थर के वरतन मे लेकर पीना चाहिए।

अनुभव—लेखक ने अपनी धर्मपत्नी की वीमारी में इसका उपयोग कर विशेष लाभ उठाया है। अनुभूत है।

रक्तपित्त पर-वासा

अडूसा के पत्तो का कपड़े से छना रस	२॥ तोले
मधु	२॥ तोले

बनाने की विधि—एक शीशी मे रखकर कुछ देर हिलावें और कार्क वन्द कर रख ले। यह पूरी एक मात्रा है, दुर्वल या कम उम्र वाले को इसे दो वार मे देना चाहिये।

गुण—इसके सेवन से रक्तपित्त, खॉसी, दमा तथा क्षयी-पूर्वक कास मे विशेष लाभदायक है।

व्यवहार विधि—सुवह-शाम पीना चाहिए।

अनुभव—रक्तपित्त के उपद्रव-काल मे लेखक ने इसका व्यवहार कर अनुभव प्राप्त किया है। एक सप्ताह तक वरावर दोनो वक्त व्यवहार करते रहने से नाक, मुँह तथा पेशाब से खून आना वन्द हो जाता है।

करवीरादि तैल

पीली सरसो का तेल	१ पाव
मैनसिल	१ तोला
पीले कनेर की जड़, फल और पत्ते	१० तोले

बनाने की विधि—मैनसिल को वारीक पीस ले और कनेर की जड, पत्ते और फलो को जल के साथ चटनी की तरह सिल पर पीस ले। फिर तेल को आग पर तप्त करें। जव तेल में से धुआँ उठने लगे तव उसमें दोनों पीसी चीजे डाल कर पाक करे। जल कर जव केवल तेल शेष रहे उतार ले और कपडे से छान कर वोतल मे रख ले।

विशेष—तेल पकाते वक्त उसके धुआँ से आँख और नाक को वचाना चाहिए, क्योंकि कनेर उपविष है।

गुण—इसकी मालिश से सूखी और गीली खुजली मिट जाती है। यदि पीली-पीली फुन्सियाँ हो तो वे भी अच्छी हो जाती है।

व्यवहार विधि—दिन-रात में दो-तीन वार खुजली वाली जगह मे इसकी मालिश करनी चाहिये। यदि तर खुजली हो या पीली फुन्सियाँ हो, इस कारण मालिश करने मे कष्ट होता हो तो किसी चिड़िये के पंख से फुन्सियो पर इसे लगा दिया करे।

अनुभव—स्वर्गीय श्री वशीधर पाठक (मुकामा, पटना) से प्राप्त हुआ था। उनका यह अनुभूत था।

अतीस की घुटी

काली अतीस

बनाने की विधि—अतीस को माँ या बकरी के दूध के साथ पत्थर पर घिस कर चम्मच मे उठा ले।

गुण—इसके प्रयोग से छोटे बच्चे का ज्वरातिसार, अतिसार, आमातिसार, मन्दाग्नि, वमन, खाँसी तथा उदर-कृमि नष्ट होती है। वह शीतपूर्वक ज्वर के लिए भी हितकर है।

व्यवहार विधि—तीन-तीन घण्टे पर एक-एक मात्रा औषधि चटानी चाहिए। एक साल के बच्चे को आधी से एक रत्ती तक इसकी मात्रा देनी चाहिए।

विशेष—इसकी पूर्ण मात्रा बड़ी उम्र वालो के लिए चार से आठ रत्ती तक की है। बच्चो की बीमारियो मे यह बहुत ही ज्यादा लाभदायक सिद्ध हुआ है। इसका द्रव्य-गुण शास्त्र से शिशु-भेषज्य नाम भी है।

अनुभव—बिहार प्रान्त (दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पटना व मुंगेर आदि जिलो मे) में इसका बालघुटी के रूप मे विशेष प्रचार है। लेखक ने बच्चो पर प्रयोग कर बहुत बार इसका अनुभव किया है। कब्ज की दशा मे इसे नही देना चाहिए।

सूजाक पर—तीन तेल

शीतलचीनी का तेल	१ तोला
गंधाविरोजे का तेल	१ ,,
सफेद चन्दन का तेल	१ ,,

बनाने की विधि—तीनों तेलो को मिला कर एक शीशी में रख ले।

गुण—इसके व्यवहार से सूजाक, उसके कारण होने वाली जलन, मूत्रनली का शोथ तथा नली के अन्दर का व्रण आदि नष्ट होते है एवं मूत्र खुल कर आता है।

व्यवहार विधि—गाय का कच्चा दूध आधा पाव, मिट्टी के पात्र में शीत में रखा हुआ बासी जल आधा पाव और मिसरी सवा तोले—इन्हे मिलाकर लसी तैयार कर ले और उसी मे पाँच से दस बूँद तक तेल डालकर अच्छी तरह फेंट ले और रोगी को पीने को दे। सुबह-शाम कुछ दिनो तक–जब-तक कष्ट कम न हो–व्यवहार करना चाहिए। बासी जल के अभाव मे मिट्टी के पात्र का शीतल जल भी काम मे लाया जा सकता है।

विशेष—दाह उत्पन्न करने वाली चीजो (तेल, लाल मिर्च, खटाई और गुड़ आदि) से परहेज रखें।

अनुभव—यह लेखक का अनुभूत योग है। नवीन रोग में, एक सप्ताह के भीतर ही इससे सारा कष्ट दूर हो जाता है। कभी-कभी तो पिचकारी लेने की भी आवश्यकता नही पड़ती।

सूजाक पर—बिरोजे का सत

बिरोजे का सत	२॥ तोला
छोटी इलायची के दाने	१० आने भर
मिसरी	६ तोले

बनाने की विधि—तीनो चीजो को अलग-अलग खरल कर कपड़छन कर लें और अच्छी तरह मिलाकर चौडे मुँह की शीशी मे रख ले। छोटे मुँह की शीशी में रखने से वरसात के दिनो में जम जाने के कारण चूर्ण का निकलना मुश्किल हो जाता है।

गुण—इससे सूजाक और उसके कारण होने वाले कष्ट मिट जाते है।

व्यवहार विधि—छः माशे चूर्ण को दूध-जल की लसी या शीतल जल के साथ सुवह-शाम लेना चाहिये।

अनुभव—वहुत दिनो से कई चिकित्सकों को व्यवहार करते देख लेखक ने भी इसका व्यवहार किया और इसे अनुभूत पाया।

बिरोजे का सत बनाने की विधि—एक वटलोही मे गले तक जल भर कर उसके मुँह मे पतला, मजबूत कपड़ा वॉधे और उसी कपड़े के ऊपर आधा सेर गन्धाविरोजा रख कर बटलोही को चूल्हे पर रख आँच दे। जब कपडे से छन कर सभी विरोजा वटलोही मे आ जाय तव कपडे को हटा दे और वटलोही को चूल्हे से नीचे उतार कर कुछ ठण्ढा कर ले। जब पानी गरम ही रहे तभी विरोजे को निकाल कर हाथो से, रेवड़ी की चाशनी की तरह खीचना प्रारम्भ करे और थोडी-थोड़ी देर पर खीचे हुए विरोजे को गरम पानी मे डालते भी रहे ताकि वह मुलायम वना रहे। इस प्रकार वह रेशम की तरह सफेद चमकदार और खस्ता हो जायगा। इस सत को दस-वारह घण्टो तक सूखने दे, फिर खरल मे चूर्ण कर रख ले। यह अच्छे दर्जे का विरोजे का सत होगा।

विशेष—ठंडे पहाड़ों पर होने वाले चीड़ वृक्ष के गोद को गन्धाविरोजा कहते हैं। तारपीन का तेल भी इसी से वनता है। द्रव्य-गुण शास्त्र मे इसकी वड़ी तारीफ लिखी है। यह मधुर कटु, स्निग्ध, उष्ण, कषाय, रेचक, पित्तजनक, वायु, मस्तकरोग, नेत्ररोग, स्वरभग, कफ, राक्षस वाधा, पसीना, योनिरोग, अजीर्ण, अफारा, दुर्गन्ध, कृमि, कण्डु एव व्रणनाशक है।

शुक्रमेह पर—सेमलकन्द

सेमलकद का चूर्ण	१ पाव
मिसरी	२ पाव

वनाने की विधि—सेमल के पेड़ के नीचे का ताजा कद निकाल कर उसे जल से धोकर मिट्टी साफ कर दे और उसके ऊपर के छिलके को छीलकर अलग कर दे। हाथ से ही उसके छिलके आसानी से उतर जाते हैं। फिर उसे चाकू से टुकडे वना कर सुखा लें। वाजारो मे सेमलकन्द ज्यादातर असल नही मिलता है। इसलिए उसे अपने सामने ही पेड़ के नीचे से निकलवा लेना चाहिए। सूखे हुए कन्द को कूट कपड़छन कर उसमे मिसरी मिला कर रख ले।

गुण—इसके सेवन से शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, पाखाने के समय धातु का निकल जाना आदि रोग मिट जाते है और शरीर पुष्ट हो जाता हैं।

व्यवहार विधि—सुवह-शाम पाव-आधा पाव धारोष्ण गाय के दूध के साथ छ माशे चूर्ण चालीस दिनो तक सेवन करना चाहिए।

अनुभव—उत्तर विहार (दरभंगा,जिला) की ओर वैद्यों के अतिरिक्त, अनपढ़ ग्रामीणो मे इस कन्द के प्रयोग का काफी प्रचार है। उधर के लोग धातु रोग होने पर इसके कन्द को तुरत पेड के नीचे से निकाल और छील कर मूली की तरह नित्य खाली पेट खाते है। उन्ही ग्रामीणो से मैने इसके विपय में विशेप अनुभव प्राप्त किया। अनुभूत है।

बाल शरबत

वायविडंग	५ तोले
सौफ	५ ,,
शतावर	५ ,,
नागफनी के लाल पके फूलो का रस	६ छटाँक
कली चूने का नितरा हुआ जल	६ ,,
साफ चीनी	२। सेर

बनाने की विधि—वायविडग, सौफ और सतावर को कुचल कर डेढ़ सेर जल मे भिगो दे। चौबीस घण्टे के बाद उसका काढ़ा करें जब छः छटाँक शेष रहे उतार कर छान ले। फिर नागफनी के फलों का रस और चूने के नितरे जल दोनो के काढ़े मे मिलाकर उसी मे चीनी डाल कर चाशनी बना लें। जब्र चाशनी की बूँद डालने से जमीन पर मोती की तरह ठहर जाय या एक तार की चाशनी हो जाय तव समझना चाहिए कि शरवत की चाशनी हो गयी। यदि शरवत को रगीन वनाना चाहे तो चाशनी को चूल्हे से उतारते ही उसमे मिठाई रँगने वाला रग थोड़ा-सा मिला दे।

चूने का पानी बनाने की विधि—एक वोतल मे एक छटाँक कली चूना डालकर ऊपर से जल भर दे। जब चूना गल जाय तब वोतल को खूब हिला कर रख दे। चौबीस घण्टे के बाद चूने का नितरा हुआ जल अलग कर लें और चूने को फेंक दे।

गुण—इससे बच्चों का बढ़ा हुआ यकृत्, साधारण बढ़ी प्लीहा, दूध के अजीर्ण के कारण होने वाली कै, पतले दस्त, मदाग्नि, उदर, कृमि, दौर्वल्य तथा हड्डियो की कमजोरी मिटती है।

व्यवहार विधि—सुवह-शाम एक-एक तोले औषधि वच्चे को चटाना चाहिए। यह एक साल के बच्चे की मात्रा है। छोटे वच्चे को आधा तोला दें। दूध या जल मे मिला कर भी इसे दे सकते है।

अनुभव—श्री सीताराम मिश्र वैद्य (पुनास वेदौलिया, रानी-टोल, दरभंगा) का यह अनुभूत है।

शतपुष्पादि अर्क

सौफ	१ पाव
अजवायन	१ ,,
पोदीना हरा	२ ,,
वड़ी इलायची	१ ,,
जल	८ सेर

बनाने की विधि—चारों चीजो को कुचल कर चौबीस घण्टे तक जल में भीगने दे, फिर अर्क खीचने के यन्त्र मे रख अढ़ाई सेर अर्क खीच लें।

गुण—यह अर्क अजीर्ण, पेट का दर्द, कै, पतले दस्त, प्यास, पेशाव की जलन आदि रोगो को हरता है।

व्यवहार विधि—तीन-तीन घण्टे पर दो-दो तोले अर्क पिलाना चाहिए। साधारण रोग में सुवह्-शाम दे।

अनुभव—यह पंजाव प्रान्त की ओर व्यवहृत होने वाला प्रसिद्ध योग है। उधर के लोग हैजा मे इसे चलाते है। मुझे श्री दामोदर शास्त्री भिषगाचार्य, काशी, से यह योग प्राप्त हुआ। उनका यह अनुभूत है।

शिवलिंगी योग

शिवलिगी के ताजे फल	५ नग
काली मिर्च	७ नग

बनाने की विधि—शिवलिगी को कण्डे की आग मे पका कर काली मिर्चो के साथ सिल पर पीस कर एक गोली वना लें। यह एक मात्रा है।

गुण—इसके व्यवहार से प्लीहापूर्वक शीतज्वर (क्रानिक मलेरिया) मिट जाता है। बच्चो के लिए उम्र के हिसाव से इसकी मात्रा कम कर लेनी चाहिए।

व्यवहार विधि—ज्वर आने से दो-तीन घण्टे पहले तीन-तीन घण्टे पर गरम जल से इसे सेवन करना चाहिए। यदि विना ज्वर की प्लीहा या यकृत्-वृद्धि हो तो केवल प्रात.काल ही सेवन करे।

अनुभव—यह उत्तर विहार की तरफ प्रसिद्ध योग है। स्वर्गीय श्री रामचरण मिश्र वैद्य से यह योग मुझे ज्ञात हुआ था। उन्होने पुरातन विषम शीतज्वर पर मुझ पर ही इसका प्रयोग किया था। सिद्ध योग है। अनुभूत है।

शीतज्वर पर—विजय।

विजया (भाग)	२ रत्ती
काली मिर्च	११ दाने

बनाने की विधि—दोनों चीजों को सिल पर जल के साथ पीस कर एक गोली बना ले। यह जवानो के लिए एक मात्रा है।

गुण—इससे शीतज्वर का आक्रमण रुक जाता है।

उपयोग विधि—ज्वर आने से दो-तीन घण्टे पूर्व गरम जल से खानी चाहिए। बच्चो को उम्र के अनुसार विचार कर मात्रा कम देनी चाहिए।

अनुभव—उत्तर विहार की तरफ यह काफी प्रसिद्ध योगहै। शीतज्वर जब नही रुकता है तब कभी-कभी वैद्य से ही रोगी पूछ बैठता है क्या भङ्ग खाकर देखें? इसी से अन्दाजा लगेगा कि यह कितना प्रसिद्ध है। विपम शीतज्वर पर यह लेखक का अनुभूत है।

बालातिसारनाशक—मयूरशिखा।

मयूरशिखा की जड	८ आने भर
काली मिर्च	७ दाने

बनाने की विधि—दोनों चीजो को सिल पर जल के साथ पीस कर दो तोले जल मे घोल कर कपडे से छान ले। यह एक मात्रा है। छः से वारह महीने के बच्चे का यह खुराक है।

गुण—इसके व्यवहार से वालको के ज्वरातिसार, अतिसार तथा वालग्रह नाश होते है।

व्यवहार विधि—बढ़े हुए रोग मे चार-चार घण्टे पर और साधारण दशा मे केवल प्रात.काल एक मात्रा देनी चाहिए।

अनुभव—बहुत छोटी अवस्था मे मैने मुकामा मोलदियार टोला निवासी बाबू लूटनसिह को बच्चो के ऊपर इसका प्रयोग करते देखा था। वे बाल-रोग के इलाज के लिए मशहूर थे।

विशेष मयूरशिखा के पौधे ज्यादातर समशीतोष्ण जगहो मे आम के पेड़ो के नीचे उगते है। इसका क्षुप एक डेढ़ बालिश्त लम्बा, पत्ते बरहल के पत्ते की तरह खुरदरे लेकिन शक्ल मे महुए के पत्ते की तरह होते है। पत्तो नुकीले नही होते, नोक की जगह गोलाकार होता है। क्षुप मे से एक महीन डंठल-सी ऊपर की ओर निकलती है। उसी के ऊपर मोर के सिर की चोटी की तरह बनी होती है और नीचे जमीन में तीन पत्ते सटे होते है। राजनिघण्टु-कार ने इसे स्वादु, मूत्रकृच्छ, बालग्रहनाशक और वशीकरण गुण वाला लिखा है। कई तान्त्रिक ग्रन्थों मे इसके उपयोग पढ़ने को मिलते है।

पुष्टई

गुडूची	४ तोले
शतावर	४ ,,
असगन्ध	४ ,,
तालमूली	४ ,,
चिड़ियाकन्द	४ ,,
गाय का घी	१० ,,
शक्कर	१ सेर

बनाने की विधि—गुडूची से चिड़ियाकन्द तक की पाँचों चीजों को कूट और कपड़छन कर मन्द-मन्द आँच पर घी में भून लें। फिर थोड़े जल में शक्कर को घोल कर कपड़े से छान लें और उसकी चाशनी तैयार करें। जब एक तार की चाशनी बन जाय, उसमें, घी मे भुनी हुई औषधियाँ डालकर कुछ देर पकावें, जब गाढ़ा हो जाय उतार कर एक-एक तोले का लड्डू बना लें।

गुण—इसके व्यवहार से धातुदौर्बल्य, शरीर की कमजोरी मिटती है और महीने-दो महीने जाड़े के दिनो मे खा लेने से शरीर बलवान हो जाता है।

व्यवहार विधि—जाड़े के दिनो में एक-दो लड्डू खाकर ऊपर से धारोष्ण या कुछ गुनगुना दूध पीना चाहिए।

अनुभव—श्री प० चतुर्भुज पाण्डे वैद्य (पुनास वैदौलिया, पो० रानीटोल, दरभंगा) से यह योग प्राप्त हुआ था।

दयानन्द दंतमंजन

माजूफल	२ तोले
मोरेठ	२ ,,
पपरिया कत्था	२ ,,
रूमीमस्तगी	२ ,,
नीलाथोथा	२ ,,
ताजे मन्दार की जड़ की छाल	१० ,,

बनाने की विधि—पहले नीलेथोथे को कण्डे के अंगारे पर फुला कर थोडे से जल मे बुझाये। बुझाते वक्त शीघ्र ही जल से नीलेथोथे को निकाल लेना चाहिए। फिर माजूफल से नीलेथोथे

तक की पाँचो चीजो को अलग-अलग कूट और छान लें। इसके बाद मन्दार की जड़ की छाल निकाल-निकाल कर जल से धो डाले। जव उसकी मिट्टी साफ हो जाय तव चाकू से उसके महीन-महीन टुकडे कर ले। फिर छहो चीजो को नीलेथोथे के बुझे हुए जल में लोहे की कड़ाही मे, लोहे की मूसली से ही, जहाँ विशेष हवा न आती हो ऐसी जगह मे कूटें। जव वह अजन की तरह महीन हो जाय, शीशी में रख ले।

गुण—इसके व्यवहार से दाँत पुष्ट होते है, उसकी पीड़ा शान्त होती है और उसका हिलना-गिरना वन्द हो जाता है।

व्यवहार विधि—जव दाँतो मे कष्ट होता हो, तव सुवह-शाम अगुली मे लेकर इसे दाँतो मे मलना चाहिये। यदि कष्ट न हो तो केवल प्रातःकाल दातुन करते वक्त ही इस्तेमाल करें।

अनुभव— इस योग का आर्यसमाज के संस्थापक स्वर्गीय स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ३१ मार्च १८८० ई० मे स्वामी कृपा रामजी को पत्र लिखते वक्त जिक्र किया था और इसे वहुत ही गुणदायक वतलाया था। पजाव के वयोवृद्ध वैद्य स्वर्गीय विद्याधर जी प्राणाचार्य इसे लाहौर मे किसी सज्जन के कमरे मे टँगे दयानन्द सरस्वती के हाथ के लिखे उपर्युक्त पत्र मे से नकल कर काशी लाये थे। उन्ही से यह योग प्राप्त हुआ।

आमलक्यादि चूर्ण

आँवले का वक्कल	५ तोले
चीते की जड़ की छाल	५ ,,

जंगी हरड़	५ तोले
पिप्पली	५ ,,
सेधा नमक	५ ,,

बनाने की विधि—सभी चीजो को कूट और कपड़छन कर बोतल मे रख ले।

गुण—इसके सेवन से शरीर मे रहनेवाला सूक्ष्म ताप, अरुचि, मन्दाग्नि और कफ नष्ट होता है। यह आम का पाचन करने वाला और क्षुधावर्द्धक है।

व्यवहार विधि—कुछ दिनो तक सुबह-शाम गरम जल से तीन-तीन माशे चूर्ण सेवन करना चाहिए।

अनुभव—यह शार्ङ्गधर संहिता का प्रसिद्ध योग है। विहार प्रान्त के अच्छे-अच्छे चिकित्सक इस योग का अत्यधिक व्यवहार करते है। यह अत्यन्त लाभदायक है।

दाड़िम-पुटपाक

कच्चा अनार	१ नग
मधु	१ तोला

बनाने की विधि—कच्चे अनार को चिकनी मिट्टी के भीतर रख कर गोला-सा बना लें और उसे कण्डे की आग में पका लें। जब ऊपर की मिट्टी लाल हो जाय, आग में से निकाल कर मिट्टी के भीतर से पके हुए अनार को निकाल ले और उसे सिल पर पीस कर कपड़े मे रख रस निचोड़ ले। यह एक मात्रा है।

गुण—इसके सेवन से आमातिसार, रक्तातिसार तथा अतिसार मिटता है।

व्यवहार विधि—सुबह-शाम रोगी को एक-एक मात्रा एक तोला मधु के साथ देना चाहिये।

अनुभव—यह आयुर्वेदिक चिकित्सा-ग्रन्थ का प्रसिद्ध योग है। बिहार प्रान्त के वृद्ध चिकित्सको का व्यवहार किया हुआ है।

फलाहार

मखनिया दही	आधा सेर
कच्चा केला	२० नग

बनाने की विधि—कच्चे केले को उबाल कर छील लें और उन्हे मसल कर तवे पर छोटी-छोटी रोटियॉ सेक लें।

गुण—इसके प्रयोग से पुराना असाध्य शोथ सहित सग्रहणी, अतिसार, उदर रोग आदि मिट जाते है।

व्यवहार विधि—सुबह-शाम या जब भूख लगे तब इसी का आहार करना चाहिए। ऊपर दही और केले का परिमाण एक साधारण रुग्ण मनुष्य की खुराक की दृष्टि से रखा गया है। उम्र, शक्ति और भूख के अनुसार दोनो चीजो को घटा-बढ़ा लिया जा सकता है। अन्न से फल चौगुना खाया जाता है और दूध की अपेक्षा दही भी ज्यादा परिमाण में खाया जाता है। इसलिये ऊपर का परिमाण रुग्ण के लिये ज्यादा नही है। यह दूसरी बात है कि

अन्नाहार छोड़ने के कई दिनों तक केवल इसी का आहार न रुचिकर हो, लेकिन लाचार होकर केवल इसी को आहार रूप में लेते रहने की प्रतिज्ञा कर लेने पर फिर उक्त परिमाण से कई गुना ज्यादा फलाहार रोगी करने लगता है। इस पथ्याहार के साथ नमक या मधुर पदार्थ कुछ भी नही लिया जाता और पानी भी विना उवाले ठंढा ही दिया जाता है।

अनुभव—उपर्युक्त असाध्य रोगियो को उत्तरी बिहार के चिकित्सक दवा से जब कुछ भी लाभ होता नही दिखाई देता, तब केवल फलाहार और वह भी दही-केले का कराकर रोगी को रोग-मुक्त करते है। यह उधर विशेष प्रसिद्ध है।

नृःकपालस्थि भस्म

जले हुए मनुष्य की खोपड़ी के हिस्से

बनाने को विधि—मनुष्य की खोपड़ी श्मशान से लाकर उसमे से खोपड़ी के हिस्से ले ले और उन्हें टुकड़े करले। टुकड़ो को मिट्टी के वरतन मे रख ढक्कन से बन्द कर दें। बरतन और ढक्कन की सन्धि को मिट्टी से अच्छी तरह बन्द कर गजपुट में फूँक दें। एक ही वार मे सफेद रग की भस्म वन जायगी। उसे हिमामदस्ते में कूट और कपड़छन कर बोतल मे रख ले। बोतल के लेविल पर कुछ और ही नाम रखें।

गुण—इसके प्रयोग से अपस्मार (मृगी) रोग आराम होता है।

व्यवहार विधि—अपस्मार रोगी को दो-दो रत्ती की मात्रा मधु के साथ देना चाहिए। समय प्रातः और सायंकाल।

अनुभव—श्री महेन्द्र मिश्र आयुर्वेदाचार्य (पुनास वेदौलिया, रानीटोल, दरभंगा) का यह योग अनुभूत है।

जले पर—चरबी का प्रयोग

बकरे की चरबी

बनाने की विधि—बकरे की चरबी को आग पर जरा गरम कर कपडे से छान ले। उसे एक चौड़े मुँह के डिब्बे में रख लें।

गुण—इसके व्यवहार से दग्धव्रण (आग से जलकर होने वाला घाव) शीघ्र आराम हो जाता है।

विशेष—बहुत ज्यादा जल जाने के कारण उस स्थान की चरबी भी जल जाती है। ऐसे व्रण के लिए चरबी का प्रयोग अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है। शरीर मे जिस तत्व की कमी हो फिर से उसी तत्त्व को पहुँचा देना, इस सिद्धान्त की यहाँ पुष्टि हो जाती है।

व्यवहार विधि—जले हुए स्थान पर दिन-रात में दो-तीन बार इसे लगाना चाहिए। अधिकतर साफ धुले हुए कपडे पर चरबी का लेप कर उसी कपड़े को जले हुए स्थान पर साट दिया जाता है।

अनुभव—श्री जगनलाल मिश्र वैद्य (ग्राम-बिहट, पो०—नुर-पुर, जि०—मुंगेर) औषधि का तेल पाक करते वक्त जल गये थे।

उनके एक पैर के ठेहुने के नीचे का पूरा हिस्सा ही जल गया था। किसी प्रकार की दवा से जल्दी घाव आराम नही हो रहा था। किसी ने उन्हें बकरे की चरबी लगाने को कहा। चरबी के प्रयोग से आश्चर्यजनक लाभ होता मालूम हुआ। उन्होने महीनों केवल चरबी का ही प्रयोग किया और उनका घाव तथा शरीर पर होने वाला सफेद दाग मिट गया।

चूने के जल का उपयोग

कली चूना विना बुझा	५ तोले
जल	१० छटॉक

बनाने की विधि—एक बोतल मे जल भर कर उसमे कली चूना डाल दे। जब चूना गल जाय तब बोतल को अच्छी तरह हिला कर रख दे। प्रात.काल उसके निथरे हुए जल को काम मे लावे।

गुण—इससे उदर-कृमि, यकृत्-प्लीहा के दोष, मंदाग्नि, दूध के कारण होने वाली अरुचि, हड्डियो की कमजोरी, साधारण अतिसार आदि मिटते है।

व्यवहार विधि—चूने का निथरा जल दो तोले सुबह-शाम पीना चाहिए। बच्चो को चौथाई मात्रा दे।

अनुभव—यह लेखक का अनुभव किया हुआ योग है। छोटे बच्चों के ऊपर इसका असर अच्छा होता है। जब बच्चे मॉ का दूध पीने के बाद बार-बार उल्टी कर दे, उनका यकृत् विशेष बढ़ा

हो, शरीर दुर्बल, ढीला-ढाला, दस्त आते हों, पेट में केंचुए हों तो ऐसी दशा में उनके लिए यह चूने का निथरा जल अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है।

दद्रुहर

सोपारी	५ तोले
अशुद्ध लूणियाँ गन्धक	२॥ ,,
मिट्टी का तेल	१५ ,,

बनाने की विधि—सोपारी को जला कर कोयला बना लें। फिर तीनो चीजो को खरल मे रख घोटे। मरहम की तरह हो जाने के बाद चौड़े मुँह की शीशी में रख ले।

गुण—यह दाद को तीन-चार दिनो मे आराम करता है।

व्यवहार विधि—रात मे सोते वक्त मरहम को दाद पर अच्छी तरह पोत देना चाहिए। तीन-चार दिनो तक लगाने से ही दाद सूख जायगा और उसकी पपड़ियाँ उखड़ने लगेगी। इस मरहम से कपड़े गन्दे हो जाते है, इसलिए सोने मे रद्दी कपड़े पहनने और काठ की चौकी आदि का इस्तेमाल करना चाहिए। यदि ताम्बे के पैसे से दाद को अच्छी तरह खुजला कर इस दवा का व्यवहार किया जाय तो और भी जल्दी लाभ होता है। हाँ, खुजलाने के बाद दवा कुछ जलन पैदा करती है।

अनुभव—बचपन मे ही किसी के (सम्भवतः बीहट, पो० नूरपुर, जिला मुंगेर के भाईलाल श्रम से) मुख से लेखक ने सुना

था और अपने ही ऊपर इसका प्रयोग कर इसके आश्चर्यजनक गुण से लाभ उठाया था।

धातु रोग पर—वटदुग्ध

वट का ताजा दूव	२० बूँद
वताशा	१ नग

वनाने की विधि—वताशे मे जरा-सा छेद कर दूध डाल दे। यह एक मात्रा है।

गुण—इसके सेवन से शुक्रमेह शीघ्र मिट जाता है और शरीर का रंग निखर आता है।

व्यवहार विधि—सुवह-शाम चालीस दिनों तक सेवन करना चाहिए।

अनुभव—स्वर्गीय पं० प्रयागभट्ट वैद्य (कठौतियागली, पटना सिटी) का यह योग वहुत वार का अनुभव किया हुआ है।

गीली खुजली पर—रेंड़ के पत्ते का प्रयोग

रेंड़ी के मुलायम पत्ते

बनाने की विधि—शरीर में जितने फोड़े हो उसी के अन्दाज से रेंड़ के पेड़ मे से उसके मुलायम पत्तो लेकर सिल पर चटनी की तरह पीस ले।

गुण—इसके व्यवहार से गीली खुजली शीघ्र आराम हो जाती है और उसमे का मवाद भी तुरत साफ हो जाता है।

व्यवहार विधि—फोड़ों पर पिसी हुई औषधि चढ़ानी

चाहिये। यदि प्रात:काल चिकनी मिट्टी या सावुन आदि से फोड़ों को साफ कर तथा उसके जल को सूखे तौलिये से सुखा लेने के वाद औषध-प्रयोग किया जाय तो यह अच्छा असर करती है। दिन मे दो-तीन वार लगायी जा सकती है।

अनुभव—चौवीस-पच्चीस वर्प पहले लेखक को गीली खुजली से कष्ट हो रहा था। पटना सिटी, कठौतिया गली के स्वर्गीय प्रयागभट्ट वैद्य ने अपने हाथो से पीसकर इसका प्रत्यक्ष चमत्कार दिखा दिया। छ:-सात दिनो के भीतर ही फोड़े, मवाद और उसके कारण होने वाली पट्टे की उभड़ी हुई गिल्टियाँ अच्छी हो गयी।

काजल

नीम की सूखी पत्तियाँ	२० नग
कपूर	८ रत्ती
गाय का घी	१ भर
साफ रूई	१ भर

वनाने की विधि—रूई को कपड़े की तरह फैलाकर उस पर नीम की पत्तियाँ विछा दे और ऊपर से कपूर का चूर्ण छिड़क कर एक वत्ती वना ले। वत्ती वनाते वक्त इस बात का ध्यान रखे कि कपूर और नीम की पत्तियाँ सिमट न जायँ। फिर उस वत्ती को घी के साथ दिये में रख जला दे। दिये के दोनो ओर ईंट के टुकड़े रख ऊपर से काँसे की थाली उलट कर रख दे। यह क्रिया निर्वात

स्थान में ही होनी चाहिए जिससे दिए की टेम एक-सी थाली में लगती रहे और ज्यादा कज्जल तैयार हो सके। वत्ती के पूरी जल जाने के बाद थाली में लगी कज्जल को खुरच कर रख ले।

गुण—इसके व्यवहार से आँखो का कसकसाना, धुन्ध मालूम होना, पानी-गिरना, लाली आदि नेत्र के तमाम रोग मिट जाते है। यह बच्चों के लिए तो और भी ज्यादा गुणकारी है।

व्यवहार विधि—नित्य रात को सोते वक्त इस कज्जल को आँखों में लगाना चाहिये।

अनुभव—यह लेखक का घरेलू योग है। अनुभूत है।

जहर का तेल

खखिये का चूर्ण	४	आने भर
लालमिर्च	१।	तोले
धतूरे की सूखी जड़	१	वित्ते की
कडुआ तेल	२	छटाँक
धुला कपड़ा	॥	चौथाई गज

बनाने की विधि—धतूरे की एक वित्ते की सूखी-अङ्गुली की तरह मोटी-जड लेकर उसके चारो ओर लालमिर्च को डोरे से बॉध दे। फिर कपडे को एक तख्ते पर फैला कर उसके ऊपर सखिये का चूर्ण छिड़क दे और उसी कपड़े मे मिर्चा लिपटी हुई लकडी लपेट कर एक पलीते की तरह बना ले। कपड़े को होशियारी के साथ लपेटे, जिससे उसके ऊपर छिड़का हुआ सखिये का चूर्ण इधर-उधर न हो जाय। उस पलीते को तेल मे अच्छी तरह

चुपड़ कर चिमटे से पकड़े और उसमें आग लगा दे, जब उसमें से तेल की बूँदे टपकने लगें, उस तेल को एक कटोरी में इकट्ठा करते जायँ। जब तेल खत्म हो जाय और पलीता तेल के बिना बुझ जाय तब कटोरी मे इकट्ठा किया हुआ तेल शीशी मे रख ले। यह तेल जहरीला है, अतः इसके धुएँ से आँखों को बचाना तथा तेल बना लेने या व्यवहार कर लेने के बाद हाथों को गोबर या मिट्टी से अच्छी तरह मलकर साफ कर लेना आवश्यक है।

गुण—इसकी मालिश से गिरह-गिरह का दर्द मिट जाता है।

व्यवहार विधि—दर्द वाली जगह पर तेल की मालिश कर सेंकना चाहिए। ज्यादा कष्ट की दशा मे दिन-रात मे तीन-चार बार भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है।

अनुभव—श्री प० विद्यानाथ मिश्र वैद्य (पुनासवेदौलिया, रानीटोल, दरभंगा) का यह कई वार अनुभव किया हुआ है।

गन्धक का तेल

लूणियाँ गन्धक का चूर्ण	२॥ तोले
कड़ुआ तेल	५ ,,
कपड़ा	१ बित्ते का

बनाने की विधि—गन्धक के चूर्ण को कपड़े पर फैला कर एक बड़ी बत्ती बना लें और उसे तेल मे तर कर जला ले। जब वह जलने लगे तब चिमटे से ऊपर उठाये रहे और नीचे एक कटोरे मे उसमे से चूने वाली तेल की बूँदें इकट्ठा करते जायें। बत्ती से जब तेल टपकना बन्द हो जाय तब उस तेल को शीशी में रख लें।

गुण—इसके व्यवहार से खुजली मिटती है।

व्यवहार विधि—खुजली वाली जगह पर इसकी मालिश करनी चाहिए।

अनुभव—यह लेखक का घरेलू योग है। अनुभूत है।

जले का मरहम

सेमल की रूई	१॥ तोले
रेंड़ी का तेल	२॥ ,,

बनाने की विधि—फूल (कासे) की थाली पर रेंड़ी का तेल रख ऊपर से रूई को फैला दे और तलहथियो से रगड़े। जब तेल और रूई मिल कर मरहम की शक्ल की हो जाय, उठाकर शीशी या डिब्बे मे रख ले।

गुण—इसके व्यवहार से दग्ध आराम हो जाता है।

व्यवहार विधि—जले हुए स्थान पर दिन में तीन-चार बार रोज लगाना चाहिए।

अनुभव—लेखक के घर पर किया हुआ अनुभूत योग है।

शिरःशूल में–तेजपत्र-वृत्त

तेजपात का डण्ठल	आठ आने भर

बनाने की विधि—तेजपात की डण्ठलो को जल के साथ सिल पर महीन पीस कर रख ले। यह एक मात्रा है।

गुण—इससे सिर का दर्द मिटता है।

व्यवहार विधि—सिर में जिस जगह दर्द हो, वहाँ पर इसका मोटा लेप चढ़ा देना चाहिए। आधे घण्टे के बाद जब लेप सूखने लगे, हटा देना चाहिए।

अनुभव—बिहार प्रान्त के देहातों में यह योग सिर-दर्द के समय काफी व्यवहार में लाया जाता है। विख्यात व अनुभूत है।

शिरःशूल पर—मुचकुन्द

मुचकुन्द के पुष्प १ तोला

बनाने की विधि—मुचकुन्द के पुष्पों को जल के साथ चन्दन की तरह बारीक पीस लें।

गुण—इसके व्यवहार से सिर का दर्द मिटता है।

व्यवहार विधि—दर्द वाली जगह पर इसका मोटा लेप करना चाहिए। आधे घण्टे के बाद, जब चढ़ा हुआ लेप कुछ गीला ही रहे, हटा देना चाहिए। दिन में दो-तीन बार इसका व्यवहार किया जा सकता है।

अनुभव—यह आयुर्वेदीय शार्ंगधर, भावप्रकाश आदि मान्य ग्रन्थों का योग है। श्री विश्वनाथ मिश्र वैद्य (पुनास वेदौलिया, रानीटोल, दरभंगा) ने इसे अनुभूत बतलाया है। उन्होंने अपने भवन के उपवन में इसका पेड़ ही लगा रक्खा है।

विशेष—मुचकुन्द का पेड़ साखू की तरह बहुत बड़ा होता है। पत्ते भी साखू की तरह ही होते हैं। बसन्त से ग्रीष्म-ऋतु तक

इसके पेड़ में पुष्प लगते रहते हैं। परिपक्व पुष्प पेड़ों के नीचे गिरे हुए मिलते हैं। वर्षा-ऋतु में इसके पुष्प खत्म हो जाते है। इसके पुष्प दो-तीन इञ्च लम्बे, पीले, खुरदरे, रोमयुक्त और चम्पा के पुष्प की भाँति तीन ओर से फाँकदार होते है। पुष्पों से मीठी और मनमोहक गन्ध निकलती रहती है। यह गन्ध सूखने पर भी ज्यों की त्यों बनी रहती है। निघन्टुओं में इसे चरपरा, कड़वा, गरम, स्वर को उत्तम बनाने वाला, कफनाशक, खाँसी, त्वचा के विकार, शोथ, सिर का दर्द, त्रिदोष, रक्तपित्त, पित्त और रक्त-दोषनाशक लिखा है। 'मुचकुन्दो शिरोर्तिजित' वाक्य के अनुसार इसका शिरः-पीड़ा में ही उपयोग प्रसिद्ध है।

तीव्र ज्वर को हल्का करने का उपाय

सेंधा नमक	८ आने भर
गाय का घी	१ भर

बनाने की विधि—सेन्धा नमक को बारीक पीस कर घी के साथ खरल करें। जब वह घी के साथ भलीभाँति मिल जाय और उसके महीन कण चुटकियों से स्पर्श करने पर मालूम न पड़ें तब उसे एक कटोरी में रख लें।

गुण—इसके उपयोग से शिरोवेदना सहित तीव्रज्वर कम हो जाता है और सिर पर पसीना आ जाता है।

व्यवहार विधि—सिर पर इसका गाढ़ा लेप करना चाहिए।

विशेष—तीव्रज्वर की ही दशा मे इसका व्यवहार करें।

अनुभव—लेखक का यह घरेलू योग है। अनुभूत है।

खाँसी पर—काढ़ा

लिसोड़े के पत्ते	७ नग
कालीमिर्च	७ नग
काला मुनक्का	७ नग
मिसरी	१ तोला
जल	आधा सेर

बनाने को विधि—मिसरी को छोड़कर बाकी सभी चीजों को जरा कुचल कर जल के साथ पकावे। एक छटॉक शेष रहने पर उतार ले और उतारते ही उसमे मिसरी की डली छोड़ दें। कुछ-कुछ गरम ही रहे उसी वक्त कपड़े से छान कर शीशे या चीनी-मिट्टी के पात्र मे रख ले। यह एक मात्रा है।

गुण—इसके सेवन से सूखा कफ ढीला होकर निकल जाता है और खाँसी कमजोर हो जाती है।

व्यवहार विधि—सुवह-शाम इस काढ़े को तैयार कर तुरत कुछ गुनगुना ही इस्तेमाल करना चाहिए।

अनुभव—श्री प० गोरखनाथ मिश्र (पुनास वेदौलिया, रानीटोल, दरभंगा) का यह बहुत बार का अनुभूत है। लेखक ने भी इसे अपने ऊपर आजमाकर देखा और गुणदायक पाया है।

जुकाम पर—अदरख और मधु

आदी का रस	२ तोले
मधु	२ ,,

बनाने की विधि—आदी का रस निकालकर कपड़े से छान लें और उसमे मधु मिला लें। यह एक मात्रा है।

गुण—इसके व्यवहार से नया और पुराना जुकाम तथा खाँसी शीघ्र ही मिट जाती है।

व्यवहार विधि—सुबह-शाम तीन-चार दिनो तक नियम पूर्वक पीना चाहिए।

अनुभव—लेखक का अनुभूत है।

टंकण क्षार

शुद्ध सोहागे का चूर्ण	४ रत्ती
मधु	१ माशा

बनाने की विधि—दोनो चीजो को मिलाकर रख ले। यह एक मात्रा है।

गुण—इससे बच्चो का निनावाँ (जीभ और कंठ-प्रदेश में सफेद, पीला लेप सा चढ़ जाना—जो पेट और माँ के दूध-विकृत होने के कारण उत्पन्न होता है) और खाँसी आराम हो जाती है।

व्यवहार विधि—नीनावाँ मे अगुली से जीभ और कण्ठ-प्रदेश मे इसका लेप करना चाहिए। पाँच-छ दिनो तक दिन मे तीन-चार बार लेप करने से अधिक लाभ होता है। साथ ही पेट साफ करने की मृदु औषधि भी देनी चाहिए। खाँसी की दशा मे दिन में दो-तीन बार इसकी मात्राएँ देनी चाहिए। ऊपर सोहागे और मधु की तौल खाँसी मे बच्चो के प्रयोग के लिए है। निनावाँ आदि में कुछ कम या ज्यादा लेप करने से भी किसी तरह का नुकसान नहीं है। ज्यादा उम्र के बच्चे या जवानो के लिए मात्राएँ बढ़ा लेनी चाहिए।

अनुभव—लेखक का बहुत बार का अनुभूत है।

भेंड़ के घी का प्रयोग

भेंड़ का घी	२ माशे

बनानेकी विधि—एक चौड़े मुँह की शीशीमे घी लेकर रख लें।

गुण—इससे निनावाँ रोग मिटता है।

विशेष—भेंड़ के घी के प्रयोग से बच्चे की जीभ में होने वाला निनावाँ मिट जाता है। निघंटुओ मे इसे लघुपाकी, सर्वरोगनाशक, विषनाशक, हड्डियों को बढ़ाने वाला, पथरी, शर्करा, योनिदोष, कफ, वात, सूजन और कम्प में हितकर कहा है। यह पित्त-प्रकोपक है।

व्यवहार विधि—निनावाँ वाले बच्चे की जीभ पर इसे अंगुली से दिन मे तीन-चार बार अच्छी तरह लेप करना चाहिए।

अनुभव—लेखक का अनुभूत है। यह भी घरेलू उपचार है। जिसे घर की बूढ़ी औरतें बच्चों पर हमेशा प्रयोग करती रहती है।

तुलसी-स्वरस गो-घृत योग

श्याम तुलसी का स्वरस	१ तोला
गाय का ताजा घृत	१ ,,

बनाने की विधि—दोनों चीजो को एक कटोरी मे रखकर मिलावे और आग पर रख जरा गुनगुना कर लें। यह एक मात्रा है।

गुण—इसके व्यवहार से बच्चे के पसली चलने का रोग मिटता है।

व्यवहार विधि—इसे सुबह-शाम दो-तीन दिनो तक देना चाहिए।

विशेष—बच्चे के पसली चलने के रोग में जब कब्ज अधिक और ज्वर कम हो उसी वक्त इसका प्रयोग करना चाहिए। यद्यपि घर की वूढ़ी जानकार औरतें बुखार की दशा में भी इसकी घुटी देकर बच्चे का पेट साफ करती हैं, लेकिन चिकित्सा के विरुद्ध होने के कारण ज्वर की दशा में इसे देना उचित नही है। 'पसली चलना' रोग 'बाल-निमोनिया' ही है। कई चिकित्सा-मनीषियों ने इसे श्वसनक नाम से भी पुकारा है। श्वसनक-सान्निपातिक ज्वर की ही एक संज्ञा है। एक तो नवीन ज्वर और उसमें भी सान्निपातिक अवस्था ? ऐसी अवस्था मे कम से कम बारह दिनों तक घृत का प्रयोग अनुचित-सा जान पड़ता है। यदि निन्यानबे या सौ तक शारीरिक ताप हो, पेट तना हो और कब्ज हो तो ऐसी दशा मे कोई हानि नहीं है। तीव्रज्वर मे नही देना चाहिए।

अनुभव—यह लेखक का घरेलू योग है। अनुभूत है।

आघातजवेदना पर—भंटा

गोल भटा	१ नग
अफीम	२ आने भर
कड़ुवा तेल	२ छटाँक

बनाने और व्यवहार करने की विधि—भंटे को बीच से काटकर दो टुकड़े कर लें और एक चूल्हे पर तवा रख आँच दें। जब तवा गरम हो जाय उसमे थोड़ा तेल डाले और उसी तेल में मसूर के बराबर अफीम छोड़ दें। जब तेल मे अफीम पक जाय तब उसके ऊपर भंटे के कटे हुए हिस्से रखे, जब भंटे का कटा हिस्सा काफी गरम हो जाय तब उसी भंटे से दर्द वाली जगह पर

एक पतला कपड़ा रख सेंक करें। जब-तक सेंक करें तब-तक फिर भंटे के दूसरे टुकड़े को तवे पर गरम होने दें। सेंक के काम में आने वाला भटा जब ठढा पड़ने लगे तब तवे पर वाले गरम भंटे से सेके और दूसरे टुकड़े को गरम होने दें। इसी क्रम से आधे घंटे तक सेंक करे। तवे पर का तेल जब खतम हो जाय, थोड़ा और तेल डाल दें और साथ ही मसूर के बराबर अफीम भी डालते जायँ। सेकते वक्त इस बात का ध्यान अवश्य रखे कि सेंक होने वाली जगह जल न जाय; इसलिए वहाँ का कपड़ा और साथ-साथ भटे के टुकड़े को भी इधर-उधर खिसकाते रहें। चार-पाँच दिनों तक लगातार, दिन मे दो-तीन बार, सेक करनी चाहिए।

गुण—छत, सीढ़ी आदि से गिरने के कारण उत्पन्न चोट की पीड़ा मिटती है। सेक के समय सुख मिलने के कारण रोगी को शीघ्र ही नीद आ जाती है।

अनुभव—रघुवंश, मेघदूत आदि के आधुनिक ढंग के प्रसिद्ध टीकाकार श्री प० गौरीनाथ पाठक विद्यासागर (शारदा भवन, अगस्तकुण्डा, काशी) भवन की छत बनवाते वक्त ऊपर से गिर गये थे। उपर्युक्त सेक से उन्हे विशेष लाभ हुआ। मै उन दिनों वही विद्याभ्यास करता था। इस सेक का मुझे वहीं ज्ञान हुआ। अनुभूत है।

प्रदर पर—त्रिफला-वस्ति

आँवले का वक्कल	१ तोला
हरड़ का वक्कल	१ ,,
बहेड़े का वक्कल	१ ,,
जल	आधा सेर

बनाने की विधि—तीनो चीजो को कूटकर मिट्टी के एक पात्र मे रखे और ऊपर से जल डालकर रातभर भींगने दें। प्रातः-काल आग पर उबालें। दो-चार उफान के बाद नीचे उतारकर ठंढा कर लें और कपड़े से छानकर जल रख ले।

गुण—इसके व्यवहार से पुरातन प्रदर का स्राव बंद हो जाता है और यदि वेदना हो तो वह भी शान्त हो जाती है। पुरातन प्रदर मे योनि के भीतर नासूर पड़ जाता है। इसके उप-योग से नासूर सूख जाता है।

व्यवहार विधि—एनीमा, डूस या पिचकारी मे उपर्युक्त त्रिफले का जल लेकर योनि के भीतर के हिस्से का प्रक्षालन करना चाहिए। लगातार कुछ दिनो तक व्यवहार करने से स्थायी लाभ होता है।

अनुभव—यह श्री सीताराम कविराज, जी० ए० एम० एस० (पुनास वेदौलिया, रानीटोल, दरभंगा) का अनुभूत है।

अमरबल्ली वाष्प

ताजा अमरवेल	१ पाव
जल	२ सेर

बनाने की विधि—अमरवेल को थोड़ा कुचलकर एक पतीली मे जल के साथ पकावे। जब डेढ़ सेर पानी शेष रहे, उतार ले।

गुण—इसके व्यवहार से शोथ मिट जाता है।

व्यवहार विधि—खाट पर से बिछावन हटाकर उसी के ऊपर शोथ-रोगी को बैठावे और ऊपर से कम्बल ओढ़ा दे साँस लेने के लिए केवल नाक बाहर रखे। अच्छी तरह से ढक जाने के बाद खाट के नीचे उबलते हुए अमरबेल के जल की पतीली रख दें। यदि खाट ऊँची होने के कारण रोगी के शरीर मे अच्छी तरह भाप न लगे तो एक-दो ईंटो के ऊपर पतीली रखे। जब पतीली

का जल ठंढा होने लगे तब आग में खूब गरम किए हुए एकाध ईंट के टुकड़े को उसी पतीली मे डाल दें। जिससे फिर भाप बनकर रोगी की देह मे लगने लगे। ईंट के टुकड़े पहले ही से गरम होने को दे देना चाहिये। कम-से-कम पन्द्रह मिनट तक भाप ले लेने के बाद रोगी के देह का पसीना पोछ दें और कपड़े पहनाकर बिस्तर पर लिटा दें। यह क्रिया निर्वात स्थान में करनी चाहिए।

विशेष—अमरबेल महीन तागे की तरह पीला, पेड़ो के ऊपर फैला रहता है। बेर, अड़ूसे आदि के झाड़ो पर यह ज्यादा फैलता है। इसकी जड़ नहीं होती। इसी से इसका नाम 'आकाश-बेल' भी है। निघंटुओ मे इसे ग्राही, कड़वी, पिच्छिल, नेत्र-रोग-नाशक, कषैली, अग्निकारक, हृद्य, पित्त, कफ तथा आम-नाशक लिखा है।

अनुभव - यह उत्तर विहार (दरभगा आदि जिलो मे) वैद्यों के अतिरिक्त ग्रामीणो का भी अनुभव किया हुआ प्रसिद्ध योग है।

गेहूँ का तेल

गेहूँ — १ भर

बनाने की विधि—गेहूँ को अँगारे पर रख जलने दें। जब वे जलने लगे, उन्हे लोहे के चदरे पर रख लोहे के वजनदार डंडे से दवा दें। दबाने से उसमे से जो तेल डंडे और नीचे वाले पात्र मे लगे, उसे होशियारी से उठाकर शीशी मे रख लें।

गुण—इससे गजचर्म तथा अन्य कई प्रकार के खसरे आदि चर्म-रोग मिटते है।

व्यवहार विधि—गजचर्म या और इसी प्रकार का चर्म-रोग हो तो उस जगह पर इसे कुछ दिनो तक नित्य एक-दो बार लगाना चाहिए।

अनुभव—बिहार प्रान्त के मगध और तिरहुत की ओर के कई वृद्ध वैद्यों के मुख से मैंने इसकी प्रशंसा सुनी है। उन लोगों का कहना है कि यह तेल पुरातन चर्म-रोग के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है।

अरगजा

कड़ुआ तेल	१ छटाँक
लहसुन का रस	१ तोला
धतूरे के पत्तों का रस	१ ,,
सम्हालू के पत्तों का रस	१ ,,
मन्दार के पत्तों का रस	१ ,,
हुलहुल के पत्तों का रस	१ ,,
अदरख का रस	१ ,,
अफीम	२ आने भर

बनाने की विधि—सभी चीजों को मिलाकर एकदिल कर ले और आग पर पकाये जब एक-दो उबाल आ जाय, उतार ले।

गुण—इसके व्यवहार से पारी से आने वाला शीत-पूर्वक-ज्वर का दौरा रुक जाता है। दो-तीन दिनो के व्यवहार से ही आश्चर्यजनक लाभ दृष्टिगोचर होने लगता है।

व्यवहार विधि—ज्वर आने से तीन-चार घण्टे पहले हाथ और पैरो के बीसो नाखूनो, तलहथियो एवं तलवो मे इसका अच्छी तरह लेप कर दे और धीरे-धीरे हाथो से मल-मल कर सुखाने की कोशिश करे। फिर पुरानी रूई से हाथ और पैरो को अच्छी तरह लपेट कर बाँध दें। बाँधने का मतलब यह है कि जिसमे दवा लगाने के बाद उस स्थान पर काफी गरमी बनी रहे और बाहरी हवा भीतर प्रवेश न कर सके।

अनुभव—जिस प्रान्त में जो रोग होता है, उस प्रान्त के लोग उसके विशेष उपाय भी अन्य प्रान्तों की अपेक्षा अधिक ही जानते है, यह प्राकृत नियम-सा है। उत्तर विहार की ओर शीत-ज्वर (मलेरिया) ज्यादा होता है। इसी कारण उधर के लोगों में इस रोग के निराकरण के कई अच्छे उपाय भी प्रचलित हैं। यह अरगजा भी उधर का ही एक प्रसिद्ध नित्य प्रयोग किया जाने वाला योग है। केवल योग ही नही, सिद्ध योग है।

करंजादि वटी

करंजुए की मीगी	१ तोला
पिप्पली का चूर्ण	१ ,,
गोदन्ती हरताल भस्म	८ आने भर
तुलसी पत्र का रस	२॥ तोले

बनाने की विधि—खरल मे डालकर मीगियों को पहले घोट लें। जब वे काफी महीन हो जायँ तब शेष चीजो को डालकर घोटे। एकदिल हो जाने पर पचास गोलियाँ बनाकर सुखा ले।

गुण—इससे सभी तरह के शीत-पूर्वक-ज्वर और उदरकृमि नष्ट होते है।

व्यवहार विधि - ज्वर आने से तीन-चार घण्टे पूर्व से ही एक-एक गोली, एक तोले पारिजात के पत्तो का रस, एक तोले मधु और सात कालीमिर्च मे घोटकर दे। यदि उपर्युक्त अनुपान मिलने मे कुछ असुविधा हो तो केवल गरम जल से ही दें। दो-दो घण्टे के अन्तर से दे। जब ज्वर आ जाय, औषध-प्रयोग बन्द कर दे। तीन-चार दिनो मे इससे पारी का ज्वर रुक ही जाता है। पुराने ज्वरो मे यह हफ्तो तक सेवन करना चाहिए। केवल उदरकृमि मे गरम जल से ले।

अनुभव—श्री प० जीवसुख जी वैद्य, बड़ादेव, काशी का यह

अनुभूत है। मैने भी इसे प्रयोग कर देखा, सचमुच गुणदायक सिद्ध हुआ। मै एक मात्रा पीछे चौथाई रत्ती रससिन्दूर भी मिला दिया करता था। योगवाही के अतिरिक्त "मूर्च्छितो हरित व्याधिम्" सिद्धान्तानुसार पारद का मूर्च्छित प्रकार ही तो रससिन्दूर है और यह सुलभ भी है तो क्यो न इससे सभी प्रकार के योगों में मिश्रण कर लाभ उठाया जाय।

विशेष—यदि ज्वरी को कोष्ठवद्ध हो तो मृदुरेचक देकर पेट साफ कर देना चाहिए।

पारिजात-स्वरस योग

पारिजात के पत्तों का रस	२॥ तोले
मधु	२ ,,

बनाने की विधि—दोनो को मिला ले। यह एक मात्रा है।

गुण— इसके सेवन से पारी से आने वाला शीतज्वर मिट जाता है।

व्यवहार विधि— ज्वर आने से तीन-चार घंटे पूर्व से ही, तीन-चार मात्रा, दो-दो घटे पर पीना चाहिए। बीच मे यदि ज्वर आ जाय तो देना बन्द कर दे। एक सप्ताह तक सेवन करने से पुरातन ज्वर मिट जाता है।

अनुभव—बिहार प्रान्त विशेषकर तिरहुत की ओर के वैद्यगण बहुधा गरीबो को, जिनसे औषध का मूल्य मिलने की आशा नही रहती, यह योग बता देते है। उनकी बीमारी भी इसी योग से अवश्य मिट जाती है। हॉ ? पैसे देने वालों को किसी दूसरी औषध के अनुपान के रूप मे इसे देते है। यह योग अनुभूत है। आयुर्वेद-निघंटुओ मे पारिजात के विषय मे यो लिखा है— पारिजात के पत्र-ज्वर-नाशक, कटु, छाल-कास नाशक, पुष्प-शीत वात-प्रकृति वाले लोगो के हृदय को शक्ति देने वाला, ताप-नाशक, गोंद एवं जड़-पुरुषत्व-वर्द्धक है।

जामुन का सिरका

छोटे जामुन का रस	५ सेर
साँभर नमक	५ तोले
सोंचर नमक	५ ,,
विड़ नमक	५ ,,
सेंधा नमक	५ ,,
सामुद्र नमक	५ ,,

बनाने की विधि—छोटी जामुनों को निचोड़कर रस निकाल लें और उसे कपड़े से छानकर उसमें पाँचों नमक, महीन पीसकर मिला दें। नमक घुल जाने पर वोतलों में रख, कार्क वन्द कर दें। वोतलों में रस थोड़ा खाली ही भरें और कार्क कसकर लगावें; फिर उन्हे धूप मे रख दें। एक महीने तक धूप मे पड़ा रहने के कारण रस सिरके के रूप में बदल जायगा। एक महीने तक धूप में एक ही स्थान पर पड़ा रहने से वोतलों के नीचे गाद जम जायगी और स्वच्छ सिरका ऊपर रहेगा। उसे धीरे-धीरे दूसरे बोतल में रख लें और गाद अलग कर लें।

गुण—इसके सेवन से अजीर्ण, उदर-शूल, खासकर घृत-पक्व पदार्थों के खाने के कारण होने वाला अजीर्ण, अफरा, मन्दाग्नि, प्लीहा, यकृत, उदर-रोग आराम होते है।

व्यवहार विधि—दो तोले सिरका उतना ही जल मिलाकर सेवन करना चाहिए। बढ़े हुए रोगों में चार-चार घण्टे पर और साधारण रोग में सुबह-शाम लेना चाहिए। यह अम्ल प्रकृति का होता है; इसलिये पीने का पात्र शीशा, चीनी मिट्टी, पत्थर या मिट्टी का होना आवश्यक है।

अनुभव—अजीर्ण पर लेखक का अनुभूत है। यह भी घरेलू योग है। देहातों में जामुन के मौसम में वैद्यों के अतिरिक्त साधारण जनता भी बनाकर रखती है। अधिकतर सादा सिरका बनाने की चाल है; लेकिन तिब्बअकबरी आदि हिकमत की किताबों में नमक मिलाना भी लिखा है। बिहार प्रान्त के वैद्यों में नमक मिलाने की भी प्रथा है। संयुक्त प्रान्त के अचार और मुरब्बे वाले जो सिरका बेचते है, वह सादा ही रहता है। हमारी राय से नमक के अतिरिक्त सादा सिरका भी अवश्य बनाकर रखना चाहिए। शिरःशूल तथा दाह-पूर्वक ज्वरों मे प्रयोग के निमित्त सादा सिरका ही काम मे आता है।

प्रदर पर—गूलर

गूलर के पके फल का चूर्ण	५ तोला
मिसरी	१० ,,

बनाने की विधि—गूलर के पके फलों को टुकड़ा-टुकड़ करके सुखा लें। जब एक-दम सूख जाय तब कूट और कपड़छन कर मिसरी मिला लें। इसे अच्छी तरह अमृतबान में ढँककर रखना चाहिए। यह दस माशा है।

गुण—इसमें सभी तरह का प्रदर रोग मिट जाता है।

व्यवहार विधि—डेढ़ भर के अन्दाज चूर्ण खाकर ऊपर से बकरी या गाय का दूध पीना चाहिए। प्रदर का स्राव अधिक होता हो तो तंडुलोदक के साथ लेना चाहिए। शीतल जल के साथ भी इसका सेवन किया जा सकता है। साधारणतः यह प्रातः और सायकाल लेना चाहिए।

अनुभव—श्री दामोदरशास्त्री, भिषगाचार्य, काशी का यह अनुभूत है।

सूजाक पर—वीहीदाने का प्रयोग

वीहीदाना	८ आने भर
मिसरी	१ भर
जल	२ छटाँक

बनाने की विधि—एक मिट्टी के वरतन मे वीहीदाना रख ऊपर से जल डालकर छोड़ दें। प्रातःकाल साफ कपड़े में लुआव निकाल ले। शेष वचे हुए जल मे ही लुआव मिलाकर मिसरी मिला दें। यह एक मात्रा है।

गुण—इसके सेवन से सूजाक के कारण होने वाला मूत्र-कष्ट, जलन आदि उपद्रव शीघ्र शान्त हो जाता है और शरीर एवं धातु को पुष्ट करता है। यह पेशाव खुलकर लाता है। शीतल है।

अनुभव—सूरजमल के धर्मशाले (गया स्टेशन) के जमादार तथा आरा जिला के वावू रामचन्द्र सिंह राजपूत ने इसे अत्यन्त अनुभूत वतलाया था।

वैश्वानर चूर्ण

सेंधा नमक	२ तोले
अजवायन	५ ,,
सोंठ	५ ,,
वड़ी हरड़ का वक्कल	१२ ,,

बनाने की विधि—सभी चीजो को कूट और कपड़छन कर ले।

गुण—इसके सेवन से आमवात, गुल्म, हृदय-रोग, वस्ति-रोग, प्लीहा, ग्रन्थि-शूल, अर्श, आनाह, मल-बन्ध, मलवातज-रोग तथा हाथ-पाँव के रोग नष्ट होते है। यह वायु का अनुलोमन करने वाला है।

व्यवहार विधि—दही का पानी, काँजी, मट्ठा, घृत, गरम जल, इनमें से किसी एक के साथ, तीन माशे चूर्ण सुबह-शाम सेवन करना चाहिए।

अनुभव—श्री विद्यानाथ मिश्र वैद्य (पुनास बेरौलिया, रानीटोल दरभंगा) मुकामा के निकट लखनचन्द ग्राम मे चिकित्सा करते थे। हम एक रोगी को उनके पास ले गये। उसके पेडू के बगल मे गुब्बारे की तरह फूल जाया करता था। उन्होंने उसे आमवात सिद्ध किया। वैश्वानर चूर्ण की व्यवस्था की गयी। एक सप्ताह औषध-सेवन करने के पश्चात् फूलना बन्द हो गया। अनुभूत है।

बरियारे की जड़ का प्रयोग

बरियारे की जड की छाल	५ तोले
मिसरी	१० ,,

बनाने की विधि—बरियारे की जड को धोकर कुचल डालें और सूखने दें। सूख जाने पर उसकी छाल उतार ले और भीतर की कडी लकडी को फेक दे। छाल को कूट और कपडछन कर मिसरी मिला ले, यह दस मात्रा है।

गुण—इसके सेवन से वीर्य-दोष, स्वप्न-दोष, पाखाने के समय धातु निकलना आदि मिट जाते हैं और शरीर बलवान हो जाता है।

व्यवहार विधि—डेढ़ रुपये भर चूर्ण खाकर ऊपर से गाय का दूध पीना चाहिए। यह केवल प्रात काल ही सेवन किया जाता है। चालीस दिनो तक सेवन करना चाहिए।

अनुभव—बिहार प्रान्त के वैद्यों के अतिरिक्त ग्रामीण लोगो मे यह योग विशेष प्रसिद्ध है। अनुभूत है।

कलिहारी योग

बनाने की विधि—कलिहारी-कन्द को जल के साथ पीसकर एक कपड़े पर मोटा लेप कर दें।

गुण—इसके व्यवहार से छ:-सात मास का गर्भ भी तुरन्त गिर जाता है।

व्यवहार विधि—इसे योनि के मुख पर पट्टी की तरह बाँध देना चाहिए।

अनुभव—प्राचीन वैद्यो द्वारा यह सुना हुआ योग है। शीघ्र प्रसव के लिए गर्भिणी के हाथ मे इसका कन्द बाँधा जाता है। निघंटु मे इसे दस्तावर, खारी, कड़वी, चरपरी, कषैली, तीक्ष्ण, गरम, हल्की, पित्तकारक, गर्भपात करानेवाली, कोढ़, सूजन, बवासीर, कृमि, व्रण, शूल तथा कफ-नाशक लिखा है।

कलिहारी की बेल भादो-क्वार मे पेडो पर खूब फैली रहती है। जहाँ की जमीन बिना जोती-बोई ही रह जाती है या जहाँ की जमीन चारागाह के निमित्त छोड़ी रहती है, वहाँ पर बाँस, शीशम, जंगली बेल तथा कई प्रकार की झाड़ो पर फैली रहती है। पत्ता कचूर की तरह, झुमकेदार, लेकिन उतना गहरा लाल नही होता है। फल लम्बे होते है। कार्तिक-अगहन मे बेले सूख जाती है और उसके नीचे जड़ खोदने से अँगूठे के बराबर मोटा कन्द निकलता है। यह उपविष है। जहरीले तेल पकाने और शीघ्र प्रसव के निमित्त प्राचीन वैद्य इसे उपयोग में लाते है।

इन्द्रलुप्त पर भाँगरा

बनाने की विधि—भाँगरे को सिल पर पीसकर रख ले।

गुण—सिर का इन्द्रलुप्त रोग मिट जाता है।

व्यवहार विधि—जहाँ के बाल गिर गये हों वहाँ इसे लेप की तरह दिन मे दो-तीन बार लगाना चाहिए। घटे-आध घटे के बाद, जब लेप कुछ गीला ही रहे, हटा देना चाहिए।

अनुभव—टेकारी (गया) की सस्कृत पाठशाला मे पढ़ने वाले एक छात्र बृजविहारी मिश्र को इन्द्रलुप्त की बीमारी हो गई थी। उन्होंने भाँगरे का व्यवहार किया। कुछ दिनो मे पूर्ववत् ही बाल उग आये। अनुभूत है।

गूमे का साग

गूमा	१ पाव
काली मिर्च का चूर्ण	८ आने भर
सेवानमक	८ ,, ,,

बनाने की विधि—गूमे की मुलायम पत्तियो को मन्द आँच पर थोड़े जल के साथ उबाल लें। उसका जल निचोड़कर सिल पर पीस लें। ऊपर से मिर्च और नमक का चूर्ण मिला लें। यह एक मात्रा है।

गुण—इसके व्यवहार से शीतपूर्वक आने वाला पारी का ज्वर चला जाता है।

व्यवहार विधि—रोटी, भात इत्यादि का पथ्य लेते समय उसी के साथ एकाध सप्ताह इसे खाना चाहिये।

अनुभव—लेखक को (सन् १९२३–२४ के करीब) विषम-शीत-ज्वर हुआ था। उसी समय रोटी के साथ गूमे का ही साग खाने को दिया जाता था। कुछ ही दिनों में पारी का ज्वर बन्द हो गया।

ग्रहणी पर—गन्धक

शुद्ध आँवलासार गन्धक ८ रत्ती

बनाने की विधि—छोटी खरल मे शुद्ध आँवलासार गन्धक को खरल कर ले। यह एक मात्रा है।

गुण—इसके सेवन करने से बराबर पतले दस्त का होना बन्द हो जाता है। यदि दस्त के साथ-साथ पैरो और चेहरे पर सूजन हो तो उसे भी यह मिटा देता है।

व्यवहार विधि—सुबह-शाम आठ रत्ती गन्धक एक पाव बकरी के दूध के साथ लगातार महीना-बीस दिनो तक सेवन करना चाहिये।

अनुभव—मुकामा के श्री जगदम्बी सिह को पतले दस्त आते थे। हाथ-पैरो मे सूजन थी। डाक्टरों ने जवाब दे दिया था। उनका चेहरा पीला पड गया था। हमने गन्धक का ही सेवन कराया। एक महीने मे वे चगे हो गये। अनुभूत है।

विशेष—गन्धक-शुद्धि 'रसायनसार' मे देखे।

गुडूची-सत्व

गुडूची सत्त्व	३ माशे
मधु	६ ,,

बनाने की विधि—दोनो चीजो को मिला ले। यह एक मात्रा है।

गुण—इसके व्यवहार से शुक्रमेह मिटता है।

व्यवहार विधि—इसे सुबह-शाम महीने-बीस दिनो तक लगातार सेवन करना चाहिये।

अनुभव—ग्राम मे गुडूची विशेषतया मिलती है, इसलिए

वहाँ के चिकित्सकों और उन्हीं लोगो से परम्परागत जान लेने से ग्रामीणो मे भी इसके सत्त्व का धातु-रोग पर व्यवहार अधिकतर देखा जाता है। उपर्युक्त मात्रा मे लेने से यह धातु-रोग पर विशेष रूप से लाभदायक सिद्ध हुआ है। उत्तर बिहार-प्रान्त मे यह योग भी विशेष प्रचलित है।

विशेष--सत्त्व-निर्माण-विधि--अनुभूतयोग, प्रथम भाग पुस्तक में देखें। लेखक--श्री श्यामसुन्दराचार्य, श्यामसुन्दर रसायनशाला, गायघाट, काशी।

अञ्जन

कड़ुआ तेल	८ आने भर
निर्मली	१ नग
फिटकरी	२ रत्ती
गाय का घी	४ आने भर
मेथी	२१ दाने
लौग	५ फूल
बासी जल	

बनाने की विधि--एक पीतल की थाली को उलटकर उसके पेंदे पर तेल डाले और उसके ऊपर सभी औषधियो को रख अगूठे के निकट की तलहथियो से घिसना प्रारम्भ करे। कज्जल की तरह हो जाय तब जल के छीटे दे-देकर घिसे। बाद मे जल डालते हुए घिसे। इस प्रकार घिसते-घिसते जब सुनहले रग का अञ्जन हो जाय तब सितुए मे उठा ले। उसके अन्दर पड़े हुए लौग इत्यादि मसाले भी उसी सितुए के एक कोने मे उठाकर रख ले। यह मसाला दुबारा अजन बनाते समय फिर काम आवेगा। उस समय तेल, घी और बासी जल ही नया लेना पडेगा, क्योंकि तलहथियों की रगड से मसाले के सामान घिसकर कुछ चिकने हो

जाते है और चिकना होने के कारण दुबारा घिसते समय अजन शीघ्र तैयार होता है। इसके अतिरिक्त कई वार के घिसने लायक मसाले भी मौजूद ही रहते है, इसलिये उन्हे फेकना नही चाहिये।

गुण--इससे आँखों का धुंध, जाला, माड़ा, नाखूना, लाली, आँख-आना, दर्द होना इत्यादि आँखों की सभी तरह की वीमारियाँ मिटती है। हाँ! मोतियाविन्द पर इसका कोई प्रभाव नही पडता।

व्यवहार-विधि--रात्रि में इसे आँखो में लगाना चाहिये। विशेष कष्ट की दशा मे दिन में भी लगाया जा सकता है।

अनुभव--यह योग प० शीवू मिश्र, वैद्य (कैमासिकोह, पटना सिटी) की स्त्री से प्राप्त हुआ है। वहुत वार का अनुभूत है।

नेत्र-वर्त्ति

पारिजात-पुष्प की ताजी सफेद पँखुड़ियाँ	२॥ तोले
उड़ाया हुआ कपूर	४ आने भर
शुद्ध सुरमा	१ तोले

बनाने की विधि--सुरमे को महीन खरल करें। सुरमे के चूर्ण में किरकिरी न मालूम पडे अर्थात् काफी महीन हो जाय, उसमे कपूर और अन्त मे पुष्प की पँखुडियाँ डालकर कई दिनों तक खरल करें। फिर जौ के बराबर वर्त्ति बनाकर छाये मे सुखा लें।

गुण--इसके व्यवहार से नेत्र के सभी बिकार नष्ट होते है। इसकी तासीर ठण्ढी है।

व्यवहार-विधि--नित्य एक वर्त्ति चिकने पत्थर पर जल के साथ घिसकर आँखो मे लगावें।

अनुभव--पं० तारिणी प्रसाद पाठक, वैद्य (मुकामा, पटना) का यह अनुभूत है। यह उनके घर का प्राचीन योग है।

प्लेग-प्रतिरोधक योग

घोड़ाबच

बनाने की विधि—घोडाबच को कूटकर कपडे से छान लें और पात्र मे रख ले।

गुण—इसके व्यवहार से प्लेग के कीटाणु मर जाते है।

व्यवहार विधि—जहाँ प्लेग फैला हो वहाँ घर-आँगन में और घर के आसपास सभी जगहों मे इस चूर्ण को छिड़क देना चाहिये। यदि खाने-पीने के पदार्थ मे भी इसे थोडी मात्रा में मिला दिया जाय तो इस छुतहे रोग से और भी जल्दी बचाव हो सकता है।

अनुभव—स्वर्गीय श्री रामचरण मिश्र वैद्य, (ग्राम पुनास-वेदौलिया, रानीटोल, दरभंगा) ने प्लेग के दिनो मे इसी चूर्ण का व्यवहार अपने घर और आसपास के मुहल्लों मे करवाया था। उस साल सचमुच उस गाँव मे, जहाँ-जहाँ बच के चूर्ण का प्रयोग हुआ, रोग रुका रहा।

कायफल का उद्धूलन

कायफल

बनाने की विधि—कायफल को कूट और कपड़छन कर रख लें।

गुण—शरीर पर इस चूर्ण की मालिश करने से हैजे के कारण होने वाली ऐंठन मिट जाती है।

व्यवहार विधि—ऐंठन वाली जगह पर सूखे चूर्ण की मालिश करनी चाहिए।

अनुभव—सन् १९४३-४४ के करीब हम हैजे से ग्रसित हो गये, बड़ी तेज ऐंठन हो रही थी। श्री रामनारायण वैद्य, मुकीमगंज, काशी की चिकित्सा हो रही थी। उन्होंने कायफल के उद्धूलन की व्यवस्था की। उससे शीघ्र लाभ हुआ। राजनिघंटुकार ने इसे कटु, उष्ण, कास, श्वास, ज्वर-नाशक, उग्रदाहहर, रुच्य और मुख-रोग को शान्त करने वाला लिखा है।

मण्डूर-प्रयोग

मण्डूरभस्म	२ रत्ती
मधु	१ तोला
गाय का ताजा घी	६ माशे

बनाने की विधि—पहले मण्डूरभस्म को छोटी खरल में रख थोड़े मधु के साथ खरल करे। जब उसके कण मधु में मिल जायँ तब शेष मधु डालकर खरल करे। फिर घी मिला ले। यह पूरी एक मात्रा है।

विशेष—मण्डूरभस्म बनाने की विधि 'रसायनसार' ग्रन्थ में विस्तारपूर्वक देखें।

गुण—इसके सेवन से जीर्णज्वर, प्लीहा, यकृत्-वृद्धि, उदर-रोग, रक्ताल्पता, अशक्तता आदि विविध पुरातन व्याधियाँ मिट जाती हैं। रक्ताल्पता और उसके कारण होने वाली शोथ, पीलापन आदि उपसर्ग भी मिट जाते हैं।

उपयोग-विधि—प्रातः और सायकाल एक-एक मात्रा औषधि कई सप्ताह तक लेनी चाहिये।

अनुभव—यह योग प्राय सभी प्रान्तों के चिकित्सकों में प्रसिद्ध-सा है। मुझे कालाजार हो गया था। उसके कारण होने वाले कई उपसर्ग इसी मण्डूरभस्म के सेवन से जाते रहे। विशेष रूप से अनुभूत है।

क्षुद्बोध बटी

शुद्ध आँवलासार गन्धक	५ तोले
सेंधानमक	१ तोले
कालीमिर्च	१७ आने भर
कागजी नीबू का रस	१ पाव

बनाने की विधि—तीनो सूखी चीजो को कूट-छानकर पत्थर के खरल मे नीबू के रस के साथ कई दिनो तक खरल करे। जब गोली बनने लायक लुगदी हो जाय, मटर के बराबर गोलियाँ बना कर काठ या मिट्टी आदि के पात्र मे सुखा लें।

गुण—यह गोली अरुचि, अजीर्ण, मन्दाग्नि, साधारण उदर-शूल को नष्ट करती है, मूत्रदोष (पूयमेह-सूजाक) वालो के मूत्रोत्सर्ग के समय के कष्टो को, कुछ दिनो तक सेवन करते रहने से दूर कर देती है।

अनुभव—श्री स्वर्गीय कृष्णदेवनारायण मेहता, जमीन्दार और रईस, मुजफ्फरपुर (बिहार) के लिए उनके दरबार के प्रधान चिकित्सक स्वर्गीय श्री पं० रामचरण मिश्र वैद्य ने इस बटी का निर्माण किया था। जब-तक वैद्यजी जीवित रहे, उनके लिये यह बटी साल मे एक-दो बार अवश्य बनती थी। अब भी वैद्यजी के खानदान मे यह बटी बनती है और रोगो पर इसका विशेष लाभ होना प्रसिद्ध-सा है।

बालवेदनाहर मरहम

गुलरोगन	१ तोला
महुए का तेल	१ ,,
नारियल का तेल	१ ,,
गाय का घी	१ ,,

मोम	१ तोला
बिरोजा	१ ,,
कपूर	८ आने भर
पीपरमेन्ट	८ ,,

बनाने की विधि—पहले कपूर और पीपरमेन्ट को एक शीशी मे डालकर कार्क बन्द कर दे। जब दोनो मिलकर द्रव-रूप मे हो जायँ तब दो-चार बार अच्छी तरह शीशी को हिला दें। फिर गुलरोगन से विरोजे तक की छहों चीजो को एक छोटी कडाही मे रख, आग पर गरम करे। जब सभी मिलकर एकदिल हो जायँ, कपडे से छान लें और जब गरम ही रहे उसी वक्त पीपरमेन्ट और कपूर का मिला हुआ द्रव डालकर अच्छी तरह मिला दें। पीपरमेन्ट और कपूर उड़नशील द्रव्य है, इसलिये इस मरहम को ढक्कनदार डिब्बे मे तुरत रखकर उसका मुँह बन्द कर दे।

गुण—इसके व्यवहार से सिर तथा सम्पूर्ण शरीर की वातज-वेदना शान्त हो जाती है।

व्यवहार विधि—सिर, हाथ, पैर, पीठ आदि शरीर के किसी स्थान मे दर्द होने पर उस जगह इस मरहम की अच्छी तरह मालिश करनी चाहिये।

अनुभव—श्री पं० विद्यानाथ मिश्र (पुनास वेदौलिया, रानी-टोल, दरभगा) का अनुभूत है।

शिरःशूलान्तक मरहम

मोम	१ तोला
गाय का घी	१ ,,
नारियल का तेल	१ ,,
चाय का तेल	२ ,,

कपूर का तेल	८	आने भर
पीपरमेन्ट का तेल	४	,,
अजवायन का तेल	४	,,

बनाने की विधि—मोम, गाय का घी और नारियल के तेल को आग पर गरम करें। जब तीनो चीजे मिलकर एकदिल हो जायँ, कपड़े से छान ले और शेष सभी चीजे डालकर मिलावे और गरम रहे तभी शीशी मे रख ले। शीशी का ढक्कन हमेशा बन्द रखे।

गुण—इसके उपयोग से शिरो-वेदना शीघ्र मिटती है तथा शिर मे पसीना आ जाता है।

व्यवहार विधि—दर्द वाली जगह पर इसकी मालिश करनी चाहिये।

अनुभव—श्री सीताराम मिश्र, जी० ए० एम० एस०, प्राणाचार्य (पुनास वेदौलिया, रानीटोल, दरभंगा) का विशेष रूप से अनुभव किया हुआ है।

गेल्हे का लेप

गेल्हे का गूदा	२ तोले
बकरी का दूध	५ ,,

बनाने की विधि—गेल्हे के गूदे को बकरी के दूध के साथ पीसकर एक कटोरी में उठा लें और लेई की तरह आग पर पका ले।

गुण—इससे सन्निपात या कफ के कारण होने वाली कान के बगल की सूजन मिटती है। यदि सूजन के साथ दर्द भी हो तो उसे भी शान्त करता है।

व्यवहार विधि—कान की जड़ में, जहाँ सूजन हो, गरम-गरम लेप करना चाहिये। लेप कुछ मोटा ही चढ़ावें। घण्टे भर बाद लेप

हटा दे। एक-दो घण्टे तक विना लेप का ही सूजन वाले स्थान को रहने देकर फिर लेप लगाना चाहिये। इसी प्रकार केवल दिन ही दिन मे तीन-चार बार तक लेप लगाना चाहिये।

अनुभव—प० तारिणी प्रसाद पाठक, वैद्य (मुकाना, पटना) का अनुभूत है। यह उनकी वश परम्परा से चला आने वाला योग है।

विशेष—गेल्हा को भीआँ भी कहते है। धोबी इससे धोती, कुर्ता और टोपी पर चून चढ़ाता है।

निमोनियाँ की पट्टी

तीसी	२ तोले
बकरी का दूध	५ तोले

बनाने की विधि—तीसी को दूध के साथ अच्छी तरह पीसकर आग पर पकाकर गाढ़ा कर ले। यह एक मात्रा है।

गुण—इसके व्यवहार से निमोनिया के कारण रुका हुआ कफ ढीला हो जाता है। श्वास की तेजी कम हो जाती है और उसमे साथ-साथ होने वाला कलेजे का दर्द मिट जाता है।

व्यवहार विधि—एक कपडे पर इसका मोटा लेप कर कुछ गरम-गरम ही कलेजे पर पट्टी रखनी चाहिये। घण्टे भर बाद पट्टी बदल देनी चाहिये। पट्टी देते समय बीच बीच मे पट्टी लगाने वाली जगह को खाली रखना भी आवश्यक है।

अनुभव—लेखक का अनुभूत है।

विशेष—गरम कर लेने के बाद लेप मे १०–१५ बूँद तारपीन का तेल भी मिला लेने से विशेष लाभ होता है। खास कर विशेष दर्द की अवस्था मे तेल मिलाना चाहिये।

सरसाम का उपचार

बकरी का दूध	१ तोला
असली गुलरोगन	१ ,,

बनाने की विधि--एक शीशी मे दोनो चीजे रखकर कार्क बन्द कर दे और कुछ देर तक झकझोरे। एकदिल हो जाने पर यह व्यवहार के योग्य हो जाता है।

गुण--इससे बुखार की तेजी कम होती है, रोगी का बकना-झकना कम हो जाता है और वह सो जाता है।

व्यवहार विधि--इसे कपडे की पट्टी मे तर करके सिर पर रखना चाहिए। पन्द्रह-बीस मिनट के बाद पट्टी की औषधि को निचोडकर फेक दे और फिर ताजी औषधि मे तर करके सिर पर रखें।

अनुभव--यह हिकमत का योग है। लेखक का अनुभूत है।

विशेष--बुखार की तेजी मे जब रोगी आन-तान बकने लगता है, उस दशा को सरसाम कहते है। ऐसी दशा मे बडे-बडे शहरों मे डाक्टर लोग रोगी के सिर पर बरफ की टोपी (आइस बेग) रखवाते है, लेकिन देहातो मे जहॉ से स्टेशन या बाजार कोसो दूर होता है, बरफ मिलना मुश्किल हो जाता है। ऐसी हालत में उपर्युक्त योग से ही वैद्य लोग काम लेते है। इसके अतिरिक्त आयुर्वेद या हिकमत के सिद्धान्तानुसार कई प्रकार के ज्वर मे बरफ या जल के बाह्य उपयोग का निषेध किया गया है। अतः सिद्धान्त-रक्षा के निमित्त भी उपर्युक्त योग का व्यवहार युक्तिसगत है।

एरंड पाक

छोटी रेंडी की गिरी	६४ तोले
गाय का दूध	५१२ ,,
गाय का घी	१६ ,,
चीनी	२५६ ,,
सोठ	१ ,,
पीपल	१ ,,
कालीमिर्च	१ ,,
लौंग	१ ,,
छोटी इलायची के दाने	१ ,,
दालचीनी	१ ,,
नागकेसर	१ ,,
असगध	१ ,,
पीपरामूल	१ ,,
रेणुका	१ ,,
शतावर	१ ,,
रास्ना	१ ,,
पुनर्नवा की जड़	१ ,,
दारूहल्दी	१ ,,
खस	१ ,,
जावित्री	१ ,,
जायफल	१ ,,
हल्दी	१ ,,
लोहभस्म	१ ,,
अभ्रकभस्म	१ ,,

बनाने की विधि—रेंडी की गिरी दूध मे पकावें। खोआ हो जाने पर रेंड़ीसहित खोआ सिल पर महीन पीसकर

एकदिल कर ले। फिर उसे मन्द-मन्द आँच पर घी मे भून। जब कुछ सुर्खी आ जाय, सुगन्ध उठने लगे, तब उसे आग पर से नीचे उतार लें। इसके बाद चीनी से चौथाई जल डालकर चाशनी तैयार करे। एक तार की चाशनी बन जाने पर, घी मे भुनी रेड़ो डालकर पकावे। जब हलुवे की तरह गाढ़ा होने लगे, उसमे सोठ से अभ्रकभस्म तक की सारी चीजो का महीन कपड़छन चूर्ण (जो पहले से ही तैयार कर रखा रहे) डाल दे और भली भाँति मिलाकर कडाही को चूल्हे से उतार ले। खूब ठंढा हो जाने पर अमृतबान मे रखकर ढक्कन लगा दे।

गुण - यह आमवात की प्रसिद्ध औषधि है। इससे आमवात का कष्ट स्थायी रूप से दूर हो जाता है। यह रेचक है।

व्यवहार विधि—एक से दो तोले तक पाक, गाय के गुनगुने दूध के साथ लेना चाहिये। साधारण रोग मे केवल प्रात.काल और रोग की विशेष दशा मे सुबह-शाम व्यवहार करना चाहिये।

अनुभव—बिहार प्रान्त के प्राय. सभी वैद्य इस योग से परिचित है। सभी व्यवहार करते है। स्वर्गीय श्री रामेश्वर पाठक वृद्ध वैद्य (पुनास बेदौलिया, रानीटोल, दरभगा) का साठ बरसो का अनुभव किया हुआ यह योग है। वे भागलपुर जिले के जमीदारो के यहाँ के खास चिकित्सक थे।

दमे का सिगरेट

काले धतूरे का पञ्चाग	५ तोले
भाग	५ ,,
कलमीशोरा	

बनाने की विधि—धतूरे के पञ्चाग (जड़, फल, फूल, पत्ता और डाल) और भाग को कूटकर तार वाली चलनी से छान लें।

एक तामचीन, काठ या पत्थर के बरतन मे चूर्ण रख, ऊपर से थोडे जल मे घुला हुआ कलमीशोरा डाले। कलमीशोरे के जल को छीटे मार-मारकर चूर्ण मे मिला ले। मतलब यह कि शोरा भी चूर्ण मे मिल जाय और वह कुछ मुलायम भी हो जाय। फिर सिगरेट बनाने के कागज मे थोड़ा चूर्ण रखकर लेई या अरारोट से उसे साट दे।

विशेष—सिगरेट बनाने का कागज बिसातखाने की बड़ी-बड़ी दूकानो मे मिलेगा। सिगरेट बनाने की मशीन भी मिलती है।

गुण—इसके व्यवहार से दमे का दौरा रुक जाता है और रोगी को नीद आ जाती है।

व्यवहार विधि—जिस समय दमे का दौरा हो और दमा जोर पकड़ रहा हो, उस वक्त एक सिगरेट पीकर ऊपर से पाव-आध पाव गाय का गुनगुना दूध पीना चाहिये। इस योग मे धतूरा और भाग है। इसकी खुश्की को दूध ही दूर कर सकता है। अनुपान मे दूध लेने से औषधि की गरमी के कारण रोगी बेचैन नही होने पाता है।

अनुभव—श्री दामोदर शास्त्री, कविराज, भिषगाचार्य, काशी का यह अनुभूत है।

पारिवारिक चिकित्सा के लिये श्रेष्ठ पुस्तकें

मसालों के उपयोग

- हल्दी
- लहसुन
- अजवाइन
- सौंफ
- अदरख
- तेजपात
- मेथी
- हींग
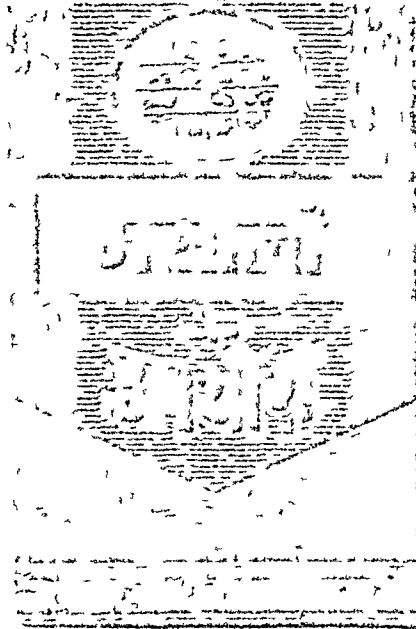
- जीरा
- धनिया
- राई
- मगरैला
- प्याज
- नीबू
- आंवला
- गूलर

इन पुस्तकों से अनेक प्रकार के कठिन रोग दूर करने के लिए सरल उपायों की विशेष जानकारी होगी।

—•—

प्रत्येक का मूल्य : पैंतीस - पैंतीस पैसे

१६ पुस्तकें एक जिल्द में पांच रुपये पचास पैसे में।

विशेष जानकारी के लिए पुस्तकों का बड़ा सूचीपत्र मंगाइये।

श्यामसुन्दर रसायनशाला प्रकाशन, गायघाट, वाराणसी-१

अनुभूत योग ३

श्यामसुन्दर रसायनशाला
गायघाट • वाराणसी

श्यामसुन्दर आयुर्वेद ग्रन्थमाला—पुष्पः ३१

लेखक

वैद्यराज उमेदीलाल वैश्य

(नीबू, आंवला, गूलर, तुलसी, आम और
१६ मसालो के उपयोग, स्वास्थ्य साधन
आदि अनेक पुस्तको के रचयिता)

प्रकाशक

श्यामसुन्दर रसायनशाला प्रकाशन

गायघाट, वाराणसी।

मुख्य वितरक

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी।

तीय सस्करण
जुलाई १९७६

मूल्य
एक रुपया

विषय-सूची

ॐ

अनुभूत योग

तृतीय भाग

शीतज्वर-निवारिणी वटी

योग—कालीमिर्च, सफेद अतीस, करज के बीज और भुनी फिटकिरी—ये चारों चीजें पाँच-पाँच तोले और गूमे की ताजी पत्तियों का रस चालीस तोले ले। निर्माण—तीनों काष्ठ औषधियो को तीन-चार घंटे धूप मे सुखाकर कूट ले। जब वे महीन हो जाँय तब कपडे से छान ले। फिटकिरी को तवे पर रख आंच दे। उसके गल जाने पर तवे को आंच पर से अलग कर दे। थोड़ी देर मे जब पिघली हुई फिटकिरी जम जाय तब उसे खुरचकर तवे से निकाल लें और चूर्ण में मिलाकर सभी को एक पत्थर के खरल मे रख थोड़ा-थोड़ा गूमे का रस डाल खरल करे। जब सभी रस खतम हो जाय तब चार-चार रत्ती की गोलिया बना और धूप मे सुखाकर रख ले।

गुण—रक्त मे आश्रित शीतज्वर के कीटाणुओं का नाशक, ज्वर की विषम अवस्था का निवारक, उदर-कृमियों का मारक, शरीर में बढ़े हुए जल-तत्त्व को सम अवस्था मे लाकर और मल का स्थापक गुण-धर्म से यह युक्त है। इससे शीतज्वर, विषमज्वर, कृमिज्वर, ज्वरातिसार तथा ज्वर के साथ रहने वाली उदर-कृमियाँ नष्ट होती हैं।

उपयोग—शीतज्वर जब तीन-चार दिनों तक आ चुके तब ज्वर जाने से चार घंटे पूर्व ही से इस औषधि की मात्राएँ देनी चाहिए। विषम ज्वर और कृमिज्वर मे भी जब ज्वर का वेग कम रहे तब इसकी मात्राएँ सेवन करावें।

मात्रा—इसकी पूर्ण मात्रा आठ रत्ती का है, पर वृद्ध, कोमल स्त्री तथा दुर्बल रोगी को चार रत्ती की ही मात्रा देनी चाहिए। आठ से चार वर्ष तक के लड़के को दो रत्ती और चार से एक वर्ष तक के बच्चे को इसकी एक रत्ती की मात्रा दें। समय—शीतज्वर में ज्वर रोकने के निमित्त, तीन तीन घंटे पर एक दिन में ज्यादा से ज्यादा चार-पांच मात्राओं तक का प्रयोग किया जा सकता है। ज्वर का वेग बढ़ते ही औषधि का व्यवहार बंद कर देना चाहिए और पुनः ज्वर का वेग घटते ही इसकी मात्राएँ देनी चाहिए। विषम ज्वर की साधारण अवस्था में सुबह और शाम को, विशेष अवस्था में चार-चार घंटे पर एक दिन में चार मात्राएँ तक दें। कृमिज्वर में केवल सुबह और शाम को एक-एक मात्रा दें।

अनुपान—शीतज्वर में पारिजात के ताजे पत्तों का रस आठ आने भर और उतना ही मधु मिलाकर इसी मिश्रण में गोली को हल कर दें। विषम ज्वर में तुलसी की पत्तियों के आठ आने भर रस और पांच-सात दाने काली-मिर्च के चूर्ण और आठ आने भर शहद से तथा कृमिज्वर में एक माशे वाय-विडंग के चूर्ण और शहद से, ज्वरातिसार में एक माशे भुने हुए सफेद जीरे के चूर्ण और शहद से इस औषधि का सेवन कराना चाहिए। पथ्य और उपचार—शीतज्वर में जब ज्वर का वेग ज्यादा हो तब रोगी को अन्न का आहार न दें। उस काल में यदि आवश्यकता हो तब गाय के ताजे दूध को खौलाकर और नीबू का रस दस-बीस बूंद डालकर फाड़े तथा छेने को पृथक् कर केवल उसका जल, चीनी से हल्का मीठा कर दें। यह जल त्रिदोषनाशक, दाह, प्यास और पतली टट्टी का स्तम्भक, पित्त की और ज्वर की उष्णता का निवारक तथा तृप्तिकर है। यदि ज्वर में कब्ज की दशा हो, जैसा कि शीतज्वर में अकसर रहा करती है, तब दो तीन तोले काले मुनक्के को तीन छटांक जल में उबाले और एक छटांक जल खत्म हो जाने पर उसे मसल और छान-कर मुनक्के का जल तैयार कर ले। इसे रोगी को दे। यह मलशोधक, बल-दायक, पित्तशामक, सूखे बलगम को ढीला कर निकालने वाला तथा ज्वर की उष्णता को कम करने वाला एकदम लघु पथ्य रूप पेय है। ज्वर की उष्णता के कम होने पर प्रथम परवल और मूँग की दाल का जूस और बाद में अन्न

से बने हलके पथ्य की व्यवस्था करनी चाहिए। यदि शीतज्वर के आगमन के समय हाथ और पैर के नाखून और अँगुलियाँ ठढी हो जाँय तब उनमें 'अरगजा बनाकर लगावें और पुरानी रूई से सेककर उसी रूई की पट्टी बाँधकर हाथ और पैरों को ढककर रखें। यह क्रिया ज्वर चढ़ने से पूर्व ही करनी चाहिए।

ग्रन्थिवातदमनी वटी

योग—सोरा (कलमी) और कत्था एक-एक तोला, शुद्ध सफेद संखिया अढाई माशे लें। निर्माण—इन्हे खरल में रख जल के साथ एक घटे तक खरलकर मोथी (एक प्रकार का अन्न) के दाने के बराबर महीन-महीन गोलिया बना और सुखाकर रख लें।

गुण—इसका असर स्नायुमडल और रक्त मे व्याप्त पापोपदश के कीटाणुओं पर होता है। गाठों मे दर्द वात से हो, मूत्र मे अम्लता के कारण हो या उपदश के कीटाणुओं की वजह से हो, यह वटी हर हालत में लाभ पहुँचाती है। इसकी प्रकृति उष्ण है, क्योंकि इसमें संखिया विष का मिश्रण है। यह वातनाशक, कफशोषक तथा पित्तवर्द्धक है।

उपयोग और समय—प्रातःकाल कुछ नाश्ता कर लेने के आधा घटे के बाद इस औषधि की एक मात्रा गाय के (एक तोला) ताजा घी मे मिश्रितकर रोगी को चटावें और ऊपर से उबालकर ठढा किया गाय का एक पाव दूध पीने को दे। स्वाद के लिए और गुण की वृद्धि के लिए भी दूध मे थोड़ी चीनी मिलानी चाहिए। इसी प्रकार रात्रि मे रोगी के भोजन कर चुकने के बाद सोते वक्त इसकी एक मात्रा दे। नये रोगो मे एक पक्ष और पुराने रोगों में चालीस दिनों तक इसका सेवन करावे। मात्रा—इसकी मात्रा एक रत्ती का चौथा हिस्सा अर्थात् चौथाई रत्ती है।

अनुपान—गाय या भैंस का घी, मक्खन, दूध और मलाई। इसे बादाम के हलुआ मे भी दिया जाता है। हलुआ मे रखकर देने के बाद भी दूध देना चाहिए। पथ्य और उपचार—यदि रोगी पित्त-प्रकृति का हो, उसे जलन, प्यास, सिर में चक्कर इत्यादि पित्त-विकृति के लक्षण हों तब इस औषधि का उपयोग न करना चाहिए। यदि पित्त प्रकृति वाले को देनी हो तो

उसे पथ्य में चावल (पुराना), मूँग, चना, दूध और घी इत्यादि दें। यदि गाँठों में दर्द वायु के कारण हो तब मूँग और चना न देकर उड़द और अरहर की दाल दे और चावल न दें। सब्जियों में सहिजन और भटा इत्यादि वातशामक पदार्थों को दे। मूत्र में खट्टापन (मूत्रक.म्लयूरिया) के कारण गाठों मे दर्द होने की दशा में भी चावल बंद कर गेहूं की रोटी दें। ऐसे रोगी को खट्टापन बढाने वाले पदार्थों से परहेज और क्षारीय-द्रव्य के द्वारा क्षारीय अंश बढाने वाले आहार देने की व्यवस्था करें।

गोखरू पाक

योग—गोखरू एक सेर, गाय का दूध चार सेर, चीनी चार सेर, गाय का घी चार छटाँक, जावित्री, लौग, पठानीलोध, कालीमिर्च, भीमसेनी कपूर, नागरमोथा समुद्रशोप, शुद्ध धतूरे के बीजों की गिरियाँ, हल्दी, आँवला, पीपल, केशर, नागकेशर, छोटी इलायची के दाने, तेजपात, शुद्ध अफीम, कौंच के बीज, अजवाइन—इन अठारहों चीजों को एक-एक रुपये भर लें और नौ तोले भाँग की पत्तियाँ ले। निर्माण—गोखरू को कूट और कपड़छानकर दूध मे घोल लें और आग पर पकावे। कूँचे से बीच-बीच में चलाते रहे ताकि जलने न पावे। खोआ बन जाने पर घी डालकर भूनें। जब सुगन्ध आने लगे और खोये का रग सुर्ख हो जाय तब उसे नीचे उतार ले। फिर चीनी मे एक सेर जल डालकर आग पर जरा खौला लें और कपडे से उसे छानकर उसकी चाशनी तैयार करें। एक तार की चाशनी बन जाने पर उसमें गोखरू के खोये को डाल चलाते रहे। इधर जावित्री से लेकर अजवाइन तक की अठारह चीजों मे से अफीम, भीमसेनीकपूर और केशर—इन तीन चीजों को अलग कर शेष चीजों तथा भाँग को कूट और कपड़छानकर लें। अफीम को आधी छटाँक जल मे खौलाकर कपडे से छान लें और केशर तथा भीमसेनी कपूर को एक जगह खरल कर लेने के बाद सभी को एकदिल करके तैयार रखें। जब चाशनी में मिला खोआ पककर गाढा हो जाय और घी छोड़ने लगे या कल्छी में चिपकने लगे तब उसमें उक्त चूर्ण को डालकर मिलावे और पाँच मिनट के बाद उसे चूल्हे से उतार ले।

गुण—इसका असर शुक्रधरा और ग्रहणीकला पर होता है। यह मल के पतलेपन को ठीक करने, जठराग्नि की मन्दता को मिटाने तथा अन्न के पाचन में सहायक है। इससे मल बँध जाता है। इस औषधि के योग में पड़े विभिन्न द्रव्य अपने गुणों के कारण पौरुष की शिथिलता को मिटाकर शुक्रग्रन्थि को बल देते, शुक्रतारल्य को सुधारकर उसमे घनता और स्तम्भन गुण का विकास करते हैं। मूत्राशय में कष्ट देनेवाली पथरी या धातु-सम्बन्धी विकार मे इसका प्रभाव देखा जाता है। शीतकाल मे यह विशेष सेवनीय है।

मात्रा—तीन माशे से एक तोला तक। कमजोर आदमी को डेढ माशे से छ: माशे तक। **अनुपान**—उबालकर ठंढा किया गाय का दूध एक पाव और मिश्री दो तोले। ग्रहणी रोग मे बकरी के दूध के साथ। **समय और उपयोग**—ग्रहणी मे सुबह-शाम एक-एक मात्रा और स्तम्भन तथा बाजीकरण गुण इत्यादि के लिए सायंकाल एक-एक मात्रा।

हरिद्रादि क्वाथ

योग—हल्दी, दारुहल्दी, रसौत, चिरायता, अड़ूसे के पत्ते, नागरमोथा, बेल की गिरी, लालचंदन और काले तिल—इन नौ चीजों को दो-दो तोले लें, जल साढ़े चार सेर और शहद अठारह तोले ले। **निर्माण**—सभी चीजों को अधकचरा कूटकर एक मिट्टी या कलईदार बर्तन मे रात्रि मे भिगो दे। प्रातः काल काढ़ा पकावे। पकते वक्त काढे को ढकना न चाहिए। जब चौथाई शेष रहे अर्थात् साढे चार सेर जल का अठारह छटाक के करीब बचे तब उसे आग पर से हटाकर कपडे से छान ले। शीतल होने पर शहद मिला ले और बोतल में रख काग बन्द कर दे।

गुण—इसके सेवन से सभी प्रकार के प्रदर, प्रदर के समय होनेवाली हाथ-पैर की जलन, तलवों और सिर की जलन तथा कमर और अंगों के साधारण दर्द, पेट के दर्द तथा रुक-रुककर ऋतु-धर्म का होना इत्यादि कष्ट इसके कुछ दिनों के सेवन से मिट जाते हैं।

मात्रा और समय—पाँच तोले। सुबह और शाम एक-एक मात्रा।

उपयोग—प्रातःकाल अच्छी तरह मुख की सफाई कर एक मात्रा काढा

सेवन करें और इसी प्रकार शाम को भी ले। यह दवा अठारह मात्रा है। शहद मिलाने और अच्छी तरह बोतल का काग बन्द कर रखने से बिगड़ती नहीं है। यदि नित्य ताजा काढ़ा पका लिया जाय तो सबसे उत्तम रहेगा। नवों चीजों को मिलाकर दो तोले दवा को कुचलकर आधा सेर जल में उक्त विधि से रात्रि में भिगो दें। प्रातःकाल काढा पकावें। आधा पाव शेष रहने पर छान और शीतल कर दो तोले शहद मिला ले। यह सुबह और शाम के लिए दो मात्राएं हैं, आधी दवा सुबह और आधी शाम को लें।

मंडूर योग

योग—मडूर बीस तोले, गन्ने का एक साल का पुराना सिरका डेढ़ सेर, आँवला, बड़ी हरें और बहेड़ा दो-दो तोले, मजीठ दो तोले और गाय के दूध का दही एक सेर लें। निर्माण—एक लोहे की छोटी कड़ाही मे तेज आँच पर मडूर को तपावे जब वह लाल हो जाय तब उसे आधा सेर सिरके मे बुझा दें, पुनः उसे सिरके से निकालकर तप्त करे, इधर मडूर बुझाए सिरके को पृथक कर उतना ही दूसरा सिरका बुझाने वाले पात्र में रखे और लाल होने पर मडूर उसमे डाल दें। इसी क्रम से पृथक्-पृथक् सिरके मे तीन बार बुझा चुकने पर मडूर को इमामदस्ते मे कूटे और जल से चार-पाँच बार धो डाले। जब साफ जल निकलने लगे तब उसे सुखाकर कूटें और मोटे कपड़े से छानकर एक लोहे की कड़ाही मे रखें। फिर उसमे त्रिफला (आँवला, हरें और बहेड़ा) और मजीठ के कुटे और कपड़छान किये चूर्ण का मिश्रण कर एक सेर दही डाल लोहे की मूसल से आठ घटे तक घोटे। जब मडूर लेप की तरह बन जाय तब उसे शीशे या मिट्टी के ढक्कनदार पात्र में रख ले।

गुण—इसके सेवन से सग्रहणी, खून की कमी, प्रदर, ऋतु की रुकावट, तीसरे प्रहर से कुछ-कुछ हरारत का होना, बीमारी के बाद की कमजोरी, तिल्ली और जिगर की खराबी तथा बच्चों की सुखडी इत्यादि रोग निर्मूल होते हैं।

मात्रा—तीन माशे बारह से चार वर्ष के लड़के को डेढ़ माशे और उससे नीचे की उम्र के बच्चे को चार से दो रत्ती तक। अनुपान—गाय के दूध से तैयार अर्धाविलोया हुआ दही पाच से दस तोले तक। यह सग्रहणी,

तिल्ली और जिगर का अनुपान है। प्रदर में चावल के धोवन और शहद से, ऋतु की रुकावट में काले तिल के पानी से (दो तोले काले तिल को आधा पाव जल मे रात्रि में भिगो दें। प्रातःकाल मसलकर कपड़े से छान जल ले लें।), हरारत के समय गर्म जल रक्त-प्रदर मे ओड़हुल के फूलों के शरबत या शरबत नीरोफर के साथ दें।

विशेष—तिल्ली और जिगर की खराबी में कुलथी की दाल का जूस, परवल, खेखसी, गूमे की पत्तियो का साग, बथुआ, सूरन तथा बालमखीरे का अर्क इत्यादि क्षार-प्रधान द्रव्य पथ्य रूप मे लेना चाहिए। और चीनी की जगह शहद का प्रयोग करना चाहिए। प्रदर में गूलर, कच्चे केले इत्यादि की तरकारी तथा उबाली सुथनी का भरता लेना लाभदायक है। ऋतु की खराबी या उसकी रुकावट में राई की चटनी का भोजन के समय प्रयोग और गर्म जल मे कपडे तरकर उसीसे पेड़ू पर सेंक करना लाभप्रद है। सग्रहणी मे बकरी का दूध, मसूर की दाल का जूस, पुराने लाल चावल का मड़गीला भात, मट्ठा, अजवाइन, कालानमक, कच्चे बेल को आग में पका और उसमे थोड़ा एक साल का पुराना गुड और एक माशा के बराबर सोंठ का चूर्ण मिलाकर खाना तथा कच्चे केले की तरकारी इत्यादि लघु, पाचक, क्षारीय एव ग्राही पथ्य उपयोगी हैं। खून की कमी मे दूध, मुनक्का, मूँग, परवल, पालक, पुराने जौ और गेहूँ तथा शहद इत्यादि शरीर-पोषक द्रव्य पथ्य हैं।

कनकसुन्दरी वटी

योग—शुद्ध धतूरे के बीजों की गिरियाँ, बड़ी इलायची के दाने, बैतरा सोंठ, पीपल, कबाबचीनी, शुद्ध अफीम—ये दो-दो तोले और कालीमिर्च छः तोले ले। निर्माण—पाँचों सूखी चीजों को कूट और कपड़छान कर पत्थर के खरल में रखे और अफीम को एक छटाँक खौलते जल मे घोलकर उसे कपड़े से छानने के बाद चूर्ण मे मिलावें। फिर जल के साथ चार-छ. घटे तक खरलकर आधी-आधी रत्ती की गोलियाँ बना सुखा ले। मात्रा और समय—आधी से एक रत्ती तक। सुबह और शाम। अनुपान—तर खाँसी में पान के रस से या आदी के रस से, बुखार मे आदी के रस या गर्म जल से, सग्रहणी मे मट्ठे से, क्षयी मे बकरी के दूध और शहद से, वायुगोला मे अजवाइन के अर्क से,

तिल्ली सहित बुखार में शरपुखे की जड़ के काढे से तथा प्रसूत के विकार में दशमूल के अर्क या काढे से इसे सेवन करना चाहिए।

पथ्य—बुखार वाले को लालमिर्च और खटाई तथा सग्रहणी (पतली टट्टी) मे दाल से परहेज रखना चाहिए।

धतूरे की शुद्धि—धतूरे के एक छटाँक सूखे बीजों को आठ गुने गोमूत्र मे चौबीस घटे तक भिगोकर रखे। फिर उन बीजों को जल से धोकर आठगुने बकरी के दूध मे एक पोटली मे बाँध, दोलायत्र की विधि से मद आँच पर पकावे। जब दूध गाढ़ा हो जाय तब पोटली से बीजों को निकाल और गर्म जल से धो धूप मे सुखा ले। सूख जाने पर उनकी भूसी को पृथक् कर उनकी गिरियाँ निकाल लें। अफीम की शुद्धि—पत्थर के खरल मे अफीम को रख ऊपर से कपड़े से छने आदी के चौगुने रस की भावना दे और खरल करे। सूख जाने पर पुनः रस की भावना दे। इसी क्रम से इक्कीस बार भावना देने से अफीम की पूर्ण शुद्धि हो जाती है।

प्रदर-नाशक हलुआ

योग—नेनुआ की जड़ का चूर्ण और सनपुतिया की जड़ का चूर्ण चार-चार तोले, साठी चावल का आटा एक तोला, छिले कच्चे केले का सूखा आटा एक तोला, घी पाँच तोले, चीनी साढे सात तोले और कागजी नीबू का रस दो तोले ले। निर्माण—छोटी कड़ाही को चूल्हे पर रख आँच दें और घृत छोड़ दे। उसके गर्म होने पर चारो सूखी चीजों के चूर्ण को डाल जरा सुर्ख कर ले। फिर एक पाव जल मे घुली और छनी चीनी तथा नीबू के रस को डाल पकावें। कूँचे से बराबर चलाते रहे। जब हलुआ घी छोड दे तब उसे चूल्हे से उतार ले।

मात्रा और समय—पाच तोले। सुबह और शाम। अनुपान—गाय या बकरी का उबला और ठढा किया दूध आधा पाव।

पथ्य—पका केला, गाय का दूध, मिसरी और गेहूँ की रोटी। इसके अलावा कच्चा गूलर या कठगूलर, कच्चा केला, सुथनी, नेनुआ, परवल, खेखसी तथा मीठे ग्वारपाठे के गूदे का साग, मूँग की दाल, पुराने साठी और साली चावल इत्यादि का भोजन करना तथा तिल के तेल की शरीर मे

मालिश लाभदायक है। अपथ्य—खटाई, कड़ुआ तेल, लालमिर्चा, गुड़, उड़द, नया अन्न तथा सिरका इत्यादि हानिकर हैं। इसी प्रकार आग के निकट अधिक बैठना, अधिक परिश्रम करना तथा गरम-गरम भोजन करना ये भी हानि पहुँचाने वाले हैं; इसलिए इन सबसे परहेज रखना चाहिए।

निम्बुकद्राव

योग—कागजी नीबू का रस, जम्बीरी नीबू का रस, अदरख का रस घृत-कुमारी का रस और पान का रस—ये पाँचों कपडे से छने रस तीन-तीन पाव, लौंग एक तोला, कालीमिर्च और पीपल तीन-तीन तोले, जवाखार एक तोला, दालचोनी और सज्जीखार तीन-तीन तोले, चनाखार, जीरा, स्याहजीरा, काला नमक, सेंधानमक, खारीनमक, समुद्रफेन और साँभर नमक- ये आठों चीजे एक-एक तोले लें। निर्माण—एक चीनी मिट्टी के पात्र मे पाँचों छने रसों को डाल ऊपर से सूखी चीजों के कुटे छने चूर्ण को मिलावें और पात्र का मुख बदकर सात दिनों तक धूप मे रखें। आठवे दिन पात्र का मुख खोलकर मोटे कपडे से दवा को छाने। जो गाद निकले उसे पृथक कर दे और शेष छनी पतली दवा को बोतलों मे भरकर काग से बद कर दे।

गुण—यह उत्तम पाचक जठराग्नि को तीव्र करके तथा उदरामय (तिल्ली, जिगर, वायुगोला एव अन्य प्रकार की पेट की बीमारियाँ) का नाशक है। यह ग्रहणी के विकार को दूर कर खूब भूख लगाने वाला पाचन पेय है। इससे अरुचि, मुख के स्वाद का बिगडना, पतली टट्टी का होना, खट्टी डकारे आना (अम्लपित्त की दशा) तथा उदर की क्रिमियों का नाश होता है। पुराना होने पर यह पाचन पेय और भी अधिक गुणयुक्त हो जाता है।

मात्रा—एक से दो तोले तक। कमजोर और बारह वर्ष से पाँच वर्ष तक की आयु वाले को एक तोला और चार से दो साल की उम्र के बच्चे को आधा तोला इसकी मात्रा देनी चाहिए। अनुपान—दवा के बराबर जल मिलाकर इसका सेवन करना चाहिए। समय—प्रातःकाल हल्का नाश्ता कर लेने के आधे घटे के बाद और सायकाल बिना नाश्ता किये ही यह सेवन

किया जाता है। विशेष हालत मे बिना कुछ खाये भी इसे सेवन करने में हर्ज नहीं है।

अपस्मार-विघातिनी वटी

योग—शुद्ध कुचला, कालीमिर्च और अफीम एक-एक तोले लें। निर्माण—अफीम को पाँच तोले खौलते जल मे घोलकर कपड़े से छान लें और उसी मे कुचले और कालीमिर्च के कपड़छान चूर्ण को डाल खरल करें। जब एक या दो दिन के बाद दवा की पीठी गोली बनाने लायक हो जाय तब उसकी एक-एक रत्ती की गोलियाँ बनाकर सुखा ले।

गुण—इसके सेवन से अपस्मार (मृगी) का दौरा रुकता है। मृगी के दौरे के समय मे होने वाला आक्षेप (शरीर का ऐंठना तथा टेढ़ा होना इत्यादि वात-प्रकोप) को यह वटी खत्म कर देती है। इसके अतिरिक्त वात-व्याधि के विकार मे भी यह विशेप लाभप्रद है।

मात्रा—इसकी पूर्ण मात्रा एक रत्ती की है, कमजोर और बारह वर्ष से पाँच वर्ष तक की आयु वाले को आधी तथा चार वर्ष से दो वर्ष तक के बच्चे को इसकी चौथाई रत्ती देनी चाहिए। समय—सुबह और शाम को तथा आवश्यकता होने पर रात्रि मे सोते वक्त भी इसे दिया जा सकता है। अनुपान—गुनगुना जल या गुनगुना दूध।

विशेष—कुचले की शुद्धि की निम्नलिखित विधि है—अढाई तोले कुचले को सोलहगुने गौमूत्र मे भिगो दे। प्रात काल नित्य गोमूत्र बदल दिया करे। इक्कीस दिनों तक इसी क्रम से गोमूत्र मे उसे रखने के बाद बाइसवें दिन गौ-मूत्र से निकालकर गर्म जल से धो डाले। फिर उसके ऊपर के छिलके को चाकू से उतार डाले और उनकी दो दालों को पृथक कर भीतर की जीभी भी हटा दे। ज्यादा दिनों तक गोमूत्र मे भीगने से कुचले मुलायम हो जाते हैं। उन्हे तेज चाकू से महीन-महीन टुकडे कर सुखावें और कूटकर कपड़े से छान लें। जिन आयुर्वेदिक योगों मे कुचले की आवश्यकता पडे उनमे इसी प्रकार शुद्ध किये कुचले को काम मे लावे।

नपुंसकताहर पोटली

योग—केचुआ (सूखा), बीरबहूटी (सूखी), अकरकरा, जायफल, लौंग, बुरादादेदानकील (एक हिकमत दवा) और जावित्री—ये सातों चीज एक-एक तोले, केशर छः माशे और काले तिलों का तेल पाच तोले ले। निर्माण—सभी चीजों को महीन कूटकर तेल में सान ले और शीशे के बडे मुंह के पात्र में ढककर रखें।

गुण—इसके उपयोग से पुरुप-इन्द्रिय की शिथिलता और कई प्रकार की नपुसकता मिटती है।

उपयोग—रात्रि में सोने से पहले छोटी अगीठी में आग जला उसके ऊपर एक तवा रखें और उसमें दो-अढ़ाई तोले काले तिलों का तेल डाल दें। आँच मद रहे। फिर साफ महीन कपडे के दो टुकड़ों पर शीशे के पात्र मे रखी दवा को दो हिस्सों मे अलग कर रखें और दो पोटली बना लें। दोनों पोटलियों को तवे पर रख एक से सेंक शुरू करें। ठढा होने पर उसे तवे पर गर्म होने दे और गर्म पोटली से सेके। इसी प्रकार सेंक करते रहे। कम से कम आधे घटे तक सेंक होनी चाहिए। मूत्रेन्द्रिय, पेडू, जघा और कमर इन चारों स्थानों में ही सेंक होनी चाहिए। नित्य एक बार और समय मिले तो स्नान इत्यादि से निवृत्त हो प्रातःकाल भी सेंक करे और चालीस दिनों तक ब्रह्मचर्य-पूर्वक जीवन बिताना चाहिए।

पेठे का पाक

योग—खरबूजे की मींगी,सफेद मूसली और पेठे की मिठाई दस-दस तोले और ग्वारपाठे के छिले हुए गूदे को ऊपर की तीनों चीजों के बराबर अर्थात् तीस तोले ले। कबावचीनी छः माशे और चीनी चालीस तोले ग्रहण करे। निर्माण—सफेद मूसली और कबावचीनी को इमामदस्ते में कूटकर छान लें फिर सिल पर खरबूजे के बीजों को थोड़ा जल के साथ पीसकर पीठी बना लें। पेठे की मिठाई के टुकड़े कर उन टुकड़ों को भी सिल पर महीन करे और चीनी को छोड़ सभी चीजों को एकदिल कर रखे। उधर आधा पाव जल डालकर चीनी की चाशनी बनावे। एक तार की चाशनी बन जाने पर सभी मिली हुई चीजे डाल पाक तैयार कर ले।

गुण—प्रमेह के लिए यह विशेष फायदेमद है तथा वीर्य को गाढा बनाता है। धातु मे पित्त की बढ़ी गर्मी को इससे शक्ति मिलती है। इससे पेशाब खुलकर होता है। हृदय के लिए हितकर तथा पित्त की तेजी के कारण कंठ के सूखने में विशेप लाभदायक है।

मात्रा—१ तोला। अनुपान—उबालकर ठढा किया गाय का दूध एक पाव। समय—सुबह और शाम। आवश्यकता होने पर सोते वक्त रात्रि मे भी इसका सेवन हितकर है।

अजवाइन की बर्फी

योग—पचास तोले बडे दाने की अजवाइन, सौ तोले कागजी नीबू का रस और सवा सेर चीनी लें। निर्माण—अजवायन को शीशे, पत्थर या काठ के पात्र मे रख नीबू का रस डाल दे। रस के सूख जाने पर अजवाइन के दानों को धूप में सुखा कूट और कपडछान कर ले। फिर पाँच छटाँक जल डालकर चीनी की चाशनी बनावे। एक तार की चाशनी तैयार होने पर अजवाइन के चूर्ण को मिला दे। गाढी होने पर थाली मे बर्फी जमा दें। सूख जाने पर काटकर रख ले।

गुण—इसके नियमपूर्वक कुछ दिनों तक सेवन कर लेने से खूब भूख लगती है, अन्न का शीघ्र पाचन होता है तथा पेट या पूरे शरीर मे फैली हुई बादी की हालत सुधर जाती है।

मात्रा—आठ आने से एक तोला तक। अनुपान—शीतल किया हुआ गरम जल। समय—सुबह और शाम या शाम को न लेकर रात्रि मे सोते वक्त लेनी चाहिए।

अतिसार-रोधक चूर्ण

योग—तज, अनार के फूल, सोपारी के फूल-ये तीनों पाँच-पाँच तोले लें। निर्माण—इन्हे थोड़ी देर धूप मे सुखालेने के बाद कूट और कपडछान कर लें।

गुण—इसके सेवन से अतिसार का स्तम्भन होता है। मात्रा और अनुपान—तीन माशे। शीतल जल। समय—साधारण अवस्था मे सुबह और शाम तथा विशेप अवस्था मे चार-चार घटे पर दिन-रात मे चार-पाँच मात्रा तक।

पथ्य — ज्यादा पतली टट्टी की हालत में अन्न का खाना रोक देना और कच्चे केले के भरते को, मठा के साथ तथा उसमें कालानमक, कालीमिर्च और भुने जीरे एवं भुनी हींग—इनके मिले चूर्ण की दो चुटकी डालकर लेना चाहिए। पानी उबाला लेना चाहिए।

जीरा का प्रयोग

योग—सफेद जीरा पाँच तोले। निर्माण—इसे थोड़ी देर धूप में सुखाकर इमामदस्ते में कूटें और कपड़छनकर बोतल में रख काग वद कर दे।

गुण—इसके सेवन से स्त्रियों के ऋतु का अवरोध, प्रसूत अवस्था मे रहने वाला हल्का बुखार, पतली टट्टी मदाग्नि, वन्ध्यापन, बच्चे का न होना तथा दुर्बलता मिटती है।

मात्रा व अनुपान—नौ माशे। बकरी का एक पाव दूध। उपयोग—प्रातःकाल और सायकाल इस चूर्ण की एक एक मात्रा लेनी चाहिए।

विशेष—द्रव्य गुण की दृष्टि से जीरा रूक्ष, कटु, गर्म, पेट की अग्नि को तीव्र करने वाला, हल्का, मल को बाँधने वाला, पित्तकारक, दिमाग के लिए लाभदायक, गर्भाशय को शुद्ध करने वाला, ज्वरनाशक, पाचक, वीर्यवर्द्धक, बलदायक, रुचिकारक, कफनाशक, आँखों के लिए हितकर, पेट की वायु, तनाव, गुल्म, वमन और अतिसार-नाशक है।

पार्श्वशूलहर लेप

योग—सोहागा, मीठा तेलिया विष, तूतिया, जमालगोटे की गिरी, ये चारों चीजे तीन तीन माशे और थूहर का दूध अठारह माशे लें। निर्माण—चारो सूखी चीजो को महीन पीसकर थूहर के दूध मे मिला ले और लेप बना ले।

गुण—इसके व्यवहार से बच्चे का कब्ज दूर होता और पसली चलने का रोग मिटता है।

उपयोग—बच्चे की नाभि के चतुर्दिक इसका मोटा लेप चढाना चाहिए। सावधानी—मीठा तेलिया और जमालगोटा—ये दोनों तेज और जहरीले द्रव्य हैं। इसके अतिरिक्त थूहर और तूतिया भी वमनकारक, तबियत को बिगाड़ने वाले द्रव्यों मे है, इसलिए जिस सिल पर इन्हे पीसा जाय और जिस पात्र मे उठाया जाय उनकी सफाई आवश्यक है। इसके अतिरिक्त लेप तैयार करने

और लगाने वाला व्यक्ति भी अपने हाथों की सफाई अवश्य कर ले। गोबर और मिट्टी से दो-तीन बार धोने से पात्रों और हाथों की अच्छी सफाई हो जायगी। इसके अलावा अपने शरीर पर लगे लेप को लेकर बच्चा भी अपने मुख में न रख ले—इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। दो घंटे के बाद जब लेप सूखने लगे तब उसे नाभि के निकट से हटाकर जमीन में गाड़ दें तथा नाभि के स्थान को गीले कपड़े से अच्छी तरह पोंछ दें। पुनः घंटे-दो घंटे बाद उक्त क्रम से लेप लगावें और सावधानी रखें।

उदर-क्रिमिनिवारक चूर्ण

योग—वायविडंग, सेंधानमक, कबीला, काबुली हर्रे का बक्कल—ये चारों चीजें एक-एक तोले लें। निर्माण—इन्हें कूट और कपड़छानकर रख लें।

गुण—इसके सेवन से उदर की क्रिमि नष्ट होती है।

मात्रा और समय—तीन माशे। सुबह और सोने वक्त रात्रि में एक-एक मात्रा। अनुपान—गाय का दही पांच तोले।

क्रिमिहर वटी

योग निशोथ, शुद्ध हींग, सूखा पोदीना, वायविडंग, सेंधानमक, काबुली हर्रे का बक्कल और कबीला—ये सातों चीजें एक-एक तोले लें। निर्माण—सभी चीजों को कूट और कपड़छानकर पत्थर के खरल में रखें और थोड़े जल के साथ खरलकर चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना लें। इन्हें धूप में सुखाकर रख लें।

गुण इसके व्यवहार से उदर की क्रिमि नष्ट होती है। मात्रा व अनुपान—आधे माशे से एक माशे तक, जल। समय—सुबह और सोते वक्त रात्रि में एक-एक मात्रा।

पान का अर्क

योग—जगन्नाथी पान दो सौ नग, तेजपात दस तोले, बालछड़, अजवाइन और सौंफ ये तीनों चीजें दो-दो तोले, इलायची के दाने दस तोले, सूखा पोदीना, कुलिंजन और नरकचूर—ये दो-दो तोले तथा जल पांच सेर लें। निर्माण—पान को छोड़कर सभी सूखी चीजों को दरदरा कूटकर

रात्रि में जल के साथ भिगो दें। प्रातःकाल उसी में पान के पत्तों को भी डाल दे तथा अर्क खींचने के यन्त्र में जल सहित सभी चीजों को पलटकर अढाई सेर अर्क खींच लें, फिर यन्त्र में पड़ी चीजें निकालकर अलग कर दें। अर्क को वन्द वोतलों में सुरक्षित कर ले।

गुण व मात्रा—इसके सेवन से उदर की पीडा मिटती तथा जठराग्नि प्रदीप्त होती है। एक से दो तोले तक।

समय—सुबह और शाम को तथा जब दर्द हो उस वक्त एक-एक मात्रा एक-एक घटे के अन्तर से सेवन करावें। इसे दिन-रात मे पाच-छः मात्रा तक दे सकते हैं।

उदर-शूल-नाशक पोटली

योग—काला तिल, अजवाइन, बड़ी हर्रे का वक्कल और खारी नमक—ये चारों चीजें दो दो तोले लें तथा छः तोले गन्ने का पुराना सिरका ले। निर्माण—सभी सूखी चीजों को कूटकर सिरका मे मिला ले। इसे बड़े मुख के शीशे के बरतन मे रख लें।

गुण—इसके व्यवहार से उदर-शूल मिटता है।

उपयोग—दर्द के वक्त इस औषधि को एक साथ कपड़े के ऊपर रख पोटली बना ले और मन्द आँच पर तवा रख पोटली को गर्म होने दे। पेट के ऊपर दर्द वाली जगह पर साफ पतला कपड़ा रख धीरे-धीरे पोटली से सेक करें। अच्छा तो यह होगा कि औषधि की दो पोटली बन वे। एक तवे पर रक्खी और गर्म हुई पोटली से सेक करे। यही क्रम आधे घटे तक चलने दे। समय—दर्द के वक्त इसका उपयोग करना चाहिए।

नागरादि गुटिका

योग—सोंठ, माई, पठानीलोध, सफेद राल, धव के फूल, मीठे इन्द्रजौ, बेल की गिरी, मोचरस, आम की गुठली की गिरी, कालीमिर्च और गुठली निकाले छोहारे—ये बारहों चीजें पाच-पाच तोले ले। निर्माण—छोहारे को पृथक् कर सभी चीजों को घंटे-दो घटे धूप मे सुखा ले और इमामदस्ते में कूटे। महीन होने पर कपडे से छान लें। गुठली निकाले छोहारों को धोकर सिल पर

महीन पीस लें। फिर चूर्ण और पिसे छोहारा को खरल में रख जल के छींटे दे-देकर खरल करें। एक घंटा खरल कर लेने के बाद चार रत्ती की गोलियाँ बना धूप में सुखा लें।

विशेष—सूखी चीजों को धूप में सुखाने और कूटने के समय ही एक मिट्टी के बरतन में सोंठ, बेल की गिरी और छोहारे को जरा आग पर सेक लें। सिक जाने के बाद सूखी चीजों के साथ मिलाकर चूर्ण करें और छोहारे को जल के साथ सिल पर पीसे।

गुण—अतिसार, आमातिसार, पेट की मरोड़, पेट की जलन तथा पित्त के अतिसार के वक्त लगने वाली प्यास को यह गुटिका रोकती है।

मात्रा—इसकी पूर्ण मात्रा एक माशे है। साधारण अवस्था मे आधे माशे की मात्रा एक बार मे देनी चाहिए। रोग की बढी अवस्था मे एक माशे की पूर्ण मात्रा एक बार मे अवश्य देनी चाहिए। समय—साधारण तकलीफ में सुबह-शाम और ज्यादा दस्त लगते हों तो तीन-तीन घटे पर इसकी पूरी मात्रा देनी चाहिए। अनुपान—शीतल-जल, चावल का धोवन, अर्क सौंफ या गाय के दही का मठा इत्यादि रोग और रोगी की स्थिति के अनुसार दे।

गैरिकादि गुटिका

योग—सोनागेरू, लालकत्था, कतीरा गोंद, राल, कौंच की छिली हुई गिरी और बेल की गिरी—इन छहो चीजों को पाँच-पाँच तोले ले। निर्माण—गेरू, बेल की गिरी तथा छिली हुई कौंच की गिरियों को मिट्टी के बरतन मे रख मद आँच पर थोड़ा भून ले। सभी चीजो को एक मे मिलाकर कूट और कपड़छान कर ले। इसे खरल मे रख जल के छींटे दे-देकर घोटे। एक घटे तक घुट जाने के बाद चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना सुखा लें।

गुण—जिस अतिसार मे आँते छिल गई हों और दस्त के साथ बिना आँव के खून आता हो उस दशा मे इस गुटिका से विशेष लाभ होता है।

मात्रा—इसकी पूर्ण मात्रा आठ रत्ती तक है, पर रोग की साधारण अवस्था मे चार-चार रत्ती की मात्रा देनी चाहिए। रोग की तीव्रता मे आठ-आठ रत्ती की पूर्ण मात्रा देते रहे। समय—साधारण अवस्था मे सुबह-शाम और विशेष अवस्था मे तीन-तीन या चार-चार घटे के अतर से दे।

अनुपान—चावल के धोवन का जल, गाय के दही का मट्ठा, शरबत बेल, सौंफ का अर्क या कच्चे गूलर को पीसकर चीनी के साथ बनाया शरबत के साथ।

रोचक वटी

योग—कालानमक और खट्टा चूका—ये दोनों चीजें चार-चार तोले, अजवाइन, लौंग और कालीमिर्च—ये तीनों चीजें चार-चार माशे लें। निर्माण—सूखी चीजों को एक साथ कूट और कपड़छान कर लें। नमक को पीसकर ऊपर से चूर्ण मे डालें और खरल में रख सबसे पीछे चूका मिलाकर खरल करें। नमक और चूका के मिश्रण से चूर्ण गीला हो जायगा। एक घंटा खरल कर चुकने के बाद चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना और सुखाकर बडे मुँह के शीशे के पात्र मे ढककर रखें। गोली बनाते वक्त आवश्यकता होने पर जल के छींटे देकर भी पीठी को ढीला किया जा सकता है।

गुण व मात्रा—यह वटी मुख के स्वाद को ठीक करती, अन्न को जल्दी पचाती तथा पेट के दर्द मे शीघ्र लाभ पहुँचाती है। अजीर्ण की दशा मे भी यह लाभ पहुँचाती है। यह रोचक बटी विशेष स्वादयुक्त है। चार से आठ रत्ती तक।

समय—साधारण अवस्था मे दिन मे भोजन के पश्चात् और इसी भाँति रात में भी खाना खाने के बाद एक-दो घूँट जल के साथ इसे लेना चाहिए। विशेष कष्ट के समय तीन तीन घंटे पर एक-एक मात्रा लेनी चाहिए। अनुपान—जल, अर्क अजवाइन, लौंग का काढा या मठा इत्यादि।

क्षुधा वटी

योग—बड़ी हर्रे का वक्कल, सौंफ, पोदीना, सेंधानमक और खट्टा चूका—ये पाँचों चीजें चार-चार तोले, कालीमिर्च, पीपल, चित्रक की जड़ की छाल और अजवाइन ये चारों चीजे सात-सात माशे तथा चार नग जम्बीरी नीबू लें। निर्माण—नमक और चूके को अलगकर सूखी चीजों को कूटकर कपड़े से छान लें फिर उसमें पिसा नमक और चूका मिला पत्थर के खरल मे रखें और ऊपर से कपड़े से छना नीबू का कुल रस डाल घोटें। एक घंटे तक घुट

जाने के बाद चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना धूप में सुखा ले। इसे बाद शीशे के पात्र में रखे।

गुण—यह अत्यन्त क्षुधावर्द्धक, पेट की अग्नि को तेज करने वाली, पेट में इकट्ठो वायु की नाशक और अत्यन्त पाचन गुण से युक्त है। इसमें पड़ने वाली सभी चीजें पाचन गुण वाली हैं अतएव यह मल बाँधने वाली है, पर हर्रे के योग के कारण यह वटी कब्ज नहीं करती है।

मात्रा—चार से आठ रत्ती तक। समय—साधारण अवस्था में दिन और रात्रि के भोजन के थोड़ी देर के बाद और रोग की विशेष अवस्था में तीन-तीन घंटे पर एक दिन में चार-पाँच मात्रा तक इसका सेवन किया जा सकता है। अनुपान—अर्क सौंफ, अर्क पोदीना, अर्क अजवाइन, गरम या शीतल जल तथा मठा इत्यादि।

टंकण वटी

योग—सोहागा का लावा चौदह माशे, अजवाइन छः तोले, कालीमिर्च सात तोले, एलुआ नौ तोले चार माशे तथा घृतकुमारी का रस चालीस तोले लें। निर्माण—पत्थर के खरल में एलुए को पीसे फिर अजवायन और कालीमिर्च तथा सोहागे के लावे का पिसा छना चूर्ण डाल ऊपर से घृतकुमारी के गूदे को डाल खरल करे दो रोज खरल कर लेने के बाद दो-दो रत्ती की गोलियाँ तैयार कर लें। उन्हे धूप में सुखाकर ढक्कनदार शीशे के पात्र में रखें।

गुण—इससे पेट का दर्द, मंदाग्नि, पेट की वायु; अजीर्ण तथा उदर का बेकायदे बढ़ता जाना ठीक होता है।

मात्रा—दो से आठ रत्ती तक। समय—साधारण अवस्था मे सुबह-शाम और विशेष अवस्था मे चार-चार घंटे पर एक दिन मे चार मात्रा तक इसका सेवन किया जा सकता है। अनुपान—गरम जल, कुमारी आसव, अर्क अजवाइन तथा घृतकुमारी के ताजे गूदे मे मिलाकर सेवनयोग्य है। विशेष—यदि पेट में वायु हो तो चार गोली की मात्रा तथा अजीर्ण मे दो गोली दे।

अर्शघातिनी गुटिका

योग—निमौलियों की गिरियाँ, बकायन के बीजों की गिरियाँ, शुद्ध गुग्गुल, एलुआ, कालीमिर्च और सोनागेरू—ये सातों चीजें पाँच-पाँच तोले

और मकोय के ताजे पत्तों का कपड़े से छना रस एक सेर लें। निर्माण—आधा पाव खौलते जल में रसवत को घोलकर कपड़े से छान ले। गुग्गुल के टुकड़ों को भी आधा पाव जल में खौलावे और सूखी सभी चीजों को कूट और कपड़छान कर लें, फिर सभी चीजों को खरल में डाल ऊपर से कपड़े से छने ताजे मकोय के पत्तों का रस डालकर खरल करे। एक या दो रोज तक खरल कर लेने पर जब गोली बनाने लायक पीठी हो जाय तब चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना और धूप में सुखाकर रख ले।

गुण—इसके सेवन से खूनी और वादी दोनों प्रकार की बवासीर मिटती है। कुछ काल तक इसे सेवन कर लेने से मस्से सूख जाते तथा उस स्थान की पीड़ा मिट जाती है।

मात्रा—चार से आठ रत्ती तक। समय—सुबह, शाम और सोते वक्त रात्रि में। अनुपान—अर्क मकोय, गाय के दही का मट्ठा, चित्रक की जड़ का अर्क तथा शीतल जल इत्यादि।

मुचकुन्द के फूलों का हलुआ

योग—मुचकुन्द के सूखे फूलों का कपड़छान चूर्ण, गाय का घी और मिसरी—ये तीनों चीजें अढ़ाई-अढ़ाई तोले ले। निर्माण—जब घी कड़ाही मे गर्म हो जाय तब उसमें चूर्ण को थोड़ा सेंक लें फिर मिसरी और जल डालकर हलुआ बना लें। अन्दाजन एक पाव जल डाले। ये चार मात्राएँ हैं।

गुण—इसके सेवन से रक्तार्श (खूनी बवासीर) का रक्त निकलना बन्द हो जाता है। इसके अतिरिक्त उक्त रोग के कारण उत्पन्न अन्य कष्ट भी मिटते हैं। मात्रा—सवा तोले। समय—सुबह, दोपहर, शाम और सोते वक्त रात्रि में। अनुपान—बकरी का दूध, गाय के दही का मट्ठा, अर्क चित्रक, अर्क त्रिफला या गुनगुना जल।

लवणपंचकादि चूर्ण

योग—सेंधानमक, साँभरनमक, समुद्रनमक, विडनमक और सोंचरनमक—ये पाँचों नमक पाँच पाँच तोले, मदार के पुष्पों का भीतरी हिस्सा सवा तोले, भुनी हींग दस आने भर और इतना ही तोल मे नींबू का सत्व, कालीमिर्च,

सोंठ, पीपल और नौसादर—ये चारों चीजे पाँच-पाँच तोले लें । निर्माण—सभी नमकों और नौसादर को एक साथ पीस कूटकर तार वाली मोटी चलनी से छान ले, हींग को घी मे भून और खरल कर अलग रख लें, फिर मदार की कली तथा सोंठ इत्यादि सूखी चीजों को जरा धूप में सुखाकर कूटें। महीन होने पर कपड़े से छान ले। सभी चीजों को (मय नमकों के) पत्थर के खरल मे रखे और ऊपर से पीसे हुए नीबू के सत्व का मिश्रण कर एक घटे तक खरल कर बडे मुँह के ढक्कन या शीशे के पात्र मे रखें।

गुण—आम शूल, मंदाग्नि, अजीर्ण, अरुचि, पेट का भारीपन, डकार का आना पेट में वायु का इकट्ठा हो जाना तथा पेशाब में चीनी आना इत्यादि उदर और धातु सबन्धी विकृतियों को यह चूर्ण निर्मूल करता है।

मात्रा--दो रत्ती से आठ रत्ती तक। समय--साधारण अवस्था मे भोजन के बाद दिन और रात्रि मे तथा विशेष काल में उपर्युक्त रोगों मे से किसी के उपस्थित होने पर तीन-तीन या चार-चार घटे पर एक दिन में चार-पाँच मात्रा तक इसका सेवन किया जा सकता है। अनुपान--शीतल जल, गरम जल, मट्ठा, अर्क अजवायन, अर्क सौफ या नीबू के शरबत के साथ रोगानुसार।

रक्तरोधक चटनी

योग--सफेद पोस्ते के दाने दस तोले, ईसबगोल के दाने तीन तोले, जल सोलह छटाँक, मिसरी चालीस तोले, सफेद पोस्ते के दाने और बबूल का गोंद प्रत्येक दो-दो तोले लें। निर्माण--पोस्ते के दाने और ईसबगोल को कुचलकर रात्रि मे जल के साथ भिगो दें। प्रातःकाल काढ़ा बना ले। जब एक पाव जल शेष रहे तब काढे को छानकर सीठी अलग कर उसमे मिसरी घोलकर एक बार पुनः कपडे से छान ले और पोस्ते के दाने तथा बबूल के गोंद के कुटे एवं कपड़े से छने चूर्ण को भी तैयार रखे। फिर काढे मे घुली मिसरी की चाशनी बनावें। शरबत की चाशनी होने पर उसमे उक्त चूर्ण को मिला दें। गाढा होने पर चूल्हे से उसे उतार ले।

गुण--इसके सेवन से सूखी खाँसी, खाँसी के कारण उत्पन्न कलेजे की कमजोरी और दर्द, बलगम में खून का आना तथा दम फूलना इत्यादि पुराने के रोग मे लाभ होता है।

मात्रा और समय--एक तोले। सुबह-शाम। अनुपान- बकरी का दूध, मुलेठी का या मुनक्के का काढा तथा कच्चे गूलर को पीसकर निकाला गया ताजा रस।

नेत्ररोग-निवारक योग

योग—गोरखमुंडी पन्द्रह तोले, त्रिफला छः तोले, धनिया, पित्तपापड़ा और मुलेठी--ये तीनों चीजें दो-दो तोले, बाल हर्रें (हरड़ जग), काबुली हर्रें और आँवला--इन तीनों के ऊपर के गूदे दो-दो तोले लें। मिसरी छत्तीस तोले तथा गाय का घी एक तोला ग्रहण करें। निर्माण—नौ तोले जल मे मिसरी की एक तार की चाशनी तैयार कर रख लें, बाल हर्रें और काबुली हर्रें—इन दोनों को घी में तल लें जले न इसकी सावधानी रखें। फिर इन दोनों को खरल में काफी महीन पीस लें। इसके पश्चात् शेष मुंडी, धनिया, पित्तापापड़ा और मुलेठी को एक साथ कूट और कपड़छान कर ले। अब सभी चीजों को चाशनी में मिलाकर थोड़ी देर आग पर पाक कर ले। चाटने लायक हो जाय तब इसे चूल्हे से उतार ले।

गुण—नेत्रों के रोगों में यह विशेष लाभदायक है। कब्ज, बढा हुआ पित्त दिल और दिमाग की गर्मी, कलेजे की धड़कन, साधारण खून की खराबी, पेट मे इकट्ठी होने वाली वायु, दिमाग मे चक्कर आना तथा कंठ सूखना इत्यादि वात और पित्त से सम्बन्धित रोगों में यह अवलेह परम हितकर है।

मात्रा—अठन्नी भर से एक तोले तक। समय—सुबह, शाम और सोते वक्त रात्रि में। अनुपान—नेत्र रोगों मे यदि आँखों में लाली, कीचड़ तथा उसके आने के लक्षण प्रकट हों (नेत्राभिष्यन्द) उस समय तीन दिनों तक इसका प्रयोग न करना या आँखों में किसी प्रकार की औषधियाँ भी न आँजना। चौथे दिन से अर्क मुंडी या मुलेठी के काढे के साथ इसका सेवन करना चाहिए। इसके अलावा बकरी का दूध, अर्क त्रिफला या शीतल जल से भी इसका उपयोग किया जाता है। नेत्राभिष्यन्द के अलावा अन्य प्रकार के नेत्र रोगों में भी इसका लगातार सेवन करना हितकर है। कब्ज, धड़कन, पित्त के विकार तथा दिमाग की गर्मी मे गाय के धारोष्ण या कच्चे दूध से, दिमाग में चक्कर आने तथा पेट में जलन होने पर शरबत बादाम से, पेट

मे वायु के इकट्ठा होने पर गरम जल से तथा कठ सूखने पर शरवत अनार से इसका सेवन करना चाहिए।

रक्तशोधक कषाय

योग—चोपचीनी, उन्नाव, आँवला, हर्रे, वहेड़ा, सफेद चन्दन, लाल चन्दन और ब्रह्मदडी—ये आठों चीजे चार-चार माशे और जल चालीस तोले ले। **निर्माण**—सभी चीजों को कुचलकर रात्रि के वक्त जल में भिगो दें और प्रातःकाल मिट्टी के पात्र में काढा पकावें। आधा पाव शेप रहे तव उतारकर छान लें। शीतल होने पर रोगी को दे। यह एक मात्रा है।

गुण—इसके सेवन से खुजली, दाद; फोडे फुसियाँ, उकवथ तथा अन्य कई प्रकार के रक्त विकार और चर्म से सम्वन्धित रोग मिटते, कब्ज दूर होता तथा खून शुद्ध हो जाता है। पापोपदश (आतशक) मे भी यह विशेप लाभ पहुँचाता है। बढे हुए पित्त को यह शीघ्र ही शान्त करता, शरीर का सूखता जाना तथा चलने-फिरने में दिमाग का चक्कर खाना इत्यादि विकारों को यह मिटा देता है।

मात्रा—तैयार काढा पाँच तोले से दस तोले तक। **समय और अनुपान**—प्रातःकाल और आवश्यकता होने पर सायंकाल भी। एक तोला शुद्ध शहद काढे में डालकर पीना चाहिए।

पूयमेह रिपु

योग—प्रवाल पिष्टि (केवडे के जल से घुटा), हजरलयहूद पिष्टि, सोनागेरू, सगजराहत, सेलखड़ी, आग पर फुलाई फिटकरी, शोरा, विरौजे का सत्त, पपड़िया कत्था, सफेद चन्दन का चूरा, अच्छे दर्जे की रेवन्दचीनी—ये ग्यारहों चीजे एक-एक तोले और मिसरी ग्यारह तोले ले। **निर्माण**—सभी सामानों को कूट और कपड़छानकर कुटी छनी मिसरी के चूर्ण का मिश्रणकर आधे घटे तक पत्थर के खरल मे घोटकर ढक्कनदार शीशे के पात्र में रख लें।

गुण—इसके सेवन से पूयमेह (सूजाक) की बीमारी में आने वाला मूत्र के रास्ते का मवाद, कड़क तथा जख्म इत्यादि ठीक हो जाते हैं। इसे मूत्रकृच्छ्र की बीमारी मे भी सफलतापूर्वक व्यवहार किया जा सकता है।

मात्रा—एक से दो माशे तक। शुरू मे एक ही माशा जो हलकी मात्रा है, लेनी चाहिये फिर दो-दो माशे की पूरी मात्रा लेते रहने से शीघ्र लाभ होता है। समय—सुबह-दोपहर और सायंकाल एक-एक मात्रा। अनुपान—गाय का कच्चा दूध या दूध चीनी और जल के योग से बनी लस्सी।

शिलाजतु वटी

योग—शुद्ध शिलाजीत, वगभस्म, छोटी इलायची के दानों का चूर्ण, वंशलोचन का चूर्ण—ये चारों चीजें पाँच-पाँच तोले लें। निर्माण—चारों चीजों को घण्टे-दो घण्टे पत्थर के खरल में घोटकर उसमे शहद डाले और थोड़ी देर और घोटकर दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना और सुखाकर रख ले।

गुण—इसके सेवन से प्रमेह, दुर्बलता, बहुमूत्र, धातुविकार तथा पुराना पूयमेह शान्त हो जाता है यदि इसे लगातार कुछ काल तक सेवन कर लिया जाय तो शरीर पुष्ट होने लगता है।

मात्रा—एक से दो रत्ती तक। समय—सुबह, शाम और सोते वक्त रात्रि मे। अनुपान—गाय का ताजा दूध। दूध के अभाव में शहद से भी इसका सेवन किया जा सकता है, पर शिलाजीत की उष्णता की शान्ति दूध से ही होती है। चौबीस घटे के भीतर फिर किसी समय दूध ले लेना चाहिए।

रजः शोधक चूर्ण

योग—असगन्ध और शतावर पाँच-पाँच तोले, बबूल का गोंद तीन तोले और छोटी इलायची के दाने एक तोले लें। निर्माण—चारों चीजों को कूट और कपडे से छानकर बडे मुँह के ढक्कनदार शीशे या चीनी मिट्टी के पात्र मे रख लें। सूखी जगह में इसे रखे।

गुण—इसके सेवन से स्त्री के विकृत रज की शुद्धि अवश्य हो जाती है।

मात्रा—एक तोला। यह पूर्ण मात्रा है, कमजोर स्त्री को इसकी आधी मात्रा शुरू में देनी चाहिए। दो-चार रोज के बाद पूरी मात्रा देनी चाहिए। समय—प्रातःकाल और सोते वक्त रात्रि मे। कम से कम चालीस दिनों तक सेवन करना चाहिए। अनुपान—गाय का ताजा दूध आधा पाव।

वीर्यशोधक चूर्ण

योग—सेमलकंद, बीजबन्द, तालमखाना, मखाना, श्वेत मूसली, कामराज और गर्गेरन—ये सातों चीजे पाँच-पाँच तोले लें। निर्माण—इन्हें घंटे-दो घंटे धूप मे सुखा लेने के बाद इमामदस्ते में कूटें और कपड़े से छान महीन चूर्ण बना ले।

गुण—इसके सेवन से दूषित वीर्य की शुद्धि होती तथा वह संतान को उत्पन्न करने मे समर्थ होता है। पुरुषों के रोग के निमित्त यह उत्तम है।

मात्रा—छ माशे से एक तोले तक। समय—सुबह-शाम और सोते वक्त रात्रि मे। कम से कम चालीस दिनों तक इसका सेवन करना चाहिए। अनुपान—गाय का ताजा दूध आधा पाव। आवश्यकता होने पर दूध में थोड़ी मिसरी मिलाई जा सकती है।

मुक्ताशुक्ति-कपर्दिका योग

योग—मोती की सीप, पीली कौड़ी और शख—ये तीनों पाँच-पाँच तोले ले। निर्माण—इन्हे खौलते गर्म जल मे आधे घंटे तक उबालकर रख ले और तेज आग में पकावें। जब ये काफी गर्म हो जायँ तब चिमटे से निकालकर पत्थर पर रखें और शीघ्र ही इन गर्म सीप, कौड़ियों और शख के टुकड़ों पर नीबू (जम्बीरी) का रस डाल दें। रस डालते ही ये फूल की तरह खिल जायँगे। इन्हे उठाकर खरल मे रख और घोटकर मोटे कपडे से छान ले।

गुण—इसके सेवन से बढी हुई तिल्ली ठीक हो जाती है। इसके अतिरिक्त उदरशूल, आँव, मदाग्नि, हृदय के रोग, जीर्ण ज्वर, शीत ज्वर के कारण वायु का बढ़ना तथा कान के घाव इत्यादि अनेक प्रकार के विकारो को यह दूर करता है।

मात्रा—दो से चार रत्ती तक। समय—चार-चार घंटे पर दिन भर में चार मात्रा तक। अनुपान—गो दुग्ध या अन्य रोगों पर रोगानुसार अनुपानों से प्रयोग करना चाहिए। उदरशूल मे तीन माशे लवणभास्कर चूर्ण में मिलाकर गर्म जल से या अजवाइन के अर्क से, आँव मे बेल के मुरब्बे से, मंदाग्नि में मट्ठे से, हृदय रोग मे चदन की तरह घिसे तीन से छः माशे तक अर्जुन

की छाल और दूध चीनी से, जीर्ण ज्वर में पीपल डालकर उबाले हुए बकरी के दूध से शीत ज्वर या मलेरिया के ज्वर की ताप बढ़ने पर गुनगुने जल से और कान मे घाव या पीप आने पर घोंघे के जल या दूध से इसका सेवन करना चाहिए।

स्वित्रहर योग

योग—अजीर तीन दाने, बावची, आँवला तथा लाल कत्था—ये तीनों चीजें छः-छः माशे, जल चालीस तोले तथा शहद एक तोले ले। निर्माण—सभी को कुचलकर रात्रि में भिगो दे। सुबह काढा बना ले। आधा पाव शेष रहने पर छानकर शीतल होने दे फिर मधु मिला ले। यह एक मात्रा है।

गुण—इसके सेवन से स्वित्र (सफेद दाग) मिट जाते हैं।

मात्रा—तैयार काढा दस तोले। अनुपान—मधु एक तोले। समय—प्रातः और सायकाल तक एक मात्रा।

पित्तप्रशामक कषाय

योग—गिलोय, पित्तापापड़ा, मुलेठी, काकड़ासींगी, खस, लालचदन, नीम की ताजी पत्तियाँ, धनियाँ और खरबूजे के छिले बीज—इन्हे मिलित दो तोले तथा जल आधा सेर ले। निर्माण—सभी चीजों को कुचलकर मिट्टी के पात्र में जल के साथ भिगो दे। रात भर भींगने के बाद इसे प्रातःकाल आग पर पकावे। आँच मद रहे। जब आधा पाव शेष रहे तब काढे को छानकर उसकी सीठी को अलग कर दे। यह एक मात्रा है।

व्यवहार—प्रातःकाल इसे रोगी को पिलाना चाहिए। शीतल होने पर इसे पीने के बाद केवल जल से कुल्ला कर ले ; पर जल न पीवे आवश्यकतानुसार सायकाल भी इसी प्रकार काढ़ा बनाकर व्यवहार करना चाहिए।

गुण—इसके सेवन से पित्त प्रधान पुराना ज्वर शीघ्र छोड़ देता है। पुराने बुखार के कारण शरीर का सूखना, उसका पीला पड़ जाना, कठ सूखना, अधिक प्यास और रोशनी मे जाने की इच्छा का न होना इत्यादि तथा रात मे नींद का कम आना, शिरःशूल एवं जीभ की लालिमा को यह कषाय ठीक करने में पूर्ण समर्थ है।

करंजादि वटी

योग—करजुए की मींगी, छोटी पीपल, सफेद जीरा और बबूल की ताजी पत्तियाँ—इन्हे पाँच-पाँच तोले लें। निर्माण—करजुए का गूदा, पीपल और जीरा—इन तीनों चीजों को इमामदस्ते में कूट छानकर अलग रख फिर बबूल की ताजी पत्तियों को सिल पर पीसें। जब उसकी लुगदी बन जाय तब उसमे उक्त छने चूर्ण को मिलाकर जल के छींटे डाल-डालकर आधे घंटे तक सिल पर पीसकर चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना और सुखाकर रखें।

गुण—इससे कफ और पित्त के कारण उत्पन्न द्वन्द्वज ज्वर, कफ ज्वर या पित्त ज्वर तथा शीतपूर्वक ज्वर मिटता है। सूखी खाँसी के ठसके को भी यह दूर कर बलगम को ढीला करने में उपयोगी है।

मात्रा—इसकी पूर्ण मात्रा चार रत्ती की है। कमजोर और बूढे को हल्की मात्रा (दो रत्ती) देनी चाहिए। दस से पाँच वर्ष की आयु के लिए भी इसकी दो रत्ती ही मात्रा है। पाँच से तीन वर्ष के बच्चे के लिए एक रत्ती की मात्रा को काम में लाना चाहिए। पूर्ण उम्र के तंदुरुस्त व्यक्ति के लिए पूर्ण मात्रा (चार रत्ती) देनी चाहिए। समय—सुबह, दोपहर और सायंकाल एक-एक मात्रा। अनुपान—गरम कर शीतल किया जल।

विशेष—ज्वर की दशा में ज्वर का पथ्य पालन आवश्यक है। तीन दिनों तक रोगी को दवा न दे। चौथे दिन से दवा और रोगी अत्यन्त दुर्बल तथा बच्चा या बच्चे वाली स्त्री हो तो हल्का पथ्य, साथ में देना चाहिए। साबूदाना, बारली, कूटू के लावे या धान के लावे की लेई, मुनक्के का उबाला जल या दूध को फाड़कर उसका छेना जल थोड़ी चीनी डालकर विचारपूर्वक अवस्थानुसार देने मे किसी प्रकार का हर्ज नहीं है। ज्वर समाप्त होने पर क्रमशः अन्न के पथ्य का सेवन कराना उचित है।

बब्बूलादि बटक

योग—बबूल का गोंद और खैरसार (कत्था)—ये दोनों चीजें आठ-आठ आने भर, उड़ाया हुआ कपूर और काश्मीरी केशर प्रत्येक एक-एक तोले छिली मुलेठी, सफेद पोस्ते के दाने और बिहीदाना—ये तीनों चीजें दो-दो तोले, खीरा, ककड़ी, तरबूज और काहू—इनकी गिरियाँ, कुलफे के बीज और

असल गुलाबजल मे घिसा मलयागिरि चंदन—ये छहों चीजें तीन-तीन तोले ले। **निर्माण**—एक पत्थर के खरल मे एक-एक कर सभी चीजों को महीन कर ले। मुलेठी का कपड़छान चूर्ण ही ले। फिर सभी को साथ मिला और गुलाबजल के छींटे दे-देकर खरल करें। घिसे हुए चदन सहित जब सभी चीजें एकदिल हो जाये तब चार-चार माशे की टिकिया बनाकर महीन कपड़े से ढके पात्र मे इन टिकियों को छाया में रखें। सूख जाने पर बडे मुँह के ढक्कनदार पात्र मे रख लें।

गुण—इसके सेवन से खाँसी, ज्वर, दुर्बलता, दम फूलना तथा अनेक प्रकार के भिन्न-भिन्न उपसर्गों से युक्त तपेदिक की प्रथम अवस्था के विकार शान्त होते हैं। यह हृदय के लिए हितकर और ताप तथा कफ निःसारक है।

प्रयोग—प्रात. और सायकाल एक-एक बटक चार माशे की खाकर ऊपर से बकरी का दूध पीना चाहिए। कमजोर रोगी को प्रथम एक सप्ताह तक इसकी आधी मात्रा (आधी टिकिया) दो माशे की देनी चाहिए। **मात्रा**—इसकी पूर्ण मात्रा चार माशे की है, पर कमजोर को दो माशे बारह से पाँच वर्ष के बच्चे को भी दो ही माशे दें। पाँच से दो वर्ष की उम्र के बच्चे को एक से आधे माशे की मात्रा दें। **अनुपान**—बकरी का दूध, शरबत नीलोफर, शरबत अनार, शरबत कसेरू या बिहीदाने के लोआब के सग इसे रोगी की अवस्था के अनुसार दिया जा सकता है।

विशेष—रोगी को खुली और सूखी जगह में रखें। जिस बरामदे मे नित्य धूप आती हो वहाँ पर रोगी की खाट रखनी चाहिए। लेकिन धूप और आग की गरमी से उसे बचाना आवश्यक है। नित्य सुबह, दोपहर, सायकाल और रात्रि मे उसकी खाट के निकट गूगल की धूनी देने से रोग जल्दी आराम होता है।

जल्दी हजम होने वाली चीजे रोगी के लिए विशेष लाभदायक हैं। साथ ही पित्त को शान्त करने वाली चीजे भी देनी चाहिए। पुराने लाल चावल, पुराने गेहूँ, मूँग, परवल, खेखसा, भिण्डी, कच्चा केला, छोटा बेगन, लौकी, पालक, बथुआ, नेनुआँ, मुनक्का, खजूर, अंजीर, छोहारा, सेव, आम (चूसने वाला मीठा), कसेरू, अगूर, सतरा, मोसम्बी, मीठा अनार, गाय, भैंस और

बकरी का घी, मक्खन, बकरी का दूध (अभाव में स्वस्थ गाय का दूध) तथा मांस भोजियों के लिए खसी का मास हितकर है।

बालकासनाशिनी वटी

योग—दालचीनी, वायविडग, नागकेशर, हल्दी ये चारों चीजें तीन-तीन तोले, शुद्ध हींग आठ रत्ती और कस्तूरी एक रत्ती ले। निर्माण—चारों सूखी काष्ठ औषधियों को कूटकर कपड़े से छान ले, फिर खरल में हींग और कस्तूरी को एक साथ खरलकर उसी में उक्त चूर्ण को मिलाकर जल के साथ घोटें। गोली योग्य पीठी होने पर मूंग के बराबर गोलियाँ बना ले। प्रायः चौथाई रत्ती की गोलियाँ बनानी चाहिए।

गुण—इसके सेवन से बच्चों की काली खाँसी (कुकुर खाँसी, पुरानी खाँसी) और बहुत इलाज करने पर भी जो खाँसी न जा रही हो उसे भी यह बटी एक सप्ताह में ठीक कर देती है।

मात्रा—एक रत्ती का आठवा हिस्सा से चौथाई रत्ती तक। अनुपान—माँ के दूध या अर्क गुलाब के साथ। समय—सुबह, शाम और सोते वक्त रात्रि में। व्यवहार—लिखित समय के अनुसार दवा उपर्युक्त अनुपानों से देने के बाद शुद्ध पीली सरसों के तेल में कपूर डालकर बच्चे की पीठ, कलेजे और गर्दन पर धीरे-धीरे मालिश करनी चाहिए। यहाँ नारायण तेल या चदनादि तेल की भी मालिश ऐसी अवस्था में विशेष लाभदायक है।

दंत मार्जनी

योग—अगर, रुमीमस्तगी, पतग की लकड़ी और पोटासपरमेगनेट (लाल दवा)—ये चारों चीजे एक-एक तोले, बड़ी इलायची और भीमसेनी कपूर ये दोनों चीजें दो-दो तोले, बडी हर्रे, बहेड़ा, आँवला और सेन्धानमक—ये चारों चीजें पाँच-पाँच तोले, सोंठ, कालीमिर्च, बड़ी पीपल, छोटी माई, बड़ी माई, जटामासी, तेजबल, लौंग, तगर, फुलाई फिटकरी, पुष्करमूल, माजूफल, बबूल की छाल, मौलसरी की छाल और नीम के फूल—ये प्रत्येक तीन-तीन तोले, फुलाया नीलाथोथा एक तोला, सोपारी बादाम के छिलके का कोयला दस-दस तोले ले। निर्माण—सभी काष्ठ औषधियों को एक साथ कूटकर महीन

तार वाली चलनी से छान लें, रूमीमस्तगी और लाल दवा तथा फिटकिरी इत्यादि को एक-एक कर पीसते जाये और चूर्ण मे मिलाते जायें। सबके अन्त में चलनी से छनी सेलखड़ी और दोनों पिसे छने कोयले को मिलावे। एक दिल हो जाने पर बद पात्र मे रखे।

गुण—इसके व्यवहार से मुख के भीतर के रोग जैसे—मुख से दुर्गन्ध आना, छाले पड़ना तथा स्वाद मे कमी मालूम पड़ना इत्यादि दाँतों के रोग—दाँतों का हिलना, पीब निकलना, उनमे दर्द मालूम होना, ठढा पानी का लगना, दाँतों में सिहरन, कीडे पड़ जाना तथा मास का गलना इत्यादि अनेक प्रकार के दाँतों और मसूड़ों से सम्बन्धित रोग निर्मूल हो जाते हैं।

व्यवहार—नित्य सुबह, शाम और सोते वक्त रात्रि मे इस मंजन को तीन माशे के अंदाज लेकर दाँतों में धीरे-धीरे मलना और गुनगुने जल से कुल्ले कर लेना चाहिए। यदि दाँतों मे विशेष कष्ट न हो तो केवल दाँतुन करते वक्त प्रात काल ही इसका उपयोग करना चाहिए।

उपदंश-विनाशिनी बटी

योग—कत्था, छोटी इलायची के दाने, खड़िया (चाक) और शुद्ध सफेद सखिया—ये चारों चीजे एक-एक तोले ले और असल गुलाबजल एक छटाँक लें। निर्माण—कत्था, इलायची और खड़िया इन तीनों को कूटकर कपडे से छानें और अलग रखें। सखिया को खरल कर उसी मे चूर्ण को मिला लें और गुलाबजल के साथ खरल करें। जब गोली बनने योग्य पीठी हो जाय तब बजरे के प्रमाण की गोलियाँ बना और सुखाकर रख ले।

गुण—इस बटी के सेवन से उपदश और उसके कारण अन्य प्रकार के कष्ट शीघ्र मिट जाते हैं। उपदश के कीटाणुओं को यह नष्ट करती और रक्त की शुद्धि कर रोग को निर्मूल कर डालती है।

मात्रा—रत्ती का आठवां हिस्सा या एक बाजरे के बराबर की एक बटी। अनुपान—शीतल जल। समय—केवल सुबह एक मात्रा। बारह दिनों तक नित्य एक-एक मात्रा खा लेने के पश्चात् इसका सेवन बंद कर देना चाहिए। सेवन काल में यदि निर्बलता मालूम पडे तब एक रोज बीच में छोड़कर इस वटी का सेवन करे।

विशेष—यदि रोग निर्मूल होने मे कुछ कसर रह जाय तब सात-आठ दिनों के पश्चात् पुनः इस बटी का सेवन शुरू करें। फिर बारह दिनों तक सेवन कर छोड़ दे। इस बटी के सेवन काल में बादी की चीजें जैसे—मटर, कोहड़ा, अरवी इत्यादि का सेवन, खटाई, मास और नमक—इनका त्याग देना आवश्यक है। यदि नमक के विना न रहा जाय तब हल्की मात्रा में सेंधानमक का सेवन करें। पथ्य में गेहूँ की रोटी, मूँग की दाल और गाय का घी नियम-पूर्वक ले। इस बटी के सेवन काल में यदि मिचली हो और वमन हो तब बीच-बीच में पान के बीडे मुख मे रखना और चबाना चाहिए। विशेष गर्मी का अनुभव होने पर सिर और कान के छिद्रों मे तिल के तेल का डालना अत्यन्त हितकर और सुख पहुँचाने वाला है। इस काल में जितनी गर्म चीजें हैं उनका सेवन रोक दे और धूप तथा आग के निकट भी न जाना ही अच्छा है।

संखिया विष की शुद्धि—सफेद संखिया के छोटे छोटे टुकडे कर (चने के बराबर) एक पोटला बना ले और उसे लोहे की कड़ाही में डंडे डालकर बीच मे लटका दे। कड़ाही में बकरी का दूध रखें। यदि कड़ाही छोटी हो और संखिया एक तोले हो तो दूध आधा सेर लें। पोटली दूध में डूबती रहे। मंद आँच दे। जब दूध गाढा हो जाय तब पोटली को निकालकर गर्म जल से धो डालें और संखिया को खरल कर पुनः बकरी के दूध की भावना से खरल करें। सूख जाने पर नीबू के रस से खरल करे। इस प्रकार संखिये की शुद्धि करने के पश्चात् ही काम मे लावें। कड़ाही के शेष दूध को गढ़ा खोदकर गाड़ दें। वर्तन और हाथ मे मिट्टी और गोवर लगाकर अच्छी तरह सफाई कर ले।

विषमुष्टी-घृतकुमारी योग

योग—पुष्ट दाने वाले कुचले दस तोले और घृतकुमारी का गूदा अस्सी तोले लें। निर्माण—एक मिट्टी के पात्र मे घृतकुमारी के गूदे को रख उसी के अंदर कुचले डाल दे, और पात्र को धूप मे रखें। पंद्रह दिनों के बाद कुचले को निकालकर गूदे तथा रस को पृथक कर दें और ताजा गूदा डालकर पुनः उसीके अन्दर कुचले को डालें। एक मास बाद कुचले को निकाल गूदे को पृथक कर दे और तेज चाकू से कुचले के छिलके उतार डालें। उसके दो हिस्से कर उसके भीतर की जीभी भी पृथक कर दे। चाकू से कुचले के महीन

टुकड़े कर घृतकुमारी के ताजे रस के साथ घोटकर आधी रत्ती की गोलियाँ बना लेनी चाहिए। गोलियों को धूप मे अच्छी तरह सुखाकर बन्द शीशी में रखनी चाहिए।

गुण—इसके सेवन से आमवात, वात शूल, हैजे की ऐंठन, लकवा के समय शरीर के किन्हीं अगों का खिचाव, बात, कफ, प्रमेह, पित्त और रक्त के विकार—इनका नाश होता है। यह मल को बाँधने की शक्ति रखने वाली है कुष्ठ, वातरक्त, खुजली, आम, बवासीर और व्रण (फोड़े-फुंसियाँ) का हरण करती है। यह एक ही औषध से प्रस्तुत बटी नवीन और पुरातन सभी प्रकार के रोगों पर अपना कल्याणकारी असर डालती है। यह पुराने आमवात को अवश्य ठीक करती है।

मात्रा और अनुपान—आधी रत्ती। गाय का गर्म किया दूध। समय—प्रातः, दोपहर और सायकाल।

विशेष—अन्य रोगों मे रोगानुसार अनुपानों के साथ इस बटी का व्यवहार करना अपेक्षित है। गर्म जल, अर्क अजवाइन, रास्ना पाचन, गिलोय के क्वाथ तथा अन्य उपयोगी अनुपानों से इसे देना चाहिए।

खाँसी की चटनी

योग—छिली मुलेठी और काला मुनक्का (बीज निकाला) चार-चार तोले, पोस्ते के दाने सहित डोंडे चौदह तोले, अलसी दो तोले, सफेद अजीर छः तोले, सौफ की जड़ और जूफा—ये दोनों एक-एक तोले, चीनी चालीस तोले, पेशावरी बादाम की मींगी, चिलगोजे की मींगी और निशास्ता (गोधूम सत्त्व) एक-एक तोले, काकड़ासिंगी दो तोले, मुलेठी और बबूल का गोंद एक-एक तोले, बड़ी पीपल आठ आने भर तथा बीजाबोल आठ रत्ती लें। निर्माण—छिली मुलेठी से जूफा तक की सातों दवाइयों को कुचलकर रात्रि में सवा सेर जल के साथ कलईदार बरतन मे भिगो दे। प्रातःकाल मद आँच पर काढ़ा कर ले और चौथाई शेष रहे तब छानकर सीठी अलग करें और काढे में चीनी मिलाकर चाशनी बनावे। एक तार की चाशनी तैयार होने पर उसमें बादाम की गिरी से लेकर बीजाबोल तक की आठों दवाइयों को महीन पीसकर मिला दे।

गुण—इसके सेवन से सूखी खाँसी, कलेजे की महीन नसों मे धक्का लगने के कारण उत्पन्न खाँसी, पित्त की खाँसी, जुकाम के बिगड़ जाने के कारण उत्पन्न खाँसी, मुँह से बलगम के साथ खून के छींटे मालूम पड़ना तथा खाँसी के कारण होने वाली सायकाल की हरारत और कब्ज का नाश होता है।

मात्रा—आठ आने भर से एक तोले तक। **समय**—सुबह-शाम। **व्यवहार**—चम्मच मे चटनी लेकर चाट जानी चाहिए।

पूयमेह पर पलाश

योग—पलाश की कोंपल, गोंद, छाल और फूल—पलाश वृक्ष के ये चारों अंगों को ले। और उतनी ही चीनी ले। **निर्माण**—इन्हे सुखाकर कूट और छान लें, चीनी मिला ले।

गुण—इसके सेवन से पूयमेह (सूजाक) में पेशाब की रुकावट तथा पीब का आना मिटता है। मूत्र नली के प्रदाह को भी यह चूर्ण शान्त कर देता है। यह परीक्षित योग है।

मात्रा और समय—नौ माशे। सुबह और शाम। **अनुपान**—गाय का कच्चा दूध।

ज्योतिषमती पाक

योग—मालकाँगनी एक सेर और भाँगरे का ताजा रस सवा सेर, गाय का का दूध अढ़ाई सेर तथा जल अढाई सेर ले एव शहद अढाई सेर रख ले। **निर्माण**—एक मिट्टी के पात्र मे मालकाँगनी को रख ऊपर से कपडे से छना भाँगरे का रस डाल दे। रात भर भींगने दें। प्रात काल उस पात्र मे से मालकाँगनी को निकाल रस को त्याग दें। फिर दूध और जल के साथ मालकाँगनी को आग पर खौला दे। जल और दूध के सूख जाने पर उसे उतार लें और सिल पर मालकाँगनी के दाने तथा उसमें लिपटे खोये को पीसकर महीन करें। पिस जाने पर उसमे शहद मिला ले और पात्र में ढककर रखे।

गुण—इससे नपुसकता, बुढापा, वात प्रकोप, अगों मे होने वाला दर्द वातव्याधि के कारण उत्पन्न अशक्तता, शीघ्रपतन दूर होता तथा चेहरे की रंगत निखर उठती है।

मात्रा—तीन माशे से छः माशे तक। समय—सुबह-शाम। प्रथम सप्ताह केवल प्रातःकाल में ही एक-एक मात्रा सेवन कराना चाहिए। फिर दूसरे सप्ताह से दोनों वक्त एक-एक मात्रा देना शुरू करें। इस प्रकार चालीस दिनों तक इसका सेवन करना चाहिए।

विशेष—यह पाक गर्म है, अतः पित्त-प्रकृति वाले को या ग्रीष्म ऋतु में इसका सेवन करना उचित नहीं है। जिनकी प्रकृति वात और कफ-प्रधान हो उनके लिए यह पाक अत्यन्त उपयोगी है। पित्त प्रकृति वाले भी शीत काल में कम मात्रा में इसका सेवन कर सकते हैं। इसके सेवन के पश्चात् यदि मुख का स्वाद बिगड जाय तो पान का बीड़ा या इलायची इत्यादि के द्वारा मुख की शुद्धि कर लेनी चाहिए।

बलवान चूर्ण

योग—छिलके से रहित जौ, गुलसकरी (नागबला) का पचाग, नागौरी असगन्ध, छिलके उतारे हुए काले तिल और छिलके से रहित काली उड़द की दाल—ये पाँचों चीजें दस-दस तोले और एक साल का पुराना गुड़ पचास तोले ले। निर्माण—पाँचो चीजों को कूट छानकर रखे और गुड़ मे अच्छी तरह मिश्रित कर वन्द पात्र मे सूखी जगह मे रख लें।

गुण—इसके सेवन से शीघ्र ही बल-वीर्य की काफी वृद्धि हो जाती है और पौरुष शक्ति प्रबल हो उठती है।

मात्रा—छः माशे से एक तोले तक। समय और अनुपान—सुबह और शाम दूध। विशेष—यों तो इस मृदु योग को सभी मौसमों मे व्यवहार किया जा सकता है, पर इसे यदि शीतकाल मे नियमपूर्वक दो महीने सेवन कर लिया जाय तो फिर क्या पूछना है। यह विशेष बलकारक सस्ता योग है।

क्षयरोग पर नागबला

योग—नागबला की जड़ (गुलसकरी) बीस तोले, घृत चालीस तोले और शहद अस्सी तोले ले। निर्माण—नागबला की जड़ को आधे दिन तक तेज धूप में सुखाकर कूटे और महीन होने पर कपडे से छान ले। एक कलई-दार पात्र में छने चूर्ण को रख क्रमशः घृत (गोघृत) और शहद का मिश्रण कर दें। इसे बन्द पात्र में रखें।

गुण—इसके सेवन से क्षयरोग की प्रथम अवस्था की शारीरिक क्षीणता तथा हृदय की शून्यता मिटती है। सूखे बलगम को ढीला कर यह निकालता तथा अपराह्न में बढने वाली शारीरिक उष्णता को मिटाता है। यदि स्वस्थ मनुष्य विशेष कृश हो तो उसे भी इसके सेवन के पश्चात् शरीर भरा मालूम होगा और तन्दुरुस्ती एक बार बन जायगी। क्षय रोग के रोगी के बलगम में आने वाले खून के छींटे को यह बन्द करने में समर्थ है।

मात्रा—छ माशे से एक तोले तक। समय—प्रातःकाल और सायंकाल। अनुपान—बकरी का दूध।

विशेष नागबला को गुलसकरी कहते हैं। इसका क्षुप होता है। इसकी जड़ और पचाग काम में आता है। यह आयुवर्द्धक, मल को बाँधने वाला, ताकतवर, मूत्रकृच्छ्रनाशक तथा क्षीण और क्षत का नाशक है। क्षीण और क्षत रोगी के शरीर की कमी को यह शीघ्र पूर्ण कर डालती है। यह चिकनी, कटु, वायु, पित्त और व्रण (फोड़ा-फुन्सी) की नाशक है। कुष्ठ रोग तथा वाजीकर योगों में इसका व्यवहार होता है। द्रव्य गुण की दृष्टि से यह मधुर, कषाय, स्निग्ध, गुरु, उष्ण और किंचित् अम्ल स्वाद वाली है।

करंजबीज वर्त्ति

योग—करज के बीज पाँच तोले, ढाक के ताजे फूल दस तोले लें। निर्माण—करज के बीजों का चूर्ण बनाकर गाढे कपडे में खूब महीन छान ले और एक साफ पत्थर के खरल में उसे रख ऊपर से ढाक (टेसू) के फूलों के कपडे से छने रस को डालकर ढक दें। दो घंटे के बाद खरल करना शुरू करे। जब बत्ती बनाने योग्य हो जाय तब उसकी जौ के आकार की छोटी-छोटी बत्तियाँ बना और सुखाकर रख ले।

गुण - इसके व्यवहार से नेत्र में होने वाले सफेद धब्बे शीघ्र मिट जाते हैं। इसके अतिरिक्त नेत्र के अन्य विकारों को भी यह नष्ट कर डालती है।

व्यवहार—जल में एक बत्ती को घिसकर सुबह-शाम आँखों में आँजना चाहिए। विशेष—नेत्र रोग में कहे पथ्य और अपथ्य का पालन आवश्यक है।

वचादि चूर्ण

योग—बालबच, आँवला और तरोई (सूखी)—ये तीनों चीजें पाँच-पाँच तोले लें। **निर्माण**—ताजी तरोई को लेकर टुकडे कर ले और धूप में सुखा ले। फिर तीनों चीजों को कूट और कपड़छान कर रख लें।

गुण—इसके सेवन से मस्तिष्क उर्वर होता है स्मरण शक्ति की वृद्धि के लिए यह अत्यन्त उपयोगी चूर्ण है। तीन दिनों में ही लाभ दृष्टिगोचर होने लगता है।

मात्रा और अनुपान—तीन माशे। न बराबर गौघृत और मधु। **समय**—सुबह और शाम एक-एक मात्रा।

वातज संग्रहणी पर शम्बूक प्रयोग

योग—शम्बूक (घोंघा) पाँच तोले लें। **निर्माण**—तेज आग पर घोंघे को गरम करे। जब वह काफी तप्त हो जाय तब उसे चिमटे से निकालकर ईंट या पत्थर पर रखे और ऊपर से एक जबीरी नीबू निचोड़ दे। रस पड़ते ही वह राख हो जायगा। उसे खरल कर रख लें।

गुण—इससे वातज ग्रहणी शीघ्र दूर हो जाती है।

मात्रा—चार माशे। कमजोर और कम उम्र वाले को आधी या चौथाई मात्रा देनी चाहिए। **अनुपान और समय**—मधु। सुबह-शाम। **विशेष**—शख, कौड़ी तथा सीप इत्यादि की भाँति घोंघे की मात्रा भी एक रत्ती से आठ रत्ती (एक माशा) तक है, पर सग्रहणी की विशेष अवस्था और वातज सग्रहणी मे इसका मात्रा चार माशे तक है। मात्रा देते वक्त शहद के साथ खूब खरल कर इसके भस्म का सेवन करना चाहिए। शम्बूक भस्म का और रोगों पर भी विशेष प्रयोग होता है। कान के बहने में और उदर शूल खास-पर परिणामशूल मे इसके भस्म का अच्छा उपयोग होता है।

पामाहर वटिका

योग—शुद्धपारद एक तोला, शुद्ध गन्धक दो तोले, चित्रक की जड़ की छाल और कालीमिर्च—ये दोनों चीजें एक-एक तोले, कठगूलर का दूध, सोंठ, पीपल और मिर्च का काढ़ा तथा त्रिफला का काढा ये तीनों पतली चीजे पाँच-

पाँच तोले ले। निर्माण—पारद और गन्धक की कज्जली कर एक दिन तक खरल करे। फिर काष्ठ औषधियों के कपड़छान चूर्ण को भी कज्जली में मिला दूध (कठगूलर का), सोंठ, पीपल और मिर्च के काढ़े तथा त्रिफले के काढ़े डाल खरल करे। एक-दो दिनों के बाद खरल करते-करते रस सूख जाय और पीठी गोली लायक हो जाय तब चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना धूप में सुखा ले।

गुण—यह रक्तशोधक है। विशेषकर पामा (गीली खुजली) को यह नष्ट करती है। इससे मदाग्नि, कब्ज तथा कफ का प्रकोप भी मिट जाता है।

मात्रा और समय—चार रत्ती। सुबह-शाम। अनुपान—त्रिफले का काढ़ा या जल।

विशेष—पामा, जिसे उत्तर प्रदेश मे गीली खुजली और बिहार प्रदेश मे 'कलकल' कहते हैं—मे रक्त मीठा, कोष्ठबद्ध और कफ का कोप हो जाता है, अतएव इस रोग मे विशेष पथ्य पालन की आवश्यकता है। पीली फुड़ियों का पीब निकालकर चिकनी मिट्टी और नीम की पत्तियों के उबले जल से धोने और सूखे कपडे से उन्हे सुखा लेने के बाद मरिचादि या सोमराजी इत्यादि सिद्ध आयुर्वेदिक तेल या गरी के तेल में कबीला और कपूर मिलाकर लगाना चाहिए। अपने कपडे वगैरह को पृथक रखना चाहिए, क्योंकि यह एक छुतहा रोग है। नमक त्यागकर रक्तशोधक पथ्य का पालन करना चाहिए।

शीतपित्त-नाशक क्वाथ

योग—बाल हर्रे, काला मुनक्का सोंठ, सनाय की पत्ती और चैती गुलाब के फूल—इन्हे छः-छः माशे ले। निर्माण—सभी चीजों को अधकचरा कूटकर रात्रि में आधा सेर जल मे भिगो दे। प्रातः मंद आँच पर पकावें। आधा पाव जल शेष रहने पर उतार लें और कपड़े से छानकर शीतल होने दे।

गुण—इसके सेवन से शीतपित्त की दशा मिटती है और उस काल मे रहने वाले कोष्ठबद्ध तथा पित्त की खराबी को भी यह दूर करता है। इसके सेवन से शरीर में उभडे शीत पित्त के चकत्ते शान्त हो जाते हैं। सेवन के पश्चात् दो घटे के बाद एक दो पतले दस्त आते हैं। यह मृदुरेचन गुण से युक्त पित्त का शामक तथा वायु का अनुलोमक है।

उपयोग—उपर्युक्त औषध एक मात्रा है। अहले सुबह ताजा-ताजा पीना और दो-तीन घंटे तक जब तक एक-दो बार पतली टट्टी न हो जाय तब तक भोजन और परिश्रम नहीं करना चाहिए। रेचन होने पर मूँग की दाल की पतली खिचड़ी का पथ्य लेना चाहिए। इसी प्रकार एक दिन बीच देकर सप्ताह में दो बार इसे ले लेने से विशेष लाभ होता है। इसे हमेशा लेने की जरूरत नहीं है। शीत पित्त में जब विशेष कब्ज की हालत रहे तब इसका प्रयोग करना चाहिए।

शीतपित्तहर योग

योग—जहरमोहरा पिष्टि एक माशा, शृंगभस्म चार रत्ती, यशदभस्म एक रत्ती ले और छः माशे गुलकन्द। **निर्माण**—खरल में तीनों भस्मों को जरा महीन पीस ले और गुलकन्द के साथ घोटकर चम्मच में उठा ले। यह एक मात्रा है।

गुण—इसके सेवन से शीत पित्त, पित्त और साधारण रक्त के विकार मिटते हैं।

उपयोग—नित्य सुबह-शाम एक-एक मात्रा लेनी चाहिए। औषध सेवन के पश्चात् जल से कुल्ला कर लेना चाहिए।

विशेष—गाय के घी में सेंधानमक का महीन चूर्ण मिलाकर शरीर पर धीरे-धीरे मालिश करना विशेष लाभदायक है।

सूखी खाँसी की गोली

योग—बबूल का गोंद, छिली मुलेठी का चूर्ण, मुलेठी का सत्त, कालीमिर्च, छोटी इलायची के दाने और मिसरी—ये छहों चीजे एक-एक तोले ले। **निर्माण**—काष्ठ औषधियों को कूट और कपड़छान कर उसमे पिसी मिसरी मिलावें और जल के साथ एक घंटे तक खरल कर झरबेरी के बराबर (चार रत्ती) गोलियाँ बना और सुखाकर रख लें।

गुण—इसके सेवन से सूखी खाँसी ढीली हो जाती है। कंठ की सफाई करने और मुख की विरसता को दूर कर रुचि उत्पन्न करने में यह गोली विशेष उपयोगी है। यह पित्तशामक है।

उपयोग—दिन-रात में आठ-दस गोलियाँ तक चूस लेने से विशेष हानि नहीं। थोड़ी-थोड़ी देर पर एक-एक गोली मुख में रखकर उसका रस चूसना चाहिए।

निम्बादि वटी

योग—निमौलियों की गिरियाँ छिलका रहित, छोटी हर्रें, रसौत ये तीनों चीजें पाँच पाँच तोले, एलुआ दस तोले, शुद्ध गुग्गुल, शुद्ध सोहागा और सोनागेरू ये तीनों अढ़ाई-अढ़ाई तोले लें। छोटी मूली का कपडे से छना रस आधा सेर पृथक रख ले। निर्माण—रसौत को आधा पाव जल में खौलाकर कपडे से छानकर पुन उस रस को गाढा कर ले, सभी चीजों को जो सूखी हों, अलग-अलग कूट-छानकर रख लें। एक पत्थर के खरल में सभी चीजें डालकर ऊपर से थोड़ा-थोड़ा मूली का रस डालते हुए घोटें। जब आधा सेर रस खप जाय और गोली बँधने लगे तब दो या अढाई रत्ती की गोलियाँ बना और सुखाकर रख लें।

गुण—इसके सेवन से सभी प्रकार के अर्श अच्छे होते हैं। रक्त का निकलना, बादी के दर्द, सूजन, कब्ज, मदाग्नि, अरुचि एव निर्बलता मे यह लाभ करती है।

मात्रा—दो से अढाई रत्ती तक पूर्ण मात्रा है। एक बार में एक गोली देनी चाहिए। समय और अनुपान—प्रातःकाल और सायकाल, जल।

बलकारक बर्फी

योग—मूसली सफेद, मूसली स्याह—ये दोनों चीजें चालीस-चालीस तोले ले। गाय का दूध आठ सेर, गाय का घी आधा सेर तथा १८४ तोले मिसरी ग्रहण करे। गोखरू, असगन्ध, तालमखाना, छोटी शतावर, कौंच के बीजों की गिरियाँ, तेजपात, जायफल, जावित्री, लौग, छोहारा (गुठली निकला), पतालकोहड़ा, छोटी इलायची के दाने, बड़ी हर्रें का वक्कल, आँवले का बक्कल, बड़ी इलायची के दाने और पिप्पली छोटी ये प्रत्येक चीजे चार-चार तोले, नगभस्म दो तोले, पिस्ता, बादाम और चिरौंजी की गिरियाँ दस-दस तोले लें। निर्माण—दोनों मूसलियो का कपड़छान चूर्ण आधा-आधा सेर तौलकर आठ सेर गाय के दूध मे घोल लें और मद आँच पर पकावें।

जब दूध खौलने लगे तब आँच तेज कर दें और पौने से कढाई के बीच में चलाते रहे ताकि जले नही। खोआ तैयार होने पर आधा सेर गाय के घी मे भूनें। सुर्ख होने पर उसमें चाशनी जो पहले से ही तैयार रहे, डालकर पकावें। गाढा होने पर गोखरू से चिरौंजी तक के बीसों चीजों के कपड़छान चूर्ण डाल थोड़ी देर चलावें, फिर उतार कर बरफी जमा लें।

गुण—इसके कुछ दिनों तक सेवन कर लेने पर शरीर में वीर्य की कमी दूर होकर उसकी खूब वृद्धि होती है और वीर्य का रतिकाल मे स्तम्भन होता है। कई प्रकार के वीर्य से सम्बन्धित रोग, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष और लिंग की शिथिलता इत्यादि मे भी यह विशेष चमत्कार दिखाती है। जाडे में इससे शीघ्र शरीर पुष्ट हो जाता है और कई रोग-स्नायु की दुर्बलता, हिस्टीरिया, मन का चिड़चिड़ापन इत्यादि मिटते हैं।

मात्रा—एक से दो तोला तक। अनुपान—गाय का दूध एक पाव। समय—सुबह-शाम और आवश्यकता होने पर सोते वक्त रात्रि में एक-एक मात्रा लेनी चाहिए।

विशेष—इस बर्फी को शीतकाल मे लगातार महीने-दो-महीने सेवन कर लेने पर विशेष रूप से तन्दुरुस्ती सुधर जाती है। यदि कब्ज की दशा हो जैसा कि प्रत्येक पौष्टिक दवा खाने से बीच-बीच मे होता है तो रात्रि मे सोते वक्त कभी-कभी इसके साथ हर्रे का मुरब्बा लेते रहना चाहिए।

बलवर्द्धक चूर्ण

योग—बट की छाल दो छटॉक, बिनौले की गिरियाँ, कलमी तज और मीठा इन्द्रजो - ये तीनों चीज चार-चार छटाँक, काले तिल सात छटाँक, पोस्ते के दाने सफद पॉच छटाँक और तालमिसरी बीस छटॉक ले। निर्माण—तेल वाली तीनो चीजों को (तिल, बिनौले और पोस्ते) एक साथ कूटकर महीन तार की चलनी से छान लें और शेप तीनों काष्ठ औषधियों को एक साथ कूट और कपडछान कर लें फिर दोनों चूर्णो को मिला लेने के बाद अत मे पिसी छनी मिसरी मिला ले।

गुण—इसके सेवन से धातु के विकार, पित्त की गर्मी, मर्दानगी की कमी, निर्बलता, दिमाग में चक्कर आना इत्यादि दूर होकर बल और वीर्य की वृद्धि होती है। यह तर औषधि है।

मात्रा—छः माशे से एक तोले तक। अनुपान—गाय का दूध आधा पाव। समय—साधारणतः प्रातःकाल और सायकाल एक-एक मात्रा औषधि लेनी चाहिए। विशेष लाभ के लिए सोते वक्त रात्रि में भी एक मात्रा ली जा सकती है।

स्तम्भक वटी

योग—सिरस के बीज, उटगन के बीज, भाँग के बीज, कौंच के बीज, बबूल की कलियाँ, इमली के बीजों की गिरियाँ तालमखाने और सेमलकंद—ये प्रत्येक पाँच-पाँच तोले तथा ताजे भाँगरे का रस एक सेर लें। निर्माण—कौंच, बबूल और इमली के बीजों से गिरियाँ निकाल लेने के पश्चात् वजन करें। सभी चीजों को दो-चार घंटे तेज धूप में सुखा लेने के बाद कूटें और कपड़े से छान चूर्ण को पत्थर के खरल में रख ऊपर से भाँगरे का रस डालें। रस चूर्ण से एक इंच ऊपर तक रहे खरल करते हुये जब रस सूख जाय तब एक-एक माशे की गोलियाँ बना और धूप में सुखाकर रख लें।

गुण—प्रमेह रोग के कारण वीर्य का पतलापन, शीघ्र-पतन, स्वप्नदोष, टट्टी के समय धातु का निकल जाना, रोग के लक्षणों में से कंठ सूखना, सिर में चक्कर आना, थोड़ा चलने या सीढ़ी चढ़ने से कलेजे में धड़कन होना इत्यादि को यह मिटाती है। इसके कुछ काल सेवन कर लेने पर वीर्य का स्तम्भन होता है।

मात्रा—तीन से छः माशे तक। समय—साधारणतः सुबह-शाम और आवश्यकता होने पर सोने से पहले रात्रि में एक-एक मात्रा इसका लेना चाहिए। अनुपान—गाय का दूध, उबालकर शीतल किया हुआ आधा पाव से एक पाव तक।

यवान्यादि वटी

योग—अजवाइन, काबुली हरें, फिटकरी, कलमीशोरा, सोहागा, सेंधानमक, सौंचरनमक और आँबाहल्दी—ये आठों चीजें पाँच-पाँच तोले ले। कागजी नीबू का रस और अदरख का रस—ये दोनों तीन-तीन पाव अलग रखें। निर्माण—फिटकरी और सुहागे को भून ले, काष्ठ औषधियों को एक साथ और

नमक तथा सोहागे इत्यादि को एक साथ कूट-छानकर सभी को मिला दे, फिर पत्थर के खरल मे चूर्ण को रख तीन बार नीबू और तीन ही बार अदरख के रस मे खरल करें। जब पीठी गोली बनने लायक हो जाय तब चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना और सुखाकर रख ले।

गुण—इससे बढ़ी हुई तिल्ली, जिगर, मदाग्नि, अरुचि, पेट का दर्द तथा कब्ज मिटता है।

अनुपान और मात्रा—गर्म जल। चार से आठ रत्ती तक। समय—सुबह, दोपहर, शाम और सोते वक्त रात्रि मे एक-एक मात्रा देनी चाहिए।

रक्तरोधक अवलेह

योग—ईसबगोल के दाने तीन छटाँक और पोस्ते के दाने दस छटाँक ले। जल बावन छटाँक तथा सफेद चीनी या मिसरी छब्बीस छटाँक ग्रहण करे। पोस्ते के दाने और बबूल के गोंद का चूर्ण—ये दोनों चीजे दो-दो छटाँक पृथक रखें। निर्माण—दोनों चीजों को कुचलकर रात्रि मे जल के साथ भिगो दें। बर्तन कलईदार होना चाहिए। प्रातःकाल काढा पकावे। चौथाई शेष रहने पर मोटे कपड़े से लुआबदार काढे को अच्छी तरह निचोड़ लें और उसमे चीनी मिलाकर पुनः आग पर पाक करे। रबड़ी की भाँति हो जाने पर पोस्ते के दाने और बबूल के गोंद का छना चूर्ण डालकर उतार ले।

गुण - इसके सेवन से तपेदिक, रक्तपित्त या गर्मी के कारण मुख से निकलने वाला रक्त रुक जाता है। यदि बवासीर या प्रदर रोग से पीड़ित रोगी को इसका सेवन कराया जाय तो उसके अधोमार्ग से निकलने वाले रक्त को भी रोक देता है। यह तर प्रकृति का अवलेह है।

समय और मात्रा—सुबह और शाम। एक तोला। अनुपान—यों ही चाटना चाहिए। आवश्यक होने पर थोड़ा बकरी का दूध ऊपर से लिया जा सकता है।

सोंठ की बर्फी

योग—लाल सोंठ दस तोले, गाय का दूध अस्सी तोले, गाय का घी तीन छटाँक, खरबूजे की मगज, निशास्ता और सिंघाड़ा—ये तीनों चीजे दो-दो तोले, नागौरी असगन्ध, सफेद मूसली, मोचरस, बबूल का गोंद, छोटी

इलायची के दाने और शतावर—ये सब भी दो दो तोले, [illegible], सफेद चंदन, धौ के फूल, कलमी तज—ये सब चीजें नौ नौ माशे, गोखरू, पीपल, कालीमिर्च, बालछड़, नागरमोथा, कौंच के बीज और चिनियाँ गोंद—प्रत्येक छः-छः माशे लें। निर्माण—सोंठ के कपड़छान चूर्ण को दूध में भिगोकर मंद आँच मे पकावे और कड़ाही के पेंदे मे लगे न, इसलिये बार-बार कूँचे से चलाते भी रहें। जब खोआ तैयार हो जाय तब उसमें घी डालकर भूनें। सुर्ख होने पर चीनी की चाशनी, जो पहले से ही तैयार रखें, डाल दें। पकने पर मगज खरबूजे से लेकर चिनिया गोंद तक की सभी कुटी छनी चीजें डालकर थोड़ी देर कूँचे से चलावें फिर उतारकर एक एक तोले के अंदाज की बर्फियाँ बना लें।

गुण—इसके सेवन करने से कमर की व्यथा, शरीर में होने वाले वायु के विकार, जुकाम, सर्दी, सूतिका-काल की कमजोरी और बढ़ी वायु, साधारण शीत के कारण होने वाले ज्वर, पतली टट्टी का होना, मंदाग्नि, भूख की बेहद कमी इत्यादि वायु और कफ के रोग दूर होते हैं।

मात्रा—छः माशे से एक तोले तक। अनुपान—उबालकर ठंढा किया गाय का दूध एक पाव। समय—सुबह, शाम और विशेष रोग की हालत में रात्रि में सोते समय एक-एक मात्रा।

अर्शवेदना-हर

योग—सौंफ और काबुली हर्रें पाँच-पाँच तोले, चंदसुर (हालो) दस तोले तथा सफेद चीनी बीस तोले ले। निर्माण—हर्रें के बक्कल और सौंफ को गाय के घी मे भून लें। फिर हालो के साथ इमामदस्ते मे कूटकर महीन तार की चलनी से छान लें। छन जाने के बाद चीनी मिला ले।

गुण—बादी बवासीर मे दर्द होने पर या ज्यादा कब्ज रहने पर इसको कुछ काल तक सेवन कर लेने से दर्द और कब्ज मिटता है, मंद अग्नि ठीक होती, पेट मे भोजन के बाद बननेवाली वायु का अनुलोमन (नीचे की ओर होना) होता है।

मात्रा—तीन से छः माशे तक। अनुपान—शीतल जल, अर्क सौंफ या गर्म दूध इत्यादि। रोग और प्रकृति के अनुसार। समय—सुबह, शाम और आवश्यकता होने पर रात्रि मे सोते वक्त एक-एक मात्रा।

मधुनाशिनी गुटिका

योग—लोहभस्म, बगभस्म, शीशाभस्म, यशदभस्म—ये चारों भस्म एक-एक तोले, शुद्ध शिलाजीत की मलाई तीन तोले, शुद्ध अफीम छः माशे, गुड़-मार (मधुनाशिनी) दो तोले, जामुन की गुठलियों की गिरियाँ चार तोले करेले के सूखे फल आठ तोले और घीकुमारी का गूदा एक सेर लें। **निर्माण**—पत्थर के खरल में भस्मों को घटे-आध घटे तक खरल कर अलग कर ले तीनों काष्ठ औषधियों को धूप मे सुखाकर कूट और कपड़छान कर ले, अफीम और शिलाजीत को पाच तोले जल में खौलाकर लेई-सी बना लें फिर सभी चीजों को मिलाकर खरल कर और ऊपर से घृतकुमारी के गूदे का कपड़े से छना रस डालते जायँ। जब एक सेर गूदे का रस सूख जाय और पीठी गोली लायक हो जाय तब चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना लें। धूप मे इन्हे सुखाकर बद पात्र में रख लें।

गुण—इसके सेवन से पेशाब मे आने वाली चीनी कम हो जाती है, खून का मीठापन बढ़ जाने के कारण उत्पन्न फोडे-फु सियाँ या अडकोप मे होने वाली 'प्रमेह पिड़िकाएँ', कठ सूखना, चलने-फिरने मे नाताकती, शरीर का दुबला होता जाना तथा अग्नि की मदता इत्यादि विकार मिट जाते हैं।

मात्रा—इसकी पूर्ण मात्रा एक से चार रत्ती तक है। प्रारम्भ मे एक रत्ती से ही शुरू कर क्रमशः आधी-आधी रत्ती की मात्रा बढाकर चार रत्ती की मात्रा पद्रह दिनों के भीतर ले आनी चाहिए। **अनुपान**—बकरी का दूध अभाव में गाय का दूध या जल। **समय**—प्रातःकाल और सायकाल एक-एक मात्रा लेनी चाहिए।

विशेष—शर्करामेह या पेशाब मे चीनी आना रोग मे कहे वैद्यक विधि के पथ्यों का पालन और अपथ्यों का त्याग आवश्यक है। इस औषधि को लगातार कुछ मास तक सेवन करना चाहिए। इसमें अफीम है, अतएव दूध का अनुपान तथा पथ्य मे बकरी का दूध, अभाव में गाय का दूध लेना आवश्यक है।

खाँसी की चटनी

योग—अलसी एक तोला, मुलेठी एक तोला, सूखे लिसोडे दस तोले, उन्नाव पाच तोले, खतमी के-बीज एक तोला, अजुवार-एक तोला और बीही-

दाने छः माशे लें। जल एक सेर और देशी चीनी साठ तोले ग्रहण करें। सत मुलेठी और बबूल का गोंद छ-छ माशे। निर्माण—सभी औषधियों को (अलसी से बीहीदाने तक की सातों औषधियों को कुचलकर एक सेर जल में, कलईदार पात्र में भिगो दें। रात भर भींगने के बाद प्रातःकाल इसका काढ़ा तैयार करे। एक पाव शेष रहने पर मोटे कपड़े से काढे को अच्छी तरह छान-कर चीनी मिला दे और दो तार की चाशनी जब हो जाय तब उसमें सत मुलेठी और बबूल के गोंद का चूर्ण मिलाकर उतार लें।

गुण—इसके सेवन से सूखी खाँसी ढीली हो जाती, बलगम निकल जाता और खाँसी के ठसके मिट जाते हैं।

मात्रा और समय—एक माशा। सुबह, दोपहर और सायकाल एक-एक मात्रा औषधि चाटनी चाहिए।

यवक्षारादि बटी

योग—जवाखार, समुद्रफल की गिरी, समुद्रफेन, सेंधानमक, कालानमक, सज्जीक्षार, निशोथ, शुद्ध सोहागा, काबुली हर्रे, बड़ी पीपल, सोंठ, शुद्ध हींग, काबुली वायविडंग ये तेरहों चीजें आधी-आधी छटाँक और अम्लवेत दस तोले ले। निर्माण—काष्ठ औषधियों को एक साथ कूटकर कपड़े से छान ले और नमक इत्यादि को एक में मिलाकर कूट-छान कर सभी को एक पत्थर के खरल मे रखे और जल के साथ चार घटे तक खरल कर चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना और धूप मे सुखाकर रख लें

गुण—इसके सेवन से वातगुल्म, पेट मे इकट्ठी होने वाली वायु, मदाग्नि, अरुचि, पेट का तनाव तथा कब्ज इत्यादि उदर की पुरानी और नई बीमारी मिटती हैं।

मात्रा—एक से दो माशे तक। अनुपान—वातगुल्म मे गोरखमुण्डी के अर्क, अजवायन के अर्क या गर्म जल से, कब्ज मे गर्म जल से, अरुचि मे शीतल जल मे कागजी नीबू का रस मिलाकर, साधारण वायु विकार मे अर्क सौफ से तथा पेट के तनाव में अर्क हींग के साथ इस बटी का सेवन करना चाहिए। समय—रोग की साधारण अवस्था मे सुबह और शाम को तथा विशेष अवस्था मे चार-चार घटे पर दिन-रात में चार-पाच मात्राएँ ली जा सकती हैं।

अनुभूत योग

श्यामसुन्दर रसायनशाला प्रकाशन, गायघाट, वाराणसी
द्वाराप्रकाशित चिकित्सा एवं स्वास्थ्योपयोगी पुस्तकों का सूचीपत्र

रसायनसार	१२.००
अनुपान विधि	.७५
अनुभूतयोग (पांच भाग)	५.२५
सिद्ध मृत्युञ्जय योग	१.००
प्रयोग रत्नावली	२.००
भोजन विधि (पथ्यापथ्य)	३.५०
प्रारम्भिक स्वास्थ्य	.४०
आहार सूत्रावली	.५०
शल्य चिकित्सा	.७५
टोटका विज्ञान भाग १-२	१.००
देहातियों की तन्दुरुस्ती	.७५
मोटापा कम करने के उपाय	१.००
आरोग्य लेखाञ्जलि	१.२५
व्यायाम और शारीरिक विकास	३.००
स्वास्थ्य और सद्वृत्त	३.५०
नीम के उपयोग	१.५०
मधु के उपयोग	१.५०
मट्ठा या छाछ के उपयोग	१.५०
आम के उपयोग	१.५०
तुलसी के उपयोग	.७५
हल्दी के उपयोग	.२५
लहसुन के उपयोग	.३५
अजवाइन के उपयोग	.३५
सौंफ के उपयोग	.३५
अदरख के उपयोग	.३५
तेजपात के उपयोग	.३५
मेथी के उपयोग	.२५
हींग के उपयोग	.३५
जीरा के उपयोग	
धनिया के उपयोग	
राई के उपयोग	
मगरैला के उपयोग	
आंवला के उपयोग	
प्याज के उपयोग	
नीबू के उपयोग	
गूलर के उपयोग	
कालीमिर्च के उपयोग	
दालचीनी के उपयोग	
लौंग के उपयोग	
मौसमी सात बीमारियाँ	
ऋतुएं और स्वास्थ्य	
स्वच्छता और स्वास्थ्य	
व्यायाम और स्वास्थ्य	
भोजन और स्वास्थ्य	
मनोवेग और स्वास्थ्य	
मादक वस्तुएं और स्वास्थ्य	
आचार विचार और स्वास्थ्य	
प्रसूता और शिशु-परिचर्या	

अजिल्द पुस्तकों के सेट

अनुभूतयोग पाँच भाग	[illegible]
मसालों के उपयोग	[illegible]
स्वास्थ्य निर्माण के साधन	[illegible]
हमारा स्वास्थ्य और आहार	[illegible]
स्वास्थ्य कानून	[illegible]
हम कैसे स्वस्थ रहें	[illegible]

श्यामसुन्दर आयुर्वेद ग्रन्थमालाः पुष्प—३२

लेखक

वैद्यराज उमेदीलाल वैश्य

(नीबू, आँवला, गूलर, तुलसी, आम, मसालों के उपयोग और स्वास्थ्य साधन आदि अनेक पुस्तकों के रचयिता)

प्रकाशक

श्यामसुन्दर रसायनशाला प्रकाशन

गायघाट, वाराणसी

मुख्य वितरक

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी

द्वितीय संस्करण
अक्टूबर, १९७६

मूल्य
एक रुपया

अनुभूत योग

चतुर्थ भाग

—※—

शुंठ्यादि चूर्ण

योग ※ सोंठ, पीपरामूल, गजपीपल, हल्दी, कटेरी, सफेद जीरा, चित्रक की जड़ की छाल और नागरमोथा—ये आठों चीजें पांच-पांच तोले लें। निर्माण ※ इन्हें कूट और कपड़छान कर बन्द पात्र मे रख ले। गुण ※ उदर-रोगों मे। मात्रा ※ तीन से छः माशे तक। समय ※ सुबह, दोपहर और सायंकाल एक-एक मात्रा। अनुपान ※ उष्ण जल।

कमलिनी योग

योग ※ श्वेत कमलिनी के बीज, नीलकंठी बंशलोचन और सीप की भस्म—ये तीनों चीजें पाँच-पाँच तोले लें। निर्माण ※ तीनों चीजों को पृथक-पृथक कूट और कपड़छान कर मिश्रित कर लें।

गुण ※ इससे मसूरिका नाम की शीतला की बीमारी दूर होती है। मात्रा ※ तीन माशे। अनुपान ※ एक तोले शर्बत बनप्सा के साथ। समय ※ सुबह, दोपहर, शाम और रात्रि मे एक-एक मात्रा दे या चार-चार घंटे के अंतर से नित्य चार मात्राएं सेवन करावें।

विशेष ※ अधिकतर मसूरिका रोग मे औषध सेवन कराने की प्रथा नहीं है, ज्यादातर धार्मिक कृत्य (दैवव्यपाश्रय चिकित्सा) ही किया जाता है। पर आयुर्वेद-प्रणाली की चिकित्सा में इसे रोग

मानकर दैवव्यवाश्रय चिकित्सा के साथ-साथ पथ्य, उपचार तथा औषध-सेवन की भी पूर्ण रीति से व्यवस्था दी गयी है। उपर्युक्त औषधि के अतिरिक्त भी रोगी की दशा के अनुसार विचारपूर्वक अंतर और बाह्य प्रयोग की औषधियाँ प्रयुक्त की जानी चाहिए। दोष विज्ञान के अनुसार रोगी के शरीर की विकृतियाँ पूर्ण चिकित्सा से ही मिट सकती है और पूर्ण चिकित्सा तभी सम्भव है जब औषध का अंतः प्रयोग भी होता रहे।

जम्बीर संधान

योग ❀ जम्बीरी नीबू का रस सवा छः सेर, सेंधानमक दो छटाँक, शुद्ध हीग दो छटाँक, काँचनमक, कालानमक, सोंठ, कालीमिर्च, बड़ी पोपल और अजवाइन—ये छहों चीजें पाँच-पाँच तोले लें। निर्माण ❀ एक पत्थर के पात्र मे एक छटाँक पिसा सेंधानमक डालकर ऊपर स कपड़े से छना नीबू का रस डाले कुछ काल (आधे घंटे) के पश्चात् मिट्टी के पात्र मे उबालें। झाग आ जाने पर उतारकर ठंढा कर ले। फिर एक घी के पुराने पात्र मे उस रस को रख ऊपर से शेष चीजों का कूट और कपड़छान किया चूर्ण डालकर मिलावे और ढक्कन से मुख बंद कर पात्र को घोड़े की लीद डाले हुए गढ़े मे एक मास तक दबा दें। एक मास के बाद घड़े को निकाल जल से पहले उसे धोकर स्वच्छ करें, बाद में ढक्कन हटाकर रस को कपड़े से छान लें और बोतल में रख डाट लगा दें।

गुण ❀ इसके सेवन से नाभि, पसली और हृदय के शूल, उदरशूल, वातगुल्म, अफरा, मल की गांठ, अष्ठीला, तिल्ली, जिगर, बात और कफ से सम्बन्धित उदर रोग, मंदाग्नि और अरुचि का नाश होता है। यह बालक, वृद्ध तथा स्त्रियाँ सभी के लिए लाभप्रद है। मात्रा ❀ दो तोला। अनुपान ❀ बराबर जल। समय ❀ साधारणतः भोजन के कुछ काल बाद दो बार और विशेष कष्ट के समय चार-चार घंटे पर दिन में चार मात्राएँ तक इसका सेवन किया जा सकता है।

विशेष ❀ इसे शूलबर्जिनी या महाशंख बटी इत्यादि के अनुपान रूप में भी लिया जाता है।

पूयमेह बिनाशिनी

योग ❀ कलमीशोरा, संगजराहत, कहरवा पत्थर, हजरल यहूद और बड़ी इलायची के दाने—ये पाँचों चीजें नौ-नौ माशे, बंशलोचन दो तोले, पीले रंग का अरमनी और बबूल का गोंद—ये दोनों चीजें सात-सात माशे, कुन्दर और समुद्रफेन पाँच-पाँच माशे, मलयागिरि चंदन का तेल अढाई तोले, रसौत चार तोले, शुद्ध अफीम चौदह माशे, केशर पाँच रत्ती तथा नीम की ताजी और पीली पत्तियाँ डेढ़ माशे लें। निर्माण ❀ सभी सूखी औषधियों को कूट और कपड़छानकर एक पत्थर के खरल में रखें और चंदन का तेल डालकर खरल करें। कुछ देर बाद नीम की पत्तियों को महीन पीस आधी छटाँक जल में घोलकर छान लें और उसी मे रसौत, अफीम तथा पिसी केशर भी मिला दें। फिर इस जल के साथ खरल में पड़ी औषधि को खरल कर एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना लें। इन्हे धूप में सुखाकर बोतल मे बंद करके रखें।

गुण ❀ इसके सेवन से मूत्राघात या मूत्राघात के लक्षण एवं विविध लक्षणों से युक्त पूयमेह (सूजाक) रोग शीघ्र आराम हो जाता हैं, पीव का आना या जलन के कष्ट का यह शामक है। मात्रा ❀ एक से दो रत्ती तक। अनुपान ❀ बड़ी इलायची का आधा पाव अर्क, तीन माशे कलमीशोरे को आधा पाव जल में मिलाकर या दूध, जल और चीनी से तैयार लसी। केवल शीतल जल से भी इसे लेने मे कोई हर्ज नहीं हैं।

चंदनादि लेप (मरहम)

योग ❀ श्वेत चंदन, बावची, राल भुना, नीलाथोथा, गुग्गुल, हिंगुल—ये छहों चीजें एक-एक तोले, गाय का घी नौ तोले तथा तिल का तेल भी नौ तोले ही लें। निर्माण ❀ एक पत्थर के खरल में सभी चीजों को डाल नीम के डंडे से घोटें। दिन भर की घुटाई के बाद जब वह मरहम की शक्ल का हो जाय तब उसे निकालकर पात्र में रख लें।

गुण ❀ इसके व्यवहार से पापोपदंश (गरमी) के घाव जल्दी सूख जाते हैं और जलन तथा मवाद भी दूर हो जाता है। प्रयोग ❀ एक साफ कपड़े की पट्टी पर इस लेप को लगा, जहाँ व्रण (घाव) हो वहाँ पर साट देना चाहिए। प्रातःकाल पट्टी को हटाकर नीम की पत्तियाँ डालकर उबाले जल से घाव को धो और सूखे कपड़े से जल का अंश सुखा लेने के बाद पुनः नई पट्टी वहाँ पर साटनी चाहिए इसी क्रम से एक सप्ताह तक धोने और पट्टी बदलने से धाव, सभी उपद्रव सहित शीघ्र मिट जाता है।

विशेष ❀ इस रोग में रसकपूर से तैयार उत्तम औषधि का सेवन, भोजन के बाद दोपहर और रात्रि मे दो-दो तोले सारिवाद्यासव का पान, पथ्य मे चावल, गेहूँ, जौ, मूँग, घी, दूध और चीनी लाभदायक है। अपथ्यों में विशेषकर नमक त्याग देना आवश्यक है।

तालमूली योग

योग ❀ तालमूली (स्याह मूसली), सेमलकन्द, आँवला, गोखरू, काकोली, गुडूची सत्व और मिसरी—ये सातों चीजे बराबर-बराबर लें। निर्माण ❀ पाँचो काष्ठ औषधियों को धूप में सुखाकर कूटे और कपडछान चूर्ण बनाकर सत्व गुड़ूची और महीन पिसी मिसरी मिला दें।

गुण ❀ प्रदर-रोग मिट जाने के बाद स्त्रियों को और प्रमेह की बीमारी समाप्त होने पर मर्दो को जब विशेष दुर्बलता या नाताकती की अवस्था हो ऐसे मौके पर इस चूर्ण के व्यवहार से उनकी कमजोरी जाती रहती है और इसको कुछ काल तक लगातार सेवन कर लेने के पश्चात् शरीर, हृदय, मस्तिष्क बलयुक्त और नसें रक्त से पूर्ण हो जाती हैं। इस चूर्ण को गर्मी, बर्सात और जाड़े के मौसम में हमेशा ही खाया जा सकता है। मात्रा ❀ तीन से छः माशे तक। पहले एक सप्ताह तक हल्की मात्रा (तीन माशे) ही दें। फिर पूरी मात्रा (छः माशे) देना शुरू करें। अनुपान ❀ गाय का दूध। समय ❀ सुबह, शाम और सोते वक्त रात्रि मे एक-एक मात्रा दे।

विशेप ● ताकतवर औषधियाँ कुछ अवश्य काबिज होती हैं अतएव आठ-दस दिनों के बाद बीच-बीच में हल्का रेचन अवश्य ले लेना चाहिए। इस कार्य के लिए आगे लिखा हुआ 'अमलतास का योग' अति उत्तम होता है।

अमलतास का योग

योग ❀ अमलतास की फलियों का गूदा दस तोले, गुलकंद गुलाब बीस तोले और काले मुनक्के चालीस तोले ले। असल गुलाबजल दस छटाँक एवं जवाखार सवा छटाँक पृथक ग्रहण करें। निर्माण ❀ जितने गुलाबजल मे अमलतास का गूदा भीग जाय उतने गुलाबजल मे उसे एक-दो घंटे भीगो, कपड़े से छान रस निकाल लें और सीठी अलग कर दें, फिर मुनक्के को जल से धो और सूखे कपड़े से पोंछकर गुलाबजल मे घंटे-आध घंटे भिगों दें बाद मे बीज सहित पीस ले। अंत में गुलाबजल के छीटे दे-देकर गुलकंद को भी पीसें। सभी को एकदिल कर ऊपर से जवाखार का महीन पिसा चूर्ण मिला दे। इसे बड़े मुख के शीशे के ढक्कनदार बरतन में रखे।

गुण ❀ इसके सेवन से कब्ज, पित्त के विकार, अम्लपित्त, मल की गाँठें बनना, आँखों में पीलापन छा जाना, मल और पित्त के कारण कलेजा धडकना इत्यादि विकार शान्त हो जाते है। शरीर से पित्त की गर्मी और खटटेपन को निकाल डालना इसका काम है। यह मृदुरेचक है। यदि रात्रि मे सोते वक्त इसे लिया जाय तो और भी गुण दिखाता है। मात्रा ❀ उम्र और रोगी की प्रकृति के अनुसार तीन से छः माशे तक। बारह से पाँच साल की उम्र तक डेढ माशे और पाँच से तीन वर्ष की उम्र तक चार या छः रत्ती तक की मात्रा देनी चाहिए। अनुपान ❀ आधा पाव गाय का दूध उबालकर शीतल करके लेना चाहिए। समय ❀ रात्रि में सोते वक्त या खाली पेट प्रातःकाल जुलाब की विधि से गरम जल से।

गन्ध-लोह कल्प

योग ❀ शुद्ध आँवलासार गन्धक और लोहभस्म पाँच-पाँच तोले लें। निर्माण ❀ दोनों को एक घंटे तक खरल कर रख लें।

गुण ❀ इसके सेवन से दृढ़मूल और कालिमायुक्त केश, दिव्यदृष्टि, शरीरपुष्टि और वीर्य की प्राप्ति होती है। यह शरीर को कल्प कराने वाला योग है, पर वर्ष पर्यन्त इसे सेवन करना चाहिए। मात्रा ❀ आठ रत्ती। अनुपान ❀ आठ आने भर शहद और एक तोला गौघृत तथा पाँच तोले त्रिफला क्वाथ। समय ❀ सुबह और शाम एक-एक मात्रा ले। व्यवहार ❀ औषधि को आठ आने भर शहद तथा एक तोले गौघृत में मिश्रित कर चाटना और ऊपर से त्रिफले का काढ़ा एक छटाँक पीना चाहिए। दो तोला त्रिफला और आधा सेर जल पकाने पर जब पाँच तोले शेष रह जाय तब छानकर व्यवहार में लाना चाहिए।

मागन्धी-त्रिफला योग

योग ❀ छोटी पिप्पली, आँवला, बड़ी हरे और बहेड़ा ये—पाँच-पाँच तोले लें। निर्माण ❀ चारों चीजों को कूट और कपड़छान कर ले।

गुण ❀ इससे शोष, श्वास, खासी, कफ का बुखार और पीनस के कष्ट मिटते है। मात्रा ❀ तीन माशे। अनुपान ❀ एक तोला शहद। समय ❀ दिन और रात्रि को भोजन के समय। भोजन करने के वक्त चाट लें फिर भोजन करें।

विभीतक लेह

योग ❀ बहेड़ा, बड़ी पीपल तथा सेंधा नमक—ये तीनों चीज पाँच-पाँच तोले लें। निर्माण ❀ सबको कूट और कपड़छान कर ले।

गुण ❀ इसके सेवन से स्वरभंग रोग मिटता है। मुख का फीका-पन, दम फूलना, खाँसी तथा मुख मे बलगम का बराबर बना रहना इत्यादि कफ और वात से सम्बन्धित मुख के विकार

नाश होते हैं। मात्रा ॐ तीन से छः माशे तक। अनुपान ॐ कांजी एक तोला। समय ॐ सुबह, दोपहर और सोते वक्त रात्रि मे एक-एक मात्रा लेनी चाहिए। व्यवहार ॐ एक पत्थर के या शीशे के पात्र मे कांजी के साथ चूर्ण को चटनी की भाति बनाकर चाट जाना चाहिए।

रजनी योग

योग ॐ हल्दी अढ़ाई तोले और भेंस का ताजा गोबर आधा सेर लें। निर्माण ॐ हल्दी को जल के साथ पीसकर बड़ी गोली या पिंड की तरह बना गोबर के बीच मे रख एक मृत-पात्र मे मंद आच से पकाकर उतार ले। सावधानी से गोबर के बीच से हल्दी की लुगदी निकाल लें।

गुण ॐ इसका उबटन लगाने से शरीर की कांति निखर उठती है। व्यवहार ॐ स्नान से पहले हल्का उबटन लगाकर कुछ काल इसे शरीर पर रहने दें फिर स्नान कर ले।

त्रिकशूलनाशक लेह

योग ॐ सोठ, रेंड़ की जड़ की छाल—ये दोनों पांच-पांच तोले, मिसरी, गाय का घी, गाय का दूध और वैतरा सोंठ का चूर्ण ये—चारों चीजें बीस-बीस तोले ले। निर्माण ॐ सोंठ और रेंड़ की जड़ की छाल को कूट छानकर दूध मे पकावे, जब खोआ से कुछ पतला या रबड़ी की तरह बन जाय तब उसमे घी डालकर भूनें। सुर्ख हो जाने पर मिसरी डालें। कुछ देर पक जाने पर सोठ का छपडछान चूर्ण बीस तोले डाल और मिलाकर उतार ले। इसका पाक अवलेह (चटनी) की तरह होना चाहिए।

गुण ॐ यदि ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए इस अवलेह का एक सप्ताह या एक पक्ष सेवन कर लिया जाय तो त्रिकस्थान की हड्डी और कमर के दर्द को यह निश्चय मिटाकर छोड़ता है। यह अत्यन्त बातनाशक अवलेह है। मात्रा ॐ दो से चार तोले तक। कमजोर और

कम उम्र वाले को एक तोला एक बार मे इसकी मात्रा देनी चाहिए। अनुपान ❀ गरम जल या गरम दूध। सुबह और शाम एक-एक मात्रा।

विशेष ❀ इस औषधि के सेवनकाल मे गेहूँ की रोटी, उरद की दाल, घी, अदरख, लहसुन, गरम जल तथा बादाम का सेवन करना, दूध को गाढ़ा कर उसमे चीनी डालकर सोते वक्त लेना पथ्य है। शीतल जल, चावल, मूँग, दही, ओस और तेज हवा में घूमना या झोके की हवा मे रहना इत्यादि अपथ्य है।

गर्भाशय की चिकित्सा के पाँच योग

यदि गर्भाशय मे विकार हो, तो उसका निदान कर लेने के बाद उसका उचित यत्न करना आवश्यक है। इससे शीघ्र कष्ट दूर हो जाते हैं। गर्भाशय के खास विकारो मे साधारणतः पुष्प की बादी, उसकी शीतता, उसका पित्त की गरमी से जल जाना और उसके भीतर मांस के अंकुरों का होना है। इन पाचों विकारों की शान्ति के लिये नीचे पाच योग दिये जाते हैं। ये—पांच योग अपने-अपने स्थान पर विशेष उपयोगी हैं।

पुष्पवायु-नाशक

योग ❀ काले तिल का तेल एक माशा और असल हीग चार रत्ती ले। निर्माण ❀ तेल मे हीग को घिसकर लेप की तरह बना लें। और उसमे एक साफ रुई के फाहे को तर कर लें। यह एक मात्रा है।

गुण ❀ इससे पुष्प की बादी मिट जाती है। स्त्री गर्भ-धारण के योग्य हो जाती है। उपयोग ❀ रात्रि मे शयन करते वक्त इस फाहे को मुत्राशय के भीतर (गर्भाशय के मुख पर) रखना और प्रात.काल उसे हटा देना चाहिए। इस प्रकार एक सप्ताह तक कर लेने से पुष्प की बादी मिटती और गर्भाशय के विकार दूर होकर वह शुक्र ग्रहण करने में समर्थ हो जाता है। कोई-कोई आचार्य इस फाहे को तीन दिनों तक ही प्रयोग करने और चौथे दिन पुरुष समागम की आज्ञा देते हैं। यदि तीन दिनो मे पुराने गर्भाशय के विकार न मिटे या बादी न दूर हो, तो दो-चार दिन और फाहे का प्रयोग कर लेना चाहिए।

मांसाङ्कुरवृद्धि—नाशक

योग ❀ स्याह जीरा और हाथी के दांत का बुरादा—ये दोनों चीजें चार-चार रत्ती और रेंड़ी का तेल डेढ़ माशे लें। निर्माण ❀ स्याह जीरा और हाथी दांत के बुरादे को खूब घोट लें और जब वह पाऊडर की भांति काफी महीन हो जाय तब उसे तेल में मिलाकर महीन कपड़े से छानें। इस तेल मे रुई का फाहा भिगोकर रख लें यह एक मात्रा है।

गुण ❀ इसके प्रयोग से गर्भाशय के अन्दर उत्पन्न मांस-अंकुर मिट जाते हैं। उपयोग ❀ रात्रि मे सोते वक्त फाहे को मूत्राशय में गर्भाशय के निकट रखना और प्रातःकाल हटा देना चाहिए। तीन-चार दिनों के बाद इसे बंद कर देना चाहिए।

पुष्पशीत—नाशक

योग ❀ असगन्ध, स्याह जीरा, घोड़बच और चौकिया सोहागा—ये चारों दो-दो रत्ती लें। निर्माण ❀ चारो चीजो को जल के साथ चंदन की तरह खूब महीन पीसकर पतला बना लें और उससे रुई के फाहे को तर कर लें।

गुण ❀ इसके प्रयोग से गर्भाशय के पुष्प की शीतता मिट जाती है और नारी गर्भधारण के योग्य हो जाती है। उपयोग ❀ रात्रि मे सोते वक्त फाहे को मूत्राशय के भीतर रखना और प्रातःकाल हटा देना चाहिए। इसी प्रकार नित्य एक सप्ताह तक फाहे का प्रयोग करना चाहिए। रोग पुराना होने की दशा मे पंद्रह दिनों तक प्रयोग करें।

दग्धपुष्प-नाशक

योग ❀ समुद्रफेन, सेंधानमक और लहसुन—ये तीनों चीजें चार-चार रत्ती और तिल का तेल डेढ़ माशे लें। निर्माण ❀ इन्हें बिना जल डाले ही चटनी की तरह पीसें और तेल मिला फाहा तर कर लें। यह एक मात्रा है। इसी प्रकार नित्य एक मात्रा बना लेनी चाहिए।

गुण ॐ इससे पुष्प का जल जाना रुक जाता है और स्त्री गर्भधारण योग्य हो जाती है। उपयोग ॐ रात्रि में सोते वक्त फाहे को मूत्राशय के अंदर रखना और प्रातःकाल हटा देना चाहिए। यह क्रिया तीन, पाँच या सात दिनों तक कर बंद कर देना चाहिए।

गर्भाशयच्युति–नाशक

योग ॐ कस्तूरी आधी रत्ती और केशर एक रत्ती लें। निर्माण ॐ किंचित जल के साथ चंदन की तरह पीसकर फाहे मे तर कर लें। यह एक मात्रा है। आवश्यकतानुसार नित्य इसी प्रकार एक-एक मात्रा बनाकर व्यवहार करना चाहिए।

गुण ॐ इसके उपयोग से अपने स्थान से गर्भाशय का उलट जाना रोग ठीक हो जाता है। उपयोग ॐ एक फाहा गर्भाशय में रखना और थोड़ी अपत्य पथ के ऊपर लेप करना चाहिए। एक सप्ताह के बाद यह क्रिया बंद कर देना चाहिए। पहले अपत्य पथ के ऊपर लेप लगाकर ही देखना चाहिए। यदि इसीसे लाभ हो जाय तब अन्दर फाहे को रखने की जरूरत नही, इससे लाभ न होने पर आवश्यक है।

अग्निज्वाला लौह

योग ॐ शुद्ध कलिहारी की जड़, शुद्ध गुग्गुल, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, हरे, बहेड़ा, आँवला और काले मुनक्के—ये नौ चीजे पाँच-पाँच तोले, तीक्ष्णलोहभस्म पैंतालीस तोले, बिजौरे नीबू का रस और त्रिफले का काढ़ा दो-दो सेर लें। निर्माण ॐ काष्ठ औषधियों को कूट और कपड़छान कर एक ओर रख लें, मुनक्के को महीन पीस लें और गुग्गुल को आधा पाव जल मे खौलाकर लेई की तरह बना ले, फिर सभी को खरल में रखकर घोटें। घंटेभर घुट जाने पर लौहभस्म भी डाल दें तथा बिजौरे नीबूओ का कपड़े से छना रस डालकर खरल करें। जब सभी रस खप जाय तब त्रिफले के काढ़े के साथ घुटाई करें। जब काढ़े सभी खप जांय तब दो-दो रत्ती की गोली बना और तेज धूप में सुखाकर रख छोड़ें

गुण ❀ बातरक्त पैरों के घुटनों तक जो व्याप्त हो, पूरे शरीर में फैल गया हो, साध्य या असाध्य हो तथा घोर रुप वाला भी क्यों न हो, इसके लगातार सेवन कर लेने से रोग निर्मूल हो जाता है। मात्रा ❀ दो रत्ती। यदि रोग विशेष बढ़ा हो, तो चार रत्ती। अनुपान ❀ मधु। मुनक्के के या त्रिफला के काढ़े से भी इसे लिया जाता है। कुछ चिकित्सक गिलोय के रस और मधु से देते हैं। समय ❀ सुबह शाम।

विशेष ❀ गुग्गुल और कलिहारी के शोधन की विधियाँ आयुर्वेदिक ग्रन्थो मे लिखी हैं। उन्ही से सहायता लेनी चाहिए।

गंधक योग

योग ❀ शुद्ध आंवलासार गन्धक, सफेद जीरा और बड़ी भटकटैया फलो के बीज—इन्हे तीन-तीन माशे लें। निर्माण ❀ जीरा और बड़ी भटकटैया के फलों के बीजो को कूट छानकर उसमे शुद्ध गंधक मिलावे और आधे घंटे तक एक साथ खरल कर रख लें।

गुण ❀ इस योग के सेवन से पथरी, शर्करा और मूत्रकृच्छ्र के कष्ट शीघ्र ही मिट जाते हैं। मात्रा ❀ नौ माशे। कमजोर रोगी को इसकी आधी मात्रा दे। अनुपान ❀ जल। यदि रोग विशेष बड़ा-चढ़ा हो तो आधा पाव जल मे एक तोले गुड़ और चार रत्ती जवाखार घोलकर उसी जल से इस योग को देना चाहिए। समय ❀ सुबह, दोपहर, शाम और सोते वक्त रात्रि में एक-एक मात्रा दे।

विशेष ❀ जितना आँवलासार गन्धक हो उतना ही गाय का घी छोटी कड़ाही में डाल ऊपर से गन्धक रखें और मंद आँच दें। पिघल जाने पर गंधक से आठ गुने दूध मे घृत सहित पिघले गंधक को डाल दें। इसे इस प्रकार करें। एक पात्र (मिट्टी) मे दूध रख ऊपर से एक पतला साफ कपडा बांध दे और उसी के ऊपर पिघले गंधक को उडेल दे। पाँच-दस मिनट के बाद गंधक को निकालकर टुकड़े कर लें और गरम जल से धो तथा कपड़े से पोछकर धूप मे सुखा लें। यह गंधक-शुद्धि की विधि है। दूध वाले कपड़े पर गन्धक का चूर्ण बिछाकर

एक ढक्कन से बंद कर उसकी संधि मे मिट्टी पोतकर गोहरे की आंच देने से गन्धक बुंदियो के समान दूध मे आ जाता है। इस प्रकार की शुद्धि भी होती है, पर यह साधारण शुद्धि होती है। शुद्धि रसायनसार ग्रन्थ मे है।

करंजादि पानक

योग ※ करंज के बीज, सोंठ और सहिजन के बीज—ये तीनों चीजें दो-दो तोले ले। करंज का क्वाथ दस तोले पृथक ग्रहण करें। निर्माण ※ तीन तोले बीज की गिरी को कुचलकर आधा सेर जल में काढ़ा पकावे। दस तोले शेष रहने पर उतार ले और कपड़े से छानकर उपर की औषधियों को घोलने के काम मे लावे। सोंठ, सहिजन के बीज और करंज की गिरी को कूटकर इसी काढ़े के साथ सिल पर पीसे और कपड़े से छान शरबत की तरह बना लें। ये तीन मात्राएँ हैं।

गुण ※ इसमे भीतर की विद्रधि (धीवा-फोड़ा) निःशेष हो जाती है। विद्रधि या अलसर की यह अच्छी औषधि है। मात्रा ※ एक बार में तीन तोले के अन्दाज। अनुपान ※ उक्त क्वाथ जिसमे चूर्ण को पीसकर शरबत बनाया गया है। यही औषधि मे मिला अनुपान है। समय ※ केवल प्रातःकाल पीना चाहिए, पर विशेष कष्ट की दशा मे सायंकाल और रात्रि मे एक-एक मात्रा लेना आवश्यक है।

विशेष ※ ऊपर के नुस्खे मे तीन खुराक औषधि बनाने को लिखा है, पर यदि केवल प्रातःकाल ही एक-एक मात्रा लेने का विचार हो, तो सोठ इत्यादि तीनो चीजे मिलित दो तोले लेकर एक तोले करंज के बीज को एक पाव जल मे काढ़ा बनावे और उसीसे पीस और उसी में घोलकर केवल प्रातःकाल काम मे लावे।

सारिवादि कषाय

योग ※ सारिबा कृष्ण, चिरायता, इन्द्रजौ, गिलोय, नागरमोथा, मूर्वा, देवदारू, सोंठ, कुटकी और पाठा—ये दसों चीजे पाँच-पाँच तोले लें। निर्माण ※ इन्हें कूटकर दरदरा कर लें और एक पात्र मे ढककर

रखें। बीच-बीच में धूप भी दिखा दिया करें। इसमें से दो तोले चूर्ण आधा सेर जल में पकावे और आधा पाव शेष रहने पर छानकर मिलावें। यह एक मात्रा है।

गुण ❀ इसके व्यवहार से नई प्रसूता स्त्री का विकृत दूध शुद्ध हो जाता है। मात्रा ❀ दस तोले तैयार काढ़ा। समय ❀ केवल प्रातःकाल एक मात्रा। व्यवहार ❀ जैसा कि निर्माण मे कहा है—दो तोले दवा आधा सेर जल मे पकावें। दस तोले शेष रहने पर छानकर कुछ-कुछ गरम रहे तभी केवल प्रातःकाल प्रसूता को पिलाना चाहिए। इसी प्रकार नित्य काढ़ा पकाकर एक सप्ताह तक देने से दूध की पूर्ण शुद्धि हो जाती है।

विशेष ❀ सभी सूखी चीजों के साथ गिलोय के टुकड़ों को भी कूटकर थोड़ी देर धूप में सुखा लेने से सभी सम्मिलित काढ़ा खुश्क हो जायगा और रखा रहने पर बिगड़ेगा नही।

वमननाशक चूर्ण

योग ❀ धाय के फूल, बेलगिरी, धनिया, इन्द्रजौ, लोधपठानी और सुगन्धबाला—ये छहो औषधियाँ पाँच-पाँच तोले लें। निर्माण ❀ कुछ घंटे तक औषधियों को धूप मे सुखाकर कूटें और महीन होनेपर कपड़े से छान लें।

गुण ❀ इसके प्रयोग मे सभी प्रकार के (वातज, पित्तज तथा कफज इत्यादि) वमन अच्छे होते हैं। मात्रा ❀ तीन माशे। बारह से तीन वर्ष के बच्चे को डेढ़ माशे तथा तीन से एक वर्ष के बच्चे को आठ रत्ती से चार रत्ती तक दे। अनुपान ❀ मधु, शीतल जल या वमन की विशेष दशा मे पीपल वृक्ष की छाल को जलाकर उसे जल मे बुझा दे और कपड़े से छानकर उसी जल के साथ उक्त चूर्ण को दें। समय ❀ साधारण अवस्था मे सुबह-शाम और रोग की बढ़ी हुई दशा मे तीन-तीन या चार-चार घंटे एक-एक मात्रा दे। दिन रात मे चार-पाँच मात्रा तक इसे दे सकते है।

विशेष ॐ इस मृदु औषधि को एक वर्ष या उससे भी कम उम्र के शिशु को दो से चार रत्ती तक शहद या माँ के दूध मे मिलाकर देने से शीघ्र वमन करना मिट जाता है और बच्चा आराम से सोता है। दूध पीते हो यदि बच्चा कय कर दे तो उस अवस्था मे भी यह चूर्ण अधिक लाभदायक सिद्ध हुआ है।

अग्निमुख कषाय

योग ॐ चित्रक की जड़ की छाल, अजवाइन, सौठ, पीपल, चव्य, गजपीपल-मिलित दो तोले ले। निर्माण ॐ छहों चीजों को दरदरा कूटकर आधा सेर जल मे रात्रि के वक्त भिगों दे। प्रातःकाल काढ़ा बनावे। आधा पाव शेष रहने पर छान ले। यह एक मात्रा है। इसमें एक साल का पुराना गुड़ दो तोले मिला ले।

गुण ॐ इसके व्यवहार से गर्भाशय मे अटका हुआ गर्भ खण्ड बाहर निकल जाता है और रक्त का स्राव बंद हो जाता है। मात्रा ॐ इस क्वाथ के तैयार होने के बाद को मात्रा दस तोले है। अनुपान ॐ क्वाथ में पड़ा गुड ही इसका अनुपान स्वरूप है। समय ॐ प्रातःकाल केवल एक मात्रा।

विशेष ॐ पाँच-सात रोज तक इसे पी लेने के बाद इसका व्यवहार बंद कर देना चाहिए।

नासूर का मरहम

योगॐ कत्था लाल, फिटकरी और तूतिया—ये तीनों चीजें दो-दो तोले, राल दस तोल और गाय का घी पन्द्रह तोले लें। निर्माण ॐ कत्था, फिटकरी तथा तूतिये को कूट-छान लें। इसे महीन पीस और मोटे कपड़े से छानें फिर घी और राल एक मे मिलाकर गरम करें पिघल जाने पर पहले एक बार इसे महीन कपड़े से छान लें, क्योकि राल में गन्दगी रहती है। छानने से वह निकल जायगी। अब इस में पिसे-छने चूर्ण को मिलाकर एक खरल में दो-चार घण्टे खरलकर

ढक्कनदार पात्र में इस मरहम को रख लें।

गुण ❀ इसके प्रयोग से नासूर, पुराने घाव या सड़े हुए फोड़े ठीक हो जाते हैं। व्यवहार ❀ नीम की पत्तियों को उबालकर उसी जल से घाव या नासूर को धो और साफ रूई से जल सुखाकर एक कपड़े की पट्टी पर इस मरहम को जरा मोटी तह फैला लें और घाव पर चिपका दे। दूसरे दिन पूर्व विधि से ही पट्टी पर मरहम लगाकर घाव पर रखें।

बनिता पाक

योग ❀ तीखुर एक सेर, चीनी पाँच सेर, कपूर और छोटी इलाइची के दाने दोनों दो-दो तोले, केसर, लौंग और जायफल—ये तीनों चीजें एक-एक तोले और कस्तूरी चार रत्ती लें। निर्माण ❀ तीखुर को महीन कपड़े मे छानकर पृथक् रख लें, कपूर, केसर और कस्तूरी को एक साथ छोटी खरल मे खरलकर ढककर सुरक्षित कर ले, फिर लौंग, इलायची और जायफल को कूट-छानकर रखें। इसके बाद सवा सेर जल मे चीनी को घोलकर छानें और लोहे की कड़ाही में उसकी चाशनी तैयार करें। जब वह जमने योग्य हो जाय तब उसमें तीखुर तथा अन्य पिसी-छनी औषधियाँ मिलाकर उतार ले और अढ़ाई-अढ़ाई तोले का लड्डु बनाकर रख ले।

गुण ❀ स्त्रियों के प्रसव के बाद यदि इसका सेवन कराया जाय तब इसके प्रभाव से प्रसूता के शरीर के भीतर की शीत, वायु, बलगम, दुर्बलता तथा दूध की कमी दूर होती है। इसका स्वभाव किंचित् उष्ण, रक्त की चाल को गति देने वाला, पतले मल को बाँधने की शक्ति से युक्त, अरुचि-नाशक, जुकाम या अन्य कफ आदि कारणों से उत्पन्न ज्वरांश का निवारक तथा शरीर में स्फूर्ति उत्पादक है। मात्रा❀ एक से अढ़ाइ तोले तक। अनुपान ❀ एक पाव गुनगुना दूध। समय ❀ सुबह और शाम को एक-एक मात्रा।

यकृतनिवारक लेह

योग ❀ गन्ने का रस सवा सेर, ताजी मूली का रस एक सेर, बबूल की पत्तियों का रस आधा सेर, तुलसी की पत्तियों का रस पाँव छटाँक, अदरख और लहसुन का रस दोनों अढ़ाई अढ़ाई छटाँक, कथ का गूदा तीन पाव, सोंठ पीपल और कालीमिर्च-ये तीनों चीजें दस-दस तोले, जवाखार, सज्जीखार, सांभर नमक, सेंधानमक और काला-नमक—ये पाँचों चीजें पाँच-पाँच तोले ले। निर्माण ❀ एक मजबूत मिट्टी के पात्र में गन्ने और मूली इत्यादि पाँचो चीजों का रस डालकर उसी मे सिल पर खूब महीन पीसे कैथ के गूदे को मिला दे। फिर अन्त मे सोंठ से लेकर कालानमक तक आठों सूखी चीजो को कूट और कपड़े से छानकर मिट्टी के पात्र वाली पतली चीज में मिला, पात्र के मुख को मोटे कपड़े से बाँध दे। उस पात्र को एक सप्ताह तक धूप मे रखे। आठवें दिन शीशे या चीनी मिट्टी के पात्र मे इस औषधि को ढककर रख लें।

गुण ❀ इसके सेवन से यकृत के दोष, प्लीहा की वृद्धि तथा उनके कारण उत्पन्न अरुचि, मंदाग्नि, ज्वर, पेट के भीतर वायु का बनना, नींद की कमी, अन्न को देखते ही उससे घृणा, मुख के स्वाद का बिगड़ना, पेट का बड़ा होता जाना, जुकाम, खाँसी, किसी अङ्ग में दर्द का अनुभव होना तथा मल का सूख जाना इत्यादि उदर एवं रक्त की कमी होने के कारण उत्पन्न विकार मिट जाते हैं और पुनः शरीर मे रक्त की वृद्धि होने लगती है। मात्रा ❀ छः माशे से एक तोले तक। समय ❀ सुबह, दोपहर, शाम और सोते वक्त रात्रि मे एक-एक मात्रा। अनुपान ❀ चम्मच से लेकर यों ही चाटना चाहिए।

विशेष ❀ यह तीव्र पाचन गुण सम्पन्न औषधि है। जिगर तिल्ली के होनेवाले विविध विकारों के शमन मे यह योग विशेष उपयुक्त है। जिगर और तिल्ली की वृद्धि काल में सवारी पर चढ़ना, दिन में सोना, शीतल जल का पीने और स्नान मे व्यवहार तथा सभी प्रकार के कफ तथा वातकारक आहार-विहारों से विशेष परहेज रखना आवश्यक है।

रक्त पित्तशामक हिम

योग ❀ आम, जामुन और अर्जुन—इन वृक्षों की सूखी छाल डेढ़-तोले तथा जल २४ तोले ले। निर्माण ❀ तीनों चीजों को कूटकर चूर्ण बना लें और रात्रि के समय एक मृतपात्र में अन्दाजन पाँच छटाँक जल डालकर उसी से चूर्ण को घोल दें और ढककर पड़ा रहने दे। प्रातः-काल मसलकर कपड़े से छान ले। यह एक मात्रा है।

गुण ❀ इकके सेवन से रक्त पित्त, प्रदर तथा बवासीर के कारण रक्तस्राव बंद हो जाता है। रक्त-पित्त के कारण हृदय की दुर्बलता, खांसी तथा अन्य पित्त के विकार आदि कष्ट दे रहें हों तो उन्हे भी यह फांट दूर कर देता है। मात्रा ❀ एक छँटाक से पांच छँटाक तक। अनुपान ❀ शहद एक तोला। समय ❀ प्रातःकाल। छने फांट में ही शहद को मिला लेना चाहिए। व्यवहार ❀ प्रातःकाल मुख की शुद्धि कर लेने के बाद इस फांट का सेवन करना चाहिए।

विशेष ❀ यदि औषधि अनुकूल हो रही हो तो एक मात्रा के बजाय दो मात्रा रात्रि मे भिगों दे। और काम मे लावें।

उदरक्रिमिघातिनी बटिका

योग ❀ काली निशोथ, पलास के बीज, खुरासानी अजवाइन, कबीला और बायविडंग—ये पाँचो काष्ठ औषधियाँ पाँच-पाँच तोले लें। निर्माण ❀ थोड़ी देर धूप मे सुखा लेने के बाद कूट-छानकर चूर्ण बना लें और कपड़छान कर बंद पात्र मे रख लें। यदि बटिका बनानी हो तो चूर्ण को खरल मे डाल थोड़े जल के साथ घोटे और चार-चार रत्ती की बटिका बनाकर सुखा लें।

गुण ❀ यह उदर में रहने वाली महीन, मझोली तथा बड़ी कृमि-समूहों को नष्ट कर देती है। यह मृदुरेचक भी है। उदर मे बनने वाली वायु का अनुलोमक गुण से यह युक्त है। मात्रा ❀ चार रत्ती से तीन माशे तक। पूरी उम्र वाले को तीन माशे, बारह से चार वर्ष तक की आयु वाले बच्चे के लिए इसकी चार रत्ती की मात्रा है। अनुपान ❀

मट्ठा। समय ❀ प्रातःकाल और सोते वक्त रात्रि मे। सेवन विधि ❀ पहले एक तोले के अन्दाज गुड खाकर उससे चार-पाँच मिनट के बाद एक मात्रा औषधि सेवन करें और ऊपर से अनुपान में मट्ठा लें।

जातीफलादि बटी

योग ❀ जायफल, लौंग, छोटीपीपल, निर्गुण्डी के पत्र, वत्सनाभ विष, सोंठ, धतूरे के बीजों की गिरी, हिंगुल, सोहागा—ये नौ चीजें पाँच-पाँच तोले लें। निर्माण ❀ निर्गुण्डी के पत्र ताजा लें, पर तौल मे दुगुना (दस तोले) लें, वत्सनाभ विष, धतुरे के बीज तथा हिंगुल इन तीनों चीजों की 'रसायनसार' ग्रन्थ की विधि से शुद्धि कर लें तथा सोहागे को आग पर फुलाकर लावा तैयार कर लें। हिंगुल सोहागा, विष और धतूरे के बीजो की गिरियों को पृथक-पृथक कूट और कपड़े से छानकर रखें। जायफल तथा लौंग इत्यादि काष्ठ औष-धियों को एक साथ कूट और कपड़छन कर लें। निर्गुण्डी के पत्रो को सिल पर खूब महीन पीस लें। इतना सब हो जाने पर एक पत्थर के खरल मे सभी को रख ऊपर से जम्बीरी नींबू का कपड़े से छना रस डालकर घोटाई शुरू कर दे। जब सभी रस समाप्त हो जाय और खरल की पीठी महीन होकर गोली बनाने योग्य हो जाय तब एक-एक रत्ती की बटी बना और धूप मे सुखाकर रख लें।

गुण ❀ इसका प्रभाव पाचनमय है। अजीर्ण की विकृत अवस्था को भी यह बटी अपने प्रभाव से शीघ्र सुधारने मे पूर्ण समर्थ है। यदि अजीर्ण की अवस्था मे शरीर के किसी भाग मे ऐंठन हो तो उसे भी यह दूर कर देती है। अजीर्ण विशेषतः उसी अवस्था मे अति कष्टदायक होता है जब रोगी के पेट की अग्नि ज्यादा मंद हो। इस बटी के घटक द्रव्य ऐसे हैं जो मंदाग्नि की दशा को सुधारने के गुणधर्म से पूर्ण हैं। मात्रा ❀ यद्यपि इसकी पूर्ण मात्रा दो रत्ती की है; पर इस बटी में वत्सनाभ विष तथा धतूरे के बीज सदृश विष तथा उपविषों का भी योग है, अतएव उष्ण, मादकता प्रभाव सम्पन्न तथा तीव्र होने के कारण

सुकुमार, दुर्बल तथा हीन प्रभाव वाले रोग की अवस्था में प्रथम एक रत्ती की ही मात्रा इसकी देनी चाहिए। यदि रोग बढ़ा, रोगी विशेष शक्ति सम्पन्न तथा प्रकृति कफवातात्मक हो तो इसकी पूरी दो रत्ती की मात्रा देने मे कोई हर्ज नहीं है। समय ❀ चार-चार घंटे पर दिन-रात मे चार-पाँच मात्रा तक। अनुपान ❀ गरम जल, आदी का रस, मधु, अर्क अजवाइन, अर्क सौफ तथा उष्ण जल मे नीबू का रस एक तोले निचोड़कर। इन अनुपानों से रोग की अवस्था के अनुसार इसे ग्रहण किया जाता है।

कपर्दक रस

योग ❀ रससिन्दूर पाँच तोले, कपास के फूलों का रस दस तोले तथा गांठदार पीली कौड़ियां बीस तोले लें। निर्माण ❀ रससिन्दूर को कपास के रस में घोटकर सुखा ले और उसे पीली कौडियों के भीतर भर दें। कौड़ियो के मुखों को बकरी के दूध मे घोटकर बनाये गये लेप से लेपन कर बंद कर दे। छोटे-छोटे मजबूत मूषे (घड़िये) में उन कौडियों को रख मूषे का मुख भी रुद्ध कर उन्हें एक मिट्टी की हंडी में रखें और हंडी में ढक्कन लगा उसे भी कपड़मिट्टी कर बंद कर दें और उसे चूल्हे पर आच दें। आंच देते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि हंडी के भीतर से रससिन्दूर का मुख्य घटक पारद न उड़ जाय, अतएव कौड़ियों के मुखों, मुषाओं के मुखों तथा हंडी के ऊपर के ढक्कन की कपड़मिट्टी इस प्रकार से करें ताकि कही भी संधि न रहे। इसके अतिरिक्त आच देते वक्त यह ध्यान रहे कि रससिन्दुर के दूसरे घटक गंधक का जारण होने पर गंध आने लगता है। जब गन्ध विशेष रुप से चतुर्दिक् फेलने लगे तब समझना चाहिए कि गन्धक का विशेष अंश का जारण हो रहा है ऐसे ही मौके पर हंडी को चूल्हे से उतार शीतल कर ले। फिर कौड़ियों को निकाल उसके भीतर की औषधि सहित उन्हें खरल कर लें। महीन होने पर औषधि की तौल की दूनी (दस छटाँक) काली-

मिर्च के कपड़छान चूर्ण का मिश्रण कर लें। अच्छा तो यह होगा कि कालीमिर्चों के चूर्ण के साथ भी औषधि को घंटे-दो घंटे खरल कर लें। इसे बोतल मे बंद कर सुरक्षित कर लें।

गुण ❀ इसके प्रयोग से रक्त-पित्त का शमन होता है। रक्त पित्त की वह अवस्था जिसमे क्षय का भी अनुबंध हो या क्षयरोग के कारण बलगम मे रक्त के छीटे दृष्टिगत हों, रोगों का पाचन ठीक से न हो रहा हो, बराबर नवीन बलगम बनता रहता हो, मध्याह्नकाल के पश्चात् ज्वरांश होता हो तथा निर्बलता भी हो तो ऐसी दशा में यह कपर्दक रस विशेप अनुकूल होता है। मात्रा ❀ एक रत्ती। अनुपान ❀ गाय का घी छः माशे। समय ❀ प्रातःकाल। विशेष अनुपान ❀ यदि रक्त-पित्त के कारण रक्त का स्राव होता हो तो पके गूलर के एक तोले रस मे एक तोले गाय का घी मिलाकर औषधि सेवन के बाद पिलाएं।

मुखपाक पर गरगरा

योग ❀ दारूहल्दी, बड़ी हरें, बहेड़ा, आँवला, गिलोय, काले मुनक्के, चमेली के पत्ते और पाठा–ये आठों चीजे आठ-आठ आने भर, जल बत्तीस तोले तथा शहद डेढ़ तोले ले। निर्माण ❀ आँवला, हरें और बहेड़े की गुठली निकालकर वजन करें, गिलोय ताजी लें; पर लिखे अनुसार ही तौल लें, चमेली की पत्तियाँ ताजी ले; पर तौल से दूनी लें। सभी औषधियों को जवकुटकर जल के साथ रात्रि में भिगो दें। प्रातःकाल काढा बनाकर छान लें। चौथाई भाग अर्थात् आठ तोले काढ़ा शेष रहने पर छानें। शीतल होने पर शहद मिला लें। यह एक मात्रा है।

गुण ❀ इसके प्रयोग से तीन-चार दिनों के अंदर ही मुख और कंठ इत्यादि के छाले, जीभ के छाले तथा पाक होना इत्यादि विकार नष्ट हो जाते है। उपयोग ❀ प्रातःकाल तैयार काढ़े मे से थोड़ा-थोड़ा मुख मे रख गरगरा करें। साधारणतः इस काढ़े को चार बार में मुख में रखें और गरगरा करें। मुख मे काढ़े को लेकर उसे कम से

कम एक-दो मिनटों तक रखने के पश्चात् फेकें और पुनः दूसरा गरगरा करें। जब छाले ठीक हो जायें तब गरगरा करना रोक दें।

बहेड़े का अवलेह

योग ❀ बहेड़े का बक्कुल, बड़ीपीपल और सेंधानमक ये—तीनों चीजें पांच-पांच तोले लें तथा आरनाल (गेहूँ से बनी कांजी) पन्द्रह तोले लें। निर्माण ❀ तीनों सूखी चीजो को कूट और कपड़े से छानकर एक पत्थर या मिट्टी के पात्र में रखें और उसमें आरनाल मिलाकर रख लें।

गुण ❀ इसके सेवन से गले के रोग विशेषकर स्वरभंग मिटते हैं। यह जिह्वा और कंठ का शोधन भी करता हैं। मात्रा ❀ तीन से छः माशे तक। समय ❀ सुबह और शाम को एक-एक मात्रा। अनुपान ❀ गोदुग्ध या आँवला का रस पाँच तोले।

विशेष ❀ औषधि चाटकर उसके दो मिनट के बाद दूध का अनुपान लेना चाहिए। यदि दूध न लेना हो तो ताजे आँवले का एक छटाँक रस या एक-दो आँवले के मुरब्बे का ही अनुपान रूप में उपयोग कर लेना लाभदायक होता है। स्वरभंग रोग की शांति के लिए, यदि रोग नया हो तो तीन दिनो तक और पुराने रोग में एक सप्ताह या एक पक्ष तक औषध का सेवन और स्वरभंग रोग मे कथित पथ्यों का आचरण तथा अपथ्यों का त्याग अपेक्षित है।

सार सप्तक

योग ❀ गूलर की छाल, पीपल की छाल, बरगद की छाल, खेर की छाल, अर्जुन की छाल, रोहिडे की छाल तथा पलाश की छाल—ये सातों प्रकार की छाल दस-दस तोले लें एवं जल सात सेर पृथक् रख लें। सोंठ, पीपल, कालीमिर्च और निशोथ दस-दस तोले पृथक ग्रहण करें। निर्माण ❀ सातों छालों को जबकुटकर रात्रि में भिगो दें। पात्र मिट्टी या कलई का लेना चाहिए। प्रातःकाल इसका काढ़ा बनावें। जब चौथाई (साढ़े तीन सेर) काढ़ा शेष रहे तब काढ़े को

मोटे वस्त्र से छान जल ले लें और सीठी पृथक कर दे। इस छने हुए काढ़े को पुनः कलईदार पात्र मे पकावें और कूंचे से वीच-वीच में चलाते भी रहें। जब रबड़ी की तरह गाढ़ा हो जाय तव उसमें सोंठ से निशोथ तक की चारो चीजों के कपड़छान चूर्ण को डालकर अच्छी तरह मिलावें। पांच-सात मिनटों तक मिला लेने के पश्चात् उतार लें।

गुण ॐ इससे सम्पूर्ण हृदय रोग और उसके साथ रहने वाले कफ, वात तथा कोष्ठबद्ध के विकार एवं यकृत की कमजोरी इत्यादि अन्य कष्ट भी मिट जाते है। मात्रा ॐ छः माशे से एक तोले तक। अनुपान ॐ उष्ण जल। समय ॐ प्रातःकाल या रात्रि में सोते वक्त केवल एक मात्रा नित्य। यदि रोग कुछ बढ़ा हो तथा कोष्ठबद्ध भी हो तो एक मात्रा प्रातःकाल और एक मात्रा सायंकाल मे व्यवहार करे। कमजोर रोगी को छः माशे की मात्रा देना उचित है।

विशेष ॐ निर्माण होने के पश्चात् इस औषधि को धूप मे रखना चाहिए। सूख जाने पर चूर्ण के तुल्य व्यवहार करना उचित है। जब तक गीली औषधि रहे तब तक चटनी के समान उपयोग करें। बिना धूप दिखाये कुछ दिवसो के पश्चात् इसमे फफूंद आने लगती है।

वचाद्य घृत

योग ॐ बालबच, कचूर, हल्दी, दारुहल्दी, इन्द्रजो, नागरमोया, हर्रे, अतीस, सोंठ—ये नौ चीजें अलग-अलग चार-चार तोले लें तथा बावन सेर जल ग्रहण करें। गोघृत एक सेर दस छटांक, मधु सिद्ध घृत से तीन गुना, सोंठ, पीपल और कालीमिर्च आठ-आठ तोले ले। निर्माण ॐ काष्ठ औषधियों को पृथक-पृथक् दरदरा करें और इनमे से आठ आठ आने भर तौल मे लेकर पृथक् एक मे मिलाकर रख लें तथा शेष सब चीजों को कलईदार पात्र मे ऊपर लिखी तौल के अनुसार जल के साथ भिगों दें। रात भर भीगने के पश्चात् प्रातःकाल उसका काढ़ा बनावे। चौथाई (तेरह सेर) शेष रहने पर छान लें और सीठी पृथक् कर दे। अब आठ-आठ आने भर रखी चीजों को थोडा जल

मे घंटे-दो घंटे भिगोंकर सिल पर भांग की तरह पीस एक गोला-सा बना लें। सोंठ इत्यादि तीनों चीजों को कूट और मोटे वस्त्र से छान पृथक् ही रखें। इसके पश्चात् घृत को लोहे की कड़ाही में तप्त करें। जब धूम निकलने लगे तब उसे नीचे उतार लें। ठंढा होने पर (जरा-जरा गरम रहे तभी) पुनः आग पर चढ़ावे और उसमे छानकर रखे काढ़े तथा पिसी औषधियों के गोले को डाल दे तथा मंद-मंद आँच पर पाक करें। जल का हिस्सा खत्म होने पर उतार लें और कुछ गरम रहे तभी कपड़े से घृत को छानें और उसी वक्त उसमे सोठ तथा पीपल इत्यादि के छने चूर्ण डालकर ढक दें, शीतल होने पर शहद मिला दे।

गुण ः इसके सेवन से गण्डमाला, अपची तथा शरीर के ऊपरी हिस्से, खासकर गर्दन से ऊपर के भाग मे उत्पन्न ग्रन्थियो का शमन होता है। जिन कारणों से ग्रन्थियों का आविर्भाव होता है उन कारणों को भी यह घृत अपने प्रभाव से नष्ट कर डालता है। मात्रा ः आठ आने से एक तोले तक। अनुपान ः गरम गुनगुना किया दूध। समय ः प्रातः और सायंकाल एक-एक मात्रा।

विशेष ः बंगाल और बिहार के वैद्य घोड़बच को ही खाने के काम मे लाते हैं, पर उत्तर प्रदेश इत्यादि स्थानों मे बालबच को खाने के काम मे लेते हैं।

चोपचीनी का तेल

योग ः चोपचीनी आधा सेर और जल आठ सेर लें। तिल का तेल एक सेर ग्रहण करें। निर्माण ः चोपचीनी को जौकुट कर कलई-दार पात्र मे भिगो दे। गरमी के दिनों मे चौबीस घंटे और जाड़े के मौसम मे तीन दिनो तक भिगोवे। फिर उसका काढ़ा पकावे। जब एक सेर जल शेष रहे तब उसे उतारकर छान ले। अब एक सेर काले तिल के तेल को लोहे की कड़ाही मे तप्त करें। तेल मे जब धुआँ उठने लगे तब दो-चार नीबू के पत्ते डालकर देखे। तप्त तेल में पत्ते को

डालते ही आवाज शुरू होगी और पत्ते तेल में चक्कर काटकर ऊपर आ जायेंगे। चिमटे से पत्ते को लकर चुटकी से मसलें, जब पापड़ की तरह वो चूर हो जायँ तब तेल को चूल्हे से उतारकर ठंढा कर लें और पुन: उसे चूल्हे पर चढ़ाकर उसमे चोपचीनी के काढ़े को डाल दें। मन्द-मन्द आँच लगने के वास्ते थोड़ी आँच पर तेल का पाक करें। पक जाने पर तेल को उतार ले और शीतल होने पर मोटे कपड़े से छानकर रख ले।

गुण ● इससे शरीर के प्रत्येक जोड़ो मे होने वाली पीड़ा, पीठ की पीड़ा तथा उस पीड़ा मे जो उपदंश के विष के कारण शरीर विकृत होने से होती है, विशेष लाभ होता है। व्यवहार ● दिन-रात मे चार-बार दो-तीन घंटे के अन्तर से इस तेल की मालिश करनी चाहिए।

चित्रकादि चूर्ण

योग ● चित्रक की जड की छाल, सोठ, शुद्ध हीग, पीपल, पीपरा-मूल, चव्य, अजवाइन, कालीमिर्च—ये आठों चीजें एक-एक तोल, सज्जीक्षार, यवक्षार, सेंधानमक, समुद्रनमक, विडनमक, साँभरनमक तथा सौचलनमक—ये पाँचो नमक आठ-आठ आने भर तथा खट्टे अनार का रस बाइस तोले ले। निर्माण ● हीग को घी मे भून लें और पीसकर पृथक रखें, पाँचों नमकों को पीसकर पृथक तथा सभी काष्ठ औषधियो को एक साथ कूट और कपडछान कर लें। एक पत्थर के खरल मे सभी चीजो को डाल, कपड़े से छने अनार के रस में भिगो दें। दो-चार घटे के पश्चात् घंटे-दो घंटे खरलकर धूप मे उसे सूखने दें। सूख जाने पर इस चूर्ण को काँच के ढक्कनदार पात्र मे रख लें।

गुण ★ यह उत्तम पाचन गुण से युक्त, आम, ग्रहणी तथा गुल्म का नाशक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक एवं विकृत कफ का निवारक है। मात्रा ❀ तीन से छ: माशे तक। अनुपान ❀ उष्ण जल, अर्क अज-वाइन, अर्क सौफ तथा आवश्यकतानुसार शीतल जल मे कागजी नीबू निचोड़कर तैयार किये जल के साथ। समय ❀ साधारण अवस्था में

सुबह और शाम को और विशेष अवस्था में चार-चार घंटे के अन्तर से दिन-रात में चार-पांच मात्रा तक। बारह से पांच वर्ष की उम्र तक डेढ़ माशे और पांच से दो वर्ष के लिए दो रत्ती की मात्रा दें।

यकृतशूलहर चूर्ण

योग ● छोटी पिप्पली, कालीमिर्च, सोंठ, हींग, अजवाइन, सौंफ, जायफल, सुहागा, जवाखार, सोवर्चलनमक, विडनमक, सामुद्रनमक, सांभरनमक, सधानमक तथा शंखभस्म—ये पन्द्रहों चीजें पाँच-पाँच तोले लें। निर्माण ● छोटी पिप्पली को बकरी के दूध मे भिगोवें। रात भर भीगने के बाद सुबह उबालें। चार-छः उफान जब दूध में आ जाय तब चूल्हे से उसे उतारकर गरम जल से पिप्पली को धो और धूप मे सुखा ले। हीग को घी मे भून लें। सुहागे के टुकड़ों को गोहरे की आग पर रख लावा बना ले। काष्ठ औषधियो को एक साथ नमको और क्षार इत्यादि को एक मे तथा हीग और शंखभस्म को एक साथ कूट और कपडछानकर सभी को अच्छी प्रकार से मिला लें।

गुण ● इसका प्रभाव उदर, यकृत, आमाशय, अन्नाशय तथा तीनो धातुओ—कफ, पित्त और वात पर पड़ता है। यह जोड़ों मे जमे आम को सुखाता, उसका पाचन करता, जिगर के दर्द को ठीक करता, परिणाम एवं अन्नद्रव शूल मे विशेष लाभ पहुँचाता तथा त्रिदोषज शूल को नष्ट कर डालता है। मात्रा ● एक माशा। अनुपान ● उष्ण जल, अर्क अजवाइन, अर्क सौफ, जौ का माड़, सोठ का काढ़ा तथा रास्ना पंचक क्वाथ—ये अनुपान पृथक्-पृथक् रोगो की स्थिति और दोषों क तार-तम्य के अनुसार चिकित्सक को समय पर कल्पना कर उपयोग मे लाने के है। समय ● साधारण अवस्था मे सुबह और शाम को एक-एक मात्रा तथा विशेष अवस्था मे चार-चार घंटे के अन्तर से इस चूर्ण का प्रयोग करना चाहिए। साधारणत. दिन-रात मे चार-पाँच मात्राएँ तक दी जा सकती हैं।

विशेष ● जिन-जिन रोगो में इसके प्रयोग लिखे हैं उनके पथ्य और उपचार इत्यादि कर्मों का पालन भी अपेक्षित है।

पित्त के बुखार पर काढ़ा

योग ❀ हाऊबेर, पित्तपापड़ा, लालचंदन, सोंठ, खस तथा नागर-मोथा—ये छहों चीजें आठ-आठ आने भर लें जल आधा सेर ग्रहण करें। निर्माण ★ सभी चीजों को कुचलकर रात्रि मे जल के साथ भिगो दें। प्रात:काल काढ़ा पकावे, आधा पाव शेप रहने पर उतार-कर छान ले। यह एक मात्रा है।

गुण ★ इसके प्रयोग से पित्त ज्वर तथा उसके उपद्रव इत्यादि शीघ्र शान्त हो जाते हैं। विशेषकर मूर्च्छा, प्यास, दाह तथा स्वेद निर्गम, इन्हे यह दूर करता है। यदि पित्त की वृद्धि उग्र रूप में होती है तब उसमे मूर्च्छा का होना भी एक स्वाभाविक लक्षण होता है। ऐसी अवस्था मे भी यह काढ़ा विशेप लाभदायक है। व्यवहार ★ केवल प्रात:काल एक मात्रा बनाकर रोगी को दें। विशेष आवश्यकता होने पर सायंकाल भी इसकी एक मात्रा बनाकर दी जा सकती है। सायंकाल मे इसे देना हो तो दोपहर मे ही इसकी एक मात्रा को जल मे भिगोना चाहिए।

इन्द्रयवादि तैल

योग ★ काले तिल का तेल सवासेर, काँजी पाँच सेर, मजीठ तीन तोले तथा इन्द्रजौ दस छटांक ले। निर्माण ★ मजीठ और इन्द्रजौ को कूटकर छान लें। इस चूर्ण को मोटी चलनी से दरदरा छाने और जल मे घंटे-दो घंटे भिगों दे। इसे सिल पर पीसकर पीठी की शक्ल मे बना लें। अब तिल के तेल को लोहे की कडाही मे तप्त करें। खूब धूम्र निकलने लगे तब उसमे दो-चार नीबू के पत्ते डाले। जब वह पापड़ की तरह भुन जायें तब समझे कि तेल तप्त हो गया है। उस काल मे तेल को उतारकर ठंढा कर लें। कुछ गरम रहे तभी उसे पुन: चूल्हे पर रख पिसा हुआ चूर्ण—जो पीठी की शक्ल मे है—तेल मे डालें और ऊपर से काजी डालकर मन्द आँच मे पाक करे। जब काजी की तरी जल जाय तब उसे नीचे उतारकर शीतल करें और मोटे कपड़े से छानकर रख लें।

गुण ★ यदि इस तेल की मालिश की जाय तो यह शरीर के अङ्ग-अङ्ग को प्रफुल्लित कर देता है। दारुण दाह युक्त ज्वर में इसका व्यवहार करने से दाह और ज्वर दोनों की शान्ति होती है। व्यवहार ★ दिन-रात मे थोड़ी-थोड़ी देर के अन्तर से तीन-चार बार इसकी मालिश करनी चाहिए।

त्रिफलादि क्वाथ

योग ❀ आवला, बड़ी हर्रें, बहेड़ा, देवदारू, नागरमोथा, मूसाकानी तथा सहिजन की जड की छाल—ये सातो चीजे आठ-आठ आने भर ले। जल दस छटाँक ग्रहण करे। वायविडंग और पिप्पली एक-एक माशा ले। निर्माण ❀ वायविडंग और पिप्पली के अलावा सभी चीजो को कुचलकर रात्रि मे जल के साथ भिगो दें। प्रातःकाल काढ़ा करें। दो अढ़ाई छटाक शेप रहने पर उतारकर छाने और उसमे उपर्युक्त पिप्पली और वायविडंग का महीन चूर्ण डाल दे यह एक मात्रा है।

गुण ❀ इसके एक सप्ताह तक प्रयोग कर लेने से उदर की छोटी और बड़ी कृमि दूर हो जाती है। व्यवहार ❀ केवल प्रातःकाल इसकी एक-एक मात्रा व्यवहार मे लाना चाहिए।

सिद्धार्थ उद्वर्तन

योग ❀ सफेद सरसों, कडआ कूठ, चकवड़ के बीज, काले तिल तथा पीली सरसों का तेल—ये छहों चीजे दो-दो तोले लें। निर्माण ❀ सूखी चीजों को एक साथ जल के योग से पीसें जब चटनी की तरह हो जाय तब तेल मिला लें।

गुण ❀ इसके व्यवहार से शीतपित्त (पित्ती निकलना) उदर्द तथा कोढ—ये तीनो रोग दूर हो जाते हैं। इसका प्रयोग तीन-चार दिनो तक करना चाहिए। व्यवहार ❀ शरीर मे जहाँ-जहाँ पित्ती निकली हो वहाँ पर इसे उबटन की भाँति लगाना और थोड़ी देर तक इसे शरीर पर धारण करने के पश्चात हटा देना चाहिए।

विशेष ❀ 'कोढ़' पित्ती का ही भेद है। पित्ती शरीर मे जगह-जगह

दाग के प्रमाण में निकलती है; पर कोढ अठन्नी के बराबर लाल निकलता है। इसी प्रकार उददं भी पित्ती का भेद ही है इसमे बर्रे के काटने के समान शोथ और ज्वर इत्यादि लक्षण उत्पन्न होते हैं।

शिरोरोगनिवारिणी वटी

योग ❀ छोटी कटेरी के बीज, धतूरे के बीजों की गिरियां, भांग के बीजो की गिरियाँ, विधारा के बीज, समुद्रफल, पारद तथा शुद्ध आंवलासार गन्धक—ये सातों चीजे दो-दो तोले लें। इसके अतिरिक्त कपड़े से छना अदरख का रस बीस तोले पृथक ग्रहण करें। निर्माण ❀ शुद्धपारद और शुद्ध गन्धक को एक दिन घोटकर कज्जली कर लें। धतूरे के बीजों की शुद्धि कर उनकी गिरियाँ निकाल लें, भांग के बीजों की गिरियाँ संग्रह कर लें। फिर पाँचों सूखी चीजों को कूट और कपड़छान कर कज्जली मे मिला अदरख के रस के साथ तीन दिनों तक खरलकर दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना धूप मे सुखाकर रख लें।

गुण ❀ इसके सेवन से वातज, पित्तज तथा कफज सभी प्रकार के शिरोरोग मिट जाते है। इसके अतिरिक्त अर्श इत्यादि मल-मार्ग के रोग, पीनस, पांडु, कामला, शोथ, भगन्दर, आंतवृद्धि (आँत उतरना) फीलपाँव, संग्रहणी, कफ रोग, गलग्रह, मन्यास्तम्भ (गर्दन के पीछे की नाड़ी संकुचन) तथा आमवात इत्यादि रोग इसके व्यवहार से दूर हो जाते है। मात्रा ❀ दो रत्ती। अनुपान ❀ दूध या उपर्युक्त रोगों में कथित अनुपानो के साथ। समय ❀ सुबह और शाम एक-एक मात्रा।

लहसुन की चटनी

योग ● लहसुन की गिरी पांच तोले, सोंचरनमक, अजवाइन, शुद्ध हींग, सेंधानमक, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च तथा सफेद जीरा—ये आठों चीजे दस-दस आने भर लें। दस तोले गाय के दूध का ताजा मट्ठा ग्रहण करें। निर्माण ● लहसुनो को छीलकर गिरियों के ऊपर के पर्वों को हटा दें और उन्हे चौबीस घण्टे मट्ठे मे डालकर रखें। दूसरे दिन लहसुनों के टुकड़ों को मट्ठे से निकालकर गरम जल से धो और

उसे थोड़ी देर तक धूप मे सुखाकर सिल पर महीन पीस लो। पिस जाने के पश्चात् उसमे सोंचलनमक से जीरे तक की आठों औषधियों के कपड़छान चूर्ण को मिलाकर रख लें।

गुण ● इसके सेवन से सम्पूर्ण वात रोग नष्ट होते हैं। पृथक् पृथक् अङ्गों की कुपित वायु, अर्दित, अपतन्त्रक, अपस्मार, पागलपन, उरुस्तम्भ, गृध्रसी, छाती की पीड़ा, पीठ की पीड़ा, पसवाड़े की पीड़ा, कमर तथा कोख की वेदना एवं उदर कृमियाँ नष्ट होती हैं। मात्रा ● औषधि सेवनकाल मे अग्निवल तथा ऋतु का विचार कर आठ आने भर से दो तोले तक की इसकी पूर्ण मात्रा देनी चाहिए। साधारण मात्रा एक तोले है। अनुपान ● औषधि सेवन कर रास्ना पंचक क्वाथ अथवा केवल रेंड़ की जड़ की छाल को दो तोले लेकर आधा सेर जल में पकाने के पश्चात् पाँच तोला शेष क्वाथ पीना चाहिए। यह एक मात्रा है। रास्ना पंचक क्वाथ ● रास्ना, सोठ, देवदारू, गुड़ची और रेंड़ की जड़ की छाल—ये पाँचों चीजे आठ-आठ आने भर (यदि रेंड़ की छाल गीली हो तो उसे एक तोले ले) लेकर कूँच लें और आधा सेर जल मे पकाने पर जब आधा पाव शेष रहे उतार लें तथा उसमें आठ आने भर रेंड़ी के तेल का प्रयोग कर काम में लावें।

विशेष ● यदि वात रोग बढ़ा हुआ हो तो इसे चाटकर रास्ना पंचक काढ़ा (रेंड़ी तेल से युक्त) ऊपर से पीना चाहिए। साधारण अवस्था मे केवल प्रातःकाल और विशेष अवस्था मे प्रातः और सायं-काल दोनों वक्त काढ़ा तैयार कर लें और इसी के अनुपान के साथ लहसुन की चटनी का सेवन करें।

पथ्य ● सुरा और वातनाशक बलारिष्ट तथा अश्वगन्धारिष्ट इत्यादि आसव-अरिष्ट, अम्लपदार्थ, मास रस इत्यादि का सेवन वात-रोग काल मे चटनी का सेवन करते हुए पथ्य हैं। अपथ्य ● अजीर्ण की दशा, धूप मे फिरना, आग तापना, ज्यादा जल पीना, दूध तथा गुड़ इत्यादि इस लहसुन की चटनी सेवन काल में त्याज्य हैं।

उपर्युक्त रोगानुसार और-और पथ्य तथा अपथ्य पदार्थों एवं कर्मों के पालन और त्याग पर दृष्टि रखनी चाहिए।

गृध्रसीहर तेल

योग ● काले तिल का तेल डेढ़ सेर, बिना मक्खन निकाला और तक्र की भाँति बिलोया सारवान मट्ठा छः सेर, पिप्पलीमूल तथा सोंठ आठ-आठ तोले ले। निर्माण ● तेल को लोहे की कड़ाही मे तप्त करें। जब उसमे धूम्र उठने लगे तब उसमें दो-चार नीबू के पत्र को डालें। जब पत्ते तेजी से चक्कर काटकर तेल के ऊपर स्थिर हो जायें तब उस पत्र को चिमटे से उठावें तथा चुटकियों से मसलें। यदि वह पापड़ की भाँति चूर हो जायँ तब तेल को आग पर से उतार लें। शीतल होने पर पुनः कडाही को चूल्हे पर चढ़ावें और उसमे पत्र डाल दें। आँच मन्द दे। इधर सोंठ और पिप्पलीमूल कुचलकर एक घंटे जल मे भिगो दे और उसे सिल पर महीन पीसकर एक गोला बना लें। उसे भी तेल में डालकर जरा आँच तेज कर दें। न-कम न-ज्यादा, पर मध्यम आँच पर उसे पका लें। तक्र वाले जल के अंश के जल जाने पर तेल को आग पर से उतार लें। शीतल होने पर मोटे वस्त्र से छान लें।

गुण ● इसके व्यवहार से गृध्रसी और उपग्रह नामक वातव्याधि के कष्ट दूर होते हैं। व्यवहार ● दिन-रात मे तीन-चार बार कष्ट वाले स्थान मे इसकी मालिश करनी चाहिए।

लूताविषशामक पान

योग ● महुआ, मुलेठी, कूठ, सफेद अनन्तमूल, कृष्ण अनन्तमूल, नेत्रवाला, पाटला और नीम की छाल—इन आठों द्रव्यों को छः-छः माशे लें। निर्माण ● इन्हे जवकुटकर रात्रि मे थोड़े जल के साथ भिगो दें। प्रातःकाल महीन पीसकर सोलह तोले जल में घोलें और एक तोला शहद मिला लें। यह एक मात्रा है।

गुण ● इसके प्रयोग से लूता (मकड़ी) के विष का असर जाता रहता है। प्रयोग ● प्रातःकाल नित्य एक मात्रा बनाकर इस पानक

को पीना चाहिए। चार-पाँच दिनों मे जब शरीर से लूता के विष का असर मिट जाय तब इस पानक का सेवन बंद कर देना चाहिए।

विशेष ● लूता (मकडी) के विप का असर होने पर शरीर के ऊपर दाने निकल आते है। वे पीले होते हैं। जलन होता है। इसका असर चार-पाँच दिनों तक विशेष रहता है फिर कम होने लगता है।

वैद्यक विधि मे कई प्रकार के लेप इसकी शान्ति के निमित्त हैं। खाने की औपधि के साथ-साथ लेप इत्यादि वाह्य उपचार भी करना आवश्यक है। इसकी शान्ति के लिए मन्त्र आदि का प्रयोग भी होता है।

चपला चूर्ण

योग ● पीपल पाँच तोले, निसोथ बीस तोले और दानेदार शक्कर भी बीस तोले ले। निर्माण ● पीपल और निसोथ को एक साथ कूट-कर मोटे कपड़े से छाने और शक्कर मिलाकर रख ले।

गुण ● यह चूर्ण रेचक और साथ-साथ पित्तशामक भी है, अतएव इसके सेवन से मल की गाँठ पड़ना, उसका सूख जाना, मलबध हो जाना, पेट मे अफरा होना, कफ के विकार, पित्त शूल तथा उदर रोग शान्त होते हैं। अनुपान ● मधु एक तोला। मात्रा ● छः माशे से एक तोला तक। समय ● प्रातःकाल केवल एक मात्रा।

विशेष ● इसे अहले-सुवह खा लेने से दोपहर तक अर्थात् पित्त का समय आने तक साधारणतः दो-तीन टट्टियाँ आ जाती है; इसी कारण इसके सेवन के समय का प्रात.काल ही परम्परा चली आ रही है। यदि रात्रि में भी सेवन करना उचित जँचे तो आधी मात्रा (छः माशे) ही लेनी चाहिए।

विषादि वटी

योग ● शुद्ध वत्सनाभ विष, कालीमिर्च, सोहागा, शुद्ध पारद और शुद्ध आँवलासार गन्धक—ये पाँचों चीजें दो-दो तोले तथा शुद्ध जमाल-गोटा चार तोले एवं एक साल का पुराना गुड़ अट्ठाईस तोले लें। निर्माण ● शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक को एक साथ आठ घंटे तक

खरलकर कज्जली तैयार कर लें। सोहागे को आग पर फुलाकर लावा बना लें और कूटकर कपड़े से छान ले। विष शुद्ध, मिर्च और शुद्ध जमालगोटे को एक साथ कूट और कपड़छान कर लें। इतना सब हो जाने के बाद सभी को मिश्रितकर गुड़ के साथ खरल करें। जब पीठी की गोली बनने लगे तब चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना लें। यदि सोहागे के मिश्रण होने पर भी गुड़ न गीला हो तो किंचित् जल के छीटे देकर खरल करें तब गोलियाँ बना और धूप मे सुखाकर रख लें।

गुण ❀ यह बटी रेचक सभी प्रकार के विकारों का नाशक, लघु दीपन-पाचन, कुष्ठहर, तीव्रशूल का शीघ्र निवारक, आमाशय के विकार और पथरी में हितकर है। समय ❀ प्रातःकाल। मात्रा ❀ एक से दो बटी तक। अनुपान ❀ शीतल जल। दस्त बंद करने के निमित्त गरम जल पीना चाहिए।

शर्करावलेह

योग ❀ मेदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, जीवक, ऋषभक, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवन्ती और मुलेठी—ये दसों चीजें चार-चार तोले, कुश की जड़, काश की जड़, उलु तृण की जड़, शर को जड़ तथा गन्ने की जड़—ये पाँचों जड़े बारह-बारह तोले, जल छः सेर, पनकोरे नारियल का जल ढेढ़ सेर, गो घृत सोलह तोले, शक्कर चौसठ तोले लें। पुनः प्रक्षेपार्थ छोटी इलायची के दाने, तेजपात, धनिया, जीरा सफेद, दालचीना, स्याह जीरा, वंशलोचन और नागकेशर— ये प्रत्यक चीजें एक-एक तोले ग्रहण करें। निर्माण ❀ सूखी चीजों को कुचलकर कलईदार पात्र में रात्रि के वक्त भिगो दे। प्रात; काढ़ा पकावे। आठवाँ हिस्सा जल रहने पर उतारकर छाने और सीठी पृथककर उस काढ़े मे नारियल का जल तथा शक्कर डालकर पाक करें। रबड़ी की तरह गाढ़ा होने पर इलायची से नागकेशर तक आठों चीजों का कपड़छान चूर्ण डालकर शीघ्र ही अवलेह को चूल्हे से उतार लें।

गुण ❀ इससे शरीर के बढ़े पित्त, कफ, वात, क्षीणता, हृदय की धड़-

कन, शुक्रक्षय, मस्तिष्क का चक्कर खाना, नींद की कमी, बेचैनी, पेशाब में रुकावट, आंखों के आगे चिन्गारी निकलना, चलते समय थक जाना तथा जोड़ों में दर्द रहना इत्यादि विविध रोगों का निर्मूल होता है। यह अवलेह रसायन गुण युक्त तथा मूत्रल है। शुक्रक्षय के रोगियों के लिए विशेष लाभप्रद है। शरीर मे बड़ी उष्णता तथा खुश्की को यह शीघ्र दूर कर डालता है। इसमे पड़ी औषधियाँ जीवनीयगण की हैं; अतएव उसके मिश्रण के प्रभाव से शरीर के विकार निर्मूल हो वह स्थिर हो जाता है। मात्रा ❀ आठ आने से एक तोले तक। अनुपान ❀ गौ या बकरी का दूध। समय ❀ सुबह और सायंकाल एक-एक मात्रा।

सूजन पर मंडूर

योग ❀ मंडूरभस्म अड़तालीस तोले, गोमूत्र अढ़ाई सेर, पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, देवदारू, नागरमोथा, पीपल, कालीमिर्च, आँवला, हर्रे बड़ी, बहेड़ा तथा वायबिडंग—ये चौदहों चीजे चार-चार तोले लें। निर्माण ❀ एक लोहे की कड़ाही मे मंडूरभस्म और गोमूत्र डालकर पाक करें। गोमूत्र के सूखजाने पर उसे चूल्हे से नीचे उतार लें। शीतल होने पर मंडूर को पत्थर के खरल मे रखे और ऊपर से पिप्पली से लेकर वायविडंग तक की चौदहो चीजों का कपड़छान चूर्ण डालकर एक दिन का घोटाई कर फिर बन्द पात्र मे रख लें।

गुण ❀ इससे शोथ, तिल्ली और जिगर की खराबी, खून की कमी, कब्ज, मंद-मंद ज्वर का बना रहना, उदर शूल, मंदाग्नि, शरीर की अशक्तता, बढ़े कफ के विकार, वायु की विलोमगति तथा पित्त की उष्णता शान्त होती है। इसके सेवन से उदर की क्रिमियाँ निकल जाती हैं। यह पाचन गुण युक्त है। मात्रा ❀ चार से आठ रत्ती तक। अनुपान ❀ मट्ठा या गरम जल। इसे खाकर ऊपर से दूध भी लिया जा सकता है। समय ❀ सुबह, शाम और सोते वक्त रात्रि मे।

विशेष ❀ यह मंडूर कोमल बालकों या स्त्रियों के लिए भी उपयुक्त है। मंडूर का मिश्रण दो-चार खुराक मे कुछ विशेष असर दिखाने

वाला नहीं होता है, इसकी मात्राएँ जब क्रमशः शरीर के अन्दर पहुँचती रहती हैं तब जाकर कही इसका स्थायी असर दृष्टिगत होने लगता है। जिगर के कार्य को नियमित करना, तिल्ली के विकारों का निराकरण तथा विकृत हुई पेट की वायु को अपने स्थान में स्थापित करना इसका मुख्य कार्य है। रक्ताल्पता वाले के शरीर के घटे हुए रक्तकण पुनः मंडूर के सेवन से बढ़ने लगते हैं।

उरुस्तम्भहर लेप

योग ❀ धतूरे की जड़, पोस्ते का ढोंड़ो, लहसुन, कालीजीरी, कालीमिर्च, सरसों पीली, सहिजन की जड़ की छाल और रेंड़ के पत्ते—पाँच-पाँच तोले लें। धतूरे की जड, सहिजन की जड़ की छाल और रेंड़ के ताजे पत्ते—ये तीनो चीजे ताजी लें, अतएव दस-दस तोले ले और सब चीजों का तौल पूर्ववत रखें। गौमूत्र आठ छटाँक लेकर पृथक रखे। निर्माण ❀ गौमूत्र के साथ सभी चीजों को सिल पर चटनी की भाँति महीन पीसकर गौमूत्र मे ही घोल लें।

गुण ❀ इसके लेप से उरुस्तम्भ (जाँघ का जकड़ जाना) रोग शीघ्र दूर होता है। उपयोग ❀ इसे गुनगुना कर जांघ पर मोटा लेप कर दे और उस स्थान को एक पतले कपड़े से लपेट दे। दो घटे वाद लेप हटाकर वहाँ पर गरम किया हुआ नारायण इत्यादि तैल या कडुआ तेल लगा दें। इसी प्रकार केवल दिन मे चार-पाँच घंटे के अन्तर से दो-दो वार लेप लगाना चाहिए।

विशेष ❀ इसे पूरी जांघ पर मोटा लेप करना चाहिए। और दो-अढाई घंटे तक लेप लगा रहने देना चाहिए। फिर इसे हटाकर उस स्थान को गुनगुने जल मे भिगोये हुए कपड़े से पोछ और सूखे कपड़े से स्थान को अच्छी तरह सुखा लेने के बाद तेल लगाना चाहिए।

नागार्जुन योग

योग ❀ आवला, बड़ी हर्रे, बहेड़ा, सामुद्र नमक, सेंधानमक, सांभर नमक, सौवर्चल नमक, बिड़ नमक, कडुआ कूठ, देवदारू, वायविडंग,

नीम के बीजों की गिरियां, बरियार की जड़, नागबला (गुलसंकरी) की जड़, हल्दी, दारूहल्दी तथा काच नमक—इन सतरहों चीजों को पाँच-पाँच तोले और करंज की छाल का स्वरस अढ़ाई सेर ले। निर्माण ❀ काष्ठ औषधियों को एक साथ और नमकों को एक में मिला कूट और कपड़छान कर एक पत्थर के खरल मे डाले और ऊपर से करंज की ताजी छाल को कूट और कपड़े से छने रस को डालकर खरल करे। जब दो-तीन दिनों मे रस सूख जाय और पीठी गोली बनने योग्य हो जाय तब चार-चार रत्ती की गोली बना तथा धूप मे सुखाकर रख लें। उपयोग ❀ नीचे अनुपान के वर्णन क्रम मे कथित रोगों के नाश की इस औषधि में क्षमता है। मात्रा ❀ चार रत्ती से आठ रत्ती तक। समय ❀ सुबह और शाम एक-एक मात्रा। अनुपान ❀ अग्निमान्द्य मे गरम जल, अर्श मे तक्र से, गुल्म रोग मे काजी, चर्म रोगो मे खैर की छाल के काढ़े के साथ मे, मूत्र विकार या मूत्रकृच्छ्र मे शीतल जल से, हृदय रोग मे तिल के तेल के साथ और सभी प्रकार के ज्वरो मे निर्गुण्डी (म्योरी) की जड़ के काढ़े से देना चाहिए।

विशेष ❀ यह नागार्जुन निर्मित काष्ठ औषधियों मे परम श्रेष्ठ योग है। जो उपयुक्त रोगो मे शीघ्र फलप्रद है।

मधुयष्ट्यादि चूर्ण

योग ❀ छिली मुलेठी और सनाय की नयी पत्तियाँ पाँच-पाँच तोले पुराना सौफ और आँवलसार गन्धक अढाई-अढ़ाई तोले तथा मिसरी पन्द्रह तोले ले। निर्माण ❀ मुलेठी, सनाय की पत्तियाँ तथा सौफ—इन तीनों को घंटे दो घंटे धूप मे सुखाकर एक साथ कूट और कपड़छान कर लें, शुद्ध गन्धक को पृथक् खरल कर कपड़े से छाने और मिसरी को पृथक् ही पीसकर चलनी से छान ले, बाद मे सभी को एक में मिलाकर ढक्कनदार पात्र में रखे। इसे सूखे स्थान मे रखना आवश्यक है।

उपयोग ● पुराना कब्ज, पित्त की विकृति, रक्त विकार एवं उदर रोग जो कफ और पित्त कोप से हो तथा साधारण पैत्तिक उदर

शूल में यह चूर्ण लाभदायक है। मात्रा * डेढ माशे से तीन माशे तक। रेचन के लिए छः माशे। समय * साधारण रोग मे केवल एक बार और विशेष हालत मे दो बार इसका उपयोग करना चाहिए। प्रातःकाल या सायंकाल अथवा रात्रि में सोते वक्त एक मात्रा गरम दूध या गरम जल से लेना चाहिए। केवल रेचन गुण के लिए पहले सुबह गरम जल से इसकी छः माशे की मात्रा लेनी और घंटे-दो घंटे के बाद छटांक-दो छटांक गरम जल पीना चाहिए। साथ ही कानों को ढककर रखना चाहिए।

विशेष * दोपहर तक दो-चार पतली टट्टी हो जाने के बाद मूंग और पुराने चावल की घृत-युक्त पतली खिचड़ी खानी चाहिए।

स्वर्णपत्रादि मोदक

योग * सनाय की नई पत्तियां, गुलाब के फूलो की पंखुड़िया, अंजीर, पेशावरी बादामों की गिरियाँ, काले मुनक्के तथा छोटी मधुमक्खियो का शहद—ये छहों चीजे पाँच-पांच तोले ले। निर्माण * सनाय और गुलाब के फूलों को तेज धूप मे सुखाकर एक साथ कूट और छान ले, बादाम की गिरियों को दस मिनट तक पानी के साथ उबालकर उनके छिलके दूर करें और सिल पर उनकी पीठी पीस लें, अंजीर और धुले तथा बीज निकाले मुनक्को को पृथक्-पृथक् पीस ले। सभी चीजों को खरल मे डाल शहद के साथ कड़े हाथो से खरलकर एक-एक तोले का मोदक बना लें।

गुण * पुराने कब्ज मे रोगियों के लिए यह विशेष उपयोगी है। उनकी आंतों मे चिपके और सूखे मल को यह मोदक निकालता है, बादी के कारण मल होने वाली खुश्की को दूर करने मे यह मोदक विशेष उपयोगी है। यह आंतो मे चिकनापन लाता, सेवन करने के बाद पेट मे ऐंठन नही उत्पन्न करता तथा बादी के साथ-साथ बढ़े हुए पित्त और उसकी गरमी को भी शान्त कर देता है। मात्रा * आठ आने भर से एक तोले तक। अनुपान * गरम दूध एक पाव। समय *

तीव्रतायुक्त टट्टी के लिये अहले सुबह और मृदु रेचन के लिए सोते वक्त रात्रि में इसका व्यवहार किया जाता है। प्रयोग ❀ प्रातःकाल एक मोदक खाकर ऊपर से गाय का दूध एक पाव पीना चाहिए। घंटे-घंटे पर थोड़ा गरम जल पीते रहने से दो-तीन टट्टी खुलकर हो जाती है। दोपहर मे मूंग, पुराने चावल की खूब पकी पतली खिचड़ी मे घी और अदरख डाल तथा हीग और जीरे की बघार देकर आहार करना चाहिए। कमती टट्टी के लिए इसका आठ आने भर की मात्रा गरम दूध से सोते वक्त रात्रि में लेने से प्रातःकाल एक पतली टट्टी होती है।

हिंगुलेश्वर वटी

योग ● शुद्ध शिगरफ, शुद्ध वत्सनाभ विष और छोटी पिप्पली–ये तीनों चीजें पाच-पांच तोले ले। निर्माण ❀ तीनों चीजों को पृथक-पृथक पीस और कपड़े से छानकर खरल मे रखें और जल से दो घंटे तक खरलकर एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना और धूप मे सुखा लें

गुण ❀ नये ज्वर मे जो बात प्रधान हो, इसके व्यवहार से शीघ्र मिट जाता है। बात के प्रकोप के कारण अधिक जम्भाई, कंपकंपी पेट मे वायु का भरना, कृत्रिम क्षुधा तथा चंचलता को यह दूर करता, ज्वर की तीव्रता को सम अवस्था मे लाती तथा ज्वर का शीघ्र पाचन कर देती है। मात्रा ❀ एक से दो रत्ती तक। समय ● चार-चार घंटे पर दिन-रात में चार बार तक। अनुपान ● उष्ण जल।

विशेष ❀ तापमापक यंत्र से देखने पर ज्वर का बेग जिस वक्त कम हो उसी वक्त से औषधि की मात्रा देने से विशेष लाभ होता है।

शतावर्यादि लौह

योग ● छोटी शतावरी कंद, पुराना धनिया, बड़ा फूल का नागकेसर, लाल चंदन का चूरा, बड़ी हर्रे, बहेड़ा आँवला, लाल सोंठ, बड़ी पीपल, कालीमिर्च, नागरमोथा, वायविडग, चित्रक की जड़ की छाल, बिना छिलके के काले तिल और मिसरी—ये पन्द्रहों चीजें पांच-पांच तोले तथा पचहत्तर तोले तीक्ष्ण लौह की शतपुटी भस्म लें। इसके

अतिरिक्त सवा सेर शतावर का कपड़े से छना ताजा रस ग्रहण करें।
निर्माण ❀ सभी काष्ठ औषधियों को कूट और कपड़छान कर लें। मिसरी को पृथक पीस लें तथा लौहभस्म का पृथक ही खरल करें। पुनः सभी को मिश्रित कर बड़े पत्थर के खरल में रख ऊपर से शतावर के रस की भावना दे घुटाई करें इसके सूख जाने पर चूर्ण को धूप में खुश्क कर एक बार पुनः मोटे कपड़े से छानकर रख लें।

गुण ❀ यह रक्त पित्त रोग को शमन करने वाली प्रभावशाली औषधि है। इसके सेवन से तृष्णा, दाह ज्वर, वमन तथा सभी प्रकार के प्रवृद्ध रक्तपित्त रोग का कष्ट शीघ्र मिट जाता है। मात्रा ❀ दो से चार रत्ती तक। अनुपान ❀ अडूसे का स्वरस और मधु या अडूसे का क्वाथ व मधु अभाव मे अडूसे के शरबत से भी इसे लिया जाता है। समय ❀ सुबह, दोपहर, शाम और रात्रि में, चार-चार घंटे पर एक-एक मात्रा देनी चाहिए।

पुरातन कासनाशिनी वटी

योग ❀ लोहवान का सत्व डेढ़ माशे, फौलाद भस्म, कत्था लाल तथा शुद्ध अफीम तीन-तीन माशे, मुलेठी का सत्व, कुलंजन तथा सोंठ–ये तीनों चीजें छः-छः माशे तथा कपड़े से छना अदरख का रस पाँच तोले ले। निर्माण ❀ पहले कुलंजन और सोंठ को खरलकर कपड़े से छानें। शुद्ध अफीम को एक छोटे चम्मच भर जल में छोटी सी कटोरी मे रख, खौला लें इसके पश्चात् सभी को एकदिल कर खरल मे डालें और ऊपर से अदरख के रस की भावना दे खरल करें। एक दिन खरल करने के बाद आधी-आधी रत्ती की गोलियाँ बना सुखाकर रख लें।

गुण ❀ इसके प्रयोग से पुरानी खाँसी, दमा, जुकाम, नजला, चलते वक्त की कमजोरी, नामर्दी, पतली टट्टी का होना, नींद की कमी तथा जल या मौसम के असर से रक्षा होती है। उपर्युक्त रोगों में एक सप्ताह या एक पक्ष तक सेवन कर लेने से यह वटी विशेष लाभ दिखाती है। मात्रा ❀ आधी रत्ती। छोटी उम्र के बालकों को चौथाई रत्ती तथा दो

वर्ष से कम उम्र के शिशुओं को एक रत्ती का आठवाँ हिस्सा देना चाहिए। अनुपान ❀ पान का रस और शहद। समय ❀ सुबह और शाम को एक-एक मात्रा देनी चाहिए।

विशेष ❀ इस योग में अफीम का योग है; अतएव औषध सेवन-काल मे थोड़ा गाय या बकरी का दूध रोगी को देना आवश्यक है।

वातारि गुग्गुलु

योग ❀ शुद्ध गुग्गुलु दस जर्धांक, रेड़ी का तेल सवा छटाँक, आँवला, हर्रे और बहेड़े का चूर्ण एक-एक छटाँक तथा शुद्ध गन्धक का चूर्ण डेढ़ छटाँक ले। निर्माण ❀ शुद्ध गुग्गुलु को खरल मे डाल रेड़ी के तेल के साथ कूटे। जब गुग्गुलु के रवे महीन हो जायें तब उसमे त्रिफला (आँवला, हर्रे और बहेड़ा) और शुद्ध गन्धक के चूर्ण को डाल पुनः एक रोज तक कूटे। जब गुग्गुलु और त्रिफला इत्यादि एक मे अच्छी तरह मिल जायें तब उसे शीशे क बन्द पात्र मे रख लें।

गुण ❀ यह गुग्गुलु सभी प्रकार के बात रोगो के निमित्त उपयोगी है। आम बात और बात रक्त के अतिरिक्त जिस बात कोप के साथ-साथ रक्त की भी विकृति हो उसमें इस गुग्गुलु का उपयोग विशेष फल-प्रद है। मात्रा ❀ चार से आठ रत्ती तक। अनुपान ❀ गरम दूध आधा पाव या गरम जल। समय ❀ प्रातःकात केवल एक मात्रा।

विशेष ❀ रेड़ी का तेल बिना मिलावट वाला और उत्तम कोटि का लें। गन्धक आँवलासार लें और गुग्गुलु की चमकदार बड़ी-बड़ी डलियाँ —जो तृण और रेसों से रहित हो ले। गन्धक और गुग्गुल की शुद्धि यो तो आयुर्वेद के सभी मुख्य ग्रन्थो मे है या हमारी प्रकाशित 'रसायनसार' ग्रन्थ मे विशेष और सुलभ प्रक्रिया द्वारा द्रव्यो की शुद्धि दी गयी है वही देख लेना चाहिए।

कासखंडनी वटी

योग ❀ लौग एक तोला, लाल कत्था दो तोले, मुलेठी चार तोले, बहेड़े की गुठली निकालकर उसका ऊपर का हिस्सा दो तोले, साँभर

नमक दो तोले और गोंद बबूल एक तोला ले। इसके अतिरिक्त अडूसे के ताजे पत्तों का कपडे से छना रस पचीस तोले पृथक ग्रहण करें। निर्माण ❀ सभी चीजों को कूट और कपडछान कर एक पत्थर के खरल में रखे और ऊपर से अडूसे का रस डालकर घोटें। जब पीठी की गोली बनने लगे तब उसकी दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना और धूप में सुखा लें।

गुण ❀ यह तीनों दोषों से युक्त खाँसी में लाभदायक है। जो खाँसी पित्त या मल की गरमी से सूखी हो उसे यह ढ़ीला करती है तथा गले की सफाई अच्छी तरह कर डालती है। मात्रा ❀ एक बार में दो रत्ती। समय ❀ दिन-रात से सात-आठ बार दो-दो गोलियाँ चूसनी चाहिए।

विशेष ❀ छोटे बच्चे को इसकी थोड़ी मात्रा देनी चाहिए। आठ से दो वर्ष तक के बच्चे को एक रत्ती और दो से छः मास तक के बच्चे को आधी रत्ती मधु में हलकी मात्रा देनी चाहिए एक सप्ताह तक इसे चूसने या मधु के साथ चाट लेने पर नयी खाँसी एकदम मिट जाती है तथा पुरानी खाँसी मे भी विशेप लाभ दृष्टिगोचर होता है।

गन्धर्वहस्त तैल

योग ❀ रेंड की जड की छाल सूखी चार सौ तोले, सोंठ और जौ प्रत्येक पाँच सौ छप्पन तोले, जल एक हजार चौबीस तोले, गाय का दूध दो सौ पैंसठ तोले, रेंड़ी का तेल चौसठ तोले, रेड़ की जड़ की ताजी छाल सोलह तोले और आदी बारह तोले लें। निर्माण ❀ रेंड़ की जड़ की छाल, सोंठ और जौ को दरदरा कूटकर रात्रि के वक्त जल में भिगो दे। गरमी के दिनों मे चौबीस घंटे और शीत ऋतु मे तीन दिनों तक भिगोवें। फिर उसे चूल्हे पर चढ़ाकर काढ़ा पकावे। जब चौथाई शेष रहे तब उसे कपडे से छान काढ़ा ले लें और सीठी पृथक् कर दें। रेंड़ की जड़ की ताजी छाल जो पृथक् सोलह तोले रखी है और ताजी आदी इन दोनों को चटनी की तरह सिल पर पीस कर रख लें। एक लोहे की कड़ाही मे रेडी के तेल को तपाकर जब तेल मे से धूम निकल-ने लगे तब उसे चूल्हे से उतार लें या आँच कम कर दें। जब

कुछ गरम रहे तभी उसमें काढ़ा, दूध और पिसी चटनी डालकर मंद आँच दे दें। मंद आँच पर पकने पर जब केवल तेल ही शेष रहे तब उसे उतार लें और कपड़े से छान तेल को सुरक्षित रख ले।

गुण ❀ इस तेल के खाने और मालिश के कामों में प्रयोग करने से अंडकोष की वृद्धि, अनेक प्रकार के बात-विकार, आमबात, कब्ज, शरीर के किसी अंगों की जकड़न और वेदना मिटती है। यह शरीर के अन्दर स्रोतवाही मार्गो का शोधक, कफ शामक और निष्कासक तथा शरीर स्थापक है। उपयोग ❀ कष्ट वाले स्थानों में इस तेल की दिन-रात मे दो-तीन बार मालिश करनी चाहिए और आवश्यकतानुसार सेंक भी करनी चाहिए। यदि रोग विशेष बढ़ा हो, कब्ज हो, तथा शरीर में जकड़न एवं आँव की अवस्था भी हो तो आठ आने भर से एक तोले तक की मात्रा मे इस तेल को आधा पाव गरम दूध में डालकर प्रातःकाल पीना चाहिए। यदि साधारण रेचन की आवश्यकता हो तो रात्रि मे सोते वक्त इस तेल का पान उक्त अनुपान से करना जरूरी है।

रोचक चूर्ण

योग ❀ सौफ और छोटी पीपल दोनों दो-दो तोले, कालीमिर्च और टाटरी (इमली का सत्व) दोनों तीन-तीन तोले, सफेद जीरा चार तोले, सेधा नमक और चीनी दोनों चीजें तेरह-तेरह तोले लें। निर्माण ❀ नमक, चीनी और टाटरी इन तीनों चीजों को पृथक् पृथक् पीस और कपड़छान कर लें। सौफ, कालीमिर्च, पीपल और जीरे को एक साथ कूट और कपड़छान करे। फिर सभी को परस्पर मिलाकर बन्द शीशे के पात्र में रख लें।

गुण ❀ यह चूर्ण विशेष रुचि उत्पादक, पाचक, मन को प्रसन्न करने वाला, मुख की विरसता को ठीक कर भूख लगाने वाला है। भोजन के पश्चात् इसकी मात्रा यदि नित्य ली जाय तो उदर में एकत्र होनेवाली वायु की शिकायत न रहे। मात्रा ❀ एक से तीन माशे तक। समय ❀ भोजन के बाद दोनों वक्त या कष्ट के समय इसका

उपयोग करना चाहिए। अनुपान ॐ आवश्यकतानुसार शीतल या गरम जल से इसे लेना चाहिए।

कासशामक चूर्ण

योग ॐ वायविडंग, नागरमोथा, रास्ना, छोटी पिप्पली, हींग, सेंघानमक, भारंगी और यवक्षार—ये आठों चीजे पाँच-पांच तोले ले। निर्माण ॐ हींग को किंचित् घृत के साथ भून ले, सेधा नमक और यवक्षार इत्यादि को पृथक् और काष्ठ औषधियों को पृथक ही एक मे मिलाकर कूट और कपड़छान कर लें फिर सभी को मिलाकर रख ले। गुण ॐ इसके सेवन से खाँसी, सूखी खाँसी, मन्दाग्नि, उदर के विकार, कब्ज तथा उदर मे रहने वाली महीन कृमियों का नाश होता है। मात्रा ॐ एक से तीन माशे तक। अनुपान ॐ छः माशे गाय का अथवा भैंस का घी (किंचित् गरमकर) के साथ लेना चाहिए। समय ॐ सुबह, दोपहर, शाम और रात्रि में सोते वक्त औपध घी से लेने पर तुरत जल न पीना चाहिए।

विषमज्वरांकुश लौह

योग ॐ लालचंदन, सुगन्धवाला, पाठा, खस, छोटी पिप्पली, हर्र, सोंठ, कमल के फूल, आँवला, वायविडंग, नागरमोथा और चित्रक—ये बारहों चीजें पाँच-पाँच तोले और एक सौ चव्वन तोले शतपुटी तीक्ष्ण लौहभस्म ले। निर्माण ॐ पहले काष्ठ औषधियों को कूट और कपडछान कर लें फिर लौहभस्म को चूर्ण में मिश्रणकर एक दिवस तक पत्थर के खरल मे किंचित् जल के साथ खरलकर सुखाकर रख लें।

गुण ॐ विपमज्वर काल मे पित्त बढ़कर सम्पूर्ण शरीर में बेकायदे जब फैल रहा हो और उसकी उष्णता के कारण शरीर का सूखना, पीलापन, नेत्रों का पीला होना, यकृत और प्लीहा के विकार, कंठ का सूखना, नीद की कमी तथा जिह्वा का बदरंग होना इत्यादि लक्षण घट रहें हों, ज्वर का बेग कभी कम और कभी ज्यादा हो, उस काल मे इस लौह की मात्रा देने से रोगी के शरीर मे घटने वाले उपर्युक्त

लक्षण धीरे-धीरे मिटने लगते हैं। ज्वर का बेग कम होने लगता है, नीद आने लगती है और यकृत और प्लीहा भी ठीक से कार्यरत हो जाते हैं। यह लौह समस्त विषम ज्वरों का नाशक है। अनुपान ❀ मधु। मात्रा ❀ चार रत्ती से आठ रत्ती तक एकबार में इसकी मात्रा है। समय ★ प्रातः, दोपहर, सायंकाल और रात्रि में सोते वक्त इस प्रकार नित्य चार बार इस लौह का प्रयोग कराने से विशेष लाभ होता है।

विशेष ❀ इस लौह का प्रयोग सतत और संसत ज्वरों में भी किया जाता है। पित्त प्रधान विषमज्वर, तृष्णा, प्रमेह, हाथ-पैरों मे जलन तथा रक्त-पित्त सहित ज्वर में भी विशेष उपयुक्त है। रोगानुसार अनुपानों से इसका प्रयोग करना चाहिए।

गदमुरारि रस

योग ❀ शुद्ध पारद, शुद्ध आँवलासार गन्धक, शुद्ध मैनशिल, शुद्ध हिंगुल, तीक्ष्ण लौहभस्म, ताम्रभस्म, सीसाभस्म, सोंठ, कालीमिर्च और छोटी पिप्पली—ये दसों द्रव्य पाँच-पाँच तोले लें। निर्माण ❀ पहले पारद और गन्धक की कज्जली करे। सोठ, मिर्च तथा पीपल का चूर्ण कर कपड़छान कर ले, हिंगुल सहित मैनशिल और तीनो भस्मों को मिश्रित कर खरल मे घोट ले। इसके बाद सभी को खरल मे डाल जल से एक रोज तक खरल कर दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना लें सूखने पर इन गोलियो को ढककर रखे।

गुण ❀ इसके सेवन से एक ही दिन मे आमज्वर जो बहुत ही तीव्र हो तो भी शान्त हो जाता है। जिस आम सहित ज्वर और कफ प्रकोप में विशेष अग्नि की मंदता हो उसमे यह रस विशेष रूप से प्रयुक्त होता है। मात्रा ★ एक से दो रत्ती तक। अनुपान ★ उष्ण जल। समय ❀ चार-चार घंटे पर दिन भर मे चार मात्राएँ देनी चाहिए विशेष ❀ द्रव्यो की शुद्धि 'रसायनसार' ग्रन्थ में देखें।

त्रिफलादि बटी

योग ❀ आँवला, हर्रे और बहेड़ा दस-दस माशे, निशोथ बीस

माशे, मजीठ, जीरा और छोटी इलायची—ये तीनों दस-दस माशे, कलमीसोरा, जवाखार और बिधारा—ये पाँच-पाँच माशे, सनाय की पत्ती पचास माशे, काले मुनक्के बारह तोले तथा मिसरी पचीस तोले लें। निर्माण ❀ काष्ठ ओषधियों को एक साथ कूट और कपड़छान कर लें, कलमीसोरे और जवाखार को एक साथ पीसें, धुले कपड़े से पोंछे और बीज निकाले काले मुनक्का को पीस-पृथक रख लें। फिर मिसरी को महीन पीस और मोटी चलनी से छानने के बाद सभी चीजों को एक मे मिलाकर खरल करें और छः-छः माशे की गोलियाँ बना ढककर रखें।

गुण ❀ इसके सेवन से रक्तविकार, कब्ज, बढ़ा हुआ पित्त और रक्त विकार तथा पित्त के प्रकोप के कारण होने वाले विविध कष्ट, फोडे, फुन्सी, चकत्ते, ददरे, चमडे की रूक्षता इत्यादि तथा शरीर सूखना, नीद की कमी, जलन, बेचैनी और मूत्र-त्याग काल के कष्ट इत्यादि शीघ्र मिट जाते है। विशेषत: पुरानी बीमारी मे यह अधिक लाभ दिखाती है। मात्रा ★ तीन माशे से छः माशे तक। समय ★ केवल प्रात:काल एक मात्रा। अनुपान ★ ताजा दूध एक पाव या शीतल जल।

विशेष ★ रेचन के लिए उपयोग करना हो तो रात्रि में सोते वक्त एक मात्रा गरम दूध या गरम जल से लें। दिन मे विशेष रेचन के निमित्त अहले सुबह लेकर एक-एक घंटे पर गरम जल पीना चाहिए। रेचन के पश्चात् पुराना चावल और मूँग की खिचड़ी का पथ्य ले।

धान्यपंचक कषाय

योग ❀ धनिया, सोठ, नागरमोथा, सुगन्धवाला, बेल की गिरी—ये पाँचो चीजें पाँच-पाँच तोले लें। निर्माण ❀ घंटे-आध-घंटे इन्हें धूप मे सुखा लेने के पश्चात् जवकुट कर रख ले। यह कुल बारह खुराक है।

गुण ★ इसके उपयोग से उदर मे स्थित आमरस का पाचन हो जाता है और आम के कारण या वायु की विकृति के कारण उत्पन्न

शूल का शीघ्र ही शमन होता है। यह पित्त दोष का भी नाशक कषाय माना जाता है। मात्रा★दो तोले। समय★केवल प्रातःकाल यदि आम विशेष हो तो एक मात्रा सोते वक्त रात्रि मे भी इस कषाय का उपयोग किया जा सकता है। उपयोग ★ दो तोला कषाय लेकर रात्रि मे जल के साथ भिगो दें। जल आधा सेर लेना चाहिए। प्रात.काल आग पर मिट्टी के पात्र मे रख, जोश दें। आधा पाव कषाय (काढ़ा) शेष रहने पर कपड़े से छान सुहाता-सुहाता रोगी को पिलाना चाहिए। कम-से-कम एक सप्ताह तक इसके व्यवहार करने पर आम-शूल तथा उसके कारण अन्य उपद्रव निश्चय मिट जाते हैं।

तुत्थादि मलहम

योग ★ नीलाथोथा और कालीमिर्च पाँच-पाँच तोले, लाल कत्था दस तोले, पत्थर का मरा हुआ चूना चालीस तोले तथा गाय का घृत साठ तोले लें। निर्माण ★ सभी चीजो को पृथक्-पृथक् कूट और मोटे वस्त्र से छान घृत के साथ पत्थर के खरल मे एक दिन तक खरल कर बन्द पात्र मे रख लें।

गुण ★ इस मरहम के उपयोग से फोड़े-फुन्सी, सड़े घाव तथा मवाद वाले पुराने घाव आराम होते हैं। पुराने सड़े घाव मे एक सप्ताह के प्रयोग के बाद काफी लाभ नजर आने लगता है। उपयोग ❀ नीम की पत्तियों को डालकर उबाले जल से पहले घाव के मवाद को धोवे और सूखी रूई से उसकी तरी को सुखा लेने के पश्चात्, जितनी जगह मे घाव हो उसी अंदाज से साफ धुले कपड़े के टुकड़े पर मरहम की मोटी तह लगाकर चिपकाना चाहिए। नित्य प्रातःकाल ऊपर कही रीति से नीम के पानी से घाव धोने के बाद मरहम का उपयोग करना चाहिए।

विशेष ● पत्थर का चूना बरस-दो-बरस तक खुली जगह में रहने से मर जाता है, इसी प्रकार के चूने को पीसकर पानी मे घोल लें और दूसरे दिन पानी गिराकर नीचे की गाद को सुखाकर रख ले।

इसे ही मरहम के काम मे लावे। दीवार मे सटे मरे चूने का उपयोग करने वाले गलत काम करते है; क्योकि घर की गन्दगी के कारण उसमे टेटनस के कीटाणु रह सकते है; अतएव उसका उपयोग भयावह है।

रक्तरोधक चूर्ण

योग ❀ आँवला, बडी हर्रे और रसौत—ये तीनो पाँच-पाँच तोले। निर्माण ❀ घंटे-दो घंटे तक तीनों चीजो को धूप मे सुखाकर कपड़छान कर ले।

गुण ❀ रक्तप्रदर, अर्श, रक्तपित्त तथा यक्ष्मा की वह अवस्था जिसमे बलगम के साथ रक्त आता हो—इन सभी अवस्थाओं मे इसके उपयोग से रक्त का आना शीघ्र रुक जाता है। गर्भपातकाल मे भी रक्त रोकने के लिये इसका उपयोग करना चाहिए। क्योकि यह अत्यन्त और शीघ्र रक्त-रोधक योग है। मात्रा ❀ तीन से छः माशे तक। अनुपान ❀ गाय का कच्चा दूध, शीतल जल, कच्चे गूलर का रस पाच तोले, मुलेठी का काढ़ा या दूब का रस पाच तोले इत्यादि, रोग और अवस्थानुसार उपर्युक्त अनुपानों से इस औषधि का सेवन किया जाता है। समय ❀ प्रातः, दोपहर, शाम और रात्रि मे सोते वक्त, इस प्रकार चार या पाँच मात्राएँ तक दिन-रात मे दिया जा सकता है।

विशेष ❀ औषध सेवन-काल मे रोगानुसार पथ्य का पालन और हानिकारक द्रव्यो या चर्याओं का त्याग भी अपेक्षित है।

नेत्रपीड़ाहर लेप

योग ❀ कासनी और काहू के बीज सात-सात माशे, रसौत और अफीम ये दोनो चीजे डेढ़-डेढ़ माशे तथा इसबगोल तीन माशे ले। निर्माण ❀ कासनी, काहू और रसौत—इन तीनो को एक साथ कूटकर महीन पीस ले, एक चम्मच भर जल मे अफीम को आग पर खौलाकर गाढ़ा लेप बना ले, फिर छोटे चार चम्मच भर जल के साथ इसबगोल को भिगो दे। घंटे भर बाद साफ कपड़े से छान और मसलकर उसका

लुआब निकाल ले। ऊपर की चारों चीजें इसी लुआब में डालकर एकदिल कर लें और सुरक्षित ढँक कर रखें।

गुण ❀ इसके उपयोग से आँख आने के कारण उसकी लाली, दर्द, पलकों का सटना, कीचड आना तथा रोशनी का अच्छा न मालूम होना इत्यादि कष्ट मिटते हैं। जुकाम के कारण होने वाले या नजले के कारण उपस्थित नेत्र कष्ट भी इस लेप से दूर होते है। उपयोग ❀ आठ आठ आने भर साफ कपड़े की गोल पट्टी पर इस लेप की गाढ़ी तह चढ़ाकर आँख के पास की दोनों कनपटियों में साटना चाहिए। दो-चार घन्टे के बाद उसे हटाकर घंटे भर बाद पुनः दूसरी पट्टी साटनी चाहिए।

विशेष ❀ नेत्र कष्ट के समय शास्त्र में कथित पथ्यापथ्य का भी पालन करना आवश्यक है।

जातिफलादि गुटी

योग ❀ जायफल, लौंग, जावित्री, केशर, छोटी इलायची, शुद्ध अफीम, अकरकरा—ये एक-एक रुपये भर तथा उडाया हुआ कपूर चार माशे ले। इसके अतिरिक्त जगन्नाथी पान का रस भी दस तोले ग्रहण करें। निर्माण ❀ काष्ठ औषधियों को एक साथ कूटपीसकर कपडछान करे, केशर को पृथक् ही खरल कर महीन कर ले। तथा अफीम को उससे चौगुने जल मे खौलाकर गाढ़ा बना लें, फिर सभी को खरल में रख ऊपर से कपूर तथा पान का रस डाल घोटे। रस के सूखने पर एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना और छाया मे सुखाकर बंद शीशी मे रख लें।

गुण ❀ यह विशेष रूप से शुक्र क स्तम्भक है तथा अतिसार को प्रवद्ध अवस्था में अवरोधक गुण सम्पन्न है। शीत, जुकाम और साधारण खाँसी की दशा में व्यवहार करने से उन्हे भी यह बटी शान्त करती है। मात्रा ❀ आधी रत्ती से एक रत्ती तक एक बार में प्रयुक्त करे। समय ❀ अतिसार, खांसी, जुकाम और शीत से रक्षा के निमित्त सुबह, दोपहर-शाम और रात्रि मे सोते वक्त एक-एक मात्रा दें। शुक्र स्तम्भन के हेतु

सायंकाल दें। अनुपान ❀ अतिसार में शहद से, खाँसी, जुकाम और शीत से रक्षार्थ पान के बीड़े में रखकर तथा स्तम्भन गुण के लिए गरम दूध से बटी का सेवन करना अपेक्षित है।

विशेष ❀ अफीम की शुद्धि एवं कपूर उडाने की विधि के विषय मे विशेष जानकारी के लिए 'रसायनसार' ग्रन्थ देखें।

मदनविलास वटी

योग ❀ कस्तूरी चार माशे, केशर आठ माशे, शुद्ध सीगिया विष बारह माशे, शुद्ध अफीम सोलह माशे, तथा जावित्री बोस माशे लें। इसके अतिरिक्त मधु भी ढाई तोले ग्रहण करें। निर्माण ❀ जावित्री और सीगिया को एक साथ कूट और कपड़छान कर लें। कस्तूरी और केशर को एक साथ खरल करे, अफीम को चम्मच-दो चम्मच जल खौलाकर लेपसा बना लें, फिर सभी को खरल मे रख घोटे और ऊपर से थोड़ा-थोड़ा शहद भी डालते जायें। जब सात-आठ घंटे तक खरल हो ले तब आधी रत्ती की गोलियाँ बना और छाँये में सुखालें।

गुण ❀ यह योग वीर्य का स्तम्भक, जुकाम तथा वात-कफ की खाँसी का निरोधक है अतिसार के वेग को रोककर मल का वर्द्धक एवं शीत-निवारक है। इसकी प्रकृति अति उष्ण है। मात्रा ❀ आधी रत्ती एक बार में। समय ❀ पाँच-पाँछ घंटे पर एक-एक मात्रा देनी चाहिए। क्योंकि इस में दो-दो विष पड़े है और तीव्र द्रव्य कस्तूरी का भी मिश्रण है। अनुपान ❀ स्तम्भन के लिए गरम दूध से, अतिसार में शहद से खाँसी, जुकाम तथा शीत निवारण के लिए पान के बीड़े में।

विशेष ❀ सीगिया की शुद्धि 'रसायनसार' ग्रन्थ मे देखे। स्तम्भन के लिए केवल एल मात्रा सायंकाल दूध से सेवन करना उचित है।

मुद्रक—जगन्नाथ प्रिंटिग, ए. ३।१ मच्छोदरी पार्क, वाराणसी।

हमारे प्रकाशन की भिन्न-भिन्न पुस्तकों का सजिल्द सेट

[१] **मसालों के उपयोग : १६ पुस्तकों का मूल्य** ५-५०

(अजवायन, अदरख, कालीमिर्च, जीरा, तेजपात, दालचीनी, धनिया, प्याज, मगरैला, मेथी, राई, लहसुन, लौंग, सौंफ, हल्दी और हींग)

[२] **स्वास्थ्य निर्माण के साधन : ८ पुस्तकों का मू०** ७-५०

(आम, आँवला, गुलाब, तुलसी, नींबू, नीम, मधु, मट्ठा के प्रयोग)

[३] **स्वास्थ्य साधन : ६ पुस्तकों का मूल्य** ६-००

(आचार-विचार, भोजन, मनोरंजन, मादक वस्तुएँ, व्यायाम एवं स्वच्छता और स्वास्थ्य)

[४] **हम कैसे स्वस्थ रहें : ५ पुस्तकों का मूल्य** ४-००

(आरोग्य लेखाञ्जलि, ग्राम्य चिकित्सा, प्रसूता और शिशु-परिचर्या, मानसिक स्वास्थ्य एवं ऋतुएँ और स्वास्थ्य)

[५] **हमारा स्वास्थ्य और आहार : ५ पु० का मूल्य** ४-००

(आहार सूत्रावली, टोटका विज्ञान भाग १ व २, देहातियों की तन्दुरुस्ती, मोटापा कम करने के उपाय और मौसमी बीमारियाँ)

[६] **अनुभूत योग : पाँच भाग का** मूल्य ४-५०

हमारे आगामी प्रकाशन

१. प्राकृतिक-चिकित्सा विज्ञान
२. लोकोक्तियाँ और स्वास्थ्य
३. काम तत्त्व दर्शन
४. घरेलू नुसखे
५. रसायनसार परिशिष्ट
६. फलों के उपयोग
७. साग-सब्जियों के उपयोग

श्यामसुन्दर रसायनशाला

गायघाट • वाराणसी

श्री श्यामसुन्दर आयुर्वेद ग्रन्थमाला पुष्प—३३

लेखक

वैद्यराज उमेदीलाल वैश्य

प्रकाशक

श्यामसुन्दर रसायनशाला प्रकाशन

गायघाट, वाराणसी–१

मुख्य वितरक

सर्व सेवा प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी

द्वितीय संस्करण फरवरी, १९७७

मूल्य एक रुपया

विषय-सूची

अनुभूत योग

पंचम भाग

दाड़िमपुष्पादि गुटिका

योग—अनार के फूल (गुलनार) चार तोले, चूकापालक के बीज तथा धनिया प्रत्येक दो-दो तोले, कतीरा, बबूल का गोंद, सहिजन की फली का बीज और माजूफल—ये चारों चीजें एक एक तोले लें।

निर्माण—सभी चीजों को कूट-छानकर एक पत्थर के खरल में रखें और जल डालकर खरल करें। तीन-चार घंटे खरल कर लेने के बाद जब पीठी गोली बनाने लायक हो जाय तब चार-चार रत्ती की गोलियाँ बनाकर धूप में सुखा लें।

गुण—इसके सेवन से पेशाब और मुख के रास्ते से आने वाले रक्त की रुकावट होती है। रक्त-प्रदर में भी यह लाभ करता है। यदि तपेदिक के रोगी या रक्त-पित्त के रोगी के नाक या मुख से खून आवे तो इसके प्रयोग से रक्त का आना बंद हो जाता है।

मात्रा—चार से आठ रत्ती तक।

समय—सुबह शाम या जरूरत के अनुसार चार-चार घंटे पर दिन-रात में चार-पाँच मात्रा तक।

अनुपान—शरबत अनार, शरबत नीरोफर या बकरी का दूध।

कंठमालाहर योग

योग—सिरस के बीजों का चूर्ण चालीस तोले और मधु अस्सी तोले लें।

निर्माण—दोनों चीजों को मिश्रित कर मिट्टी के पात्र में रखें और पात्र

के मुख पर ढक्कन रख उर्द के आटे से संधि बंद कर दें। इस पात्र को इक्कीस दिनों तक धूप मे रखें। बाईसवें दिन मिट्टी के पात्र से औषधि को निकालकर शीशे के ढक्कनदार पात्र मे रख लें।

गुण—इससे कंठमाला ठीक हो जाता है।

मात्रा—एक तोला।

समय—सुबह-शाम।

व्यवहार—एक मात्रा औषधि चाटना चाहिए।

परहेज—अम्ल वस्तु उडद, पीला कोहडा, अरबी इत्यादि वादी की चीज।

टंकण बटिका

योग—शुद्ध सोहागा, बडी हर्रे, सोंठ, चित्रक की जड़ की छाल, सज्जी क्षार, कल्मीसोरा, वायविडंग, सफेद जीरा, स्याह जीरा—ये नौ चीजें पांच-पांच तोले तथा एक साल का पुराना गुड पैंतालिस तोले लें।

निर्माण—काष्ठ औषधियो को एक साथ कूट और कपडछन कर लें तथा सोहागा इत्यादि खारी चीजो को एक मे मिलाकर कूट छान लें। फिर सभी को पत्थर के खरल मे रख ऊपर से गुड डालें और खरल करें। सज्जी क्षार इत्यादि के कारण बिना जल मिलाये ही पीठी गीली हो जायगी और गोलियाँ बनेंगी, यदि न बने तो थोड़ा जल का छींटा देकर खरल करें और एक-एक माशे की गोलियाँ बना लें।

गुण—इससे तिल्ली और जिगर का कडापन दूर होता, इन रोगो के कारण होने वाली अरुचि, मदाग्नि, उदर-विकार, कब्ज तथा पेट मे वायु का भरना आदि कष्ट शान्त होते तथा रोग का शमन होता है।

मात्रा—एक से चार माशे तक।

अनुपान—गर्म जल।

समय—सुबह-शाम एक-एक मात्रा।

पांडुहर कषाय

योग—सफेद पुनर्नवा की जड, सोंठ, नीम की हरी छाल, ताजी गडूची, हल्दी, कुटकी, देवदारु और हर्रे-ये आठो चीजे तीन-तीन माशे लें।

निर्माण—सभी को कुचलकर एक मिट्टी या कलईदार पात्र मे, रात्रि में आधा सेर जल के साथ भिगो दें। प्रातःकाल काढा पकावें, जब आधा पाव शेष रहे तब उसे कपड़े से छान शीतल होने दें फिर उसमें छः माशे मधु मिला ले। यह एक मात्रा है।

गुण—यह काढ़ा पांडु, सूजन, जिगर और तिल्ली के बढ़ने के कारण उत्पन्न विकार (जलन, सूजन, ज्वर तथा पसलियो के दर्द इत्यादि), उदर की वृद्धि, कब्ज तथा अग्नि की मंदता को नष्ट करता है। यह मल का शोधक है। कुछ सप्ताह तक सेवन करने पर निर्बलता दूर होती तथा शरीर मे बल की वृद्धि होने लगती है।

मात्रा—पाँच तोले से दस तोले तक इसकी एक मात्रा है।

समय—प्रातःकाल मे ताजा बनाकर इस काढे का सेवन करना चाहिए।

विशेष—यदि प्रसूता स्त्री के शरीर मे सूजन हो तो उसमे भी इसका प्रयोग कर लाभ उठाया जा सकता है। जब पतली टट्टी हो रही हो उस काल मे इस काढे का उपयोग रोक देना चाहिए।

यमान्यादि गुटिका

योग—अजवाइन, देवदारू, सेंधानमक, वायविडंग, चित्रक की जड की छाल, पीपरामूल, सौफ, पीपल और कालीमिर्च-इन नौ चीजो को एक-एक तोले, हर्रे पाँच तोले, विधारा और सोंठ दस-दस तोले ले। एक साल का पुराना गुड़ चौंतीस तोले अलग से ग्रहण कर रखें।

निर्माण—सभी काष्ठ औषधियो को एक साथ कूट और कपड़छन कर लें और नमक को पीसकर मोटे वस्त्र से छान चूर्ण में मिलायें। इसे खरल मे रख गुड़ डालकर घोटें। जल के छीटे डाल एक-एक माशे की गोली बना और सुखाकर रख लें।

गुण—इससे सूजन, आमवात, जोड़ो का दर्द, गृध्रसी, कमर, पीठ, गुदा तथा जाँघ की पीडा, तूनी, प्रतूनी, विश्वाचि तथा कफ एवं वात से सम्बन्धित रोग नष्ट होते हैं।

मात्रा—एक से तीन माशे तक। यह हल्की मात्रा है। पूर्ण मात्रा छः माशे है।

समय—सुबह, दोपहर, शाम और सोते वक्त रात्रि में।

अनुपान—ताजा या गर्म जल।

विशेष—यदि वातव्याधि या आमवात की शान्ति के लिए इसका प्रयोग किया जाय तो अनुपान रूप में रास्ना-पचक, रास्ना-सप्तक या महारास्नादि-पाचन क्वाथ लेना चाहिए। दशमूल के काढे के साथ भी इसका सेवन किया जाता है। जिन रोगो मे इसका प्रयोग करना हो उनके मुताबिक पथ्यों का पालन तथा अपथ्यो का त्याग करना आवश्यक है।

उदरामृत लौह

योग—लौहभस्म दो तोले, ताम्रभस्म, शुद्ध पारद, शुद्ध आंवलासार गन्धक—ये तीनों चीजें एक-एक तोले—मृग चर्म की भस्म तथा कागजी नीबू की जड़ की छाल का चूर्ण—ये दोनों वस्तुएँ चार-चार तोले लें।

निर्माण—पारद और गन्धक को एक साथ खरलकर कज्जली बना लें। इसके पश्चात् सभी चीजो को पत्थर के खरल मे मिश्रित कर जल के साथ खरलकर गोलियां बना और सुखा लें। गोलियां चार-चार रत्ती की बनावें।

गुण—इससे बढी प्लीहा, यकृत दोष, गुल्म रोग निश्चय ही मिट जाते हैं। इसका प्रयोग विषम ज्वर, पांडु तथा कामला इत्यादि रक्ताल्प से युक्त रोगों मे भी होता है।

मात्रा—यद्यपि इसकी मात्रा शास्त्रो मे नौ रत्ती तक है; पर शुरू-शुरू में चार रत्ती की ही मात्रा देनी चाहिए। अनुकूल होने पर मात्रा बढ़ायी जा सकती है।

समय—सुबह, शाम और सोते वक्त रात्रि में एक-एक मात्रा देनी चाहिए।

अनुपान—तुलसी या गूमे के पत्रों के स्वरस और मधु से विषय ज्वर मे, कालीमिर्च का चूर्ण चार रत्ती और शिवलिंगी बूटी के पके फल का भरता आठ रत्ती में औषध का मिश्रण कर गर्म जल से, प्लीहा की वृद्धि मे मकोय के पत्तों के रस और मधु से, यकृत-दोष व पांडु में पिप्पली के आठ रत्ती चूर्ण और मधु से, कामला में मूली के पत्तो के रस से इसका सेवन करना चाहिए। गर्म जल या केवल शहद से भी इसे दिया जाता है।

सिंहवाहिनी बटी

योग—कस्तूरी और उड़ाया हुआ कपूर दो-दो माशे, जायफल, जावित्री, केशर, लौंग, छोटी इलायची के दाने, अजवाइन, माजूफल, रूमीमस्तगी, समुद्रशोष, मोंठ की जड़, शुद्ध अफीम, अकरकरा और सिंगरफ—ये तेरहों चीजें पाँच-पाँच माशे लें तथा अढाई तोले शुद्ध शहद ग्रहण करें।

निर्माण—कस्तूरी, केशर और कपूर को एक जगह खरल कर लें, काष्ठ औषधियो को एक साथ कूट और कपडछन कर पृथक रखें तथा एक चम्मच जल में खोलाकर अफीम का कीमाम तैयार करें। पश्चात् खरल में सिंगरफ को घोंट, सभी द्रव्यों को उसी मे मिश्रण कर घटे-दो घटे खरल कर शहद मिलावें। चार-छः घंटे तक खरल करने से जब शहद एकदिल हो जाय तब दो-दो रत्ती की बटी बना और सुखाकर रख लें।

गुण—यह पुरुष-शुक्र का स्तम्भक है। खांसी (कफ और वायु की), जुकाम, शीत तथा अतिसार मे इसके उपयोग से शीघ्र लाभ होता है। यदि शरीर मे अश-क्तता हो तो उस दशा मे भी इसका उपयोग किया जाता है। शुक्र स्तम्भन के लिए इसका विशेष उपयोग होता है, क्योकि यह विशेष काल तक स्तम्भक है।

मात्रा—एक से दो रत्ती तक।

समय—सुबह-शाम और सोते वक्त रात्रि में एक एक मात्रा लेनी चाहिए।

अनुपान—स्तम्भन गुण के निमित्त दूध मिश्री से, खांसी-जुकाम मे पान के बीडे में रखकर, अतिसार मे मधु और बेलपत्र के स्वरस से, शीत-निवारण के लिए जगन्नाथी पान के रस और मधु से तथा अशक्तता मे सितोपलादि चूर्ण एक माशे और ताजा मक्खन एक तोले मे मिश्रित कर सेवन करें।

वारुणी तैल

योग—इन्द्रायण की ताजी जड बारह तोले और काले तिल का तेल अड़ता-लिस तोले लें।

निर्माण—प्रातःकाल इन्द्रायण की लता की जड़ को खोदें और लता के उत्तर की दिशा वाली जड़ को खोदकर ले लें। उसे जल से धो और कपड़े से पोछकर सिल पर महीन पीस लें, फिर एक लोहे के कड़ाही में उस लुगदी को रख ऊपर से

ल डालें। इस तेल के पाक-काल मे पतली चीजें काढ़ा या दूध इत्यादि तेल से चतुर्गुण डालकर पाक करने का विधान नही है। अतएव मंद-मंद आंच पर ही इसका पाक करना उचित है। तेज आंच मे लुगदी के जल जाने की शंका रहती है। कल्क या लुगदी को चलाते रहे। जब वह लाल हो जाय तब कड़ाही को आग से पृथक् कर शीतल कर लें और मोटे कपड़े से छानकर तेल को वन्द पात्र मे रख लें।

गुण—इस तेल के भक्षण से हाथ-पैर और सिर का कांपना दूर हो जाता है और मन्या नाडी मे दोष के कारण होन वाले कम्प को भी यह तेल नष्ट कर डालता है। उपदंश और फिरंग इत्यादि रोगो के विष को भी यह तेल अपने प्रभाव से निमूंल करने मे समर्थ है।

मात्रा—आठ आने से एक तोले तक एक बार में।

अनुपान—पुराने चावल का ताजा भात अन्दाजन चार-पांच ग्रास।

उपयोग—गरम भात चार-पांच कौर के बराबर लेकर उसी के ऊपर एक तोला वारुणी तैल डाल और अच्छी प्रकार मिश्रित कर भक्षण कर लेने के वाद आगे भोजन करें।

समय—दिन मे दो बार, दस बजे दिन और पाँच बजे सायंकाल।

अहिफेन बटिका

योग—शुद्ध अफीम दो तोले, लौंग, जायफल, जावित्री, मोचरस, शुद्ध सिंगरफ और केशर—ये छहों चीजें डेढ-डेढ तोले लें बड़ की ताजी कोपल तीन तोले तथा पोस्ते के ढोडे का काढ़ा पन्द्रह तोले ग्रहण करें।

निर्माण—आधी छटांक जल मे खौलाकर अफीम को मोटे कपडे से छान लें और आग पर पकाकर गाढ़ा किमाम बना ले, केशर को पृथक ही खरल करें तथा सिंगरफ को भी पृथक ही खरल कर लें, बड की कोपल को खूब महीन पीस लें। लौंग, मोचरस तक की चारो सूखी काष्ठ औषधियों को एक साथ कूट और छान लें फिर सभी को पत्थर के खरल में रख पोस्ते का काढ़ा डालकर घोटें। जब जल सूख जाय और पीठी की गोली बनने लगे तब एक-एक रत्ती की गोली बना और सुखाकर रख लें।

पोस्ते का काढ़ा—तीन छटांक पोस्ते के ढोडे को बारह छटांक जल के साथ

रात्रि मे भिगा दें। प्रात.काल काढ़ा बना लें और चौथाई शेष रहने पर छान-कर काढ़ा ले लें और सीठी अलग कर दें। इसी काढे की भावना देकर औष-धियो को खरल करें और गोली बनावें।

गुण—इससे सभी प्रकार के अतिसार, जुकाम, खासी, शीत का प्रकोप का शमन तथा वीर्य का स्तम्भन होता है।

मात्रा—एक रत्ती।

अनुपान—अतिसार मे चावल के धोवन और मिसरी, जुकाम, खांसी और शीत मे पान के बीड़े में तथा वीर्य के स्तम्भन के लिए सायंकाल गरम दूध और मिसरी से इसका सेवन अपेक्षित है।

समय—अतिसार मे चार-चार घटे पर दिन मे चार बार और जुकाम, खांसी तथा शीत मे भोजन के पश्चात् दो बार और रात्रि मे तथा वीर्य स्तम्भन के लिए केवल एक बार।

मुसल्यादि चूर्ण

योग—सफेद मूसली, सत्त गिलोय, केवाच के बीज, तालमखाना, सेमलकंद, आंवला, गोखरू—ये सातो चीजें पांच-पाव तोले लें और साफ देशी चीनी पैंतीस तोले पृथक ग्रहण करें।

निर्माण—केवांच के वीजो को आठ गुने दूध मे उबाल और उसके ऊपर के छिलके को पृथक कर चाकू से उन्हे काटकर खड-खंड कर तथा धूप मे सुखा लें। आंवले के भीतर की गुठली हटा दें। फिर सभी को कूट और कपडछन कर चीनी मिला लें।

गुण—इस चूर्ण के सेवन से काम-शक्ति प्रबल होती है। धातु का पतलापन मिट जाता है। स्वप्नदोष, दिमाग में चक्कर आना, शारीरिक निर्बलता, पित्त की उष्णता एव उसकी वृद्धि इत्यादि कष्ट शीघ्र मिट जाते है।

मात्रा—छः माशे एक बार मे।

अनुपान—एक तोले गाय का घी और आधा पाव गाय के दूध में इस चूर्ण को मिलाकर पीना चाहिए।

समय—सुबह-शाम तथा रात्रि में सोते वक्त।

सूरण का अवलेह

योग—उबाले हुए सूरण की पीठी अढाई सेर, गौ घृत बत्तीस तोले, दानेदार शक्कर अढाई सेर, सोंठ, पीपल और सफेद जीरा ये तीनों चीजें आठ-आठ तोले, धनिया, तेजपात, दालचीनी, छोटी इलायची तथा कालीमिर्च—ये पाचों चीजें दो-दो तोले एवं शहद बत्तीस तोले ग्रहण करें।

निर्माण—सूरण की पीठी को घी में भूनें, सुर्ख होने पर उसमे शक्कर की एक तार की चाशनी डाल पाक करें। कल्छी से चलाते भी जायँ ताकि जले नहीं। गाढ़ा होने पर सोंठ से कालीमर्च तक की आठों चीजो का कपड़छन चूर्ण डालकर भलीभाँति मिला लें और आग पर से उसे उतार शीतल होने पर शहद का मिश्रण कर दें।

गुण—इसके सेवन से बवासीर, मूढ वात तथा मंदाग्नि इत्यादि रोग निर्मूल होते हैं।

मात्रा—आठ आने भर से एक तोले तक।

अनुपान—गाय का गुनगुना दूध आधा पाव।

समय—सुबह और सायकाल एक-एक मात्रा।

विशेष—जो वायु मूढ हो जाय, बेहोश प्राणी की भाँति निश्चेष्ट रहे या अपने नियत कार्य और गन्तव्य स्थानों में विचरण करना छोड़ दे उसे मूढ़ वात कहते हैं। वायु का बिगड़ना, पेट की अग्नि का मंद होना तथा उदर मे आमा दोष की अधिकता इत्यादि विकारो को सुरण दूर करता है और उसके द्वारा निर्मित दृढयोग से जिसमे सुरण के गुण-धर्म को अधिक विकसित और गुणयुक्त करने वाले योग द्रव्यों का भी मिश्रण है तथा पाक विधि के द्वारा जिस योग की गुरूता का भी नाश कर दिया गया है बवासीर के निमित्त विशेष फलप्रद है। यदि बवासीर मे कहे गए पथ्या-पथ्य पर ध्यान देकर इस योग का कुछ मास सेवन कर लिया जाय तो निश्चय ही यह रोग पुनः उभड़ न सकेगा।

वातव्याधिहर योग

योग—मुलेठी, जीवन्ती, मुग्दपर्णी, माषपर्णी, काकोली, क्षीरकाकोली, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि और वृद्धि इन बारहों औषधियों को पाँच-पाँच

तोले ले, साठ तोले दानेदार शक्कर, तीस तोले ताजा गौ घृत एवं पंद्रह तोले छोटी मक्खी का शहद ग्रहण करें।

निर्माण—काष्ठ औषधियों को घंटे-दो-घंटे धूप मे सुखा कूट और कपड़छन कर शक्कर, घी और शहद का मिश्रण कर लें।

गुण—इससे वातव्याधि का असर जाता रहता है। पक्षाघात की दशा मे यह विशेष उपयुक्त है। यह गर्भस्थापक, दुग्ध-वर्द्धक, बलदायक, पौरुषशक्ति उत्पादक, शीतल, तृष्णाहर, वातनाशक, पित्तशामक, क्षयशोषक, ज्वर तथा दाह का निवारक है। रोग शय्या से उठने पर निर्वलता को दूर करने के लिए कुछ काल तक इसके उपयोग से रोग से पूर्व की दशा पुनः शीघ्र प्राप्त हो जाती है।

मात्रा—एक से दो तोले तक एक बार में।

अनुपान—औषधि को चाटकर ऊपर से उबाल कर शीतल किया दूध पीना चाहिए।

समय—प्रातःकाल, सायंकाल और सोते वक्त रात मे इस योग की एक एक मात्रा लेनी चाहिए।

विशेष—अष्टवर्ग की आठो चीजें प्राय. नही मिलती हैं। इस कारण उनके प्रतिनिधि द्रव्यों का ग्रहण करना उचित है। क्रमशः उनके प्रतिनिधि निम्नलिखित द्रव्य हैं। मेदा (असगन्ध), महामेदा (शारिवा), जीवक (गुडची), ऋषभक (बंशलोचन), ऋद्धि (बरियार), वृद्धि (सहदेई), काकोली (असगध) और क्षीर का कोली (असगन्ध) इस विधि से प्रतिनिधि वाले द्रव्यो का ग्रहण करना उचित हैं।

सौभाग्य चिन्तामणि

योग—शुद्ध पारद, शुद्ध आवलासार गन्धक, शुद्ध हिंगुल तथा शुद्ध जमाल-गोटे के बीजों की गोलियां इन चारो द्रव्यो को क्रम-क्रम से बढाकर लें अर्थात् पारद एक, गन्धक दो, हिंगुल तीन और जमालगोटे की गिरी चार भाग ले। इसके अतिरिक्त जमालगोटे की जड़ का क्वाथ बीस तोले पृथक ग्रहण करें।

निर्माण—पारद और गन्धक की कज्जली कर लें। आठ घटे तक दोनो को एक साथ पत्थर के खरल मे घोंटने से उत्तम कज्जली बनेगी। उसी में हिंगुल तथा जमालगोटे की गिरी का कपड़छन चूर्ण मिश्रित कर जमालगोटे की जड के

काढे से घोंटें। जब सभी क्वाथ सूख जाय तब एक-एक रत्ती की गोली बना और सुखाकर रख लें।

गुण—यह विषम ज्वर की उस अवस्था मे विशेष लाभदायक है जब रोगी का कोष्ठबद्ध हो, पित्त बिगड़ा हो, अनियमित समय पर ज्वर आता हो तथा बहुत काल तक ज्वर आता ही रहता हो।

मात्रा—एक रत्ती एक बार मे।

अनुपान—तीन माशे शर्करा मे मिश्रित कर औषध सेवन करना और ऊपर से उष्ण जल, शीतल कर देना चाहिए।

समय—कोष्ठबद्ध की दशा में सुबह और शाम। कोष्ठबद्ध न हो तो केवल एक मात्रा प्रातःकाल दें।

गोक्षुरादि घृत

योग——गाय का ताजा घृत दो सेर, गोखरू एक सेर, धनिया एक सेर, जल सोलह सेर लें। कल्क के लिए धनिया और गोखरू एक-एक पाव पृथक ही ग्रहण करें।

निर्माण—धनिया और गोखरू को कुचलकर रात्रि मे जल के साथ भिगो दें। प्रातःकाल काढा पकाये। जब चार सेर शेष रहे तब उसे छान लें और सोठी पृथक कर दें। एक-एक पाव पृथक रखे धनिये और गोखरू को भी रात्रि मे थोड़े जल मे भिगो दें और प्रातःकाल सिल पर पीसकर महीन करे और अलग रख लें फिर लोहे की कड़ाही मे घृत को तप्त करें जब उसमे धुआं उठने लगे तब उसमें आम के या जामुन के पल्लव डालकर देखें। जब पल्लव डालते ही वह घृत मे शब्द के साथ चक्कर काट ऊपर स्थिर हो जाय तब उसे चिमटे से पकड़ कर चुटकी से परीक्षा करें। पापड की तरह चूर-चूर हो जाने पर घृत की कड़ाही को आग पर से हटा दें। घटे भर बाद उसे पुनः चूल्हे पर रख आँच दें। आँच मन्द रहे और उसी मे काढे और धनिया तथा गोखरू की पिसी लुगदी डाल दें। मद आँच पर पककर जब केवल घृत शेष रहे तब चूल्हे से उसे उतार ठंडा होने दें। जब कुछ गर्म ही रहे तभी मोटे वस्त्र से छानकर रख लें।

गुण—इस घृत के व्यवहार से मूत्राघात और उसके बारहों प्रकार के भेदों और रोग-काल मे होने वाले अन्य विकार शमन होते हैं। मूत्रकृच्छ्र तथा [illegible]

प्रकोप से होने वाले मूत्र काल के कष्टों का भी यह घृत निवारण करता है।

मात्रा—आठ आने से एक तोले तक। एक बार मे इसकी मात्रा है।

अनुपान—गुनगुना गर्म दूध आधा पाव।

समय—सुबह और शाम।

सूरण बटी

योग—छिला और सिल पर पिसा सूरण और चित्रक की जड़ की छाल पाँच-पाँच तोले, सोठ और कालीमिर्च ये दोनों चार-चार माशे तथा एक साल का पुराना गुड ग्यारह तोले लें।

निर्माण—तीनों सूखी चीजों को कूट और कपडे से छानकर पीसे हुए सूरण की लुगदी मे मिला दें और गुड डाल कर घटे भर तक खरल कर आठ-आठ रत्ती की बड़ी गोली तैयार कर लें। इन्हे धूप मे सुखाकर रख लें।

गुण—खूनी, वादी, नये-पुराने बवासीर, मदाग्नि तथा उदर की वह खराबी जिसमे देर से अन्न का हजम होना तथा खट्टी डकारें आना जारी रहता है और शरीर इसी कारण दुबला होता जाता है। ऐसे लक्षणो के समय इस बटी का कुछ काल सेवन कर लेने से तमाम रोग दूर हो जाते हैं।

मात्रा—आठ रत्ती की एक गोली एक बार मे सेवन करें।

अनुपान—गरम जल।

समय—सुबह और शाम।

विशेष—पेट की अग्नि को मद करने वाली तथा देर से हजम होने वाली चीजें—शीतल जल, भुने हुए चना-चवेना इत्यादि सूखे अन्न त्यागने तथा गर्म जल, घृत, मक्खन, मट्ठा और मूली इत्यादि सेवन योग्य हैं।

नये बुखार पर चंद्रेश्वर बटी

योग—शुद्ध पारद, शुद्ध आँवलासार गन्धक, शुद्ध बत्सनाभ विष तथा ताम्रभस्म–ये चारो चीजें पाँच-पाँच तोले, आदी का रस एक सेर बारह छटांक और निगुंडी के ताजे पत्तों का रस दो सेर लें।

निर्माण—पारद और गंधक को खरलकर कज्जली तैयार कर लें। सात-आठ घटे तक खरल कर लेने से साधारणतः औषध के मिश्रण योग्य कज्जली का

गठन हो जाता है। फिर चारो चीजों-पारद-गन्धक की कज्जली, विष और ताम्र-भस्म को एक साथ मिलाकर एक रोज खरल कर लेने के पश्चात एक-एक पाव आदी के रस को डालकर खरल करें। जब प्रथम बार का दिया हुआ रस सूख जाय तब दूसरी बार रस दें। इसी क्रम से सभी रस को सात बार मे डाल और खरलकर सुखा दे। दूसरी भावना निगुन्डी के रस की दें। इसको भी पूर्व क्रम से सात बार मे सात भावना दें और औषध की पीठी जब गोली बनाने योग्य हो जाय तब एक-एक रत्ती की गोलियां बना और धूप में सुखाकर रख लें।

गुण—इस बटी से सभी प्रकार के नये ज्वर का पाचन और शमन होता है। ज्वर के कारण और उससे भी पूर्व के उदर एवं रक्त में मिश्रित रोगोत्पादक अदृश्य कीटाणुओं एवं विषो का नाशक तथा उदर में होने वाले तनाव और पसीने की रुकावट को भी हटाती है।

मात्रा—एक रत्ती एक बार मे प्रयोग करना चाहिए।

अनुपान—एक मात्रा के साथ छः माशे आदी के रस का प्रयोग करें।

समय—दिन-रात में चार-चार घंटे पर चार मात्राएं तक दे सकते है।

विशेष—ताम्रभस्म विधिपूर्वक और उत्तम ढंग से बनी हुई लें क्यो कि साधारण ताम्रभस्म से बनी औषधि का नव ज्वर मे प्रयोग करने से सिर मे चक्कर, वमन तथा मिचली इत्यादि एवं व्याकुलता बढ़ जाती है जो अनिष्ट की अवस्था लाने में सहायक होती है।

तुम्बी तैल

योग—कड़ुआ तेल चार सेर, कड़ुवी तुंबी का कपडे से छना रस सोलह सेर, वायविडग, जवाखार, सेंधानमक, घोड़-बच, रास्ना, चित्रक की जड़ की छाल, सोठ, पीपल, कालीमिर्च और देवदारू—ये दसो चीजे मिश्रित एक सेर लें।

निर्माण—वायविडग से देवदारू पर्यन्त दसो चीजो को जब कूटकर जल में भिगो दें जल इतना डालें जितने मे सभी चीजे तर हो जायें। यह कार्य रात्रि मे करे। प्रातःकाल सिल पर उसे पीसकर चटनी की तरह बना लें। कड़ुवी तुंबी को छील और कुचलकर रस निचोड लें और कपडे से छान भी तथा कड़ुए तेल को कड़ाही मे रख तप्त करें। जब धुआँ निकलने लगे तब

उसमें आम या जामुन इत्यादि के दो-चार पत्ते डालें। पत्तों के डालते ही आवाज हो गी और चक्कर काटकर स्थिर हो जायेंगे। उन पत्तों को चिमटे से लेकर चुटकी से दबाकर देखें। जब वे पापड़ की तरह चूर हो जायँ तब समझें कि तेल पक गया है, ऐसी अवस्था मे आंच कम कर दें। घंटे भर बाद उसमे पिसी चटनी और तुंबी का रस डाल आंच दें। आंच मन्द दें। जल के पच जाने पर तेल को उतार लें और शीतल होने पर मोटे वस्त्र से छान लें।

गुण—इससे गंडमाला, अपची तथा शरीर मे उभड़कर पकने तथा फूटकर बहने वाली ग्रन्थियां समाप्त हो जाती हैं।

उपयोग—नीम के पत्ते के उबले जल से धो और सूखे कपडे से उसकी तरी को सुखाकर रूई के फाहे मे तर कर तेल की पट्टी रखनी चाहिए।

त्रिफलादि मोदक

योग—आवला, हर्रे और बहेड़ा—ये तीनों चीजें मिलित बत्तीस तोले, शुद्ध मिलावें सोलह तोले, बाकुची बीस तोले, वायविडंग सोलह तोले, शतपुटी तीक्ष्ण लौहभस्म, निशोथ, शुद्ध गुग्गुल तथा शुद्ध शिलाजीत—ये चारो चीजे चार-चार तोले, पुष्करमूल और चित्रक की जड की छाल—ये दोनो चीजें दो-दो तोले, कालीमिर्च आठ आने भर, सोठ, पीपल, नागरमोथा, दालचीनी, छोटी इलायची के दाने, तेजपात और काश्मीरी केशर—ये सातो चीजें चार-चार आने भर लें तथा एक सौ आठ तोले मिश्री पृथक् ग्रहण करें।

निर्माण—काष्ठ औषधियों को एक साथ कूट और कपड़छन कर ले। लौह भस्म और केशर को पृथक्-पृथक् खरल कर काष्ठ औषधियो के छने चूर्ण में मिश्रित करें। शुद्ध गुग्गुल और शिलाजीत को आधा पाव जल में एक साथ ही खोलाकर लेप की तरह कर लें और इन्हे भी चूर्ण मे मिश्रित कर दे। इसे ढंक कर रखें। पुनः मिश्री की उससे चौथाई जल डालकर एक तार की चाशनी बनावें। उपर्युक्त ढककर रखे चूर्ण को चाशनी मे डाल भलीभांति कल्छी से चलाते हुए पाक करें। लड्डू बनने योग्य पाक जब हो जाय तब उसे चूल्हे से उतार कर चार-चार तोले के लड्डू बना सुरक्षित रख लें।

गुण—इसके सेवन से अनेक प्रकार के रोग नष्ट होवे हैं। यह त्रिदोष के कुपित होने के कारण उत्पन्न व्याधि, सभी प्रकार के कुष्ट, भगन्दर, प्लीहा के

विकार, जिह्वा और तालु से सम्बन्धित रोग, गले और सिर के रोग, आँख और भौहों के रोग, पीठ और कमर के रोग तथा गुल्म इत्यादि उदर से सम्बन्धित पुरातन रोग-समूहों को नष्ट करता है।

मात्रा—एक से चार तोले तक इसकी मात्रा है। शुरू-शुरु मे एक सप्ताह तक एक तोले ही इसकी मात्रा लेनी चाहिए। पुनः बढ़ाकर दो तोले कर लेनी चाहिए। यदि रोगी बलयुक्त हो, प्रकृति वात और कफ की हो तो इसकी चार तोले की पुर्ण मात्रा भी लेनी चाहिए।

अनुपान—गुनगुने दूध से इसे सेवन करना चाहिए। तिल्ली और कफज व्याधियो मे गौ दुग्ध की अपेक्षा बकरी के दूध के साथ, उदरव्याधियो में गरम जल से या आजवाइन के अर्क से सेवन करने योग्य है।

समय—कटि के नीचे के भागो में कष्ट होने पर भोजन से पुर्व, उदर व्याधि मे भोजन आधा कर चुकने पर उसके बीच में ही इसे लें। तथा गले से सम्बन्धित रोगों मे भोजन के पश्चात् इसके सेवन का शास्त्रीय विधान है।

अमृत घृत

योग—गौ घृत एक सेर पच्चीस तोले, जल एक सेर पच्चीस तोले, बकरी का मूत्र तथा गौ-मूत्र दो-दो सेर लें। पुनः कल्क द्रव्य जो निम्नलिखित हैं, संग्रह कर लें। यथा—शिरीष की छाल, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, हरड़, बहेड़ा, आँवला, सफेद चन्दन, कमल-पुष्प, बरियार, ककही, सफेद अनन्तमूल, कृष्ण अनन्तमूल, सफेद अपराजिता, जटामासी, नीम की छाल, पाटला, दुपहरिया पुष्प, अरहर, पुर्वा, अडूसे की जड की छाल, निर्गुण्डी की जड की छाल, इन्द्रजौ, पाठा, अंकोल की छाल, असगन्ध, मदार की जड़ की छाल, मुलेठी, पद्मकाष्ठ, इन्द्रायण की जड़, बड़ी कटेरी, मुनक्का, कचनार की छाल, शतावर, काँटेवाला, शिरीष की छाल, दन्ती, अपामार्ग, पृश्नपर्णी, रस, तो तिनिश वृक्ष की छाल, कुठ, देवदारू, प्रियगू फूल, पातालकोंहडा, महुए के वृक्ष की हीर, करंज का फल, बालबच, हल्दी, दारूहल्दी और पाठानी लोध—इन पचास द्रव्यो को एक-एक तोले ले।

निर्माण—पचासों कल्क द्रव्यो को कूटकर महीन करें और जल डालकर रात भर भीगने दें। जल उतना ही डाले, जितने में सभी द्रव्य अच्छी तरह भीग

जायें। प्रातःकाल सिल पर पीस उन द्रव्यो की पीठी तैयार कर ले। गो मूत्र और बकरी के मूत्र तथा घृत को तैयार रखें। अब सबसे पहले घृत को तप्त करें। जब धुआँ निकलने लगे अर्थात् घृत काफी तप्त हो जाय तब उसमे आम या जामुन के मुलायम पत्ते डालकर परीक्षा कर ले। पत्ते तप्त घृत मे शब्दयुक्त हो चक्कर काट एक जगह स्थिर हो जायें, तब उन्हे चुटकी से मसलकर देखें पापड़ की तरह चूर हो जायँ, तब घृत को चूल्हे से उतार ले या आँच ही कम कर दें। घण्टे भर बाद पुनः आँच दे और दोनों मूत्र तथा पिसी औषधियो के गोले बनाकर घृत में डाले। आच मंद दें। पाक होने पर कडाही को चूल्हे से उतार शीतल होने दें। कुछ गरम रहते ही मोटे कपडे से छानकर इस अमृत घृत को चौडे मुख के काँच पात्र में रखो।

गुण—यह घृत अपस्मार, विषविकार, दोषोज्वर, उन्माद, गरविष के विकार, उदर और पाँडु रोग, कृमि, गुल्म, प्लीहा, उरुस्तम्भ, जाघ का जकड़ना, कामला, हनुस्तम्भ (जबडे और ठुढी का रुक जाना), बालग्रह (स्कन्द और पूतना इत्यादि) को नष्ट करता है। यदि तीव्र विष के कारण रोगी संज्ञाहीन दशा में पड़ जाय तो उस काल मे इसका सेवन करना लाभदायक है। विष दोष को नष्ट कर पुनः जीवन देता है, अतएव इस घृत का सार्थक नामकरण 'अमृत घृत' किया गया है।

मात्रा—इसकी पूर्ण मात्रा एक से दो तोले तक है।

उपयोग—गरम दूध या गर्म जल मे घृत को डालकर रोगी को पिलाना चाहिए। यदि दूध के अभाव मे गर्म जल से देना हो तो घृत जिसमे पिघल जाय ऐसा गर्म जल रहना चाहिए।

समय—साधारण और पुराने रोगो मे चार-चार घटे पर या सुबह-शाम एक-एक मात्रा दें। मारक दशा मे-जैसे विष भक्षण की अवस्था या जहरीले कीड़ो के दंश के समय एक-एक घंटे पर दो तोले घृत को गरम दूध में डाल पिलाना चाहिए या केवल घृत को ही गरमकर चम्मच से मुख मे उतार देना चाहिए।

हिंगु गुटिका

योग—शुद्ध हीग, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, पाठा, हाऊबेर, हरड़, कपूर,

अजवाइन, बन जमायन, इमली, अम्लवेत, अनारदाना, पुष्करमूल, धनिया, सफेद जीरा, चित्रक, बालबच यवक्षार, सज्जीक्षार, सेंधानमक, सचल नमक और चव्य-इन तेईस चीजों को पांच-पांच तोले ले। इसके अतिरिक्त कपड़े से छना दस सेर बिजौरे नीबू का रस पृथक ग्रहण करें।

निर्माण—क्षार और नमको को एक साथ खरल करें। हीग को पृथक पीस लें तथा एक छटांक जल में इमली के गूदे को खौला और कपड़े से छान रस तैयार कर ले। इसके पश्चात् सभी काष्ठ औषधियो को एक साथ कूट और कपड़-छन कर पत्थर के बडे खरल मे रखे तथा हीग, नमक, क्षार एव इमली का रस मिला मर्दन करे। ऊपर से बिजौरे नीबुओ के रस की सात भावना दें और खरल करते जायें। एक बार मे एक-सवा सेर के अदाज रस डाले। कुल सात बार में दस सेर रस को डाले और खरल करने पर जब रस शेष हो जाय तब दुसरी बार की भावना दे। इसी क्रम से सातो बार को भावनाएँ देकर चार-चार रत्ती की गोलियां बना और सुखा ले।

गुण—इससे पार्श्वशूल, वस्तिशूल, कफ और वात के प्रकोप के कारण बढ़े हुए गुल्म रोग, अनाह, मूत्रकृच्छ, गुदा और योनिशूल, ग्रहणी विकार, अर्श, प्लीहा, पाण्डु, अरुचि, छाती मे जकड़ना कफ या वात के कारण (कास), हिचकी, श्वास तथा गलग्रह इत्यादि अनेक रोग मिटते हैं। वात और कफ के विकार वाले विविध रोगो में यह लाभदायक है।

मात्रा—चार से आठ रत्ती तक एक बार में।

अनुपान—गरम जल, सुरा, मट्ठा, अर्क सौफ तथा अर्क अजवाइन।

समय—यदि पेट में खट्टापन ज्यादा हो तो भोजन से पहले और क्षार अधिक हो तो भोजन के तुरत बाद इसका सेवन उचित है। साधारणतः सुबह, दोपहर, शाम और रात्रि मे सोते वक्त इस बटी की पूर्ण आठ रत्ती को एक-एक मात्रा सेवन करने से दीर्घकालीन रोग शीघ्र मिट जाते हैं।

विशेष—यह योग प्राचीन ग्रन्थ चरक का ही है। किन्तु इसे प्राचीन अन्य ग्रन्थकर्ताओ ने अति-उपयोगी समझ अपना लिया है। चरक में इसे 'हिंग्वादि चूर्ण' के नाम से गुल्म चिकित्सा प्रकरण में लिया है। चिकित्सा कलिका ग्रन्थ के निर्माता श्रीसराचार्य ने भी इसे अपने ग्रन्थ मे सम्मिलित कर लिया है। बंगाल

और बिहार प्रदेश के वैद्यों ने भी इसे वटी का रूप दे और बिजौरे नीबुओं के
रस की भावना से इसके गुण मे वृद्धि कर रोगियों का विशेष उपकार किया है।
बिजौरे के रस की भावना और वटी निर्माण चरक की आज्ञा से ही प्राचीनों
ने की है।

प्रसूतिदोषहर कषाय

योग—देवदारू, बालबच, कूठ, अडूसा, पीपल, सोठ, कायफल, नागरमोथा,
चिरायता, कुटकी, धनिया, बडी हर्रें, गजपीपल, जवासा, गोखरू, धमासा, बड़ी
कटेरी, अतीस, गिलोय, काकडासीगी और स्याह जीरा-इन बीसो चीजो को
पांच-पांच तोले ले।

निर्माण—बडी हर्रें की गुठली निकाल लेने के बाद वजन करें सभी
औषधियों को कूटते समय ही ताजी गिलोय को भी मिलाकर कूटें और जवकुट
औषधियों को दो-चार घंटे तक धूप में डाल दें। इस प्रकार ताजी गिलोय का
रस सभी औषधियों मे मिश्रित हो जायगा और सूख भी जायगा। सूख जाने
पर कूटकर मोटी चलनी से सभी को एक बार छान लेने के बाद पात्र मे ढककर
रख ले।

गुण—इससे प्रसूता स्त्री के शरीर मे होने वाले विविध कष्ट दूर होते हैं
खासकर यह कषाय शूल, खांसी, ज्वर, श्वास, मूर्छा, कम्प तथा सिर मे होने
वाले दर्द को शीघ्र मिटाता है।

उपचार—इस कषाय में से दो-ढाई तोले लेकर एक मिट्टी के पात्र मे डालें
और ऊपर से आधा सेर जल डालकर रात्रि मे ढंक दें। प्रातःकाल काढ़ा
पकावें। आधा पाव शेष रहने पर कपडे से छान काढ़ा ग्रहण कर लो और
छूछ पृथक कर दे।

इस काढे को नित्य प्रातःकाल प्रसूता स्त्री को पिलावें। कुछ गुनगुना रहे
तभी पिलाना चाहिए। यह एक मात्रा है।

पौरुषदाता पेय

योग—कौंच के बीजो की गिरियां, उडद काली, गुठली निकाला खजूर,
शतावर, सिघाडे की गिरी, काले मुनक्के, इन छहो चीजो को आठ-आठ तोले
ले, गो का दूध एक सौ अट्ठाइस तोले और इतना ही ताजा जल ले। इसके

अतिरिक्त दानेदार खाड, ताजा गौ घृत और बंशलोचन—ये तीनों चीजें भी आठ-आठ तोले ही ले। आठ तोले भौरे की सफेद रंग का मधु पृथक् ग्रहण करें।

निर्माण—ऊपर की छहो चीजो को कुचलकर दूध, जल का उसमें मिश्रण करें और कडाही या कलईदार पात्र मे पाक करें। जब पानी उड जाय और केवल दूध शेष रहे तब उसे उतार कपडे से निचोडकर छानें। शीतल होने पर खूब बारीक पिसा और कपडे से छना बशलोचन, घृत, खांड तथा मधु का मिश्रण कर पात्र मे ढककर रखे। यह पाक प्रातःकाल ही तैयार कर लेना चाहिए।

गुण—इसके प्रयोग से वृद्धावस्था के कारण निर्बल व्यक्ति भी अनेक सतानो को प्राप्त करता हे तथा उसकी मूत्रेन्द्रिय युवा पुरुष की भाँति दृढ, चैतन्य युक्त एवं समागम के सर्वथा योग्य हो जाती है। यह पेय शरीर, मन तथा शरीर की सभी इन्द्रियो को पुष्ट, ओजयुक्त और मासल बना देता है। प्राचीन काल के अनुभवी वैद्यो ने इस पेय का उपयोग कर विशेष यश, धन और मान-मर्यादा का अर्जन किया था।

उपयोग—प्रातःकाल स्वस्थ होकर खाली पेट इसे पान करना चाहिए। आधा पेय एक बार मे पान कर तीन-चार घटे के पश्चात् पुनः आधा शेष रखा पेय का पान करें। मध्याह्न काल मे साठी चावलो का भात, मूंग की दाल, घृत और जीरा सेंधानमक तथा कालीमिर्च के योग से निर्मित परवल के शाक एवं आँवले की चटनी पथ्य रूप मे ले।

विशेष—यदि उक्त पेय अधिक मालूम पडे तो सभी सामानों को आधा ग्रहण कर पेय निर्माण करे और उसे ही दो बार मे भक्षण करे।

तृषानिवारक चटनी

योग—सूखे आलू-बुखारे दस तोले, कागजी नीबू का रस बीस तोले, सफेद जीरा, कालीमिर्च, सोठ, बडी पीपल, कालानमक, अजवाइन, धनिया और सौफ इन आठो चीजो को आठ-आठ आने भर लें। शुद्ध हीग चार आने भर, सूखे आँवले सवाभर, शुद्ध सोहागा तथा सेधानमक एक-एक भर तथा दानेदार खांड पांच तोले पृथक ग्रहण करें।

निर्माण—काठ या पत्थर के पात्र मे नीबू का कपडे से छना रस डाल उसमे आलुबुखारे को भिगो दें। इसे रात मे भिगोवें। प्रातःकाल मसल और छानकर

गाढ़ी चटनी ले लें और गुठलियो को पृथक कर दें। काष्ठ औषधियो को एक साथ कूट और कपडछन कर लें तथा हीग, सोहागा नमक एवं खांड इत्यादि को पृथक-पृथक खरल कर लें और फिर सभी चीजो को छनी हुई गाढी चटनी में मिश्रित कर ढक्कनदार शीशे के पात्र मे रख लें।

गुण—इसके सेवन से ज्वर काल मे होने वाला मुख को विरसता, अरुचि, प्यास, मंदाग्नि, जी का मिचलना और पित्त की तेजी इत्यादि विकार शीघ्र मिट जाते हैं। यह रुचिवर्द्धक स्वादिष्ट चटनी है।

मात्रा—तीन से छः माशे तक।

व्यवहार—आवश्यकतानुसार दो-चार घंटे पर चाटनी चाहिए।

विशेष—पथ्य लेने के वाद भोजन के साथ भी इसका व्यवहार किया जा सकता है।

करंजादि वटिका

योग—करजुए की मीगी, कुटकी, अतोस, नीम की पीली पत्तियाँ, गूमे की पत्तियाँ, पारिजात की पत्तियाँ, काली तुलसी, कालीमिर्च, छतिवन की छाल तथा हुलहुल की पत्तियाँ तथा कालीजीरी इन ग्यारहो वस्तुओ को पाँच-पाँच तोले लो। छोटीपीपल और गिलोय इन दोनो का मिश्रित क्वाथ एक सेर पृथक रखें।

निर्माण—सूखी चीजो को कूट और छान लें गीली पत्तियो को काफी महीन पीसकर रखें फिर सभी को पत्थर के खरल मे डाल क्वाथ की भावना देकर खरल करें। जब सभी एक दिल हो जायं और क्वाथ औषधियों में जज्ब हो जाय तब चार-चार गोलियाँ बना और धूप मे सुखाकर रख ले।

गुण—इसके सेवन से एकतरा, तिहैया तथा चौथिया ज्वर का शमन होता है। पुराने शीतपूर्वक ज्वर, जिसमे तिल्ली या यकृत भी थोड़ा बढ़ा हो। इसके सेवन से समूल नष्ट हो जाता है। ज्वर के समय होने वाली अशक्तता को भी यह दूर करता है।

मात्रा—दो से चार रत्ती तक एक वार में इसकी मात्रा है। एक रोज में चार-पाँच मात्रा तक दे सकते है।

अनुपान—कफ और वायुदोष वाले ज्वरों में अजवाइन के क्वाथ से, पित्त ज्वर में पित्तपापड़ के काढे से या गर्म जल को शीतल कर उसी के साथ इस

बटी का उपयोग करना चाहिए। यदि ज्वर मे तिल्ली या जिगर बटे हों तो मकोय के रस और मधु से या शरपुखे की जड़ के काढे के साथ इस बटो का सेवन कराना चाहिए।

समय—साधारणतः सुवह-शाम और सोते वक्त रात्रि मे और विशेष अवस्था में चार-चार घटे पर दिन रात मे चार-पाँच मात्रा तक दिया जा सकता है। ज्वर के वेग के समय इसे नही दें। ज्वर जब उतरने की दशा में हो तब देना शुरू करें।

विशेष—सिर मे चक्कर, गले मे खुश्की तथा उष्णता अनुभव होने पर पित्तज्वर मे अर्क सौंफ बीच-बीच मे दें। काले मुनक्के के बीजो को पृथक कर एक तोले के अदाज पीसें और उसमे सत्त गिलोय आठ आने भर मिला लें। कफ, वायु तथा पित्त सभी प्रकार के ज्वरो मे घबड़ाहट के समय तीन-तीन माशे, दो-दो घटे पर रोगी को दे। सिर पर असल गुलरोगन दें।

गृहधूमादि तैल

योग—घर के धुएँ का झाला, बड़ी पीपल, देवदारू, जवाखार, करंजुए की मींगी, सेंधानमक तथा ओगे के बीज-ये सातो चीजें एक-एक तोले, अट्ठाइस तोले तिल का तेल तथा एक से साढे छः छटांक जल ले।

निर्माण—उपर्युक्त सातो चीजो को थोडे जल में घटे-दो घटे भिगोने के बाद चटनी की तरह पीस लें, तेल लोहे की कडाही मे धुआँ निकलने तक तप्त करे और शीतल कर लें और पुनः कडाही को अग्नि पर रख आंच दें तथा पिसी औषधियो की चटनी तथा नपा हुआ जल छोड मन्द आँच दे। जल समाप्त हो जाय तब उतार और शीतलकर मोटे वस्त्र से छान लें।

गुण—इसके उपयोग से नाक मे होने वाले मस्से (नासाऽर्श) मिट जाते है।

उपयोग—दिन और रात्रि मे दो-चार घटे के अंतर से इस तेल को नाक में नस्य लें।

विशेष—नाक मे होने वाले मस्से और उसके साथ के प्रकट लक्षणो को मिलाकर 'नासाऽर्श' नाम दिया गया है। आचार्य सुश्रुत ने अपनी संहिता के निदान स्थान मे इसका उल्लेख किया है। इस रोग के लक्षण ये हैं- बहुत ज्यादा जुकाम, छीक, श्वास लेने और छोड़ने मे कष्ट, गन्ध में बदबू, बोलते वक्त

'सानुनासिक शब्द' अर्थात् नकियाकर बोलना तथा सिर मे पीड़ा ये प्रकट होते हैं।

त्रिविक्रम रस

योग—ताम्र भस्म, शुद्ध पारद, शुद्ध आंवलासार गन्धक, ये तीनो चीजें पांच-पांच तोले, बकरी का दूध और निगुंण्डी के पत्तो का स्वरस दोनो बीस-बीस तोले लें।

निर्माण—एक मिट्टी के कसोरे मे ताम्र भस्म और दूध डालकर पाक करे, दूध सूख जाने पर भस्म निकाल खरल मे महीन पीस ले। पारद और गन्धक को एक साथ खरल कर कज्जली बना ले। सात-आठ घटे तक खरल करने से अच्छी कज्जली बनती है। कज्जली में ही ताम्र भस्म को मिला निर्गुण्डी के रस के साथ खरल करें। रस के सूखने पर औषधि का एक गोला सा बना ले और उसे बालुकायत्र में पाक करें। ताम्र भस्म और निर्गुण्डी स्वरस के साथ एक दिन तक (आठ-दस घंटे) मर्दन कर औषधि का गोला बना और सुखाकर वज्र मुद्रा वाले शराब संपुट में रख बालुकायंत्र मे एक दिन-रात की अग्नि मे इसे पाक करें। बालुकायंत्र के स्वय शीतल होने पर संपुट को निकाल और औषध को खरल कर रख ले। कसोरे के सपुट के ऊपर के हिस्से मे यदि औषध का अंश सटा हो तो उन्हे खुरचकर सभी औषधि के साथ ही खरल कर ले। यदि इस औषधि को आतशीशीशी मे पाक करना हो तो गोले के बजाय औषध को चूर्ण रूप में रखें और सूखने पर शीशी मे भर बालुकायंत्र मे उसे स्थापित करे। उपर्युक्त विधि से पूर्ण शीतल होने पर शीशी के नीचे के हिस्से मे (पेंद मे) पृथक और उसकी गर्दन मे पृथक ही औषधि मिलेगी। दोनो को एक साथ पीस-कर रख ले। यदि ऊपर वाले चमकदार अंश को ही रखना हो तो एक दिन के बजाय तीन दिनों की आंच दें और पूर्ण शीतल होने पर आतशीशीशी को गर्दन वाली औषधि को खुरचकर रख लें। यह ताम्र सिन्दूर का एक प्रकार ही है। नीचे के हिस्से को पृथक रख लें।

गुण—इस औषधि के प्रयोग से पथरी का कष्ट मिटता है। इसके अतिरिक्त उदरशूल, यकृत और प्लीहा की वृद्धि, उदर कृमि तथा अन्य उदर रोगो मे भी यह शीघ्र लाभ पहुँचाने वाली है।

मात्रा—एक से दो रत्ती तक एक बार में इसका उपयोग करें।

अनुपान—पथरी में पथरचूर के पत्तों का स्वरस दो तोले और मधु आठ आने भर के साथ, उदरशूल में अर्क अजवाइन से, यकृत-वृद्धि में मकोय के पत्तों के स्वरस से, प्लीहा में शरपुंखे की जड के अर्क से, उदर कृमि में पलाश के बीजों की गिरी तीन माशे और मधु छः माशे के साथ और सम्पूर्ण उदर-रोगो मे सोंठ के काढे से इसका व्यवहार करना चाहिए।

समय—सुबह, दोपहर, शाम।

राजसी रेचक चटनी

योग—पेशावरी बादाम की गिरियो का महीन चूर्ण और सीरखिस्त पांच-पाच तोले, चैती गुलाब के फूलो की पंखडियां और एक साल का पुराना सौंफ ढाई-ढाई तोले, छोटी हर्रें सवा तोले, सोंठ दस आने भर, अजीर को पीठी और बीज निकाले काले मुनक्के की पीठी सात-सात तोले, देशी कूजा, मिसरी तीस तोले तथा छ. छटांक पेशावरी बादाम का तेल लें।

निर्माण—सूखी चोजो को कूट और कपडछन कर ले गीली चीजो को सिल पर महीन पीस ले, फिर सभी चीजो को एक घटे तक खरल मे डाल ऊपर से बादाम का तेल डालकर एक घटे तक खरल कर शीशे के ढक्कनदार पात्र मे रख ले।

गुण—यह मृदु रेचक गुण-धर्म से युक्त, पित्त और आम को मल मार्ग से बाहर निकालने वाली, वायु को शमन करने तथा बिना मिचली लाये ही साधारण रेचन कराने वाली है। स्वाद होने के कारण इसके सेवन-काल मे अरुचि होने का खतरा नही रहता।

मात्रा—आठ आने भर से एक तोले तक एक बार मे इसका सेवन कराना चाहिए।

समय—या तो प्रात काल सूर्योदय से कुछ पूर्व या रात्रि मे सोते वक्त इसका सेवन कराना चाहिए। प्रात.काल लेने से उत्तम और रात्रि मे सोते वक्त लेने से हीन रेचन होता है। जिन्हे विशेष रेचन की आवश्यकता हो उन्हे प्रात:काल और साधारण रेचन के निमित्त रात्रि में सोते वक्त उपयोग करना चाहिए।

अनुपान—गरम दूध या गरम जल एक बार में।

पथरीनाशक चटनी

योग—गोखरू का चूर्ण दस तोले, पथरचूर के पत्तो का रस चालीस तोले, असल जवाखार पांच तोले, शुद्ध शिलाजीत सवा तोले, छोटी इलायची के दानों का चूर्ण ढाई तोले, शीतल चीनी का चूर्ण पांच तोले, खरबूजे की मीगियो का महीन चूर्ण साढे सात तोले तथा चने का क्षार चार तोले ले।

निर्माण—एक पत्थर के खरल मे पथरचूर के पत्तो का कपडे से छना ताजा रस डालें और उसी में अन्य सभी औषधियों को मिलाकर एक घंटे तक खरलकर शीशे के पात्र मे रख ढक्कन लगा दें। इस पात्र को दिन भर धूप मे ही रोज-रोज रखें।

गुण—इसके सेवन से पथरी, पित्त के विकार, मूत्र-अवरोध, मूत्रकृच्छ तथा अन्य मूत्राशय से सम्बन्धित विकारो का शमन होता है।

मात्रा—आठ आने भर एक बार मे सेवन करना चाहिए।

समय—सुबह और शाम एक-एक मात्रा।

अनुपान—एक पाव पके तरबूज फल का जल या खीरे को कुचलकर निकाला एक पाव जल। अभाव मे घडे का बासी एक पाव जल ले।

विशेष—जुकाम, खासी, ज्वर की दशा मे उबाले हुए जल को शीतल कर लेने के बाद उसी जल से औषध सेवन करे।

धूप मे रखने से औषध मे गुण की वृद्धि एवं फफूंद से उसकी सुरक्षा भी होगी।

वातपीड़ाहर तैल

योग—कायफल और अजवाइन दस-दस तोले, हरीमिर्च का रस, मदार के पत्तों का रस, धतूरे के पत्तो का रस, सम्भालू के पत्तो का रस-ये प्रत्येक एक-एक सेर, एक पोत के लहसुन का रस एक पाव, वत्सनाभ विष दो तोले, घोड़बच दस तोले तथा सरसो का तेल चार सेर ले।

निर्माण—कायफल, अजवाइन, घोड़बच और वत्सनाभ विष इन चारो चीजों को कुचलकर रात्रि के समय इतने जल मे भिगो दें जितने मे वे अच्छी तरह भींग जायें। प्रातःकाल सिल पर इनको महीन पीस ले और एक पात्र मे रख

ले। लहसुन की गिरियों को कुचलकर रस निचोड़ ले और उसे भी रख छोड़ें मिर्च से मदार तक की चारो चीजो के कपडे से छने रसों का भी संग्रह कर लें फिर तेल को लोहे की कडाही मे रख तप्त करें। जब धुआं उठने लगे तब उसमें आम्र पल्लव डालकर देखें। पात्र डालते ही आवाज के साथ चक्कर काट कर वह तेल पर स्थिर हो जायगा। उस वक्त चिमटे से पत्र को लेकर चुटकी से मसले यदि पापड की तरह वह चूर हो जाय तब तेल की कड़ाही में आंच देना बद कर दें। तेल की तप्तता समाप्त होने पर उसमे कायफल इत्यादि की पिसी लुगदी और रस डाल दें और मद आंच पर तेल का पाक करें। जल का अंश समाप्त होने पर कडाही को चूल्हे से नीचे उतार शीतल कर लें। तेल को मोटे कपडे से छान रख लें।

गुण—इस तेल की मालिश से सभी प्रकार के वायु के विकार, दर्द, संकोच, असमर्थता, पंगुता एवं लकवे का असर जाता रहता है। इसका नसों पर शीघ्र असर होता है।

उपयोग—तकलीफ वाली जगह पर इसकी मालिश करनी चाहिए और विशेष दर्द के अवसर पर सेक भी करनी चाहिए। दिन और रात के बीच तीन-चार बार नित्य मालिश करने से दो घटे रोगी को विश्राम करने देना चाहिए तब दुबारा मालिश करनी चाहिए।

विशेष—इसमे जहर की चीजें हैं अतएव जिस सिल पर औषधियां पीसें या जिन पात्रो का उपयोग करें उन्हे तथा अपने हाथो को गोबर और मिट्टी से पूर्ण रीति से शुद्ध करना नितान्त आवश्यक है।

विषमज्वर-नाशक अर्क

योग—हजारदाना डेढ़ सेर, पित्तपापड़ा एक सेर, काली अनन्तमूल आधा सेर, ताजा गूमा डेढ सेर, काली तुलसी आधा सेर, खूबकला एक पाव, मुलेठी डेढ़ पाव और बरबरी (ममरी) भी डेढ पाव ही लें। इसके अतिरिक्त चालीस सेर जल पृथक ग्रहण करें।

निर्माण—सूखी वस्तुओ को पहले कुचलकर जव कुट करें फिर गूमा तथा तुलसी की पत्तियो को भी कुचल ले। इन सब को कलईदार पात्र में डाल ऊपर से जल डाल दें। गर्मी के दिनो मे चौबीस घटे और शीतकाल मे तीन दिनो तक

भिगोकर प्रातःकाल देग-भवके से दस सेर अर्क खींच लें।

गुण—इसके व्यवहार से सभी प्रकार के विषम ज्वर का निवारण होता है। पित्त बढ़ने के कारण जिस ज्वर मे शरीर पीला हो गया हो, दुबलापन, कंठ का सूखना, प्यास की अधिकता, नीद की कमी एवं यकृत की वृद्धि इत्यादि के साथ कभी पतली टट्टी और कभी घोर कब्ज हो जाय, वायु के विकार के कारण शरीर में श्यामता, भूख की तीव्रता, चंचलता, बार-बार शीत का कोप एवं चक्कर आना (ये लक्षण पित्त के प्रकोप मे भी होते हैं), ज्वर का वेग शीघ्र कम हो जाना इत्यादि वायु के रुष्ट होने के तथा आंव, बलगम, नीद की अधिकता, क्षुधा की मंदता, अरुचि, मुख से लार का निकलना, विरसता एवं ज्वर का विशेष काल तक बना रहना और आलस्य की अधिकता वाले श्लैष्मिक लक्षणों में इस अर्क से लाभ ही नहीं बल्कि पूर्ण लाभ होता है। तीनो दोषो की विकृतियो के लक्षण धीरे-धीरे मिटते चले जाते हैं। कुछ सप्ताह के बाद ज्वर का आना भी मिट जाता है।

मात्रा—पूर्ण मात्रा एक बार मे दो तोले हैं। यह मात्रा जवानो के लिए है। बारह से पांच वर्ष के उम्र वाले को एक तोले तथा पांच से दो वर्ष तक के बालकों को आठ आने भर इसे देना चाहिए। दो वर्ष से छः मास तक के बच्चे को चार आने भर दें।

समय—यदि ज्वर का वेग मंद और दोषो की विकृति के लक्षण साधारण हों तो केवल सुबह और शाम को एक एक मात्रा दे। ज्वर और दोष बढे हो तो सुबह, दोपहर, शाम और सोते वक्त रात्रि मे नित्य पांच-पांच मात्रा दे।

अनुपान—केवल अर्क को शीशे के गिलास मे निकाल कर पीना चाहिए।

विशेष—यदि ज्वर केवल तीसरे पहर से ही अपना असर दिखावे तो रोगी को मूंग की दाल के पानी और परवल के भरते के साथ पुराने गेहूँ के आटे को उबालकर बनाये गये फुलके का थोडा पपड़ी दे। गाय या बकरी का दूध दे। सेंधानमक, कालीमिर्च और जीरे के चूर्ण लगे काले मुनक्के को सेककर सेवन करा दे। दोपहर के बाद अन्न न दें। जल गर्म दें। ज्वर की दशा मे भूख लगने पर पीपल और जल डालकर उबाले दूध, जब जल खत्म हो जाय और केवल दूध शेष रहे तब दें। शिर पर गुलरोगन लगावे।

खजूरावलेह

योग—गुठली निकाला खजूर सवा सेर, गाय का दूध ढाई सेर, मिश्री सवा सेर, गाय का घी ढाई छटाँक, मुलेठी एक छटाँक, छोटी पीपल, वंशलोचन, छोटी इलायची के दाने, सफेद जीरा, दालचीनी, नागकेशर, सफेद चंदन का चूरा, गावजुबान, सत्तगिलोय, वशलोचन, प्रवाल पिष्टि, सफेद कमल पुष्प, कमलगट्टे की गिरी, सिंघाडा तथा लोहभस्म—ये पन्द्रहों चीजें सवा-सवा तोले, आँवले का शर्बत तथा शहद पाँच-पाँच छटाँक ग्रहण करें। पानी के नारियल का जल और दूध दस छटाँक पृथक् रख लें।

निर्माण—खजूर को गरम जल से धो और साफ कपड़े से पोछकर उसके अंदर की गुठलियाँ पृथक कर दें और कलईदार पात्र मे या लोहे की कड़ाही में दूध को खौलावें। जब दूध खौलने लगे तब उसमे खजूरो को डाल पकने दें। बीच-बीच में चलाते रहे। दूध जब रवड़ी की तरह गाढ़ा हो जाय तो कड़ाही को चूल्हे से नीचे उतार लें तथा एक-एक खजूर को सावधानी से पृथक् करें और उसमे लगे दूध के गाढे हिस्से को भलीभाँति अलग कर खजूर और दूध को पृथक् पात्र में रखे। खजूरो को सिल पर महीन पीसें, फिर ढाई छटाँक घी मे मंद आँच मे थोड़ी देर भूनकर खजूर की पीठी एक ओर रख लें। गाढे दूध का खोआ बना लें। मिश्री को नारियल के दूध के साथ पकाकर एक तार की चाशनी तैयार करें। इसी पकती चाशनी में खजूर की पीठी और खोआ डालकर पकावें। बीच-बीच में पौने से चलाते भी रहे, जलने न पावे। इधर मुलेठी से लोहभस्म तक की सोलहों चीजो का कपड़छन चूर्ण तैयार रखे। जब खजूर का पाक कलछी मे चिपकने लगे और हाथ से छूने पर घी लगने लगे तब चूर्ण को डालकर मिलावें और शीघ्र ही पाक को चूल्हे से उतार लें। शीतल होने पर आँवले का शर्बत और शहद मिलावें।

गुण—इससे बढे हुए पित्त के विकार, अम्लपित्त, सिर मे चक्कर आना, शरीर की निर्बलता, प्यास, कंठ का सूखना, रक्त पित्त, प्रदर, प्रमेह, मर्दानगी की कमी, दिल की धडकन तथा शरीर का दुबलापन दूर होता तथा बल की खूब वृद्धि होती है। इस पाक का स्वाद अच्छा है। इससे मुख का जायका बदल जाता है।

मात्रा—एक तोला एक बार में।

अनुपान—एक पाव दूध के साथ।

समय—सुबह और शाम या सुबह और सोते वक्त रात्रि मे एक-एक मात्रा लेनी चाहिए।

जवाकुसुम का शर्बत

योग—जवाकुसुम (ओडहुल) की मुँदी कलियाँ सवासेर, मुलेठी पाँच तोले, शतावर (ताजा) दस तोले, सुखे सिंघाडे पन्द्रह तोले, काला मुनक्का पचीस तोले, भिंडी की जड की छाल और ककही के पत्ते—ये दोनो सात-सात तोले; गिलोय और स्याह मूसली—ये चौदह-चौदह तोले लें। धुली कालीमिर्च तीन तोले एव गंगा जल दस सेर लेकर पृथक् रखें। इसके अतिरिक्त देशी शक्कर पाँच सेर ले।

निर्माण—एक कलईदार पात्र में सभी चीजो को कुचल कर डाल दे और ऊपर से दस सेर जल देकर ढंक दें। यह काम रात्रि मे करें। प्रात:काल काढा पकावें जब ढाई सेर काढ़ा शेष रह जाय तब पात्र को चूल्हे से उतार शीतल कर मोटे कपडे से छान काढ़ा ले लें। उसी काढे मे खाँड या शक्कर घोलकर एक बार पुन: छानें और चाशनी बनावें। शरबत की चाशनी बन जाने पर उतार ले।

गुण—इससे पुरुषो के प्रमेह, स्त्रियो के प्रदर, पित्त के विकार हृदय की धड-कन, शरीर को दुर्बलता, बीमारी के बाद की अशक्तता, रक्त पित्त, बवासीर के कष्ट और चलते फिरते, उठते-बैठते वक्त सिर मे चक्कर आना इत्यादि कष्ट मिटते है।

मात्रा—एक से दो तोले तक एक बार में इसका उपयोग करना चाहिए।

अनुपान—गाय या बकरी के दूध, गूलर के फलो का काढा या शीतल जल। रोगानुसार अनुपानो से इसका प्रयोग करना चाहिए।

उपयोग—सभी तरह के प्रदर मे गूलर के फलो के आधा पाव काढे मे दो तोले शरबत डालकर प्रातः और उसी प्रकार सायकाल सेवन करना चाहिए।

प्रमेह मे बकरी के दूध के साथ सुबह-शाम, कमजोरी में दूध के साथ दोनो वक्त लेना चाहिए। बढे हुए पित्त मे शीतल जल से इसका उपयोग करना चाहिए। उपर्युक्त रोगो के पथ्य और कुपथ्य के नियमो का पालन भी जरूरी है।

खाँसी पर रसवटिका

योग—शुद्ध पारद, शुद्ध आँवलासार गन्धक, शुद्ध वत्सनामविष, तालपर्णी और धनिये का चूर्ण-सभी पाँच-पाँच तोले लें। इसके अतिरिक्त पच्चीस तोले काली मिर्चों का चूर्ण ग्रहण करें।

निर्माण—आठ घण्टे तक जल के साथ खरलकर दो-दो रत्ती की गोली बना सुखा लें।

गुण—इससे खाँसी, श्वास, ज्वर, नया बलगम का बनना इत्यादि विकार शीघ्र दूर होते हैं।

मात्रा—एक से चार रत्ती तक।

अनुपान—एक तोला मधु।

समय—सुबह और शाम को एक-एक मात्रा आवश्यकता होने पर रात्रि के वक्त एक मात्रा दी जा सकती है।

शरीर-पुष्टिकारक चूर्ण

योग—अधपका और छिला चिनिया केला आधा सेर, सिंघाड़े की गिरियाँ, कमलगट्टे की गिरियाँ, सालव मूसली, गेहूँ के रवे तथा मखाने—ये प्रत्येक एक-एक पाव लें। चीनी डेढ सेर एव भैंस का ताजा घी दस छटाँक अलग से लेकर रखें।

निर्माण—आधा पाव घी को खूब गर्म करें और उसमे अधपके केले के कतरे हुए टुकड़ो को डाल तल लें। साधारण सुर्ख होने पर उन्हे घी से निकाल ले। इसी प्रकार मखानो को भी तलकर निकाल लेने के बाद सिंघाड़े, कमलगट्टे, सालव मूसली तथा गेहूँ—इन सब के रवे बना और तलकर रखें। फिर केले के टुकड़ों और शेष पाँचो चीजों को हिमामदस्ते मे कूटे तथा तार को मोटे छेद वाली चलनी से छान ले। इस छने चूर्ण को दो तार की चाशनी होने पर उसमे डालकर अच्छी तरह मिला लें। कड़ाही को चूल्हे से उतारकर शीतल होने दें। फिर पीस और मोटी चलनी से एक बार और छानकर शीशे के ढक्कनदार पात्र मे रख ले।

गुण—रोग के कारण या आहार की कमी से होने वाली दुर्बलता, अशक्तता, नामर्दी, शरीर मे वीर्य की कमी, सम्भोग शक्ति में अशक्तता, प्रमेह, प्रदर स्त्रियो

के प्रसव के पश्चात् दूध की कमी, दिमाग में चक्कर, स्मरणशक्ति की कमी, पित्त की विकृति तथा चलते वक्त जोडों में दर्द इत्यादि विकारों को यह मिटाता और शरीर को पुष्ट कर देता है।

मात्रा—एक से दो तोले तक।

अनुपान—एक पाव गाय का दूध।

समय—सुबह और शाम को एक-एक मात्रा या केवल सोते वक्त रात्रि में पूरी दो तोले की एक मात्रा लेनी चाहिए।

विशेष—औषधियों के सेवनकाल मे खटाई, लाल मिर्चा, कड़वा तेल तथा गुड का विशेष सेवन रोक देना चाहिए।

यदि कब्ज रहे तो घी मे भुनी छोटी हर्रें का चूर्ण छः माशे, गुलकन्द एक तोला तथा उतने ही बीज सहित पिसे काले मुनक्के मे मिला सोते वक्त रात्रि में गर्म दूध से हफ्ते मे एक बार लें। पौष्टिक औषधियाँ काबिज हुआ करती हैं। इसलिए बीच-बीच मे मृदु रेचन लेते रहना आवश्यक है।

गुडूच्यादि लौह

योग—गुडूची सत्व, सोठ, पीपल, कालीमिर्च, आँवला, हर्रें, बहेड़ा, वायविडंग, नागरमोथा और चित्रक की जड़ की छाल ये—दसों चीजें पाँच-पाँच तोले और पचास तोले तीक्ष्ण लौहभस्म लें। इसके अतिरिक्त सवा सेर ताजे गिलोय का कपडे से छना रस पृथक ग्रहण करें।

निर्माण—सूखी चीजों को कूट और कपड़छन कर लें और उसमें लौहभस्म का मिश्रण कर खरल मे रखें, ऊपर से गिलोय का स्वरस डालकर खरल करें। आठ घण्टे खरल कर लेने के बाद चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना और धूप में सुखा रख लें।

गुण—वातरक्त की सभी अवस्थाओं में इसके व्यवहार से आशातीत लाभ होता है। इसके अतिरिक्त कोष्ठबद्ध, उदर-कृमि, मंदाग्नि, शारीरिक अशक्तता, पित्त प्रकोप एवं रक्त-विकार में यह लौह व्यवहार के निमित्त प्रशस्त है।

मात्रा—चार से आठ रत्ती तक एक बार मे इसका प्रयोग अपेक्षित है।

अनुपान—शीतल जल।

समय—सुबह और शाम को एक-एक मात्रा लें।

पिप्पल्यादि गुड़

योग—छोटी पिप्पली बाईस तोले, वायविडंग, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, कुठ, हीग, सेंधानमक, सोचल नमक, समुद्र नमक, साभर नमक, कालानमक, जवाखार, सज्जीखार, टंकणक्षार, समुद्रफेन, चित्रक की जड की छाल, गजपीपल, स्याह जीरा, ताड की जटा का क्षार, कुष्माण्डनाल भस्म, अपामार्ग क्षार और इमली का क्षार-ये बाईसो चीजें एक-एक तोले तथा एक साल का पुराना गुड़ चव्वालीस तोले ले।

निर्माण—हींग को घी मे भूनकर शुद्ध कर ले, थोडे जल के साथ गुड को घोल गाढ़ी चाशनी बना ले, काष्ठ औषधियो को एक साथ कूट और कपडछन कर लें, नमको और क्षारो को एकत्र पीसकर महीन कर ले। इतना सब कार्य हो जाने पर सभी सूखी चीजो को मिलाकर गुड की चाशनी मे मिलावें और कुछ देर अग्नि पर आंच देने के बाद आठ आने भर की गोलिया बना ले।

गुण—इसके सेवन से नाना विकार सहित जीर्णज्वर का नाश होता है। ज्वर के साथ रहने वाले अन्य विकारो-मंदाग्नि, अरुचि, उदरशूल, कोष्ठबद्ध, उदर में वायु का बनना, उदरकृमि तथा कफ की विकृति इत्यादि को निश्चय दूर कर शरीर को पुनः नया बना देता है।

मात्रा—चार आने भर से आठ आने भर तक एक बार मे लेना चाहिए।

अनुपान—गरम जल।

समय—सुबह-शाम और सोते वक्त रात्रि मे एक मात्रा लें।

चिकित्सक के परामर्श से अन्य रोगो मे भी इसका उपयोग किया जा सकता है तथा अनुपानो मे भी परिवर्तन किये जा सकते हैं।

शक्तिदाता रसायन

योग—असल गुलाबजल एक सेर, आंवला, हर्रे और बहेडे के ऊपर का छिलका तीनो दस-दस तोले, बड का ताजा दूध ढाई तोले, समुद्रशोष और नागर-मोथा सवा-सवा तोले लें।

निर्माण—एक बडे मुँह के लोहे के पात्र में गुलाबजल के साथ त्रिफले (आंवला, हर्रे, बहेडा) को कुचलकर भिगो दें और ढक्कन बंदकर एक पक्ष तक

नित्य धूप मे रखें। सोलहवें दिन मोटे कपडे से छानकर त्रिफले की सीठी को दबाकर उसमें बड़ के ताजे दूध का मिश्रण करें। फिर समुद्रशोष और नागरमोथे के कपड़छन चूर्णों को डाल एक सप्ताह पुनः पात्र का ढक्कन बंद कर धूप में रखें। बाद में मोटे कपडे से एक बार और छानकर पतली और काली-सी गुणयुक्त औषधि को बोतल मे रख मुख बन्द कर दें।

गुण—इसके सेवन से यकृत और प्लीहा की वृद्धि, रक्ताल्पता, प्रमेह, कब्ज, पित्त और कफ की विकृति एवं क्षीणता का नाश होता है। बीमारी या अन्य कारणों से उत्पन्न निर्बलता और पौरुष हीनता मे इसका विशेष रूप से प्रभाव देखा जाता है।

मात्रा—छः माशे।

अनुपान—दो तोले ताजा जल।

समय—सुबह और शाम को एक-एक मात्रा लेनी चाहिए।

विशेष—औषध सेवन काल मे तेल, खटाई, लालमिर्च तथा गुड इत्यादि तीक्ष्ण, दाह-उत्पादक, गरम एवं वीर्य को दोष युक्त करने वाले पदार्थों से अपने को बचाना आवश्यक है। पथ्य मे दूध, चावल, मूंग, परवल इत्यादि लेना चाहिए।

गोमय सत्व

योग—गाय के गोबर का गोहरा (उपल) दस सेर लें।

निर्माण—एक मजबूत मिट्टी के घडे के पेंदे में अगुली के बराबर छिद्र कर उसमे गोहरे भर दें। एक गड्ढा खोदकर उसमे एक कांसे या पीतल का कटोरा रख उसी के ऊपर घडा रख गोहरे मे आँच दे दें। चार-छः घंटे के बाद घडे को हटाकर कटोरे में एकत्र 'गोमय सत्व' को शीशी मे रख लें।

गुण—इसके व्यवहार से पुराना नासूर ठीक हो जाता है।

उपयोग—नीम की पत्तियां डालकर उबाला जल से नासूर की सफाई कर सूखे कपडे से उस स्थान को पोछें और रूई के फाहे से इस सत्व का वहां पर लेपन करें। नासूर के छिद्र मे भी औषधि मे तर रुई रख रेड़, केला या महुए का छोटा पत्ता रख कपडे की पट्टी बांध दे। प्रातः और सायकाल दोनो वक्त इस औषधि का नासूर पर उपयोग करना चाहिए।

परहेज—दही, गुड, उड़द, पीला कोहड़ा, नया अन्न, कटहल, बड़हल, अरबी और बासी आहार से परहेज रखना आवश्यक है।

विशेष—यह नासूर का बाहरी इलाज हुआ पर इसी के साथ खाने की औषधि का भी उपयोग करना आवश्यक है। इस कार्य के लिए सप्तविंशतिक गुग्गुल (भै. र. भ. रा. धि.) आठ रत्ती की मात्रा में लेकर मधु एक तोला अनुपान के साथ सुबह और शाम एक-एक मात्रा सेवन करना चाहिए।

अमृतसागर रस

योग—शुद्ध हिंगुलोत्थ पारद, शुद्ध आँवलासार गन्धक, तीक्ष्ण लौहभस्म, शुद्ध सोहागा, रास्ना, वायविडंग, बडी हर्रें, बहेड़ा, आँवला, देवदारू, सोंठ, मरिच, पीपल, गिलोय, पद्मकाष्ठ, और मधु इन चीजो को पाच-पांच तोले ले।

निर्माण—पारद और गन्धक की कज्जली कर ले, काष्ठ औषधियों को कूट छानकर रख लें तथा लौहभस्म और सोहागे को एक साथ घोट लें तब सभी का मिश्रण कर शहद के साथ कुछ काल खरल कर लेने के पश्चात् थोड़े जल के साथ आठ घटे तक खरल कर दो-दो रत्ती की गोली बना लें।

गुण—यह रस सभी प्रकार के कास रोग मे विशेष लाभ पहुँचाता है। इससे वातज, पित्तज तथा कफज सभी प्रकार के कफो में लाभ होता है। श्लेष्मा के अंश को मलमार्ग से यह निकाल डालता है। पुरानी खाँसी जिसमे नवीन कफ भी बनता रहता है और कभी-कभी खाँसने से रक्त के छीटे भी बलगम मे मालूम पड़ते हैं, यह विशेष उपयुक्त है।

मात्रा—दो रत्ती एक बार में दें।

अनुपान—मधु।

समय—सुबह, दोपहर, शाम और रात्रि मे एक-एक मात्रा दें।

विशेष—खाँसी मे वर्जनीय-द्रव्यो से परहेज रखना आवश्यक है।

नेत्रमल-विनाशिनी

योग—शंख, मूंगे की डाल, वैदूर्य्य रत्न, लौहभस्म, ताम्रभस्म, प्लव पक्षी का हड्डी, शुद्ध काला सुरमा तथा सहिजन के बीजों की गिरियाँ—इन आठों चीजो को दो-दो तोले लें।

निर्माण—शख, वैदूर्य्य रत्न और मूंगे को हिमामदस्ते मे कूट और मोटे कपडे से छान ले, हड्डी के टुकडों और सुरमा की डली को अलग-अलग कूट और मोटे कपड़े से छानें तथा सहिजन के बीजो की गिरियों को पृथक ही कूट-छान लें, फिर सभी को एक मे मिला जल डालकर आठ-दस दिनो तक खरल करें। जब

पीठी काफी चिकनी हो जाय, उसमे कुछ भी किरकिरी न रहे तब, छोटी-छोटी बत्तियाँ बना और सुखाकर रख ले।

गुण—इसके प्रयोग से सभी प्रकार के आँखो के रोग नाना विकार सहित नष्ट हो जाते हैं।

उपयोग—जल में वर्ति घिसकर आँखो मे आँजना चाहिए।

विशेष—आँख आने के बाद तीन दिनों तक, आम दोष की दशा में यदि आँखो मे विशेष कष्ट न हो तो भीतर आँखो में औषधि का प्रयोग न करना चाहिए। चौथे दिन से औषध का प्रयोग करना विशेष लाभप्रद होता है। आँखों के ऊपर के हिस्से में चारो ओर लेप लगाने का शुरू से ही विधान है।

मागधी घृत

योग—गाय का घी ढाई सेर, गाय का दूध दस सेर, छोटी पिप्पली, पीपरा-मूल, चित्रक की जड की छाल, गजपीपल, सेंधानमक, जवाखार, हींग, सौंचल नमक, कालीमिर्च और सोंठ, ये दसो चीजें चार-चार तोले लें।

निर्माण—हींग को कुचलकर पाँच तोले जल मे भिगो दें दोनो नमकों और जवाखार को एक साथ खरल कर लें काष्ठ औषधियो को कुचलकर इतने जल में भिगो दें जितने मे वे अच्छी तरह डूब जायें। चार-छः घटे के बाद सिल पर पीसकर भीगी काष्ठ औषधियो की लुगदी बना लें। इसके पश्चात् घृत को एक लोहे की कडाही में तप्त करें। जब उसमें धुआँ निकलने लगे तब दो-चार आम के पल्लव को डाल परीक्षा करें। जब पल्लव आवाज के साथ चक्कर काटकर घी के ऊपर स्थिर हो जायें तब उन्हे चिमटे से लेकर चुटकी से मसलें। यदि वे पापड़ की तरह चूर हो जायें तब घी को आँच से हटा ले या आँच ही बन्द कर दें। घन्टे भर बाद पुनः आँच दे और उसी वक्त दूध और पिसी लुगदी डाल दें। हींग के घोल और क्षार सहित नमको को भी लुगदी मे ही सानकर घृत में डालें। आँच मंद दें। दूध की तरी समाप्त होने पर घृत को चूल्हे से उतार शीतल करें। जब कुछ गर्म ही रहे तभी उसे मोटे वस्त्र से छान ले।

गुण—इस घृत के व्यवहार से उदरशूल, गुल्म, पेट से सम्बन्धित अन्य विकार, हृदय के रोग, उरः क्षत, अनाह (पेट का तनाव), पाडु रोग, प्लीहा की वृद्धि, कास और श्वास के कष्ट दूर होते हैं। पित्तज गुल्म में यह घृत विशेष प्रशस्त है।

मात्रा—आठ आने भर से एक रुपये भर तक।

अनुपान—गरम दूध आधा पाव मे मिलाकर।

समय—सुबह और सायकाल एक-एक मात्रा ले; यदि रोग बढ़ा हो तो भोजन के दो घटे बाद दोपहर मे और सोते वक्त रात्रि मे भी एक-एक मात्रा इसे ले सकते हैं।

विशेष—शूल और अनाह मे अजवाइन के क्वाथ से, गुल्म में गोरखमुंडी के क्वाथ के साथ, उदर के अन्य विकारो मे गोमूत्र को उबालकर उसी के साथ, हृदय रोग मे अर्जुन की छाल से तैयार दूध (क्षीर पाक विधि से) से, उरःक्षत में मुलेठी और खजूर को दूध द्वारा पका और छानकर शीतल कर लेने के बाद उसी दूध से, पाडुरोग में कुटकी के काढे के साथ, प्लीहा मे शरपुखे की जड़ के काढे से, कास में लौग के काढे और श्वास रोग मे भारंगी के काढे को शीतल कर उसी के अनुपान से इस घृत के सेवन का विधान है। घृत सेवन कर तुरंत जल नही पीना चाहिए। प्रत्येक रोग के पथ्य और अपथ्य का पालन भी अपेक्षित है।

अपस्मार-नाशिनी

योग—नीलकठी बंशलोचन, छोटी इलायची के दाने, कहरवा पिष्टि, प्रवाल पिष्टि, गाजवाँ, कोई के फूल, गुलाब के फूल, चांदी भस्म—ये आठों चीजें चार-चार आने भर मोती पिष्टि आठ रत्ती, समीरपन्नगरस सोलह रत्ती, कबीला, गारीबुन (हिकमत औषध) और देशी मिसरी ये तीनो चीजें एक-एक तोले ले। गुलाब और केवडे का अर्क पांच-पाँच तोले पृथक ग्रहण करें।

निर्माण—बंशलोचन को अलग खरल कर मोटे वस्त्र से छान लें, इलायची के दाने, गावजवाँ, दोनो फूलो और कबीले को एक साथ कूट और कपड़छन कर ले, मिश्री को महीन पीस कर अलग रखे। एक पत्थर के खरल मे तीनो पिष्टियों, चांदी की भस्म और समीरपन्नगरस इन्हे डालकर आधे घटे तक खरल करने के बाद उपर्युक्त सभी औषधियाँ मिला दें और चार घटे अर्क गुलाब और चार घंटे अर्क केवडे मे घोटें। जब गोली बनने लायक हो जाय तब दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना और छाये मे सुखाकर रख लें।

गुण—इसके सेवन से अपस्मार, मिर्गी, मूर्छा, सिर मे चक्कर आना, हृदय-शूल, उदर मे संचित वायु, मदाग्नि, श्वास और कास मिटते हैं।

मात्रा—एक से दो रत्ती तक एक बार मे इसे ले।

अनुपान—गुनगुना दूध या उष्ण जल आधा पाव।

समय—सुबह-शाम और सोते वक्त रात्रि मे एक-एक मात्रा लेनी चाहिए।

विशेष—जिन-जिन रोगों मे इसके प्रयोग लिखे हैं, उन-उन रोगो के पथ्य और अपथ्य पर भी ध्यान देना चाहिए।

मेघनाद कषाय

योग—जंगली चौलाई की जड़, छोटी हरें, बथुए के बीज और कमल के फूल का केसर—ये चारो चीजें आठ-आठ आने भर लें। शहद एक तोला पृथक लें।

निर्माण—चौलाई और कमल के फूलों का केसर यदि गीले हो तो दूने लें और हरें सहित चारो चीजों को कुचलकर आधा सेर जल मे भिगो दें। रात भर भीगने के बाद प्रात.काल काढ़ा पकावें। जब आधा पाव शेष रहे तब छान-कर शीतल होने पर शहद मिला लें। यह एक मात्रा है।

गुण—यदि नाक, मुह, पेशाब और पाखाने के मार्ग से रक्तस्राव हो रहा हो, रक्तपित्त के कारण और भी अनेक प्रकार के उपद्रव—चक्कर आना, शरीर के बाहर और भीतर जलन, नीद की कमी और प्यास इत्यादि की वृद्धि—हो तो इस कषाय के सेवन से रक्तस्राव बंद हो जाता है और सभी उपद्रव शान्त हो जाते हैं। यदि अर्श और प्रदर के कारण रक्त का स्राव हो रहा हो तो यह कषाय उन्हे भी रोकता है और अन्य उपद्रवों का निराकरण कर देता है।

मात्रा—तैयार क्वाथ एक छटांक से दो छटांक तक एक बार मे लेना चाहिए।

समय—प्रातःकाल। आवश्यकतानुसार सायंकाल भी उपर्युक्त विधि से क्वाथ निर्माण कर लिया जा सकता है।

विशेष—औषध-सेवन काल मे पित्त-शामक पथ्य लेना और पित्त-वर्द्धक आहार-विहारो का त्याग करना चाहिए।

अमृता चूर्ण

योग—गिलोय, वायविडंग, रास्ना, दारुहल्दी, बड़ी हरें, सोंठ, पीपल और कालीमिर्च-ये आठो चीजें पांच-पांच तोले लें।

निर्माण—गिलोय को टुकडे की शक्ल में काटकर कुचल डालें और सभी चीजों के साथ कूटकर दो-चार घटे तक धूप से सूखने दें। इस प्रकार ताजी गिलोय का रस सभी औषधियों मे लपटकर शीघ्र सूख जायगा। फिर सभी को कूट और कपडे से छान ले।

गुण—इसके सेवन से वात, पित्त और श्लेष्मा से उत्पन्न कास शीघ्र मिट

जाता है। खाँसी के कारण उत्पन्न गले की खराश मे भी यह लाभदायक है। पुरानी खाँसी को भी यह चूर्ण दूर करने में समर्थ है।

मात्रा—तीन माशे से छः माशे तक। प्रारम्भ में तीन माशे की ही मात्रा एक बार मे लेनी चाहिए। दो-चार दिनो के बाद अभ्यस्त होने पर मात्रा बढ़ाई जा सकती है।

अनुपान—तीन माशे चीनी और छः माशे शहद दोनो चीजो को चूर्ण में मिलाकर चाटना चाहिए।

समय—सुबह, दोपहर, शाम और सोते वक्त रात्रि मे एक-एक मात्रा लेनी चाहिए।

विशेष—एकदम शीतल वस्तुओं, अम्ल पदार्थों, पीठी इत्यादि भारी भोजनों तथा अधिक रात तक जागरण इत्यादि का त्याग करना तथा हल्का आहार लेना चाहिए।

मूत्रकृच्छ-शामक कषाय

योग—छिली मुलेठी, छोटी इलायची, ककडी के बीजो की गिरियाँ आठ-आठ आने भर और छिले गन्ने के टुकडे दो तोले लें। इसके अतिरिक्त नारियल के भीतर जमे फूल दो तोले पृथक लें।

निर्माण—इन्हे कुचलकर आधा सेर जल मे भिगो दें। गन्ने के टुकडो को न कुचलें। रात्रि में इन्हे भिगोना चाहिए। प्रात.काल काढा पकावें। आधा पाव शेष रहने पर कपडे से छान लें। यह एक मात्रा है।

गुण—इसके सेवन से मूत्रकृच्छ विशेषतः पित्तज मूत्र कृच्छ, दाह, प्यास, सूजाक के कारण मूत्र की रुकावट और जलन, सभी प्रकार के रक्तस्राव तथा अन्य प्रकार के विविध मूत्र-विकार नष्ट होते है। मूत्रसाद (एक प्रकार का मूत्राघात) मे भी यह कषाय लाभदायक है।

मात्रा—पाँच तोले से दस तोले तक।

उपयोग और समय—प्रातः और सायंकाल एक-एक मात्रा क्वाथ का सेवन करना चाहिए। क्वाथ को काफी शीतल कर सेवन करना चाहिए।

परहेज—हीग, लहसुन, राई, कड़ुवा तेल, अदरक तथा अन्य उष्ण वस्तुओं से परहेज करना आवश्यक है।

विशेष—ऊपर के चारों चीजो को बासी जल के साथ सिल पर पीसकर आधा पाव जल में मोटे कपड़े से छान लें और रोगी को पिलावें।

पेशाब की रुकावट और मूत्रकृच्छ से रक्तस्राव होने एवं सूजाक के कष्ट के समय मृदुल आहार-विहार करना आवश्यक है। कच्चे दूध और चीनी का शरबत, खीरा, ककड़ी, लौकी, जौ, आंवला तथा दूध-भात और मिश्री इत्यादि सौम्य आहार-विहारो को अपनाना चाहिए।

मृगमाला रस

योग—बंगभस्म, नागभस्म, शृंगभस्म, कपास के बीजो की गिरियाँ और अंकोल के बीज—इन पाचों चीजो को पाँच-पांच तोले ले और तीस तोले भैंस के दही का मट्ठा लें।

निर्माण—कपास के बीजो की गिरियो और अंकोल के बीजो को कूटकर महीन तार वाली चलनी से छान लें और एक पत्थर के खरल मे सभी भस्मों के साथ मिश्रित कर मट्ठे के साथ एक दिन खरल कर दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना धूप मे सुखा लें।

गुण—इस बटी के सेवन से सभी प्रकार के प्रमेह स्थायी रूप से मिट जाते हैं।

मात्रा—एक से चार रत्ती तक।

अनुपान—विभीतक कषाय पाँच तोले।

समय—प्रातः और सायंकाल एक-एक मात्रा सेवनीय है।

विशेष—विभीतक कषाय—बहेडे का बक्कल, पाठा, हर्रे और दारूहल्दी-ये चारों चीजें आठ-आठ आने भर लें। इन्हे कुचलकर रात्रि मे भिगो दें। प्रातः काल काढा तैयार करें। पाँच तोले शेष रहे तब छान और शीतल कर काम मे लावें। यह एक मात्रा है। आवश्यकतानुसार सायकाल के लिए भी प्रातःकाल मे ही दो मात्रा कषाय तैयार कर लें और आधा लेने के पश्चात् आधा सायकाल के अनुपान के लिए रख ले।

प्रमेह रोग मे कथित पथ्य और अपथ्य पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

मृगनाभ्यादि-प्राश

योग—कस्तूरी, छोटी इलायची का चूर्ण, लौंग और वंशलोचन—ये चारों चीजें एक एक तोले ले। तीन तोले गौ घृत और चार तोले शहद पृथक ले।

निर्माण—चारो चीजो को अलग-अलग पीसकर काफी महीन कर लें। फिर घृत के साथ औषधि को खरल कर बाद मे शहद मिला ले।

गुण—स्वरभेद तथा गले के विविध प्रकार की विकृतियो को यह अवलेह नष्ट करता तथा वात, कफ से उत्पन्न श्वासकास मे विशेष लाभ-प्रद है। प्रतिश्याय

की वह अवस्था जिसमे बहुत काल तक नाक जकडी रहती हो और वह पुरातन हो गया हो तो इस अवलेह से शीघ्र लाभ होता है।

मात्रा—चार रत्ती।

अनुपान—गरम दूध या गरम जल।

समय—सुबह और सोते वक्त रात्रि मे एक-एक मात्रा लेनी चाहिए।

विशेष—स्वरभेद की अवस्था मे अम्लरस का सेवन त्याग देना चाहिए। अदरक, पीपल, कालीमिर्च गरम जल, पान तथा गले मे सेंक करना लाभदायक है। भोजन करते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि वह विशेष शीतल, बासी, रूखा तथा पीठी का बना न हो।

भूतांकुश रस

योग—शुद्ध पारद एक तोला, शुद्ध आंवलासार गन्धक दो तोले, ताम्रभस्म तीन तोले, अभ्रकभस्म चार तोले, कालीमिर्च दस तोले, वत्सनाभ विष और सफेद सरसो—ये दोनो चीजे एक-एक तोले ले तथा जम्बीरी नीबू का रस पच्चीस तोले ले।

निर्माण—पारद और गंधक को आठ घटे तक पत्थर के खरल में घोटकर कज्जली तैयार कर ले। ताम्र और अभ्रक भस्म का मिश्रण कर पुनः दो घटे तक कज्जली को घोटें फिर मरिच और विष सहित सरसों को कूट एव कपडछन कर कज्जली मे डाले और वस्त्र से छने नीबू का रस डालकर दो-चार दिनों तक खरल करने के पश्चात् दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना ले।

गुण—इससे सभी प्रकार के कास मिटते हैं। साथ ही उदरशूल, ज्वरांश, अरुचि, नित्य नवीन बलगम का निर्माण, अशक्तता एव पुरातन कास के कारण अत्यन्त मदाग्नि और विष-विकार का शमन होता है।

मात्रा—एक से दो रत्ती तक एक बार मे इसे सेवन करना चाहिए।

अनुपान—अदरक का रस और मधु या गरम जल।

समय—सुबह, दोपहर और सायकाल एक-एक मात्रा ले।

विशेष—पुरानी खांसी मे मुलेठी और पीपल डालकर उबाला बकरी का दुध रोगी को अवश्य देना चाहिए। अभाव मे गाय का दूध भी दिया जा सकता है। पीने का जल भी उबालकर गुनगुना दे।

लकवा मे नस्य

योग—कॅवाच के बीजो की गिरियाँ, रास्ना, काली उड़द, खिरैटी (बरियार

की जड़), रेंड की जड़ की छाल, असगन्ध और रोहिष तृण—ये सातों चीजें एक एक तोला लें तथा हीग और सेंधानमक एक-एक माशे पृथक से ग्रहण करें।

निर्माण—ऊपर की सातों औषधियो- केंवाच से रोहिष तृण तक—को जौकुट कर अट्ठाइस तोले जल मे पाक करें। सात तोला शेष रहने पर मोटे कपडे से काढ़े को छान उसमें महीन घिसी हीग और खूब बारीक पीसा सेंधानमक मिलावें यह एक दिन के लिए पर्याप्त औषध क्वाथ है।

गुण—इसके व्यवहार से पक्षाघात (लक़वा), मन्यास्तम्भ, कान की पीड़ा, दुस्सह अर्दितवात (मुंह और गर्दन का टेढ़ा हो जाना), कम्पवायु तथा अपवाहुक (वात-कफदोषज कधे से सम्बन्धित वातव्याधि) रोग समूह का नाश होता है।

उपयोग—कुछ गुनगुना रहे तभी क्वाथ को पारी-पारी से दोनो कान के नथूनों मे दस-पाँच बूंद के अदाज नस्य की तरह ऊपर की ओर खीचना चाहिए। तीन-चार घटे के बाद पुनः काढे को गुनगुनाकर नस्य लेना चाहिए। दिन में तीन-चार बार नस्य लेने के बाद काढे को फेंक देना चाहिए।

सभी औषधियो को चार-चार आने भर लेकर चौगुने जल मे क्वाथ करने और हीग तथा सेंधानमक को भी उक्त परिमाण के मुताबिक दो-दो रत्ती लें और पीस कर प्रक्षेप रूप मे मिश्रण कर काम मे लाना चाहिए। अधिक काढ़ा बनाकर फेंकने की जरूरत ही क्या है ? इस नस्य का नाम 'प्रतिमर्श' नस्य है। इसकी एक बार की मात्रा दो बूंद की है। एक नाक मे दो बूंद टपकाने का विधान है। लेकिन एक बार मे चार-पाँच बूंद भी प्रयोग करने से कोई हर्ज नही है। यह सिर की वस्ति किया ही है।

मागधी—लौह

योग—पिप्पली, सोठ बैतरा, पाठा सोठ, लाल मिर्च, बडी पीपल, हर्रे बड़ी, आँवला, बहेडा, वायविडग, नागरमोथा, चित्रक की जड की छाल, लाल चदन, सुगन्धबाला, बेल की गिरी-ये पंद्रहो चीजे एक-एक तोले तथा लौहभस्म पद्रह तोले लें।

निर्माण—काष्ठ औषधियो को धूप मे चार-छः घटे तक सुखाकर कूट और कपड़छन कर लें और उसी मे लौहभस्म मिला जल के साथ पत्थर के खरल में आठ घटे तक खरल कर चूर्ण को सुखा लें। यदि गोली बनानी हो तो दो-दो रत्ती की गोली बना लें।

गुण— इससे सभी प्रकार के अतिसार उपद्रव-युक्त प्रवाहिका तथा संग्रहणी इत्यादि नवीन और पुरातन रोग मिटते हैं।

मात्रा—एक से चार रत्ती तक एक बार मे इसकी मात्रा ली जा सकती है।

अनुपान—अतिसार मे शरबत बेल, चावल का धोवन और मधु या अतीस के काढे के साथ, प्रवाहिका में सौंफ या अजवाइन के अर्क के साथ और ग्रहणी में मट्ठे से इसका प्रयोग करना चाहिए।

श्री कुमुदेश्वर रस

योग—स्वर्णभस्म, रस सिन्दूर, शुद्ध आंवलासार गन्धक, मोती भस्म, चांदी भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म और शुद्ध सोहागे का चूर्ण—ये सातो द्रव्य इस रस में हैं। इसकी तौल इस प्रकार ग्रहण करें यथा—आंवलासार गन्धक और सोहागे के अतिरिक्त सभी चीजें एक-एक तोला लें। अब सोहागा चार आने भर और आंवलासार शुद्ध गन्धक सवा पांच भर ले। कांजी दस सेर पृथक् से ग्रहण करें।

निर्माण—एक पत्थर के खरल में सातों चीजों को खरल कर महीन चूर्ण बना लें और कांजी डालकर एक दिन तक खरलकर एक गोला बना और छाये में सुखा लें। इस गोले को दो मिट्टी के कसोरे मे रख कपडमिट्टी कर सुखा लें। पुनः एक बड़ी हडी में एक सेर पीसा नमक डाल उसके ऊपर कपडमिट्टी किये कसोरे को रखें और ऊपर से एक सेर नमक से उसे ढँक दे। मिट्टी के पात्र के मुख पर भी एक मिट्टी का ढक्कन रख कपड़मिट्टी कर दें। जब यह कपड़मिट्टी सूख जाय तब पात्र को चूल्हे पर रखकर चौबीस घंटे की अग्नि दें। आँच न तेज और न एक दम से कम हो, पर मध्यम दर्जे की आंच रहे। चौबीस घटे के बाद आँच बन्द कर चूल्हे पर ही एक-दो दिनो तक पात्र को शीतल होने दें। फिर पात्र मे से छोटे कसोरे के सम्पुट को निकाल उसकी ऊपर की मिट्टी को दूर कर भीतर की औषध को ग्रहण करें। कसोरे के ऊपर के हिस्से मे सटी औषध को खुरच लें और नीचे के कसोरे की औषध के साथ खुरची औषध को खरलकर रख लें।

गुण—यक्ष्मा के कीटाणुओ का यह नाशक, उपद्रव सहित श्वास और कास का शामक तथा यकृताशय के आस-पास विद्यमान क्षय कीटाणुओ का संहारक है। राजयक्ष्मा के रोगी के सभी प्रकार के उपद्रवो को शान्त करने के निमित्त इस रस का उपयोग करना चाहिए।

मात्रा—एक से दो रत्ती तक इसकी मात्रा है।

अनुपान—एक तोला गो घृत और एक माशा कालीमिर्च के चूर्ण में औषधि को घोंटकर सेवन करना चाहिए। ऊपर से तुरन्त जल न पीना चाहिए। यदि पीना ही हो तो गुनगुना बकरी का दूध लेना चाहिए।

समय—सुबह-शाम और सोते वक्त रात्रिमें एक-एक मात्रा।

मल्ल भस्म

योग—शुद्ध संखिया, सेंधानमक और शुद्ध आँवलासार गन्धक—ये तीनों एक-एक तोला ले।

निर्माण—एक घंटे तक पत्थर के खरल में इन्हे घोटकर जल के छींटे डालकर टिकिया बना ले। एक या दो टिकिया बनाना चाहिए। धूप में सुखाकर दो कसोरे के बीच में टिकिया को रख कपडमिट्टी से कसोरो की संधि को बंद कर सुखा लें। इस सम्पुट को दो पसेरी गोहरा ऊपर और उतने ही नीचे रख भस्म कर दे। शीतल होने पर खरलकर रख ले।

गुण—इससे यकृत, प्लीहा और अग्रमास (अनावश्यक मासवृद्धि) की विकृतियाँ दूर होती हैं।

पारी का शीत ज्वर जब एक सप्ताह का हो जाय तब उस अवस्था में भी इसके प्रयोग से ज्वर मिट जाता, मलेरिया के कीटाणु नष्ट हो जाते तथा शारीरिक अशक्तता मिट जाती है। श्लीपद के कारण अढाई दिवसों वाली शीतपूर्वक ज्वर में इसे प्रयोग करने से श्लीपद के कीट भी नष्ट हो जाते हैं। श्वास के दौरे के समय इसकी मात्रा देने से कष्ट तत्क्षण मिट जाता है। पौरुष-हीनता को दूर करने के लिए भी इसका उपयोग होता है। पुरानी बीमारी के बाद बढ़ी हुई रक्ताल्पता का यह नाशक है।

मात्रा—एक रत्ती का सोलहवाँ भाग।

अनुपान—ज्वर-काल मे बकरी या गाय के एक पाव दूध में मिलाकर बिना ज्वर के श्वास, श्लीपद, रक्ताल्पता तथा पौरुष-हीनता की निवृत्ति के निमित्त गो घृत (एक तोला) मे खरल कर इसे सेवन करना चाहिए।

यकृत और प्लीहा के विकार मे भी बकरी के दूध के साथ या पीपल डालकर उबाले गाय के दूध से देना चाहिए।

समय—सुबह और शाम को एक-एक मात्रा देनी चाहिए।

विशेष—संखिया के चने के बराबर टुकडे कर चार तह के साफ कपडे की पोटली मे बाँध आधा सेर बकरी के दूध मे मंद आँच पर खौलाकर दूध के गाढ़ा

हो जाने पर पोटली को निकाल और गरम पानी से संखिये के टुकडो को धो नीबू के रस में खरल कर सुखा ले। यह संखिये की शुद्धि हुई।

छोटी कड़ाही मे घी चुपडकर गन्धक के टुकड़ो को डाल दें और आंच दें। थोड़ी देर मे गन्धक जब तेल की तरह पतला हो जाय तब उसे दस गुने गाय के दूध मे डाल दें। फिर गधक को गर्म जल से धो और पोछकर खरल कर लें। यह गंधक की शुद्धि हुई।

सखिया एक मारक विष है, अतएव इसकी मात्रा एक रत्ती का सोलहवाँ हिस्सा या एक चावल के बराबर से अधिक नही लेनी चाहिए। छोटे बच्चो को इसकी मात्रा नही देनी चाहिए। इसी प्रकार गर्भवती स्त्री को भी देना मना है।

जिस पात्र, खरल तथा मिट्टी के कसोरे इत्यादि मे संखिये का स्पर्श हो उन्हे और हाथ को भी गोबर और मिट्टी से अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिए।

इस औषधि के सेवनकाल मे कम से कम एक सेर दूध का पथ्य अवश्य लेना चाहिए। चौबीस घटे मे जलपान तथा भोजन इत्यादि के साथ या योही उतना दूध ले लेना चाहिए। इससे औषध की गर्मी के कारण शरीर मे खुश्की नही बढेगी और सेवन करने के पश्चात औषधि का शरीर के रगरग मे विशेष गुण प्रकट होगा।

सूजन पर कटुकादि लौह

योग—कुटकी, सौंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, दन्तीमूल, वायविडग, हर्रे, बहेडा, आँवला, चित्रक की जड की छाल, देवदारू, निशोथ और गजपीपल—ये तेरहो चीजे एक-एक तोले तथा तीक्ष्ण लौहभस्म छब्बीस तोले लें।

निर्माण—काष्ठ औषधियो को धूप मे दो-चार घटे तक सुखा, कूट और छानकर लौहभस्म के साथ खरलकर रख ले।

गुण—इसके सेवन से सभी प्रकार की सूजन दूर हो जाती है। यह यकृत और प्लीहा के विकारो का नाशक तथा मल रेचक है।

मात्रा—इसकी मात्रा दो से चार रत्ती तक है।

अनुपान—पुनर्नवा रस या काढा दो तोले और मधु एक तोला के साथ इसे सेवन करना चाहिए।

समय—सुवह और सायकाल एक-एक मात्रा सेवनीय है।

विशेष—यदि सूजन अधिक हो तो रोगी को अन्न न दें तथा नमक देना बद कर दे। केवल दूध और फलो का रस दें। संतरा, मौसम्मी, अनार और अंगूर इत्यादि सुपाच्य फलो का रस व्यवहार में लाना चाहिए। इस प्रकार से

पथ्य-पालन करने से ज्वर सहित सर्वांग शोथ, उदरामय (उदर से सम्बन्धित रोग समूह) तथा शारीरिक विशेष अशक्तता एक सप्ताह मे ही मिट जाती है और रोगी आरोग्य लाभ के मार्ग पर अग्रसर होने लगता है। यदि जल के स्थान पर पुनर्नवा की जड का तीव्र अर्क ही पान किया जाय तो और भी शीघ्र लाभ होता है।

रात्रिज्वर-नाशक विश्वेश्वर रस

योग—शुद्ध पारद, शुद्ध आँवलासार गन्धक और शुद्ध हिंगुल—ये तीनों पांच-पाच तोले लें। अश्वत्थ (पीपल) की छाल, काले धतूरे की छाल, कटकारी के पचांग और मकोय के पंचांग के यथासाध्य स्वरस का क्वाथ, पृथक्-पृथक् भावना के निमित्त नब्बे नब्बे तोले ग्रहण करें।

निर्माण—पारद और गन्धक को आठ घंटे तक एक साथ खरल कर कज्जली बना ले। फिर उसी कज्जली के साथ हिंगुल को मिलाकर चार घटे तक खरल करें। फिर क्रमशः चारो वनस्पतियो के स्वरस या क्वाथ की तीन-तीन भावना दें। भावना के पूर्ण होने पर तीन-तीन रत्ती को गोलिया बना और सुखा लें।

गुण—इसके प्रयोग से रात्रि मे आने वाला ज्वर दूर हो जाता है। विषम पूर्वक रात्रि ज्वर की यह अव्यर्थ औषधि है।

मात्रा—एक से तीन रत्ती तक एक बार मे इसका प्रयोग करना चाहिए।

अनुपान—गो दुग्ध आधा पाव।

समय—सुबह, दोपहर, सायंकाल और रात्रि मे सोते वक्त एक-एक मात्रा देनी चाहिए।

पथ्य—दूध और गरम कर शीतल किया जल। ज्वर मिटने पर फुलका, मूंग की दाल और परवल।

मणिमन्थ योग

योग—मणिमन्थ (सेंधानमक), सफेद जीरा, अजवाइन, छोटी पिप्पली, सोंठ—इन पाँचो चीजो को क्रमशः बढाकर लें—अर्थात् सेंधानमक एक तोला, सफेद जीरा दो तोले, अजवाइन तीन तोले, छोटी पिप्पली चार तोले और सोंठ पाँच तोले ले। इसके अतिरिक्त बड़ी हर्रे पन्द्रह तोले लें।

निर्माण—सभी को कूट और कपडे से छानकर अच्छी तरह मिश्रित कर ले।

गुण—यह चूर्ण विशेष रूप से पाचन, विरेचन, प्रदीपन, प्ररोचन (विशेष

रूप से रुचि उत्पादक), मल मार्ग की छोटी कृमियों का नाशक तथा जठराग्नि को तीव्र करने वाला है।

मात्रा—एक से तीन माशे तक। एक बार मे प्रयोग करना चाहिए।

अनुपान—गरम जल, मट्ठा, अर्क अजवाइन, अर्क सौंफ इत्यादि रोग और अवस्थानुसार।

समय—सुबह और रात्रि में सोते वक्त एक-एक साधारण मात्रा (एक माशा) व्यवहार मे लाना उचित है।

विशेष—इसके सेवन से मल बन्ध मिटता है, इस वास्ते कब्ज वाले को रात्रि मे सोते वक्त गरम जल से इसका सेवन करना चाहिए। मदाग्नि मे भोजन से पहले मट्ठे से और रुचि उत्पन्न करने के लिए भी भोजन से पूर्व ही मट्ठे या गरम जल से इसे ग्रहण करना चाहिए। अरुचि मे नीबू के रस के साथ चाटना चाहिए। प्राचीन चिकित्सक इसे उक्त विधि से भी रोगी को देते हैं।

तक्रावलेह

योग—गाय के दही का मट्ठा और काँजी-ये दोनो चीजें तेरह-तेरह सेर, सेंधानमक चालीस तोले, सोंठ और छोटी हर्रे ये दोनों द्रव्य सोलह-सोलह तोले, गाय का घृत और काले तिल का तेल ये दोनो द्रव्य बत्तीस-बत्तीस तोले और अष्टचूर्ण मिलित बारह तोले लें।

निर्माण—एक मिट्टी के या कलई किये हुए पात्र में मट्ठा और काँजी को एक में मिश्रित कर आग पर रखे तथा सेंधानमक सोंठ, हर्रे, घृत और तैल-इन सब को भी उसी में मिलाकर पाक करें। जब आधा मट्ठा और काँजी जल जाय तब उसमें कपड़े से छना कुटा अष्टचूर्ण का प्रक्षेप दे। गाढ़ा होने पर उतारकर शीतल कर लें और मिट्टी के पात्र मे उसे रख पात्र का मुख ढक्कन से ढँक कपडमिट्टी से सधि को ठीक से वन्द कर दें। इस पात्र को एक मास तक धान के या जौ इत्यादि की ढेर में दबाकर पड़ा रहने दें। पश्चात् निकालकर चीनीमिट्टी या शीशे के पात्र मे ढँककर रखे।

गुण—इससे प्लीहा, यकृत, नानाविध उदर-रोग, उदरशूल, मदाग्नि, आम दोप, गुल्म तथा उदर में सञ्चित होने वाली वायु का नाश होता है। यह विशेष अग्नि-प्रदीपक है।

मात्रा—छः माशे से एक तोला तक एक बार मे इसका सेवन करना चाहिए।

अनुपान—उष्ण जल।

समय—रोगानुसार समय निश्चित करना चाहिए। साधारणतः भोजन के घंटे भर बाद इसकी मात्रा लेनी चाहिए। यों सुबह, दोपहर, शाम और रात्रि मे सोते वक्त भी इसकी मात्रा दी जाती है।

विशेष—अष्टचूर्ण के अंदर सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, सेंधानमक, अजवाइन, जीरा, स्याहजीरा और हींग-इन आठो द्रव्यों को बराबर लिया जाता है। ऊपर के तक्रावलेह मे इसी चूर्ण का प्रक्षेप देना चाहिए।

काँजी निर्माण विधि के लिए रसायनसार ग्रन्थ देखें।

व्याघ्री चूर्ण

योग—छोटी कटेरी की जड़, जीरा, आंवला-इन्हे सम भाग लें।

निर्माण—घंटे-दो घंटे इन्हे धूप मे सुखाकर कूट और कपड से छान लें।

गुण—इसके प्रयोग से ऊर्ध्व वात, महा श्वास, तमक श्वास तथा श्वास के कारण बेचैनी इत्यादि कष्ट शीघ्र ही मिटने लगते हैं। यह शीघ्र गुण दिखाने वाला चूर्ण है।

मात्रा—तीन माशे एक बार में सेवन करना चाहिए।

अनुपान—मधु एक तोला।

समय—सुबह, शाम और सोते वक्त रात्रि में एक-एक मात्रा सेवनीय है।

द्वन्द्वज कुष्टनाशक प्रलेप

योग—सुगन्धबाला एक तोला, कड़ुआ कूठ दो तोला, अगर तीन तोला, नागकेशर चार तोला, तेजपत्र पाँच तोला, केवटी मोथा छः तोला, सफेद चन्दन सात तोला और कमल की जड़ आठ तोला लें।

निर्माण—सभी द्रव्यों को कुचलकर चार घण्टे जल में भिगो कर रखें, फिर सिल पर पीस लेप बना लें।

गुण—इसके व्यवहार से कफ और पित्त के विकार से उत्पन्न कुष्ट और उसके कारण दाह इत्यादि की शान्ति होती है।

व्यवहार—नीम के पत्ते डालकर उबाले जल से कुष्ट के व्रणो को धोकर साफ करें फिर सूखी रुई से जल का अंश सुखाकर उसके ऊपर मोटा-मोटा लेप चढा दें। चार घण्टे के बाद लेप को हटा दें। दो घण्टे के बाद पुनः लेप लगावें। इस प्रकार दिन-ही-दिन मे दो बार लेप का व्यवहार करें।

उदर-व्याधिहर चूर्ण

योग—नील का पंचांग, अम्लवेत, सोंठ, पीपल, मिर्च, सज्जीखार, जवाखार,

से धानमक, समुद्र नमक, विड्नमक, सचलनमक, उद्भिदनमक और चित्रक की जड़ की छाल—इन तेरहों चीजो को पांच-पांच तोले लें।

निर्माण—सभी का पृथक्-पृथक् कूट और कपड़छन कर मिश्रित कर लें।

गुण—इसके व्यवहार से सम्पूर्ण उदर-विकार, गुल्म, प्लीहा, यकृत दोष, मंदाग्नि, अम्ल पित्त तथा पेट मे वायु का संग्रह होना इत्यादि विकार शान्त हो जाते है।

मात्रा—तीन से छः माशे तक एक बार मे प्रयोग करना चाहिए।

अनुपान—एक तोला गौ घृत।

समय—सुबह, दोपहर, शाम और सोते वक्त रात्रि में इस चूर्ण की एक-एक मात्रा लेनी चाहिए।

विशेष—यकृत और प्लीहा के विकार में इसे घृत से न लेकर शरपुखे के काढ़े से लेना चाहिए। जलोदर की प्रथम अवस्था में गोमूत्र से और अम्ल पित्त मे नारियल के जल के साथ इसका सेवन उत्तम होता है।

श्री फलावलेह

योग—वेल की गिरी वीस तोले, बकरी का दूध दो सेर, मिश्री डेढ सेर, बकरी का घृत दस तोले, सोठ, पीपल, कालीमिर्च, अजवाइन, सफेद जीरा और नागरमोथा—इन छहो चीजो को सवा-सवा तोला ले। मधु दस तोला पृथक् ग्रहण करें।

निर्माण—वेल की गिरियों को कूट और कपड़छन कर एक लोहे की कड़ाही में दूध के साथ पाक करें। खोआ तैयार होने पर घृत डालकर अत्यन्त मन्द आंच पर मृदु भर्जन करें याने थोड़ा भूने। मामूली सुर्खी आने पर एकतार की मिश्री की चाशनी डाल पकावें। जब पाक कलछी में चिपकने लगे अर्थात् गाढ़ा हो जाय तब उसमे सोठ से नागरमोथा तक की छहो चीजो के कपड़छन चूर्ण को डाल अच्छी तरह मिलाकर चूल्हे से उतार ले। शीतल होने पर मधु का मिश्रण करें।

गुण—इसके सेवन से ग्रहणी विकार, पुराना अतिसार, आमातिसार, पेट में वायु का बनना, मेदे की खराबी, बवासीर के कारण रक्तस्राव तथा आम-दोष शीघ्र दूर हो जाता है। संग्रहणी के कारण जिनका मल नही वँध रहा हो उनके लिए यह श्री फलावलेह अमृत तुल्य गुणदायक है।

मात्रा—आठ आने से एक तोला तक।

अनुपान—बकरी का दूध या गरम जल आधा पाव।

समय—सुबह और शाम को एक-एक गोली लेनी चाहिए।

मुद्रक : न्यु दीपक प्रेस, ए० १३/४३ भगतपुरी, राजघाट, वाराणसी—१

गांधीजी का आशीर्वाद

दो शब्द

श्यामसुन्दर रसायनशाला की स्थापना आज से कोई ७२ वर्ष पूर्व स्वनामधन्य, नव्यनागार्जुन, रसायनशास्त्री पं० श्यामसुन्दराचार्यजी ने की थी। आयुर्वेदीय विज्ञान की पुनः प्रतिष्ठा उनका पवित्र लक्ष्य था। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विशुद्ध आयुर्वेदीय प्रणाली से औषध-निर्माण तथा आयुर्वेदीय ज्ञान के प्रसार-प्रचार के लिए पुस्तक-प्रकाशन—ये दो योजनाएँ उन्होंने कार्यान्वित की थीं। हमें इस बात का सन्तोष है कि आयुर्वेद-जगत ने इन दोनों योजनाओं की सफलता सादर स्वीकार की है।

जहां तक रसायनशाला के प्रकाशन का सम्बन्ध है, हमने आयुर्वेदीय चिकित्सा और स्वास्थ्यसम्बन्धी उत्तमोत्तम, प्रामाणिक, ज्ञानवर्धक, वैज्ञानिक एवं जीवनोपयोगी सत साहित्य का प्रकाशन किया है, जिसकी प्रबुद्ध पाठकों ने मुक्तकंठ से सराहना की है।

हमारे प्रकाशन की उपादेयता समझकर बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब और मध्यप्रदेश आदि कई राज्यों की सरकार ने पुस्तकालयों, ग्राम-पंचायतों तथा विकास योजना से सम्बद्ध संस्थाओं के लिए इन प्रकाशनों को स्वीकृत किया है। सुप्रसिद्ध विद्वानों तथा देश की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं ने भी हमारे प्रकाशन की सार्थकता स्वीकार की है।

विनीत—प्रकाशक

श्यामसुन्दर रसायनशाला प्रकाशन
गायघाट ... वाराणसी

व्यापारसम्बन्धी नियम

१. अपना पूरा पता तथा रेलवे से मगाने वाले स्टेशन का नाम स्पष्ट लिखे।
२. आदेश के साथ चौथाई धन अग्रिम भेजना आवश्यक है।
३. पचीस रुपये या अधिक के आदेश पर डाकखर्चा फ्री। इससे कम के आर्डर पर डाकखर्चा देना होगा।
४. अपने स्थानीय पुस्तक-विक्रेताओं से हमारी पुस्तकें खरीदें। अन्यथा श्यामसुन्दर रसायनशाला प्रकाशन, गायघाट, वाराणसी से मँगावें।
५. कमीशन केवल पुस्तक-विक्रेताओं को ही दिया जाता है। विशेष जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार करें।

हमारे प्रकाशनों की पुस्तक-सूची

पुस्तक का नाम	लेखक	मूल्य
१. रसायनसार :	पं० श्यामसुन्दराचार्य	१२.००
२. अनुपान विधि	,,	०.७५
३. अनुभूत योग (प्रथम भाग)	,,	१.३५
४. अनुभूत योग (द्वितीय भाग) :	पं० केदारनाथ पाठक	१.००
५. अनुभूत योग (तृतीय भाग) :	वैद्यराज उमेदीलाल वैश्य	१.००
६. ,, (चतुर्थ भाग)	,,	१.००
७. ,, (पचम भाग)	,,	१.००
८. सिद्ध मृत्युञ्जय योग	केदारनाथ पाठक	१.००
९. प्रयोग रत्नावली	,,	२.००
१०. भोजन विधि (रोग तथा पथ्यापथ्य)	,,	३.५०
११. आहार सूत्रावली	,,	.५०
१२. ग्राम्य चिकित्सा	,,	.७५
१३. टोटका विज्ञान १ व २ भाग	,,	१.००
१४. आरोग्य लेखाञ्जलि	,,	१.२५
१५. देहातियो की तन्दुरुस्ती	,,	.७५
१६. मोटापा कम करने के उपाय :	प्रभुनारायण त्रिपाठी	१.००
१७. स्वास्थ्य और सद्वृत्त :	कविराज अत्रिदेव गुप्त	२.५०
१८. व्यायाम और शारीरिक विकास :	अशोककुमार सिंह	३.००
१९. प्रारम्भिक स्वास्थ्य :	गौरीशंकर गुप्त	.४०
२०. ऋतुएँ और स्वास्थ्य :	वैद्यराज उमेदीलाल वैश्य	.७५
२१. मौसमी सात बीमारियाँ	,,	.३५
२२. नीम के उपयोग	केदारनाथ पाठक	१.५०
२३. मधु के उपयोग	,,	१.५०
२४. मट्ठा या छाछ के उपयोग :	प्रवासीलाल वर्मा	१.५०
२५. हल्दी के उपयोग	वैद्यराज उमेदीलाल वैश्य	.३५
२६. लहसुन के उपयोग	,,	.३५
२७. कालीमिर्च के उपयोग	,,	.३५
२८. दालचीनी के उपयोग	,,	.३५
२९. लौंग के उपयोग	,,	.३५

३०. सौफ के उपयोग	वैद्यराज उमेदीलाल वैश्य	.३५
३१. अजवाइन के उपयोग	,,	.३५
३२. अदरख के उपयोग	,,	.३५
३३. तेजपात के उपयोग	,,	.३५
३४. मेथी के उपयोग	,,	.३५
३५. हींग के उपयोग	,,	.३५
३६. जीरा के उपयोग	,,	.३५
३७. धनिया के उपयोग	,,	.३५
३८. राई के उपयोग	,,	.३५
३९. मगरैला के उपयोग	,,	.३५
४०. प्याज के उपयोग	,,	.३५
४१. नीबू के उपयोग	,,	.३५
४२. आँवला के उपयोग	,,	.३५
४३, गूलर के उपयोग	,,	.३५
४४. तुलसी के उपयोग	,,	.७५
४५. आम के उपयोग	,,	१.५०
४६. प्रसूता और शिशु-परिचर्या	,,	.७५
४७. स्वच्छता और स्वास्थ्य	,,	.३५
४८. व्यायाम और स्वास्थ्य	,,	.३५
४९. भोजन और स्वास्थ्य	,,	.३५
५०. मनोवेग और स्वास्थ्य	,,	.३५
५१. मादक वस्तुएँ और स्वास्थ्य	,,	.३५
५२. आचार-विचार और स्वास्थ्य	,,	.३५
५३. अनुभूत योग (५ भाग सजिल्द)		५.५०
५४. स्वास्थ्य निर्माण के साधन (८ पुस्तकें सजिल्द)		७.५०
५५. हमारा स्वास्थ्य और आहार (५ पुस्तकें सजिल्द)		४.००
५६. हम कैसे स्वस्थ रहे ? (५ पुस्तकें सजिल्द)		४ ००
५७. मसालों के उपयोग (१६ पुस्तकें सजिल्द)		५.५०
५८. स्वास्थ्य साधन (६ पुस्तकें सजिल्द)		३.००

श्यामसुन्दर रसायनशाला प्रकाशन, गायघाट, वाराणसी—१

हमारे प्रकाशन की भिन्न-भिन्न पुस्तकों के सजिल्द सेट

१. मसालों के उपयोग : १६ पुस्तकों का मूल्य : ५.५०

(अजवाइन, अदरख, कालीमिर्च, जीरा, तेजपात, दालचीनी, धनिया, प्याज, मगरैला, मेथी, राई, लहसुन, लौंग, सौंफ, हल्दी, हींग के उपयोग)

२. स्वास्थ्य निर्माण के साधन : ८ पुस्तकों का मूल्य : ७.५०

(आम, आँवला, गूलर, तुलसी, नीम, नीबू, मट्ठा, मधु के उपयोग)

३. स्वास्थ्य साधन : ६ पुस्तकों का मूल्य : २.००

(आचार-विचार, भोजन, मनोवेग, मादक वस्तुएँ, व्यायाम, स्वच्छता और स्वास्थ्य)

४. हम कैसे स्वस्थ रहें : ५ पुस्तकों का मूल्य : ४.००

(आरोग्य लेखाञ्जलि, ग्राम्य चिकित्सा, प्रसूता और शिशु-परिचर्या, प्रारम्भिक स्वास्थ्य एवं ऋतुएँ और स्वास्थ्य)

५. हमारा स्वास्थ्य और आहार । ५ पुस्तकों का मूल्य : ४.००

(आहार सूत्रावली, टोटका विज्ञान भाग १ व २, देहातियों की तन्दुरुस्ती, मोटापा कम करने के उपाय, मौसमी सात बीमारियाँ)

६. अनुभूत योग : पाँच भाग का मूल्य : ५.५०

हमारे आगामी प्रकाशन

१. प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान
२. रसायनसार परिशिष्ट
३. घरेलू नुस्खे
४. कामतत्त्व दर्शन
५. आरोग्य लोकोक्तियाँ
६. साग-सब्जियो के उपयोग
७ फलों के उपयोग
८. फूलों के उपयोग

श्यामसुन्दर रसायनशाला प्रकाशन, गायघाट, वाराणसी—१

हमारे विशिष्ट प्रकाशन
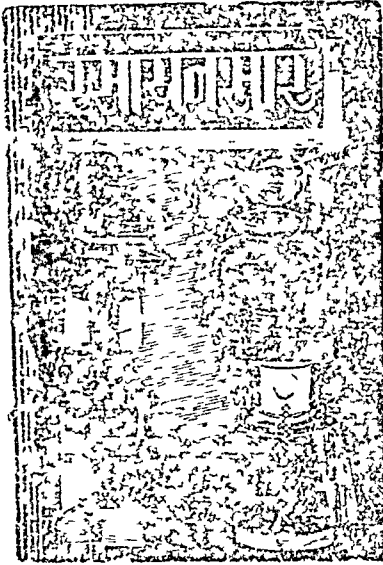
रस-शास्त्र का क्रियात्मक सच्चा ज्ञान
करानेवाला सर्वोत्तम ग्रन्थ

रसायनसार

लेखक

'रसायनशास्त्री' प० श्यामसुन्दराचार्य
चिकने पुष्ट कागज पर सुन्दर छपाई नवीन
५ वॉ परिष्कृत संस्करण मूल्य : १२·००

यह अनुभूत पारद-बुभुक्षा-विधि चन्द्रोदयादि हजारो रसो के निर्माण सब धातु-उपधातुओं के शोधन-मारण की सुगम विधि, बडे-बडे वैद्यो का पारद-बुभुक्षादि विषयों पर शास्त्रार्थ, गन्धक-हरितालादि तैल तथा परीक्षित चिकित्सा-काण्ड आदि अनेक विषयो से विभूषित, स्पष्ट तथा सविस्तार हिन्दी-भाषा टीका से समलंकृत एवं रसायनोपयोगी अनेक चित्रो से सज्जित है।

अनुभूत योग (पॉच भाग)

लेखक—भाग १—प० श्यामसुन्दराचार्य
,, भाग २—पं० केदारनाथ पाठक
,, भाग ३,४,५ वैद्यराज उमेदीलाल वैश्य
प्रथम भाग का मू० १-२५रु चारो का १-१रु०
पाचों भाग सजिल्द मूल्य : ५.५० ।

इन पांचो भागो मे भिन्न-भिन्न लेखकों ने जिन औषधियों से अपूर्व उपलब्धि प्राप्त की है, उन्ही नुस्खो का योग, निर्माण-विधि, मात्रा, गुण, व्यवहार-विधि और विशेष बातें सरल एवं सुबोध भाषा मे बतायी गई है। योग, उसका परिमाण और अनुपान भी बताये गये है। चिकित्सको और सर्व-साधारण के लिये अत्यधिक उपयोगी।

श्यामसुन्दर रसायनशाला प्रकाशन, गायघाट, वाराणसी—१

मसालों के उपयोग

लेखक—वैद्यराज उमेदीलाल वैश्य

मूल्य : ५·५०

अजवाइन, अदरख, कालीमिर्च, जीरा, तेजपात, दालचीनी, धनिया, प्याज, मगरैला, मेथी, राई, लहसुन, लौंग, सौंफ, हल्दी, हींग-इन १६ मसालो से भिन्न-भिन्न रोगों के इलाज, रोगो की पहचान उपचार, पथ्य और अपथ्य आदि अनेक उपयोगी बातें बतायी गयी हैं। प्राकृतिक ढंग से सरल पारिवारिक चिकित्सा की अद्वितीय इस पुस्तक से लाभ उठायें।

आरोग्य लेखाञ्जलि

लेखक—पं० केदारनाथ पाठक

संस्करण : ३ मूल्य : १·२५

स्वास्थ्य एवं आहार-विज्ञान विषयक बारह मौलिक उपयोगी निबन्धों का सुन्दर विवेचन किया गया है।

१. मालिश और उसकी विधि, २. अपने हाथो कपडों की सफाई, ३. आयुर्वेद मे गंगा, ४. ग्रीष्म-ऋतुचर्या, ५. विटामिन सी का प्रचुर स्रोत : आंवला, ६. अमरूद और उसके गुण, ७. परम उपयोगी फल : पपीता, ८. लुभावना फल : खरबूजा, ९. अमृत फल : बेल, १०. परम पथ्य शाक : करेला ११. सागों का राजा : आलू, १२. बथुए की विदाई; प्रत्येक घर-गृहस्थी के योग्य पुस्तक है। (उ० प्र० सरकार द्वारा स्वीकृत)

श्यामसुन्दर रसायनशाला प्रकाशन, गायघाट, वाराणसी—१

हमारे प्रकाशन के प्रमुख विक्रेता

१. सर्व सेवा प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी (मुख्य वितरक)।

इनके सभी पुस्तक—विक्रेताओं एवं निम्न रेलवे स्टेशनों पर खुले सर्वोदय-साहित्य स्टालों पर भी हमारे प्रकाशन उपलब्ध हैं।

दिल्ली, नयी दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, जोधपुर, मुगलसराय, हबड़ा, हैदराबाद, सिकन्दराबाद, जबलपुर, इन्दौर, रतलाम, नागपुर, वर्धा, पुणे, बम्बई वी० टी०, भोपाल, अहमदाबाद, जयपुर, अजमेर, रायपुर, मदुराई, गोरखपुर, बस्ती, कटक, भुवनेश्वर, राउरकेला, पठानकोट, आसनसोल, गया, बरेली, वाराणसी, छपरा, बलिया, पटना जं०, टाटानगर और अमृतसर आदि।

२. चौखम्भा संस्कृत सिरीज आफिस, वाराणसी।
३. चौखम्भा औरियन्टालिया, चौक, वाराणसी।
४. चौखम्भा विद्या भवन, चौक, वाराणसी।
५ हिन्दी प्रचारक संस्थान, पिशाचमोचन, वाराणसी।
६. मोतीलाल बनारसीदास, चौक, वाराणसी।
७. दिगम्बर जैन पुस्तकालय, मु० श्री महावीरजी (सवाई माधोपुर)।
८. हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, मुरादपुर, पटना।
९. गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र, १५।२३९, सिविल लाइन्स, कानपुर।
१०, एक्मे एण्ड कम्पनी, जैन हाऊस, ८।१, एस्पेनेडईस्ट, कलकत्ता।
११. वैदिक साहित्य भण्डार, बडा गाँव गेट, झाँसी।
१२. सर्वोदय साहित्य भण्डार, महात्मा गांधी मार्ग, इन्दौर।
१३. निसर्गोपचार आश्रम, उरूलीकाँचन (पूना)।
१४ सर्वोदय विचार केन्द्र, कधारी, आगरा।
१५. ग्रामोद्योग भण्डार, आनन्द निकेतन, लकटिया, बरेली।
१६. परमानन्द आर्य, आर्य साहित्य मन्दिर, आर्यनगर, गोरखपुर।
१७. सत् साहित्य ग्रन्थागार, १६ पुराना मोटर स्टैण्ड, गजीपुरा, जबलपुर।
१८. ज्वाला आयुर्वेद भवन, मामूभाजारोड, अलीगढ़।
१९. धनवन्तरि कार्यालय, विजयगढ (अलीगढ़)।
२०. मास्टर खेलाड़ीलाल सकठाप्रसाद, कचौड़ीगली, वाराणसी।

हमारे प्रकाशन 'विद्वानों की दृष्टि मे'

श्री उमेदीलाल वैश्य के लिखित खाद्यों के खासकर मसालों के उपयोग की छोटी-छोटी पुस्तिकाएं देखने को मिलीं।

किताबें सामान्य जनता के लिए उपयोगी है। आज दुनिया मे वायु, पानी, भूमि, खाद्य, पशु, मनुष्य आदि पर वर्तमान अन्ध विश्वास के कारण प्रदूषण की जो समस्या विश्व भर मे खडी हो गयी है, उसके मुकाबले के लिए श्यामसुन्दर रसायनशाला ने जो काम उठाया है वह अत्यन्त सामयिक और आवश्यक है। मैं इनके प्रयासो की सराहना करता हूँ।

—धीरेन्द्र मजूमदार, श्री गाँधी आश्रम, वाराणसी

"भीलवाड़ा मे मुझे जो पुस्तकें दी गईं उन्हे मैने पढा और उपयोगी पाया। मैं आशा करता हूँ कि ग्रामीण लोग, जिनके लिए ये पुस्तकें लिखी गई है, इनसे अधिकाधिक लाभ उठायेगे।"

—गुलजारीलाल नन्दा, केन्द्रीय गृह-मत्री, नई दिल्ली

"आपकी उपयोगी पुस्तको का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार हो यह आवश्यक है। मैं इनकी हर तरह से सफलता चाहता हूँ।"

—अक्षय कुमार करण, सचिव खा. ग्रा. आ., बम्बई

"श्यामसुन्दर रसायनशाला के अध्यक्ष श्री उमेदीलाल वैश्य ने जनोपयोगी ग्रन्थ छपवाकर वैद्य समाज और जनता की बडी सेवा और उपकार किया है। इसलिए मैं इनको धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि वे इस प्रकार आयुर्वेद की सेवा करते रहेगे।"

—वैद्य यादवजी विक्रमजी आचार्य, बम्बई

"श्री उमेदीलाल जी ने अपने नानाजी की रसायनशाला पुस्तक-प्रकाशनादि कार्य को आगे बढाकर स्थायी रूप प्रदान किया है। वड़ी अच्छी आयुर्वेद सेवा का व्रत ही ग्रहण कर लिया। परमपिता परमात्मा की दया से वे फूलते-फलते रहे, यह मेरी हार्दिक कामना है।

—गोवर्धन शर्मा छाँगाणी, नागपुर

"आयुर्वेदिक सिद्धान्तो के अनुसार जन-साधारण से स्वस्थवृत्त के प्रचार की दृष्टि से श्यामसुन्दर रसायनशाला की प्रकाशित पुस्तकें वड़ी उपयोगी हैं।"

—आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका, दिल्ली, जून ५०